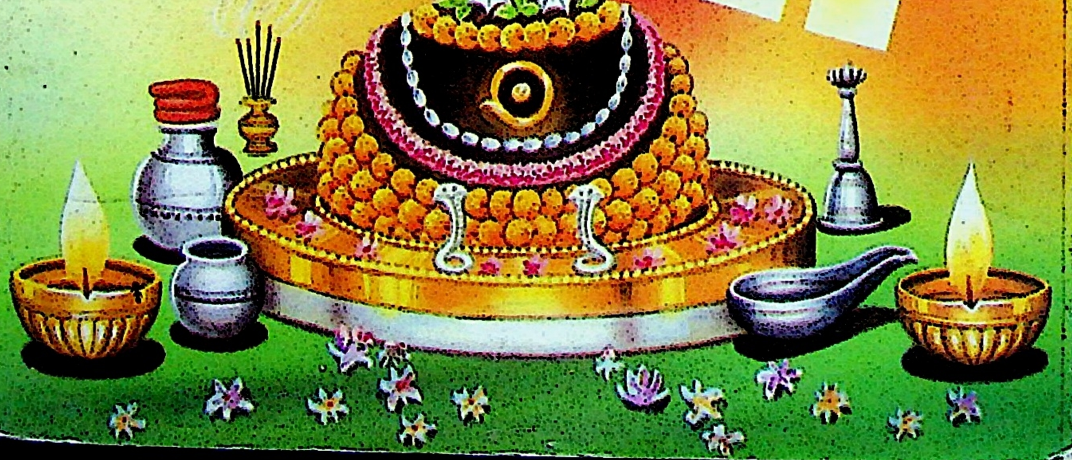
मनोकामनादायक
एवं फलदायक

जप तप और व्रत

बारह महीनों के त्यौहारों सहित
कथाएं, महात्म्य एवं सप्तवार कथाएं,
आरतियां एवं रीतियां

हिन्दू धर्म की आस्था एवं
विश्वास की धर्म प्राण पुस्तक



2·2

मनोकामनादायक एवं फलदायक

जप, तप और व्रत

बारह महीनों के त्योहारों सहित कथायें, माहात्म्य, सप्तवार कथायें, आरतियां एवं रीतियां

धर्म आस्था पर आधारित होता है। हिन्दू धर्म भी देवी-देवताओं की आस्था व विश्वास का प्रतीक है। भारतवर्ष में अनेकों मत एवं धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं। वे अनेक प्रकार से ईश्वर की उपासना व भक्ति करते हैं, साथ ही अनेक प्रकार के जप, तप व व्रत करते हैं।

इस पुस्तक में वर्ष भर में पड़ने वाले प्रमुख त्योहारों व व्रत के माहात्म्य, पुण्य और फल की जानकारी के साथ अनेकों आरती, पूजन विधि, व्रत कथायें एवं व्रत विधि दी गई हैं, जो इहलोक के साथ परलोक सुधारने का भी मार्ग प्रशस्त करती हैं।

धर्म ज्ञान की जानकारियां देने, तीज-त्योहारों का समग्र ज्ञान प्रस्तुत करने वाली प्रस्तुत धर्मप्राण पुस्तक निश्चित ही श्रद्धालुओं व धर्मपरायण व्यक्तियों का उचित मार्गदर्शन करेगी तथा वे इसके माध्यम से धर्मरक्षार्थ समुचित लाभ उठायेंगे।

रजत प्रकाशन

केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट मेरठ-2

रजत प्रकाशन

द्वारा प्रकाशित

धर्म एवं ज्ञान पर आधारित अन्य पुस्तकें

भृगुसंहिता महाशास्त्र (सजिल्द)	पं० केवल आनन्द जोशी	120/-
भृगुसंहिता महाशास्त्र (पेपर बैक)	पं० केवल आनन्द जोशी	100/-
कुण्डलिनी रहस्य एवं जागरण	पं० शशि मोहन बहल	100/-
मुहूर्त रत्नाकर	पं० शशि मोहन बहल	50/-
काव्य उपनिषद्	ओशो	50/-
कलियुग में शनि का प्रभाव	पं० शशि मोहन बहल	50/-
विवाह तंत्र और ज्योतिष	पं० शशि मोहन बहल	40/-
शिरडी के साईंबाबा		40/-
ओशो के क्रान्तिकारी विचार	ओशो	40/-
दीपावली पूजन (डबल कलर)	पं० राधा गोविन्द शास्त्री	20/-
श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा (डबल कलर)	पं० राम कुमार शास्त्री	15/-

रजत प्रकाशन

केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट मेरठ-2

मनोकामनादायक एवं फलदायक

जप, तप और व्रत

हिन्दू धर्म की आस्था व विश्वास की धर्मप्राण पुस्तक

बारह महीनों के त्योहारों सहित कथायें, माहात्म्य, सप्तवार कथायें, आरतियां एवं रीतियां

लेखन एवं प्रस्तुति :

आस्था

रजत प्रकाशन

केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट मेरठ-2

चेतावनी—भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित है। इसके किसी भी अंश अथवा चित्र अथवा आवरण, पृष्ठ इत्यादि को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तोड़-मरोड़कर या किसी अन्य भाषा में अनुवाद, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक, कम्प्यूटर या किसी अन्य माध्यम से प्रयोग करना गैरकानूनी व कॉपीराइट का उल्लंघन है। ऐसा करने वाला व्यक्ति स्वयं हर्जे-खर्चे का उत्तरदायी होगा।

ISBN-81-7718-068-1

- पुस्तक : मनोकामनादायक एवं फलदायक जप, तप और व्रत
- लेखक : आस्था
- प्रकाशक : रजत प्रकाशन,
  केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट, मेरठ।
  फोन : (0121) 529882
- कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ। फोन : 612740
- मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, देहली।

- मूल्य : पेपर बैक [100/-] एक सौ मात्र
  सजिल्द लायब्रेरी संस्करण [200/-] दो सौ मात्र

प्राक्कथन

भारतवर्ष धर्मपरायण देश है। इस देश में अनेकों मत एवं धर्म के मानने वाले निवास करते हैं, अनेकता में एकता देश की विशेषता है। भारतवासी ईश्वर के उपासक हैं तथा अनेक प्रकार से प्रभु की उपासना करते हैं, साथ ही अनेक प्रकार के जप, तप व व्रत करते हैं।

इस पुस्तक में वर्ष भर में पड़ने वाले व्रत एवं त्योहारों का विवेचन किया गया है, उनकी महत्ता, मनाने की विधि, लाभ, अनेकों आरतियां, पूजन विधि, व्रत कथायें, व्रत विधि आदि का वेद, पुराणों, शास्त्रों के अनुरूप वर्णन किया गया है। साथ ही अनन्य महाप्रभु के दिव्य आदर्शों पर चलने का आह्वान किया गया है ताकि हमारे जीवन में नई चेतना, अमर ज्योति का पुञ्ज प्रकाश निरन्तर बना रहे तथा मानव–जीवन का सही अर्थ भोगकर हम मोक्ष मार्ग की प्राप्ति कर सकें।

पर्व–त्योहारों को मनाने की भारतीय संस्कृति में महत्ता इसलिए भी है ताकि मानव आपसी भाईचारे और सौहार्द के वातावरण में जीवन यापन कर सके। त्योहारों के बहाने हम आपस से मिलते–जुलते हैं, त्योहारों के अवसर पर मन के द्वेषभाव भुलाकर हम सौहार्द का वातावरण बनाते हैं।

प्राचीन काल के ऋषि–मुनियों की वाणी मनुष्य के लिए वाणी नहीं अमृतधारा साबित होती रही है। उनकी वाणी उनके द्वारा रचित पुराणों और शास्त्रों में फलदायिनी सरिता के समान फैली हुई है। जिस प्रकार स्वाति की बूंद छोटी होती है, परन्तु वह ज्यों ही सीप के मुंह में गिरती है, मोती का रूप धारण कर लेती है; ठीक उसी प्रकार हमारे पूर्वजों की वाणी देखने में महज वाणी दिखाई देती है, पर उनका अनुकरण करने से मनुष्य स्वर्गलोक को प्राप्त होता है। इन अमृतवाणियों में व्रतों का भी वर्णन आता है। व्रत की महिमा के बारे में नारद पुराण में लिखा है–

नास्ति जगा समं तीर्थं नास्ति मातृ समो गुरुः।
नास्ति विष्णु समं देव तपो नानशनात्परम्॥

अर्थात् गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, भगवान विष्णु के समान कोई देव नहीं और उपवास के समान कोई तप नहीं।

यूं तो वर्ष का कोई भी दिन ऐसा नहीं जिस दिन के व्रत की महिमा ऋषियों ने पुराण और शास्त्रों में वर्णित न की हो, परन्तु इस पुस्तक में वर्ष के मुख्य–मुख्य त्योहारों और व्रतों का ही वर्णन किया गया है। इन त्योहारों के मासों का माहात्म्य भी दर्शाया गया है तथा व्रत–त्योहारों के पुण्य फल का भी ज्ञान कराया गया है। देव, स्तुति एवं आरतियों को भी यथोचित् स्थान दिया गया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि धर्मज्ञान की जानकारियां देने, तीज त्योहारों का समग्र ज्ञान प्रस्तुत करने वाली प्रस्तुत धर्मप्राण व्यक्तियों का उचित मार्गदर्शन करेगी और श्रद्धालुगण धर्मपालन एवं धर्म–रक्षार्थ इस पुस्तक से समुचित लाभ उठायेंगे।

–प्रकाशक

हमारे पास उपलब्ध जनरल पुस्तकें

इंटरनेट 'एक सम्पूर्ण जानकारी'	150/-
टैली 6.3 (कम्पलीट एकाउन्टिंग सॉफ्टवेयर)	150/-
मल्टीमीडिया एडवांस कोर्स कोरल 10 सहित	140/-
विजुअल बेसिक	180/-
कोरल ड्रॉ 10	180/-
वर्ड XP	120/-
एक्सेल XP	120/-
रजत सूचना तकनीक	150/-
रजत पी०सी० सॉफ्टवेयर	150/-
रजत डॉस 6.22 प्रोग्रामिंग	75/-
रजत कम्प्यूटर कोर्स	100/-
रजत कम्प्यूटर एकाउन्टिंग कोर्स	100/-
रजत कम्प्यूटर हार्डवेयर मेंटीनेंस कोर्स	100/-
रजत फाक्सप्रो एवं विजुअल फाक्सप्रो	100/-
रजत इन्टरनेट कोर्स (नेटवर्किंग सहित)	125/-
रजत ई० कॉमर्स	120/-
रजत टाटा ई एक्स (एकाऊन्ट्स)	120/-
रजत कम्प्यूटर एडवांस कोर्स	120/-
रजत वैन्चुरा पब्लिशर (D.T.P.)	140/-
रजत एम०एस० ऑफिस 2000	150/-
रजत डी०टी०पी० एडवांस कोर्स	140/-
रजत मल्टीमीडिया एडवांस कोर्स	140/-
रजत एडोब फोटोशॉप (5.0/5.5/6.0)	140/-
रजत एम०एस० विन्डोज 2000	180/-
रजत C एवं C++ प्रोग्रामिंग कोर्स	150/-
रजत जावा	150/-
रजत फ्रंट पेज	150/-
रजत वैब डिजाइनिंग कोर्स	199/-

हास्य व्यंग्य

- हँसी की तरंग — 20.00
- हँसगुल्ला — 20.00
- हँसने में क्या हर्ज है? — 20.00
- गुदगुदी — 20.00

शेरो-शायरी

- गुलिस्तां-ए-शायरी — 20.00
- दिलचस्प शायरी — 20.00
- आसमां तन्हां — 20.00
- शेर-ओ-शायरी — 20.00

स्वेट मार्डन

- आओ चले, जीत की ओर — 100.00
- सुखमय जीवन — 20.00
- सफलता की उड़ान — 20.00
- नया सवेरा — 20.00
- उत्तम जीवन कैसे जियें? — 20.00

ज्योतिष

- ज्योतिष और आपका व्यवसाय — 50.00
- सम्पूर्ण अंक विज्ञान (कीरो) (डिमाई) — 40.00

विश्वविख्यात उपन्यास

- लोलिता—ब्लादीमीर नाबोकोव — 20.00
- लेडी चैटर्ली का प्रेमी — 40.00
- क्लियोपैट्रा — 40.00
- शी और शी की वापसी — 40.00
- डैक्यूला — 40.00

लोकप्रिय कथा साहित्य

- पंचतन्त्र—आचार्य विष्णु शर्मा — 20.00
- हितोपदेश—श्री नारायण पण्डित — 20.00
- जातक कथाएँ — 20.00
- वृहद् चाणक्य नीति—आचार्य चाणक्य — 20.00

ENGLISH SERIES

- Jokes for all Seasons — 30.00
- A Treasury of Outstanding Jokes — 30.00
- Family Jokes — 30.00
- Funny Jokes — 30.00
- Naughty Jokes — 30.00
- Cartoonic Jokes — 30.00
- Adult Jokes — 30.00
- Akbar Birbal — 40.00
- Panchtantra — 40.00
- Legend of Tenalirama — 40.00
- Arabian Nights — 40.00
- Chanakya Neeti — 40.00
- Love's Romantic Stories — 40.00
- Short Stories—Premchand — 50.00
- Language of Hand—Cheiro — 50.00
- Herbal Beauty Care — 60.00
- Mother & Child Care — 60.00
- Gems and Rudrakash — 100.00
- Indian Vastu Shastra — 120.00
- Vaastushastra — 150.00

DICTIONARIES

- *Pocket Anglo Hindi Dictionary* — 30.00
- *Mini Anglo Hindi Dictionary* — 25.00
- *Purse Anglo Hindi Dictionary* — 20.00

धार्मिक

- मनोकामनादायक एवं फलदायक जप तप और व्रत — 100.00
- श्री वैभव महालक्ष्मी व्रत कथा — 15.00

EDUCATIONAL

- अमेरिकन इंगलिश स्पीकिंग कोर्स — 80.00
- ब्रिटिश इंगलिश स्पीकिंग कोर्स — 75.00

अनुक्रमणिका

भगवत् स्तुति

नारायण अच्युत वासुदेव, हे यज्ञेश जनार्दन कमल नयन।
वामन अनन्त अज यज्ञपुरुष, कृष्णा विष्णों अरु क्षीर शयन॥
कमलापति दामोदर नृसिंह, केशव संकर्षण देवेश्वर।
निर्मल प्रकाश से ज्योतिर्मय, दुनिया भर में तुम ही ईश्वर॥
अजन्य मधुसूदन भगवन, गंग जनक श्री राम हरे।
प्रद्युम्न तात अन्तरयामी, को नमस्कार यह दास करे॥
निर्गुण स्वरूप माया वंचित, माया ही जिसकी शक्ति है।
सम्पूर्ण विश्व जिसका स्वरूप, बस नाम ईश की भक्ति है॥
विज्ञान सम्पती रूप तुम्हीं, ध्यान गम्य अरु ज्ञानेश्वर।
मोक्ष स्वरूप ज्ञान स्वरूपा, सर्व व्यापने योगीश्वर॥
ध्येय स्वरूपा ज्ञाता ध्याता, सत्य रूप औ परमेश्वर।
है नमस्कार उस शक्ति को, कहते जिसको सब आधीश्वर॥

आदि पुरुष पौराण पुरुष जो, जिसको कहते विष्णु स्वरूप।
दुनिया को जो संहार करे, रख करके अपना शिव स्वरूप॥
अभेद तत्व अरु नित्य निरंजन, कर्म रहित अरु कर्म विधाता।
कूर्म रूप धारी भगवन को, कहता है जग विश्व विधाता॥
वाराह रूप अरु कंस काल, जो श्रेष्ठ देव यादव कुल के।
साक्षात्कार निर्मल स्वरूप, हृदय बसते जो जन-जन के॥
पुरुषोत्तम अरु प्रर्णपालक जो, ऐसे ईश्वर को नमस्कार।
संसार बसे जिसकी छाया, नत मस्तक करते बार-बार॥
संहार किया प्रह्लाद पिता, प्रहलाद प्राण रखवारे को।
कुम्भकरण जिसने मारा, जिसने दी मुक्ति रावण को॥
जिसने यमुलार्जुन वट तारे, गौ माता के हित चिन्तक को।
जिसने गोवर्द्धन को धारा, ऐसे बलशाली यादव को॥
है शंख चक्र अरु गदा पद्म, जिसके कर में उस ईश्वर को।
वेदान्त वेद जिसको कहते, ज्योति स्वरूप उस ईश्वर को॥
धरणी धर भी जिसको कहते, कहते हैं विश्व मूर्ति जिसको।
धर्म वास जो गुण निधान हैं, श्री निवास अरु ज्ञान मूर्ति को॥
भक्ति भावन जिसको कहते, विमल देह अरु गुण समूह जो।
सांख्यवन्दिने जगन्नाथ जी, शेष देह पर करे शयन जो॥
वन माला जो पहिने रहते, वंशी को लिये रहें कर में।
देह त्रिभंगी किये हुये, विचरा करते जो ब्रज वन में॥
दुनिया की जो रक्षा करते, सन्तों पर कृपा रहे जिनकी।
वन्दे हम उनको बार-बार, करते स्तुति उन भगवान की॥
गीता वक्ता अब देउ शरण, दुनिया में होता चीत्कार।
तेरे चरणों में शीश झुका, वन्दे करते हैं नमस्कार॥
द्वारिकानाथ अब सुनो टेर, पृथ्वी नहिं सहती पाप भार।
नत मस्तक होते भक्त सभी, भक्तों की सुन लो तुम पुकार॥
बस अन्तिम बार कहूं तुमसे, बरसादो सब पर कृपा धार।
लो नमस्कार, लो नमस्कार, सबका लो सत् सत् नमस्कार॥



अध्याय-1



चैत्र मास

चैत्र मास का माहात्म्य

नवरात्रि-दुर्गा पूजन

चैत्र मास शुक्ल प्रतिपदा से लेकर रामनवमी तक यह व्रत चलता है। इन दिनों भगवती दुर्गा एवं कन्या पूजन का बड़ा महत्त्व है। भगवती दुर्गा या मां जगदम्बा के नौ स्वरूप—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धदात्री हैं। इन नौ देवियों की महिमा इस प्रकार है—

1. शैलपुत्री

प्रकृति स्वरूप मां जगदम्बा के नौ स्वरूपों में पहला स्वरूप शैलपुत्री का है। यही सदाशिव की शक्ति है जो नाना रूपों में जगत को संचालित करती है। जगदम्बा दस महाविद्या के रूप में भी विद्यमान है। शैलपुत्री ही उमा, शिवदूती, दक्षकुमारी, माहेश्वरी, शैलजा, सती और पार्वती है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सम्पूर्ण शक्तियां उसमें निहित हैं। वही सृष्टि का आद्योत है।

अपने पति शिव का तिरस्कार सहन न करने पर वह सती के रूप में अपने पिता दक्ष के यहां यज्ञकुण्ड में कूदकर प्राण त्याग देती हैं। तदुपरान्त वह पार्वती के रूप में हिमालय और मैना के यहां जन्म लेती है। तप करके अपर्णा बनती है तथा भगवान शंकर का वरण करती है।

चैत्र मास नववर्ष का मंगल पर्व है। धन–धान्य से सृष्टि परिपूर्ण हो ऐसी मंगल कामना चैत्र मास में की जाती है।

ऋतु परिवर्तन से होने वाली सब व्याधियां शान्त हों, इसलिए प्रकृति स्वरूप मां भगवती की अर्चना से संवत्सर का प्रारम्भ होता है।

विश्व में सभी कुछ भगवती की कृपा से ही है।

शैलपुत्री की पूजा का सिद्ध मंत्र इस प्रकार है–

**'वदे वांछितलाभाय चन्द्रार्ध कृत शेखराम।
वृषारूढ़ां शूलधरां शैलपुत्री यशस्विनीम्॥'**

2. ब्रह्मचारिणी

देवी मंडपों में जगत जननी के दूसरे स्वरूप ब्रह्मचारिणी देवी की पूजा अर्चना होती है। इस दिन ब्रह्म शब्द का एक अर्थ तप है–**वेदस्तत्व तपो ब्रह्म।** अर्थात् वेद तत्व और तप ब्रह्म के ही पर्यायवाची शब्द हैं। ब्रह्मचारिणी वस्तुत! भगवान शंकर की शक्ति है। दाहिने हाथ में जप की माला और बायें हाथ में कमंडल दीप्तिमान आभा मंडल कमलनयनी सुवर्णा और भाव प्रवण आकृति बाली यह देवी तप की प्रतीक है। ब्रह्माण्ड में जो भी कुछ अवस्थित है, वह ब्रह्मचारिणी की ही कृपा से है।

सृष्टि के उद्भव के समय एक प्रचंड ज्योति का प्रादुर्भाव हुआ। भगवान विष्णु, ब्रह्मा उस ज्योति को नमन करके पूछते हैं, यह ज्योति क्या है? इसका प्रस्फुटन कहां से हुआ है? कौन और किसकी यह शक्ति है?

भगवान शंकर उसे अपना ही स्वरूप कहते हैं; क्योंकि यह ज्योति निर्विकार और शब्द वाणी के रूप में थी अतः इसे सदाशिव की शक्ति भी कहा जाता है।

शिव को पति के रूप में वरण करने के लिए पार्वती जी ने तप किया। कठोर तप करने के कारण पार्वती जी का नाम ही अपर्णा और ब्रह्मचारिणी पड़ा। इन्हें ही तपस्विनी भी कहा जाता है। नवरात्रि के प्रारम्भिक स्वरूप शिवदूती के हैं, चाहे उन्हें सती कह लो या अपर्णा पार्वती या ब्रह्मचारिणी इस प्रकार है।

3. चन्द्रघण्टा

देवी का तीसरा स्वरूप चन्द्रिका या चन्द्रघण्टा का है। पृथ्वी पर एक बार चण्ड-मुण्ड नाम के दो राक्षस पैदा हुए थे, दोनों इतने बलवान थे कि संसार में अपना राज्य फैला दिया तथा स्वर्ण देवताओं को हराकर वहां भी अपना अधिकार जमा लिया। इस तरह देवता बहुत दुःखी हुए तथा देवी की स्तुति करने लगे। तब देवी चन्द्रघण्टा (चन्द्रिका) के रूप में अवतरित हुईं एवं चण्ड-मुण्ड नामक राक्षसों को मारकर संसार का दुःख दूर किया। देवताओं का गया हुआ स्वर्ग पुनः उन्हें दे दिया। इस तरह चारों ओर सुख का साम्राज्य स्थापित हुआ।

4. कूष्माण्डा

मां भगवती का चौथा या चतुर्थ स्वरूप कूष्माण्डा का है। चैत्र नवरात्र में संयम

से व्रत रखने वाले को मां कूष्माण्डा की कृपा से किसी वस्तु की कमी नहीं रहा करती तथा वह हर प्रकार की विपत्तियों को सरलता से पार कर जाया करता है।

5. स्कन्दमाता

मां भगवती के पांचवें स्वरूप में स्कन्दमाता अवतरित हुईं। युग निर्माण परिवार के लाखों परिजनों ने वंदनीय माता जी का स्नेह, दुलार एवं संरक्षण पाया है। वन्दनीय स्कन्दमाता जी का परिचय भी शब्दों में नहीं दिया जा सकता, फिर भी साधक मन में अपने ईष्ट का स्मरण और कीर्तन, दृश्यों के भावों तथा शब्दों में ही किया जाता है।

6. कात्यायनी

कात्यायनी देवी मां भगवती का छटा रूप है। कात्यायनी ऋषि के आश्रम में प्रकट होने के कारण इनका नाम कात्यायनी पड़ा। ऋषिकुल का गोत्र भी कात्या था। अस्तु वह कात्यायनी के रूप में विख्यात हैं। ऋषि के पराम्बा की आराधना में तप करके प्रार्थना की—"हे देवी, आप मेरे यहां पुत्री के रूप में जन्म लें।"

कात्यायन ऋषि का तप सफल हुआ और देवी ने उसके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया। ऐसा कहा जाता है कि श्री कृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए गोपियों ने इन्हीं देवी की आराधना की थी। रुकमणी की तो ये आराधना थी। दिव्य स्वरूप और वणी त्रिनेत्री, अष्टभुजी सिंह पे सवार यह देवी साधना और तपस्या को फलीभूत करने वाली हैं।

7. कालरात्रि

काल ही शाश्वत एवं मुक्ति का प्रतीक है। काल की सत्यता से कोई मुंह नहीं मोड़ सकता। महत्त्वाकांक्षाओं की मुट्ठी बांधकर जीव जगत में आता है तथा फिर हाथ पसारे चला जाता है। जो साक्षात् स्वयं में काल हो वह कालरात्रि है। देवी तन्त्र में काली ही कालजयी हैं। भगवान शंकर मृत्यु तथा प्रलय के देव हैं और काली उनकी शक्ति है। पार्वती जी को आमोद-प्रमोद में काली कह देने से शक्ति स्वरूपा मां भगवती काली के नाम से भी प्रसिद्ध हो गयी।

अनन्त शौर्य और शक्ति की आराध्य देवी काली को उपनिषदों में सर्वलोक प्रतिष्ठा कहा जाता है। यह शक्ति अजन्मा और विहंग विनाशिका है। मुक्तकेश, लोलरसना शमशान, शव जलती हुई चिता, नरमुण्ड, पात्र में परिपूर्ण मदिरा काली को प्रिय हैं। मनुष्य जिन चीजों से दूर भागता है, देवी काली की वह सब वस्तुयें

प्रिय हैं। नवरात्रि में काली की पूजा विशिष्ट है। काल और परिस्थितियों को वह पावन और मंगल करती हैं।

8. महागौरी

भवानी का आठवां स्वरूप महागौरी रूप कहा जाता है। सुख-समृद्धि की प्रतीक और सौन्दर्य की यह देवी अधिष्ठात्री हैं। कृषभ वाहिनी और चतुर्भुजी महागौरी अनेक नामों से पुकारी जाती हैं। डमरू वरमुद्रा धारण करने वाली महागौरी सुवासिनी हैं। देवी भागवत में विश्व प्रसूता, सर्वभूतेश महेश्वरी सच्चिदानन्द स्वरूपिणी। आत्म स्वरूपिणी ब्रह्मा, विष्णु, महेश, रूपा आदि नामों से देवी की स्तुति की गयी है। देवी स्वयं कहती हैं, मैं सबकी ईश्वरी, स्वामिनी हूं, उपासकों को धन देने वाली, सूर्य, चन्द्रादि नक्षत्रों को चलाने वाली परब्रह्म ज्ञान स्वरूपा मैं ही हूं। ऐसी गुणों वाली सच्चिदानन्द स्वरूपा सब प्राणियों में चैतन्य रूप से रहने वाली मुझको सब कर्मों में विद्यान करते हैं।

नारद पांचराक्ष के अनुसार भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए गौरी ने कठोर तप किया तप व धूल-मिट्टी से उनका शरीर मलीन हो गया था। शिव ने गंगा जल छिड़का तो उनका शरीर कान्तिमय होकर महागौरी हो गया। महागौरी अक्षत सुहाग की ही अधिष्ठात्री हैं।

9. सिद्धदात्री

देवी का नवां स्वरूप सिद्धदात्री है। देवी ही अणिमा, महिमा, गरिमा, लंघिमा, प्राप्ति, सौम्य, वारीत्व और रशत्व जैसी आठ सिद्धियों को देने वाली हैं। मानव जीवन के यही सिंह तत्व हैं। देवी पुराण के अनुसार भगवान शंकर ने उनकी उपासना से सम्पूर्ण शक्तियों को सिद्ध किया। इसलिये ये समस्त शक्तियों के रूपों में पूजा हुई सिंह सवार प्रसन्न वंदना दिव्य पुंज, चंचल नेत्र वाग्देवी, सिद्धदात्री अनधान्य की अधिष्ठा श्री तथा सरस्वती के समान वाणी को अमृत प्रदान करने वाली हैं। ऋतु परिवर्तन से होने वाले विकार व्याधियों चैत्र नवरात्रों की पूजा, उपवास और तप से दूर हो जाते हैं।

दुर्गा सप्तशती में सिद्धदात्री देवी को सदानन्द, परानन्द और सर्वमंगलों की आराध्य कहा गया है। चैत्र शुक्ल प्रतिस्पदा के ही दिन से घट-स्थापना और जो बोने की क्रिया भक्तों द्वारा की जाती है। दुर्गा, सप्तशती का पाठ होता है, नौ दिन पाठ के साथ हवन और ब्राह्मण भोजन कराना वांछनीय है।

नवरात्रि व्रत कथा—प्राचीन काल में सुरथ नामक राजा थे। एक बार शत्रुओं ने उन पर चढ़ाई कर दी। कात्र. आदि लोग राजा के साथ विश्वासघात करके शत्रु

पक्ष से मिल गये। इस तरह राजा की हार हुई। वे दुःखी और निराश होकर तपस्वी वेष में वन में निवास करने लगे। उसी वन में उन्हें समाधि नाम का वाणिक मिला जो अपने स्त्री–पुत्रों के दुर्व्यवहार से अपमानित होकर वहां निवास करता था। दोनों में परस्पर परिचय हुआ। वे महर्षि मेधा के आश्रम में पहुंचे। महामुनि मेधा के आने का कारण पूछने पर दोनों ने बताया कि "यद्यपि हम दोनों ही अपनों से ही अत्यन्त अपमानित एवं तिरस्कृत हैं, फिर भी उनके प्रति मोह नहीं छूटता इसका क्या कारण है? महर्षि मेधा ने बताया कि–"मन शक्ति के अधीन होता है। आदि शक्ति भगवती के दो रूप हैं विद्या एवं अविद्या। प्रथम ज्ञान स्वरूपा है तथा दूसरी अज्ञान स्वरूपा। अविधा के आदि कारण रूप में उपासना करते हैं। उन्हें वे विद्या स्वरूपा प्राप्त होकर मोक्ष प्रदान करती हैं।

राजा सुरथ ने पूछा–"देवी कौन हैं? उनका जन्म कैसे हुआ?" महामुनि बोले–"राजन्! आप जिस देवी के विषय में प्रश्न पूछ रहे हैं वह नित्य–स्वरूपा और विश्वव्यापिनी हैं। उसके आविर्भाव के कई प्रकार हैं, कल्पांत के समय महाप्रलय होती। उसी समय जब विष्णु भगवान क्षीर सागर के अनन्त शैया पर शयन कर रहे थे, तभी उनके दोनों कर्ण कुहरों से दो दैत्य मधु और केटभ पैदा हुए। धरती पर चरण रखते ही वे दोनों विष्णु की नाभि–कमल से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा को मारने दौड़े। उनके इस भयानक रूप को देखकर ब्रह्माजी ने अनुमान लगाया कि विष्णु के सिवा मेरी कोई शरण नहीं; परन्तु भगवान इस अवसर पर सो रहे थे। तब विष्णु भगवान को जगाने हेतु उनके नयनों में निवास करने वाली योग निद्रा का स्तवन किया। **परिणामतः तमोगुण अधिष्ठात्री** देवी विष्णु भगवान के नेत्र, नासिका, मुख और हृदय से निःसृत होकर आराधक (ब्रह्मा) के सामने खड़ी हो गयी। योग निद्रा निकलते ही भगवान विष्णु जाग उठे। भगवान विष्णु और उन राक्षसों में पांच हजार वर्षों तक युद्ध हुआ। अन्त में वे दोनों विष्णु द्वारा मारे गये।

ऋषि बोले, अब ब्रह्माजी की स्तुति से उत्पन्न माया देवी की वीरता सुनो!

एक बार देवताओं के स्वामी इन्द्र और दैत्य के स्वामी महिषासुर में सौ वर्षों तक घनघोर संग्राम हुआ। इस युद्ध में देवराज इन्द्र की हार हुई एवं महिषासुर इन्द्रलोक का राजा बन बैठा। तब हारे हुए देवगण ब्रह्माजी को आगे करके, भगवान शंकर और विष्णु के पास गये। देवताओं की इस निराशापूर्ण वाणी को सुनकर विष्णु और शंकर को महान क्रोध आया।

भगवान विष्णु के मुख तथा ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि के शरीर से एक पंजीभूत तेज निकला जिससे दिशाएं जलने लगीं। अन्त में यही तेज एक देवी के रूप में परिवर्तित हो गया। देवी ने सम्पू[illegible]ताओं से आयुध शक्ति और आभूषण प्राप्त कर उच्च स्वर से अट्टहासयुक्त गगनभेदी गर्जना की! जिससे पृथ्वी, पर्वत आदि

डोलने लगे और संसार में हलचल मच गई। क्रोधित महिषासुर दैत्य सेना को लेकर इस सिंहनाद की तरफ दौड़ा उसने देखा कि देवी की प्रभा में तीनों लोक अंकित हैं। महिषासुर अपना सम्पूर्ण बल-छल-हृदय लगाकर भी हार गया। देवी के आगे उसकी एक ना चली। अन्त में वह देवी के हाथों मारा गया। आगे चलकर यही देवी शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों का वध करने के लिए गौरी के रूप में उत्पन्न हुई।

इन सब उपाख्यानों को सुनकर मेधा ऋषि ने सुरथ और वाणिक से देवी स्तवन की विधिवत् व्याख्या की। जिसके प्रभाव से दोनों एक नदी-तट पर जाकर तपस्या में लीन हो गये। तीन वर्षोपरान्त दुर्गा जी ने प्रकट होकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया। जिससे वाणिक सांसारिक मोह से मुक्त होकर आत्म-चिन्तन में लग गया। राजा ने शत्रुओं को जीतकर अपना खोया राज वैभव पुनः प्राप्त कर लिया।

गणगौर व्रत

यह व्रत चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है, इसी दिन सधवा स्त्रियां व्रत रखती हैं। कहा जाता है कि इसी दिन भगवान शंकर ने अपनी अर्द्धांगिनी पार्वती को तथा पार्वती ने तमाम स्त्रियों को सौभाग्यशाली कर दिया था।

पूजन के समय रेणुका की गौरी (गौर) बनाकर उस पर चूड़ी, महावर, सिंदूर चढ़ाने का विशेषकर फल है। चन्दन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करने, सुहाग सामग्री चढ़ाने और भोग लगाने का नियम है। यह व्रत रखने वाली स्त्रियों को गौर पर चढ़े सिंदूर को अपनी मांग में लगाना चाहिए।

व्रत कथा—एक बार चैत्र शुक्ल की तृतीया को शंकर जी नारद व पार्वती सहित पृथ्वी का भ्रमण करते हुए एक गांव में पहुंचे। गांव के लोगों को जब पता लगा तो वहां की निर्धन घर की स्त्रियों ने जैसे वे बैठी थीं, वैसे ही थाल में हल्दी, चावल, अक्षत, जल लेकर शिव-पार्वती की पूजा कर पार्वती जी से हरिद्रा (हल्दी) का छींटा लगवाकर मातेश्वरी गौरी से आशीर्वाद व मंगल कामना प्राप्त की। दूसरी तरफ गांव की सम्पन्न परिवार की स्त्रियां सोलह सिंगार से पूर्ण हो छत्तीस प्रकार के भोजन के कर देर से आईं। शिवजी तब पार्वती जी से बोले—"हे पार्वती, तुमने सारा सुहाग प्रसाद तो पहले ही बांट दिया अब इनको क्या दोगी?" पार्वती जी बोलीं—"आप उनकी बात छोड़ें, उन्हें ऊपरी पदार्थों से निर्मित रस दिया है इसलिए उनका सुहाग अक्षुष्ण रहेगा। इन लोगों को मैं अपनी अंगुली चीरकर रक्त सुहाग रस दूंगी जो मेरे समान ही सौभाग्यशाली बन जायेंगी। उन्हें आशीर्वाद दें! पति से आज्ञा ले पार्वती जी ने स्नान कर बालू का महादेव बनाकर पूजन किया तथा प्रसाद खा अपने मस्तक पर टीका लगाया। तब महादेव ने पार्वती जी को आशीर्वाद दिया

कि "आज के दिन जो भी स्त्री मेरा पूजन तथा तुम्हारा व्रत करेगी उसका पति दीर्घायु होगा और अन्त में मोक्ष को प्राप्त होगा। यह कहकर शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये।

चैत्र शुक्ल दोज (बालेन्द्र व्रत)

यह व्रत चैत्र मास की शुक्ल पक्ष दोज को रखा जाता है। इस दिन साल के प्रारम्भ में सबसे पहले दिन चन्द्रमा के दर्शन होते हैं। इस दिन चन्द्रमा छोटे होते हैं; इसलिए इन्हें बालेन्द्र कहते हैं। इस दिन ब्रह्माणी की पूजा करें तथा उनकी प्रतिमा के समक्ष बैठकर हवन करें। जिसमें छवि, अन्न, मिष्ठान आदि की आहुति दें। साथ ही रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य दें।

इस दिन दही, घी का भोजन करें। यह व्रत समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है तथा यह व्रत मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्रदान करता है। इस व्रत के प्रभाव से सुख-समृद्धि व धन में वृद्धि होती है। जो इस दिन ब्राह्मणों को सोने या चांदी की आंख बनवाकर दान करते हैं। वे अगले जन्म में पृथ्वी के राजा बनते हैं।

मत्स्यावतार जयन्ती

यह व्रत चैत्र शुक्ल पक्ष की तृतीया को रखा जाता है। इस दिन भगवान मत्स्यावतार का जन्म माना जाता है, इसलिए इस दिन मत्स्यावतार की पूजा करनी चाहिए। यदि मत्स्यावतार की मूर्ति हो तो उसको स्नान कराके पूजन करें। भोग लगाकर फूल, धूप, दीप, चन्दन आदि से आरती उतारें।

इस दिन चावलों का भोग लगाकर उसी को बांट देवें, कथा सुनें और स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें।

इस प्रकार व्रत व पूजन करने से मनुष्य की रक्षा भगवान करते हैं। जिस प्रकार भगवान की सृष्टि की अन्तिम अंकुरों की रक्षा की थी उसी प्रकार निश्च्छल भाव से पूजन करने वाले भक्तों की भी रक्षा भगवान करते हैं।

कुमार व्रत

यह व्रत चैत्र मास शुक्ल पक्ष की षष्ठमी को धारण किया जाता है। इस दिन भगवान शिवजी के बड़े पुत्र कार्तिकेय जी की पूजा करनी चाहिए। भगवान कार्तिकेय की मूर्ति को शुद्ध जल से स्नान कराने के पश्चात् वस्त्राभूषणों से सुशोभित कर फलों का भोग लगाकर धूप-दीप आदि से आरती उतारें। फलों के भोग को भक्तजनों

में बांटकर स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें, कुमार व्रत रखने वालों में भगवान ऊंचे विचार पैदा करते हैं, धन व पुत्रादि देते हैं, अन्ततः मोक्ष प्रदान करते हैं।

रामनवमी

चैत्र शुक्ल नवमी को जिस दिन भगवान राम ने प्रादुर्भाव होकर बहुत-से दुष्ट राक्षसों को मारकर, इस पृथ्वी का भार उतारा और अपने भक्तों की रक्षा की। इनके चरित्र को ऋषि वाल्मीकि ने रामायण में तथा सन्त तुलसीदास जी ने रामचरित्र मानस में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इन दिनों रामचरित्र मानस और रामायण का पाठ करने से मनुष्य संसार के जन्म-मरण के बंधनों से छूटकर मोक्ष पद को प्राप्त हो जाता है।

पूरे भारतवर्ष के हिन्दू-परिवारों में श्री राम का यह जन्म महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन के व्रत दशमी को करने का विधान है। पूजन के बाद यथाशक्ति सुपात्र ब्राह्मणों को दान करना चाहिए। यह व्रत वास्तव में श्री हनुमान जी की भक्ति, लक्ष्मण जी की निष्ठा एवं जटायु के त्याग का स्मरण कराता है।

व्रत कथा—जब पृथ्वी पर अत्याचार अधिक होने लगे और पृथ्वी इन अत्याचारों को सहन ना कर सकी तब वह गाय के रूप में देवताओं-मुनियों के साथ ब्रह्माजी के समक्ष पहुंचीं। ब्रह्माजी ने जब पृथ्वी का दुःख सुना तो वे पृथ्वी व देवगणों सहित क्षीर सागर के तट पर पहुंचकर विष्णु जी का गुणगान करने लगे। अपने भक्तों की करूण पुकार को सुनकर भगवान विष्णु पूर्व दिशा से अपने तेज को चमकाते हुए प्रकट हुए।

भगवान विष्णु को सभी देवताओं और मुनियों ने दण्डवत् प्रणाम किया, तब भगवान विष्णु ने उनका दुःख पूछा तो ब्रह्माजी कहने लगे कि आप तो अन्तर्यामी हो, सबके घट-घट को जानने वाले हो, आपसे कोई बात छिपी नहीं है।

हे भगवान! पृथ्वी रावण आदि राक्षसों के अत्याचार से बहुत दुःखी है। वह इस दुःख को सह नहीं सकती। आप दयामयी हैं। आपसे प्रार्थना है कि पृथ्वी का भी कष्ट दूर करें।

तब विष्णु भगवान बोले, इस समय पृथ्वी पर राजा दशरथ (जो पहले जन्म में कश्यप जी थे, मैंने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर उनका पुत्र होना स्वीकार कर लिया था) अयोध्या के राजा उनके यहां पुत्र रूप में चार अंशों में माता कौशल्या, सुमित्रा व केकैयी के गर्भ से जन्म लूंगा, तब अपना कार्य सिद्ध करूंगा।

इन्हीं भगवान विष्णु से चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी के दिन राम के रूप में अयोध्या में राजा दशरथ के यहां जन्म लिया। उन्हीं की याद में आज तक रामनवमी का पर्व मनाया जाता है और जब तक सृष्टि रहेगी यह पर्व मनाया जाता रहेगा।

कामदा एकादशी

चैत्र मास में शुक्ल पक्ष को आने वाली एकादशी कामदा एकादशी के नाम से जानी जाती है। इसकी कथा इस प्रकार है—

एक बार की बात है कि नागलोक में पुण्डरिक नामक एक राजा राज्य करता था उसके दरबार में किन्नरों एवं गन्धर्वों का गायन होता रहता था। एक दिन गन्दर्भ ललित दरबार में गाना गा रहा था, अचानक गाते हुए उसे अपनी पत्नी की याद आने से उसकी स्वर लहरी व ताल विकृत होने लगी। उसकी इस त्रुटि को इसके शत्रु कर्कट ने ताड़ लिया और राजा को बता दिया।

राजा पुण्डरिक को अत्यन्त क्रोध आया और उसे राक्षस होने का अभिशाप दे दिया। राक्षस योनि में ललित अपनी पत्नी के संग इधर-उधर भटकता रहता। एक दिन उसकी पत्नी ने विन्ध्य पर्वत पर जाकर ऋष्यमूक ऋषि से अपने पति के उद्धार हेतु विधि पूछी। ऋषि ने ललित को एकादशी का व्रत करने की सलाह दी। ललित ने सच्ची लगन और आस्था से व्रत किया। व्रत के प्रभाव से वह शाप मुक्त हो गन्धर्व स्वरूप को प्राप्त हुआ।

❑❑❑



अध्याय-2



वैशाख मास

वैशाख मास का माहात्म्य

माहात्म्य—एक बार ब्रह्मा पुत्र श्री नारद जी से राजा अम्बरीष ने कहा कि महाराज आप वैशाख मास का माहात्म्य सुनायें।

राजा अम्बरीष के प्रश्न के उत्तर में नारद जी ने बताया, हे राजन्! प्राचीन काल में इक्ष्वांकु वंश में एक शूरवीर, धर्मात्मा, दानी और शत्रुओं पर विजय पाने वाला राजा हुआ करता था। यद्यपि वह धर्मात्मा व दानी था इसके बाद भी वह कभी जल दान नहीं करता था। जल दान न करने के कारण वह तीन जन्म तक चातक की योनि में रहा, उसके बाद एक जन्म में गिद्ध और सात जन्मों तक कुत्ते की योनि भोगी। उसके पश्चात् मिथिलापुरी के राजा शूतकीर्षि के महल में छिपकली योनि में उत्पन्न हुआ।

वह राजा के महल की चौखट पर बैठकर कीड़ों को खाता रहता था। इस प्रकार उसे सत्तासी वर्ष बीत गये। एक बार श्रुतदेव ऋषि के राजमंडल में आने पर राजा ने उनका बड़ा सत्कार किया, मधुपर्क आदि से उनका पूजन करके उनके चरण धोकर अपने माथे पर जल लगाया, इस जल की एक बूंद उस छिपकली पर भी पड़ी, जल की बूंद पड़ते ही छिपकली पवित्र हो गयी और उसको अनेक जन्मों का ज्ञान हो गया। वह पुकार के बोली, ब्राह्मण देवता मेरी रक्षा करो। ऐसे आश्चर्ययुक्त वचन सुनकर ऋषि कहने लगे कि तुम कौन हो और तुम इतना विलाप क्यों कर रहे हो?

तुम अपना दुःख मुझसे कहो मैं तुम्हारा उद्धार करूंगा।

छिपकली के सारे दुःखों को सुनकर ऋषि बोले—

मैंने अपने ज्ञानचक्षुओं से यह जान लिया है कि तुम यद्यपि बड़े धर्मात्मा राजा थे परन्तु तुमने भगवान के प्रिय वैशाख मास में ब्राह्मणों को जल दान नहीं दिया, कूपात्रों को ही दान देते रहे। तुमने न तो वैशाख मास में जल दान दिया और न

ही साधु सेवा की, इसी कारण दुःख भोग रहे हो। अतः जो मैंने वैशाख मास में पुण्य किये हैं वह मैं तुझे अर्पण करता हूं। ऋषि ने ऐसा संकल्प करके वैशाख मास के एक दिन के स्नान के फल का संकल्प उस छिपकली के ऊपर फेंक दिया।

राजा छिपकली योनि से मुक्त हो कुत्स्य नामक प्रभावशाली राजा बना और गुरु वशिष्ठ जी के उपदेश से वैशाख मास के दान तथा स्नान से भगवान की मुक्ति को प्राप्त हो गया।

सांपदा (दसिया) का डोरा व्रत

होली से दूसरे दिन जो स्त्री दसिया का डोरा बांधे और वैशाख मास में कोई शुभ दिन देखकर यह डोरा खोले और व्रत करे, इस दिन सांपदा की कहानी सुने, इस दिन हलवा व पूरी का भोजन बनाये।

रानी फूलों की माला बनाकर बाजार में बेचने जाती।

एक दिन रानी ने कुछ स्त्रियों को सांपदा माता की कथा व व्रत करते देखा, रानी ने भी कथा सुन डोरा धारण किया। इसी दिन नगर के राजा ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो भी घोड़े की उल्टी जीन पर चढ़कर निशाना लगायेगा उससे मैं अपनी बेटी का विवाह कर दूंगा। राजा नल का विवाह राजा की पुत्री से हो गया। एक दिन राजा-रानी चौसर खेल रहे थे तभी राजा को अपनी रानी की याद आयी। दूसरे ही दिन राजा नई रानी व सिपाहियों सहित बाग में पहुंचकर पहली रानी को साथ ले अपने मित्र के महल में पहुंचा तथा उसने अपने मित्र को खूंटी पर टंगा हार दिखाया। अपनी बहन के बाग में आकर घड़ा निकाला वह हीरो से भरा था। राजा वह घड़ा अपनी बहन को दे चल दिया। राह में तालाब के किनारे उन्हें तीसरा घड़ा मिला। जब राजा अपने राज्य में पहुंचा तो वहां पहले का ही तरह खुशहाली थी तथा सम्पूर्ण खजाने पहले के जैसे ही भरे पड़े थे। मां सांपदा ने जिस प्रकार राजा का भला किया वैसे सब का करें।

सांपदा (दसिया) व्रत की उद्यापन विधि–इस व्रत को आठ वर्ष तक करें तथा फिर उद्यापन कर दें। जिस दिन उद्यापन करें उस दिन व्रत धारण करने वाली स्त्री सोलह श्रृंगार कर 16 जगह 4-4 पूरी तथा साड़ी व रुपये रखें। तत्पश्चात् जल हाथ में लेकर थाली के चारों ओर हाथ की परिक्रमा कर अपनी सासू मां के पैर छू कर दे दें।

इसी दिन 16 ब्रह्मचारिणी को भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा देकर विदा करें।

बुड्ढा बसौड़ा

वैशाख मास लगते ही सोमवार तथा बुधवार या शुक्रवार के दिन सुबह एक

थाली में एक दिन पहले बने भात, रोटी, पूरी, दही, चीनी, जल का गिलास, रोली, चावल, मोली, मूंग की दाल छिलका वाली, हल्दी, धूपबत्ती एक गूलरी की एक माला, मोठ, बापरा आदि सामान रखें।

उस थाली में घर के सभी प्राणियों का हाथ लगवाकर किसी घर के व्यक्ति द्वारा शीतला माता पर भेज दें। वह व्यक्ति इस सब सामान को शीतला माता की पूजा करके चढ़ा दें।

एक कलश पानी शीतला मां पर तथा एक कलश चौराहे पर चढ़ा दें। मोठ, बाजरा और रुपये रखकर बायना निकालें और अपनी सासू मां को पैर छूकर दें। इस दिन शीतला मां की पूजा करें व ठण्डा खाना खायें।

कश्यपावतार

यह त्योहार वैशाख मास की एकम को मनाया जाता है। इस दिन भगवान कश्यप की पूजा करनी चाहिए। सर्वप्रथम भगवान कश्यप जी को स्नान करायें तथा वस्त्रादि पहनाकर उन्हें भोग लगायें।

भोग लगाने के उपरान्त आचमन कराकर, फूल, धूप, दीप, चन्दन आदि से भगवान कश्यप हर कार्य में सहायता करते हैं और मनोकामनाओं को पूरा करते हैं।

कश्यपावतार की कथा—एक समय देवताओं को असुरों ने हराकर इन्द्र सहित सभी देवताओं को इन्द्रलोक भगा दिया। सभी देवगण भगवान विष्णु के समक्ष पहुंचकर प्रार्थना करने लगे। तब भगवान बोले—"हे देवगणों! तुम क्षीर सागर का मंथन करो। उसमें से तुम्हें रत्न व अमृत की प्राप्ति होगी। उस अमृत को तुम सब देवता पी लेना, फिर असुर तुम्हें हरा नहीं सकेंगे।" देवगण भगवान से पूछने लगे, "हे प्रभु! हम मंथनी किसको बनायें और रस्सी किसको बनायें?" तब भगवान बोले, "हे देवताओं! मन्दराचल पर्वत की रई बनाओ, शेषनाग की रस्सी बनाकर लपेटो। उसके नीचे मैं कच्छप का रूप रखकर मन्दराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण करूंगा। तुम नाग की पूंछ की तरफ रहना तथा असुरों को फन की तरफ रखना।"

ऐसा ही हुआ। फिर समुद्र मंथन हुआ। उसमें से चौदह रत्न और अमृत निकला।

यह मंथनी वैशाख मास प्रतिपदा को शुरू हुई। इसी दिन भगवान विष्णु ने कश्यप अवतार धारण किया। इसी से इस दिन कश्यप अवतार की पूजा होती है।

शीतला अष्टमी

वैशाख कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शीतला देवी की पूजा चेचक निकलने के प्रकोप से परिवार को सुरक्षित रखने के लिए की जाती है। ऐसी प्राचीन मान्यता

है कि जिस घर की स्त्रियां शुद्ध मन से इस व्रत को करती हैं, उनके परिवार को शीतला देवी अवश्य आशीर्वाद देती हैं।

इस व्रत के दिन चूल्हा नहीं जलाते। व्रत में एक दिन पूर्व ही खाने-पीने की सामग्री रख ली जाती है। इस बासी भोजन को दूसरे दिन परिवार के लोग खाते हैं। जिसे कहीं-कहीं बिसियौरा या 'बसौड़ा' कहा जाता है। इसी दिन स्त्रियां प्रातः शुद्ध होकर, रोली, चन्दन, दही, अक्षत, फूल, जल आदि देवी को चढ़ाती हैं। जिस घर में चेचक से कोई बीमारी हो उस घर में इस व्रत को नहीं करना चाहिए।

रक्षक माता सम नाहीं दुनिया की जो मात।
छाती से चिपटा रखे अपने-अपने तात॥

बरूथिनी एकादशी

बरूथिनी एकादशी वैशाख कृष्ण पक्ष में एकादशी के दिन मनाई जाती है। यह व्रत सुख सौभाग्य का प्रतीक है। सुपात्र ब्राह्मण को दान देने, करोड़ों वर्षों तक तपस्या करने और कन्यादान के भी फल से बढ़कर (बरूथिनी एकादशी) का व्रत है। इस व्रत को करने वाले के लिए खासतौर से उस दिन खाना, दातुन करना, परनिन्दा, क्रोध करना और मसल बोलना वर्जित है। इस व्रत में अलोना रहकर तेलयुक्त भोजन नहीं करना चाहिए। इसका माहात्म्य सुनने से सौ गौ की हत्या के पाप से भी मुक्त हो जाते हैं। इस तरह यह अत्यधिक फलदायक व्रत है।

व्रत की कथा (प्रथम)—प्राचीन काल की बात है, काशी नगरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसके तीन लड़के थे। उसका सबसे बड़ा बेटा बुरे विचारों वाला पापी पुरुष था। उनका परिवार भिक्षा से चलता था। वह ब्राह्मण प्रातः ही भिक्षा हेतु निकल जाता और सायंकाल घर वापिस आता।

एक दिन उस ब्राह्मण को बुखार हो गया और उसने अपने तीनों पुत्र भिक्षा हेतु भेज दिये। पिता की आज्ञा से तीनों पुत्र भिक्षा मांगकर सायंकाल वापिस आये। ब्राह्मण ने जब देखा उसके पुत्र भिक्षा लेकर आये हैं तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। इस प्रकार उनकी गृहस्थी चलती रही।

एक दिन बाप ने बेटों से कहा—"बेटा घर पर बैठकर शास्त्रों और वेदों को पढ़ना शुरू कर दो।" पिता की बात सुन बड़ा बेटा वहां से चला गया और दोनों छोटे लड़के शास्त्रों और वेदों का अध्ययन करने लगे। दोनों पुत्र विद्वान् बन गये।

एक दिन बड़ा लड़का भिक्षा मांगने गया। उसने पहला दरवाजा खटखटाया। अन्दर से एक अत्यन्त सुन्दर युवती निकली। युवती को देख उसके मन में प्रेम की भावना जाग्रत हो उठी। वह उस युवती को बातों में फंसाकर अपने घर ले

गया। ब्राह्मण ने अपने पुत्र के कुकर्म पर क्रुद्ध होकर घर से निकाल दिया।

एक बार छोटा लड़का भिक्षा मांगते-मांगते अपने बड़े भाई के घर तक जा पहुंचा। अपने छोटे भाई को देख बड़े भाई ने उसे अपने पास बैठाया और अपने पापों से मुक्त होने का उपाय पूछने लगा।

छोटा लड़का बोला-"वैशाख मास की कृष्ण पक्ष एकादशी को बरूथिनी एकादशी कहते हैं। उसका तुम व्रत रखना और भगवान श्री हरि के बारह अवतारों की पूजा करना। रात्रि में उनकी मूर्ति के पास ही सोना। दिन में ब्राह्मणों को भोजन कराकर सोने की अंगूठी दान में देना। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे।"

अपने छोटे भाई की बात मान बड़े भाई ने बरूथिनी एकादशी का व्रत रख, विधि-विधान से बारह अवतारों की पूजा कर, ब्राह्मणों को भोजन कराकर उनका आशीर्वाद लिया। दिन में हरि कीर्तन किया और रात्रि में मन्दिर में ही सो गया। उसने शीघ्र ही स्वप्न में श्री हरि के दर्शन किये तथा अपने समस्त पापों से मुक्त हो गया।

प्रातःकाल उठकर अपनी पत्नी के समक्ष जाकर सारा वृतान्त कह सुनाया। स्वप्न सुनकर उसकी पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुई। दोनों अपने पिता के पास पहुंचे और प्रणाम किया। पिता अपने पुत्र को क्षमा कर घर के भीतर ले गया। वे सब आनन्द से रहने लगे। बड़े लड़के ने भी शास्त्रों व वेदों का अध्ययन कर विद्वत्ता का ज्ञान प्राप्त किया। हे एकादशी माता! जिस प्रकार ब्राह्मण के लड़के को पाप मुक्त किया वैसे ही सबको करना।

व्रत की कथा (द्वितीय)-प्राचीन काल में नर्मदा नदी के तट पर मानधाता नामक राजा राज्य-सुख भोग रहा था। राजकाज करते हुए भी वह अत्यन्त दानशील और तपस्वी था। एक दिन जब वह तपस्या कर रहा था, उसी समय एक जंगली भालू आकर उसका पैर चबाने लगा। थोड़ी देर बाद वह राजा को घसीट कर वन में ले गया। तब राजा ने घबराकर तापस धर्म के अनुकूल हिंसा-क्रोध न करके भगवान विष्णु से प्रार्थना की।

भक्तवत्सल भगवान प्रकट हुए और भालू को चक्र से मार डाला। राजा का पैर भालू खा चुका था। इससे वह बहुत शोकाकुल हुआ। विष्णु भगवान वाराह अवतार मूर्ति की पूजा बरूथिनी एकादशी का व्रत रखकर करो, उसके प्रभाव से तुम पुनः सम्पूर्ण अंगों वाले हो जाओगे। भालू ने जो तुम्हें काटा है यह तुम्हारा पूर्व जन्म का पाप था।

राजा ने इस व्रत को अपार श्रद्धा से किया और सुन्दर अंगों वाला हो गया।

आखातीज (अक्षय-तृतीया)

आखातीज या अक्षय-तृतीया वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को कहते हैं। इस दिन किये होम, जप, तप, स्नान इत्यादि अक्षय रहते हैं। इस दिन परशुराम का जन्म होने के कारण इसे 'परशुराम तीज' के नाम से जानते हैं। त्रेता युग का आरम्भ भी इसी तीज से हुआ है।

इस दिन गंगास्नान का बड़ा भारी माहात्म्य है। इस दिन स्वर्गीय आत्माओं की प्रसन्नता के लिए दान देना चाहिए। उसी दिन बद्री नारायण जी के चित्र को सिंहासन पर भिक्षी और भीगी चने की दाल से भोग लगायें।

व्रत कथा (प्रथम)—बहुत समय की बात है महादेय नामक एक वैश्य कुशवती नामक नगरी में रहता था। उसने किसी पण्डित से अक्षय तीज का नाम सुना, तब फिर उसने उसका नियमपूर्वक व्रत रखा। इस व्रत के प्रताप से वह कुशवती नामक नगरी का महाप्रतापी राजा हुआ। उसका खजाना हर समय हीरे-जवाहरातों से भरा रहता था। वह राजा दान भी करता था।

एक बार कुछ मित्रों के पूछने पर आखातीज व्रत की बात बतायी। तब राजा ने नगर में भी इस व्रत की घोषणा करवा दी। सभी नगरवासी धन-धान्य से परिपूर्ण हो गये।

व्रत कथा (द्वितीय)—जब राजा युधिष्ठिर का अश्वमेघ यज्ञ हो रहा था तभी एक नेवला वहां लोट लगाने लगा। कुछ लोगों ने देखा उस नेवले का आधा शरीर स्वर्ण का बना हुआ है। युधिष्ठिर ने इसका कारण पुरोहित से पूछा। उन्होंने नेवले से ही पूछने की सलाह दी।

राजा ने नेवले से पूछा तो नेवला कहने लगा—"तुम्हारा यज्ञ अक्षय-तीज के दिन दिये गये गेहूं के दानों के बराबर भी नहीं है।"

तब युधिष्ठिर के पूछने पर नेवला बोला—"मुगल नाम का एक ब्राह्मण खेतों से दाने बीनकर अपना पोषण किया करता था। वह सत्यवादी था। एक दिन भगवान ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। वे अक्षय-तीज के दिन उसके पास आये और अन्न-जल मांगा। ब्राह्मण ने अपना और अपनी स्त्री का भाग उठाकर दे दिया।

देते समय कुछ दाने पृथ्वी पर गिर गये। मैं वहां लेट रहा था, तब लेटते ही मेरी काया स्वर्ण की हो गई। तब से मैं पूरे शरीर को स्वर्णमयी करने के लिए यज्ञों में घूम रहा हूं परन्तु आखातीज के दाने के बराबर कोई यज्ञ फलदायक नहीं मिला, जिससे मेरी सम्पूर्ण स्वर्ण काया हो जाएगी।" यह सुनकर युधिष्ठिर लज्जित हुए और आखातीज का उसी दिन से नियमपूर्वक व्रत करने लगे।

मोहनी एकादशी

मोहनी एकादशी का व्रत वैशाख शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की पूजा का विधान है। ईश्वर की प्रतिमा को पंचामृत से स्नानादि से शुद्ध कराकर श्वेत वस्त्र पहनाने चाहिएं। उच्चासन पर बैठकर, धूप, दीप से आरती उतारते हुए मीठे फलों से भोग लगाना चाहिए। प्रसाद वितरित कर ब्राह्मण को भोजन और दान-दक्षिणा देनी चाहिए। रात्रि में भगवान का कीर्तन करते हुए मूर्ति के निकट ही शयन करना चाहिए। एकादशी व्रत के प्रभाव से निन्दित कार्यों सें छुटकारा मिल जाता है।

व्रत कथा—किसी समय में व्यासरा गांव में एक ब्राह्मण रहता था। उसके एक पुत्र था। जब उसका पुत्र कुछ बड़ा हुआ तो वह ब्राह्मण अपने पुत्र को लेकर काशी नगरी में अपने कुलगुरु के पास पहुंचा। कुलगुरु जी को दण्डवत् नमस्कार कर वह बोला—"हे गुरुदेव! चन्द्रपाल नामक यह मेरा पुत्र है, इसको विद्या पढ़वाने के लिए आपके चरणों में लाया हूं। इसे शिक्षा दीजिये।"

गुरुदेव ने ब्राह्मण के वचनों को सुनकर अपनी सहमति दे दी। गुरुदेव ने 25 वर्ष तक चन्द्रपाल को शिक्षा दी। एक दिन जब गुरु घर पर नहीं थे तब गुरु-पत्नी के रूप को देखकर उसका मन विचलित हो उठा। उसने गुरु-पत्नी के साथ जबरदस्ती इच्छा-पूर्ति कर और वहां से भाग गया।

एक कुएं के पास जा हाथ मुंह-धो वहीं सो गया। वहां से शिवजी व पार्वतीजी होकर जा रहे थे। कुएं के पास किसी को सोया देख वहां आ गये। चन्द्रपाल डर के मारे शंकर जी को गुरु समझकर क्षमा याचना करनें लगा।

शिवजी के पूछने पर उसने सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। तब शंकर जी बोले—"हे ब्राह्मण! मैं शंकर हूं। तू वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को व्रत रखना, तेरे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जायेंगे।

जब मोहनी एकादशी आई तब उसने व्रत रखा, तो उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये। अन्त में वह स्वर्ग को गया।

श्री नृसिंह जयन्ती

वैशाख शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को नृसिंह भगवान ने खम्भे को फाड़कर भक्त प्रहलाद की रक्षार्थ अवतार लिया था। इसलिए इस दिन यह जयन्ती समारोह मनाया जाता है। इस तिथि का व्रत रहकर मध्याह्न के समय वैदिक मंत्रों के उच्चारण से स्नान करना चाहिए। भगवान नृसिंह शक्ति और पराक्रम के प्रमुख देवता हैं।

पूजा-स्थान को गोबर से लीपकर तथा कलश में तांबा आदि डालकर उसमें अष्टबल कमल बनाना चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार गोदान, बिल्व, स्वर्ण और वस्त्र इत्यादि का दान देना चाहिए। विजय नगर के राजाओं का नृसिंह मूर्ति ही राजचिह्न था।

सायंकाल को नृसिंह को पंचामृत में तुलसी दल डालकर स्नान करावें। फूल, दीप, धूप आदि से आरती उतारें, उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान से क्षमा की प्रार्थना करें—

तप्तहारक के शान्त ज्वल-पावकलोचन।
व्रज्राधिक नख स्पर्श दिव्य सिंह नमोऽस्तुते॥

व्रत की कथा—पुराणों के अनुसार प्राचीन काल से कश्यप नामक एक राजा थे। उनकी प्राण प्रबलता का नाम महारानी दिति था। रानी दिति के दो पुत्र थे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु। जिसके दूसरे पुत्र हिरण्याक्ष को भगवान विष्णु ने बाराह रूप धारण करके मार डाला था। जिसके फलस्वरूप हिरण्यकशिपु अत्यधिक क्रोधित हुआ और भाई का बदला लेने के लिए कठिन तपस्या के द्वारा ब्रह्मा और शंकर को प्रसन्न किया। पितामह ब्रह्मा ने उसे अजय होने का वरदान दिया।

वरदान के गर्व से वह प्रजा पर अत्याचार करने लगा, उसी समय उसकी पत्नी की कोख से प्रहलाद का जन्म हुआ। जबकि प्रहलाद का जन्म राक्षस के घर में हुआ था। फिर भी वह भगवत-भक्त एवं पिता का विरोधी था। हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद का मन राम शक्ति से विमुख करने के लिए करोड़ों नीतियां खेल डालीं, परन्तु उसके ऊपर उनका लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अन्त में उसने प्रहलाद को मार डालने के लिए बहुत-से षड़यंत्र रचे; जैसे पर्वत की चोटी से गिराना, समुद्र में डुबाना, सांपों की कोठरी में छोड़ना, मतवाले हाथी के आगे रखना और अग्नि में जलाना इत्यादि बहुत सारे असफल प्रयास किये, परन्तु प्रहलाद का बाल भी बांका न हो सका।

एक दिन प्रहलाद के कार्य से आगबबूला होकर हिरण्यकशिपु ने तलवार दिखाकर पूछा—"बता तेरा ईश्वर कहां है?" यह सुनकर प्रहलाद विनम्र भाव से बोला—"पिताजी! भगवान प्रत्येक जगह व्याप्त हैं।" हिरण्यकशिपु ने कहा—"इस खम्भे में भी है तेरा ईश्वर?" प्रहलाद ने कहा, "इस खम्भे में भी है।" क्रोधवश हो हिरण्यकशिपु ने खम्भे पर खडग प्रहार किया। तभी नृसिंह भगवान खम्भा फाड़कर प्रकट हो गये। नृसिंह भगवान ने हिरण्यकशिपु को गोद में उठाकर तेज नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला।

पिता की मृत्यु के पश्चात् भक्त प्रहलाद ने नृसिंह भगवान से प्रार्थना कर

हिरण्यकशिपु को मोक्ष प्राप्त कराया। प्रसन्न होकर ईश्वर ने प्रहलाद की स्तुतियों को स्वीकार कर लिया और यह कहा–

"जो मनुष्य मेरा पूजन या व्रत करेंगे वे पापों से मुक्त होकर परम धाम को प्राप्त करेंगे।"

लिंग व्रत

यह व्रत वैशाख मास शुक्ल पक्ष की चौदस को किया जाता है। जिस दिन नृसिंह जयन्ती होती है उसी दिन यह व्रत भी किया जाता है। इस दिन शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए।

पहले आटे का एक शिवलिंग स्थापित करें। तत्पश्चात् उसे पंचामृत से स्नान कराकर कुमकुम का लेप लगावें। सुन्दर वस्त्राभूषण से सुशोभित कर धूप, दीप नैवेद्य, फूल आदि से पूजा करें।

इस प्रकार व्रत धारण करने से वे अपने सभी मनोरथों को पूर्ण कर लेते हैं। संझारिक भोगों को भोगकर अन्त समय दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति करते हैं। इस दिन (ओंकारेश्वर) को याद करना चाहिए। इससे मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करके स्वर्ग में भी ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

लिंगपूजा विमर्श–सुर गुरु सुखर पूजित लिंगन सुरल पुष्प सदार्चितलिंग परात्पर परमात्मक लिंगन, तत्प्रणभूमि सदाशिव लिंगन।

अधिकांश मन्दिरों में शिवलिंग की ही स्थापना है। प्रतिष्ठित प्रतिमा के अभाव में पार्थिव लिंगपूजन का विधान है। अनेक स्वयंभुव शिवलिंग पाये जाते हैं और काश्मीर स्थित अमरनाथ गुफा में हिम से प्राकृतिक शिवलिंग स्वतः बन जाता है।

धर्मराज व्रत (सत्य विनामक पूर्णिमा)

यह व्रत वैशाख मास की पूर्णिमा को रखा जाता है। इस दिन धर्मराज की पूजा करनी चाहिए। धर्मराज की मूर्ति को स्नान कराकर अच्छे वस्त्र पहनाकर, फल चढ़ाकर, दीप–धूप से पूजा करें। इस दिन जल से भरा हुआ मटका, पकवान और पान आदि ब्राह्मणों को दान देकर स्वयं भोजन करना चाहिए।

इस दिन जल से भरा मटका दान देने से स्वर्ण से भरे कलश को दान करने का फल है। पकवान दान देने से गौ के दान के बराबर फल मिलता है। इस व्रत से धर्मराज प्रसन्न होते हैं।

□□□





अध्याय-3

ज्येष्ठ मास

ज्येष्ठ मास का माहात्म्य

महर्षि स्कंद जी अपने शिष्यों को ज्येष्ठ मास का माहात्म्य सुनाते हुए कहने लगे कि ज्येष्ठ मास का माहात्म्य अन्य मास के माहात्म्यों से श्रेष्ठ है। इस मास में जल दान देने का विशेष महत्त्व है, वैसे तो प्रत्येक मास अपने आप में विशेषता रखता है परन्तु इस मास में थोड़ा-सा दान अधिक पुण्य प्रदान करता है। इस मास में भगवान का सच्चे हृदय से ध्यान करने वाले मनुष्यों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मास के देवता श्री हरि विष्णु भगवान जी हैं।

इस मास में घर-दान, जल-दान तलयन्त्र (व्यंजन) दान, चन्दन-दान, हल-दान और जूतों के दान से शान्ति प्राप्त होती है। चन्दन दान से देवता, पितर, ऋषि और मनुष्य सब ही प्रसन्न होते हैं। इसलिए अपनी शक्ति के अनुसार इन दोनों को करना चाहिए। निर्जन देश में प्राणी मात्र की रक्षा के लिए जल का दान। रास्ते में छायादार वृक्षों को लगाना। इस मास में जल-दान का विधान विशेष है। जो मनुष्य ज्येष्ठ मास में जल का दान नहीं करता वह नर्क की यातना भोगकर पपीहा की योनि में पड़ता है। इस विषय में एक प्राचीन इतिहास है।

त्रेता युग के अन्त में माहष्मतिपुरी में वेद-वेदान्तों के जानने वाला सुमन्त नाम का एक श्रेष्ठ ब्राह्मण था। उसकी पत्नी का नाम गुणवती था। उसके देव शर्मा नाम का एक पुत्र भी था।

एक दिन वह ब्राह्मण समाधि लगाने के लिए वन में गया। वहां सुन्दर सरोवर का जल पीकर वृक्ष की छाया में वहीं पर सो गया। वहां पर जो भी जीव जल पीने आता उसे देखकर डरकर भाग जाता। जल न पीने के कारण कई एक प्यासे ही मर गये। सूर्य नारायण के अस्त हो जाने पर जब वह अपने घर पर आया तो अज्ञात पाप के दोष से मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसकी पतिव्रता स्त्री अपने पुत्र और घर आदि को त्याग कर उसके साथ सती हो गई।

अज्ञात पाप के दोष से वह कई दिनों तक नर्क की यातना भोगकर चातक की योनि में पड़ा। तब वह अपने पूर्व के कर्मों को याद करके रोने लगा। उसके रुदन को सुनकर उसके पुत्र ने कई बार उसको मना किया, परन्तु उसका रुदन बन्द नहीं हुआ। तब क्रोध में आकर उसके पुत्र ने उस वृक्ष में आग लगा दी और उन दोनों चातक व चातकी के पंख जल गए और वो वृक्ष के नीचे गिर पड़े और आपस में अपने कष्ट की बात करने लग गये।

उनकी बातों को सुनकर उनके पुत्र को बड़ा विस्मय हुआ और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण से पूछने के लिए उनके आश्रम में गया और अपने माता-पिता का सब वृतान्त उसने कहा तथा उनके उद्धार के लिए उपाय पूछने लगा। उनके कहने पर उसने अपने माता-पिता के निर्मित निर्जन वन में प्याऊ लगवा दी, जहां पर सब मनुष्य, पक्षी और जन्तु आकर जल पीने लगे। उसके इस पुण्य के प्रभाव से उसके माता-पिता बैकुण्ठ धाम को चले गये।

अपरा एकादशी व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी को अपरा एकादशी कहते हैं। इस दिन भगवान त्रिविक्रम की पूजा करनी चाहिए। इस दिन भगवान त्रिविक्रम की पूजा करके व्रत रखकर भगवान विक्रम का शुद्ध जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहनायें फिर धूप, दीप, फूल से उनका पूजन करें।

ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा दें। उनका आशीर्वाद प्राप्त कर उन्हें विदा करें। दिन में भगवान की मूर्ति के समक्ष बैठकर कीर्तन करें। रात्रि में मूर्ति के चरणों में शयन करें। इस दिन फलाहार करें।

जो इस प्रकार व्रत करता है वह मोक्ष को प्राप्त हो स्वर्ण लोक को जाता है, साथ ही इस व्रत के करने से पीपल के काटने का पाप दूर हो जाता है।

अपरा एकादशी व्रत कथा–महीध्वज नामक एक धर्मात्मा राजा था जिसका छोटा भाई व्रतध्वज बड़ा ही क्रूर, अधर्मी और अन्यायी था। वह अपने बड़े भाई से बड़ा द्वेष रखता था। उस अवसरवादी पापिष्ठ ने एक दिन रात्रि में अपने बड़े भाई की हत्या करके उसकी देह को जंगल में पीपल के वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। मृत्यु के उपरान्त वह राजा प्रेतात्मा के रूप में पीपल के वृक्ष पर अनेक उत्पात करने लगा। अचानक एक दिन धौम्य नामक ऋषि उधर से गुजरे। उन्होंने तपोबल से प्रेत के उत्पात का कारण और जीवन वृतान्त समझा। ऋषि ने प्रसन्न होकर उस प्रेत को पीपल के वृक्ष से उतारा और परलोक विद्या का उपदेश दिया। अन्त में इस प्रेतात्मा से मुक्त होने के लिए उससे अपरा एकादशी का व्रत करने को कहा। जिससे वह राजा दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्ग लोक को चला गया।

बड़सौमत या बड़-सावित्री व्रत

बड़सौमत ज्येष्ठ की अमावस्या को मनाई जाती है, इस दिन बड़ के पेड़ की पूजा करनी चाहिए। यह व्रत केवल औरतों को ही करना चाहिए।

एक थाल में जल, रोली, चावल, हल्दी, गुड़, भीगे चने आदि लेकर बड़ के पेड़ के नीचे बैठना चाहिए। बड़ के तने पर रोली का टीका लगाकर चना, गुड़, चावल सबको बड़ के पेड़ के नीचे चढ़ा दें। घी का दीपक व धूप जलाये।

तत्पश्चात् कच्चे सूत के धागे को हल्दी में रंगकर बड़ के पेड़ पर लपेटते हुए सात परिक्रमा लें। बड़ के पत्तों की माला बनाकर पहन लें। कहानी सुनें। घर में बनी वस्तु व चने, रुपये रखकर बायने के रूप में पैर छूकर अपनी सासू मां को दें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। इस दिन बड़ के पेड़ के साथ-साथ सत्यवान सावित्री और यमराज की पूजा की जाती है। तत्पश्चात फलों का भक्षण किया जाता है। सावित्री ने इस व्रत के प्रभाव से अपने मृतक पति सत्यवान को धर्मराज से छुड़ा लिया था। सुवर्ण या मिट्टी से सावित्री, सत्यवान तथा भैंसे पर सवार यमराज की प्रतिमा बनाकर धूप, चन्दन, दीपक, फल, रोली, केसर से पूजा करनी चाहिए और सत्यवान सावित्री की कथा सुननी चाहिए।

व्रत की कथा–भद्र देश के राजा अश्वपति के यहां पुत्री के रूप में सर्वगुण सम्पन्न सावित्री का जन्म हुआ। राजकन्या ने धुमत्सेन के पुत्र सत्यवान की कीर्ति सुनकर उसे अपने पति रूप में वरण कर लिया।

इधर जब यह बात देवऋषि नारद जी को पता चली तो वे अश्वपति से जाकर कहने लगे कि आपकी कन्या ने वर खोजने में निःसन्देह भूल की है। निःसंदेह सत्यवान गुणवान और धर्मात्मा है किन्तु वह अल्पायु है। एक वर्ष के पश्चात् ही उसकी मृत्यु हो जायेगी।

नारद जी की यह बात सुनकर राजा अश्वपति का चेहरा विर्वज हो गया।

'वृक्षा नहोहि देव ऋषि बानि' ऐसा विचार करके उन्होंने अपनी पुत्री को समझाया कि ऐसे अल्पायु व्यक्ति के साथ विवाह करना उचित नहीं है। इसलिए कोई अन्य वर चुन लो। इस पर सावित्री बोली–"पिताजी! आर्य कन्याएं अपना वर एक बार ही वरण करती हैं। राजा एक बार आज्ञा देता है, पंडित एक बार ही प्रतिज्ञा करते हैं। कन्यादान भी एक ही बार किया जाता है। अब चाहे जो हो मैं सत्यवान को ही अपने पति के रूप में स्वीकार करूंगी। सावित्री ने सत्यवान की मृत्यु का समय मालूम कर लिया था। अन्ततः उन दोनों का विवाह हो गया। वह ससुराल पहुंचते ही सास-ससुर की सेवा में दिन-रात रहने लगी। समय बदला सावित्री

के ससुर का बल क्षीण होता देखकर शत्रुओं ने राज्य छीन लिया।

नारद का वचन सावित्री को दिन-प्रतिदिन अधीर करता रहा। जब उसने जाना कि पति की मृत्यु का समय नजदीक आ गया है तो उसने तीन दिन पूर्व ही उपवास करना शुरू कर दिया। नारद द्वारा कथित तिथि पर पितरों का पूजन किया। नित्य ही सत्यवान लकड़ी काटने जंगल जाया करता था। उस दिन भी सत्यवान लकड़ी काटने जंगल जा रहा था तो सावित्री भी सास-ससुर की आज्ञा से सत्यवान के साथ चलने को तैयार हो गयी।

सत्यवान वन में पहुंचकर लकड़ी काटने वृक्ष पर चढ़ गया। वृक्ष पर चढ़ते ही सत्यवान के सिर में असहनीय पीड़ा होने लगी। वह व्याकुल हो गया और वृक्ष से नीचे उतर गया।

सावित्री अपना भविष्य समझ गयी और अपनी जांघ पर सत्यवान को लिटा लिया। उसी समय उसने दक्षिण दिशा से अत्यन्त प्रभावशाली महिषारूढ़ यमराज को आते देखा। धर्मराज सत्यवान के जीवन को लेकर जब चल दिये तो सावित्री भी उसके पीछे चल दी। पहले तो यमराज ने उसे दैवी विधान सुनाया, किन्तु उसकी अपने पति में निष्ठा देखकर यमराज ने वर मांगने को कहा।

सावित्री बोली-"मेरे सास-ससुर बनवासी और अन्धे हैं। उन्हें आप दिव्य ज्योति प्रदान करें।" यमराज ने कहा-"ऐसा ही होगा। अब लौट जाओ।" यमराज की बात सुनकर उसने कहा, "भगवान मुझे अपने पतिदेव के पीछे-पीछे चलने में कोई परेशानी नहीं। पति अनुगमन मेरा कर्त्तव्य है।" यह सुनकर यमराज ने फिर वर मांगने को कहा। सावित्री बोली-"हमारे ससुर का राज्य शत्रुओं ने छीन लिया है। उन्हें वह पुनः प्राप्त हो और वे धर्मपरायण हों।"

यमराज ने ये वर भी दे दिया और लौट जाने को कहा; किन्तु उसने उनका पीछा न छोड़ा। यमराज बोले-"एक वर और मांग लो।" सावित्री बोली-"मुझे वर दो कि मेरे सौ पुत्र हों।" यमराज ने 'तथास्तु' कहा और आगे चल दिये। सावित्री बोली-"हे देव! आप मेरे पति को तो लिए जा रहे हैं मेरे पुत्र कैसे होंगे?" यमराज को उसके पति के प्राण छोड़ने पड़े। सावित्री को अभय-सुहाग का वरदान देकर यमराज अंतर्ध्यान हो गये। इस तरह सावित्री उस वटवृक्ष के नीचे आई जहां पति का शरीर पड़ा था।

ईश्वर की अनुकम्पा से उसमें जीवन का संचार हुआ और सत्यवान उठकर बैठ गया। दोनों हर्ष से प्रेमालिंगन करके राजधानी की तरफ लौट चले। सत्यवान के माता-पिता को भी दिव्य ज्योति प्राप्त हुई। इस प्रकार सत्यवान और सावित्री चिरकाल तक राज्य-सुख भोगते रहे।

यह व्रत सुहागिन स्त्रियों को अवश्य करना चाहिए। ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रखा जाने वाला यह व्रत सुहागिन स्त्रियों के लिए विशेष प्रभावी है। इस व्रत को सच्चे मन व श्रद्धा से रखने वाली स्त्रियों का सुहाग सदैव अचल रहता है।

रम्भा तृतीय व्रत—यह रम्भा तृतीया ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आती है। इस दिन भगवान व ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिए। इस दिन व्रत रखकर पहले भगवान की मूर्ति को स्नान करायें फिर वस्त्राभूषण पहनाकर उनकी धूप-दीप से पूजा करें। यह व्रत धर्म में आस्था बढ़ाता है। इस दिन गौमाता का दान बताया है। इसकी पूजा करने वाली नारी धन-धान्य व सन्तान से मुक्त हो पति को सुख देती हुई स्वर्ग को जाती है।

प्रातःकाल होने पर नदी में स्नान करें। पांच ब्राह्मणों को वरण करें? वेदों में स्थापित करके पुरुष सूक्त के मंत्रों से शर्करा, घृत, तिल, पायस आदि से हवन करें। पश्चात् पूर्णाहुति दें और हवन को समाप्त करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। गौ का दान करें। अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों भोजन करायें। छाता, जूता आदि का दान करें। अपने आचार्य को प्रतिमा का दान करें। किसी प्रकार भी दास कंजूसी न करें। इस प्रकार व्रत करने से सफल हो जाता है।

व्रत कथा—प्राचीन काल में हिमवान नाम वाला एक पर्वतों का राजा था, यद्यपि उसके पास सब सिद्धियां थीं, परन्तु उसके कोई सन्तान नहीं थी; इसलिए वह बहुत दुःखी रहता था और उसकी स्त्री मैना भी बहुत दुःखी रहती थी। उस राजा ने सन्तान के लिए कई व्रत और दान किये परन्तु सब ही निष्फल चले गये।

मैना ने सोचा कि सन्तानरहित स्त्री का जीवन धिक्कार है। इस प्रकार वह दुःखी होकर भगवान विष्णु की शरण में गई। तब नारद जी वहां विष्णु भगवान की सेवा में उपस्थित थे, मैना को पूर्णासन व्रत करने को कहा। नारद जी ने कहा—"मैना! ज्येष्ठ की तृतीया के दिन तुम इस व्रत को विधिपूर्वक करो।" इस उपदेश को सुनकर मैना सब कर्मों को त्यागकर भगवान विष्णु का स्मरण करके इस व्रत को करने लगी।

भगवान विष्णु की कृपा से इस व्रत के समाप्त होने पर जगतमयी माया उत्पन्न हुई और मैना को वर मांगने के लिए कहा। तब मैना ने कहा—"हे देवी! यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे आंगन में आकर खेलो।" तब जगदम्बा ने कहा—"ऐसा ही होगा और मैं कन्या होकर तुम्हारे घर में जन्म लूंगी।" यह समाचार सुनकर हिमवान को बड़ी प्रसन्नता हुई। कुछ समय व्यतीत हो जाने पर मैना गर्भवती हो गई। जिस प्रकार उनकी अ[illegible] पूर्ण हुई ऐसे हर किसी की हो।

गंगा दशहरा

ज्येष्ठ सुदी दशमी को गंगा दशहरा कहा जाता है। इसी दिन नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी भगीरथ द्वारा स्वर्ग लोक से पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी सोमवार और हस्त नक्षत्र होने पर यह तिथि घोर पापों को नष्ट करने वाली मानी गयी है।

हस्त नक्षत्र में बुधवार के दिन गंगावतरण हुआ था। यह तिथि अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस तिथि में स्नान, दान, तर्पण से सब पापों का विनाश होता है। इसलिए इसका नाम दशहरा पड़ा है।

व्रत की कथा—प्राचीन काल में अयोध्या नगरी में एक सागर नाम के राजा राज्य करते थे। उनके केशिनी और सुमति नाम की दो रानियां थीं। पहली रानी के अंशुमान नामक पुत्र का उल्लेख मिलता है, किन्तु दूसरी रानी सुमति के साठ हजार पुत्र थे। उसी समय यज्ञ पूर्व पूर्ति के लिए एक घोड़ा छोड़ा। इन्द्र यज्ञ को भंग करने के लिए उस घोड़े को चुराकर कपिल मुनि के आश्रम में बांध आये। राजा ने उसे खोजने के लिए साठ हजार पुत्रों को भेजा। खोजते-खोजते वे कपिल मुनि के आश्रम में पहुंचे तथा समाधिस्थ मुनि की क्रोधाग्नि में जलकर भस्म हो गये।

अपने-अपने पितृत्व चरणों को खोजता हुआ अंशुमान जब मुनि आश्रम में पहुंचा तो महात्मा गरुड़ से भस्म होने का सम्पूर्ण वृतान्त जाना। गरुड़ जी ने यह भी बताया कि यदि तुम इन सबकी मुक्ति चाहते हो तो स्वर्ग से गंगाजी को पृथ्वी पर लाना पड़ेगा। इस समय अश्व को ले जाकर अपने पितामह के यज्ञ को पूर्ण कराओ, उसके बाद यह कार्य करना।

अंशुमान ने घोड़े सहित यज्ञ मण्डप पर पहुंचकर सगर को सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। महाराज सगर की मृत्यु के उपरान्त अंशुमान और उनके पुत्र दिलीप जीवन पर्यन्त तपस्या करके भी गंगाजी को पृथ्वी पर ना ला सके। अन्त में राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ ने गंगाजी को इस लोक में लाने के लिए गौकर्ण तीर्थ में जाकर कठोर तपस्या की, इस तरह तपस्या करते-करते कई वर्ष बीत गये, तब ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और गंगाजी को पृथ्वीलोक में ले जाने का वरदान दिया।

ब्रह्माजी के कमण्डल से छूटने के पश्चात् समस्या यह थी कि गंगाजी को सम्भालेगा कौन? विधाता ने बताया कि भूलोक में भगवान शंकर के सिवाय किसी में यह शक्ति नहीं जो गंगाजी के वेग को सम्भाल सके। इस आदेश के अनुसार भगीरथ को फिर एक अंगूठे के बल पर खड़ा होकर भगवान शंकर की आराधना

करनी पड़ी। शंकर जी प्रसन्न हुए और गंगाजी को धारण करने के लिए जटा फैलाकर तैयार हो गये। गंगाजी देवलोक से छोड़ी गयीं और शंकर जी की जटा में गिरते ही विलीन हो गयीं। गंगा को ऐसा अहंकार था कि "मैं शंकर जी की जटाओं को भेदकर रसातल में चली जाऊंगी।"

पुराणों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि गंगाजी शंकर की जटाओं में कई वर्षों तक भ्रमण करती रहीं परन्तु निकलने का कहीं भी रास्ता नहीं मिला! भगीरथ के पुनः अनुनय विनय करने पर नन्दीश्वर से प्रसन्न होकर हिंमालय में ब्रह्माजी के द्वारा निर्मित बिन्दुसार में गंगाजी को छोड़ दिया। उस समय इनकी सात धाराएं हो गयीं। आगे-आगे भगीरथ चल रहे थे, पीछे-पीछे गंगाजी चल रही थीं।

धरातल पर गंगाजी के आते ही हाहाकार मच गया। जिस मार्ग से गंगाजी जा रही थीं, उसी मार्ग में ऋषिराज जन्हू का आश्रम और तपोस्थल था। तपस्या आदि में विघ्न समझकर वे गंगा को पी गये फिर देवताओं की प्रशंसा और प्रार्थना पर उन्हें पुनः जांघ से निकाल दिया। तभी से ये जन्हू की पुत्री जान्हवी कहलायी।

इस प्रकार अनेक स्थलों पर तरन-करन करती हुई जान्हवी ने कपिल मुनि के आश्रम में पहुंचकर सगर के साठ हजार पुत्रों के भस्मावशेष को तारकर मुक्त किया। उसी समय ब्रह्माजी ने प्रकट होकर भगीरथ के कठिन तप और सगर के साठ हजार पुत्रों के अमर होने का वर दिया, तदनन्तर यह घोषित किया कि तुम्हारे नाम से गंगाजी का नाम भागीरथी होगा। अब तुम अयोध्या में राजकाज संभालो। ऐसा कहकर ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये। इस वरदान से भागीरथ को पुत्रलाभ हुआ और सुखपूर्वक राज्य भोगकर परलोक गमन किया।

निर्जला एकादशी—ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी को निर्जला एकादशी या भीमसेनी एकादशी कहते हैं। क्योंकि वेदव्यास की आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु और मोक्ष मिलता है। इस दिन जल नहीं पीना चाहिए। इस एकादशी को व्रत रहने से वर्ष की पूरी चौबीस एकादशियों का फल मिलता है। यह व्रत करने के बाद द्वादशी को ब्रह्म बेला में उठकर स्नान, दान और ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन—"**ॐ नमः भगवते वासुदेवाय।**" इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इस व्रत में गोदान स्वर्णदान, छत्र, फल आदि दान करना वांछनीय है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य पापों से मुक्त हो मोक्ष प्राप्त करता है।

व्रत की कथा—एक समय की बात है कि भीमसेन ने व्यास जी से कहा—"हे भगवान! युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी व माता कुन्ती भी एकादशी के दिन व्रत को करते हैं। मुझसे भी इस व्रत को करने के लिए कहती हैं। मैं कहता

हूं कि मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर और वासुदेव भगवान की अर्चन करके उन्हें प्रसन्न कर लूंगा। बिना व्रत किए जिस तरह से हो सके मुझे एकादशी व्रत का फल बताइये। मैं बिना कायाकष्ट के ही फल चाहता हूं।" इस पर वेद व्यास की बोले–"हे वृकोदर! यदि तुम्हें स्वर्गलोक प्रिय है और नरक से सुरक्षित रहना चाहते हो तो दोनों एकादशियों का व्रत रखना होगा।"

भीमसेन बोला–"हे देव! एक समय के भोजन से मेरा काम नहीं चल सकेगा। मेरे उदर में वृक नामक अग्नि निरन्तर प्रज्जवलित रहती है। पर्याप्त भोजन करने पर भी मेरी क्षुधा शांत नहीं होती। हे ऋषिवर! आप कृपा कर मुझे ऐसा उपाय बताइये जिसके करने मात्र से मेरा कल्याण हो।"

व्यास जी बोले–"हे भद्र! ज्येष्ठ की एकादशी को निर्जल व्रत कीजिये। स्नान आचमन में जल ग्रहण कर सकते हैं। अन्न बिल्कुल भी ग्रहण ना करें। अन्नाहार लेने से व्रत खण्डित हो जायेगा।"

व्यास की ज्ञानानुसार भीमसेन ने बड़े साहस के साथ निर्जला एकादशी का व्रत किया। जिसके फलस्वरूप प्रातः होते–होते ज्ञानहीन हो गये। तब पाण्डवों ने गंगाजल, तुलसी, चरणामृत प्रसाद लेकर उनकी मूर्च्छा दूर की। तभी से भीमसेन पापमुक्त हो गये।

□□□



अध्याय-4



आषाढ़ मास

आषाढ़ मास का माहात्म्य

नैमिषा रण्यतीर्थ में स्थित श्री सूत जी से शौनिक ऋषि पूछते हैं–"हे ऋषि! कृपा करके आषाढ़ मास का माहात्म्य तथा सब कृत्य कहिये।" सूत जी कहने लगे–"ऋषियों! अब मैं आषाढ़ मास का माहात्म्य कहता हूं। आप एक चित्त होकर सुनिये! मास वर्षाकाल का आरम्भ करता है। जिससे अन्नादि की वृद्धि होती है और सब मनुष्यों को बल मिलता है। अतः इस मास में यज्ञादि करने चाहिएं। जिससे संसार में अन्नादि उत्पन्न होकर मनुष्यों को बलवान होकर इस संसार के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन करें।"

सूत जी कहने लगे–"हे ऋषियों! सब प्रकार के कलेशों तथा विघ्नों को हरने वाले श्रीगणेश जी का व्रत आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी को करना चाहिए। इस दिन शौच और स्नानादि से निवृत होकर प्रथम संकल्प करना चाहिए। इस दिन को मैं आज श्रीगणेश जी की प्रसन्नता के लिए और सब प्रकार के विघ्नों के नाश के लिए श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत करता हूं।"

सारे दिन मनुष्य व्रती रहकर रात्रि को चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा को अर्घ्य देकर कथा सुनकर भोजन करना चाहिए। इस व्रत को दमयंती के न करने से राजा नल तथा दमयंती को अनेक प्रकार के दुःख उठाने पड़े और फिर व्रत करने पर ही दुःख दूर हुए।

कृष्ण अष्टमी–काल अष्टमी

आषाढ़ कृष्ण अष्टमी को काल अष्टमी भी कहते हैं। नारद जी कहते हैं कि–"पूर्वकाल की बात है कि काशीपुरी में एक भोटी नाम का प्रसिद्ध ब्राह्मण रहता था। वह पुत्रहीन था। उस ब्राह्मण ने पुत्र-प्राप्ति हेतु भगवान शंकर का बहुत

जप किया, तब भगवान शंकर प्रसन्न होकर बोले–"हे भोटी! तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा, जिसका प्रभाव तथा यश मेरे समान होगा।"

कुछ समय पश्चात भोटी की स्त्री गर्भवती हुई, परन्तु उसको गर्भ धारण किये हुए चार वर्ष हो गये और प्रसव होने में नहीं आया। तब भोटी ने उससे कहा–"हे पुत्र! तुम गर्भ से बाहर क्यों नहीं आते? जबकि इस मनुष्य देह से ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति होती है।

गर्भ ने कहा–"पिताजी! मैं यह सब जानता हूं, परन्तु मैं काल मार्ग से सदैव ही डरता हूं।" यह सुनकर ब्राह्मण भोटी फिर शंकर जी की शरण में गया और बोला–"भगवान आप ही इस गर्भ को किसी प्रकार समझाकर प्रसव बनाइये, तब भगवान की विभूतियां गर्भ को समझाने लगीं कि–"हे महामने भोटी कुमार! हम ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य कभी तुमसे दूर नहीं होंगे।" अधर्म बोला–"मैं कभी तुम्हारे पास नहीं आऊंगा।" इतना कहने पर बालक बाहर निकल आया और रोने लगा। तब विभूतियों ने कहा–"हे भोटी! तुम्हारा पुत्र अब भी काल मार्ग से डरता है अतः इसका नाम काल भीति करके प्रसिद्ध होगा।" इस प्रकार वरदान देकर वह विभूतियां शिवजी के पास चली गयीं।

इस बालक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अष्टमी को हुआ था। इसीलिए इस अष्टमी को काल अष्टमी कहते हैं। इस काल भीति ने बड़ा होने पर एक बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान शिव का एक करोड़ जप किया फिर एक पैर के अंगूठे के अग्र भाग के सहारे खड़े होकर जप करने लगा फिर जल की एक–एक बूंद लेकर जप करता रहा, फिर एक मनुष्य जल का घड़ा लेकर आया परन्तु काल भीति ने ग्रहण नहीं किया।

आगंतुक ने कहा कि घड़ा मिट्टी का बना हुआ है इसलिए अत्यन्त शुद्ध है, यदि आप यह कहें कि मेरे संसर्ग से अशुद्ध हो गई तो मैं भी पृथ्वी पर रहता हूं तुम भी इसी पृथ्वी पर रहते हो। अतः इस प्रकार के विचार करना मूर्खों की सी बातें करनी हैं, परन्तु काल भीति ने कहा–"जब तक आपके वर्ण का पता मुझे नहीं लग जाएगा मैं आपका जल नहीं पीऊंगा।"

इस प्रकार काल भीति का दृढ़ निश्चय देखकर, वह पुरुष सहसा अन्तर्ध्यान हो गया और काल भीति चकित होकर चारों तरफ देखता रहा कि वह पुरुष कहां गायब हो गया? सहसा उसी बिल्व वृक्ष के नीचे पृथ्वी में से एक शिवलिंग उत्पन्न हुआ, जो सब दिशाओं को प्रकाशित कर रहा था। तब काल भीति के प्रसन्न होकर स्तुति करने से श्री महादेव ने उस लिंग में से निकलकर प्रत्यक्ष दर्शन दिये और अपने तेज से त्रिलोकी को प्रकाशित कर दिया। काल भीति से कहा–"ब्राह्मण! इस

महातीर्थ में रहकर तुमने मेरी आराधना की है, इससे मैं अतिशय प्रसन्न हूं। मैं तुम्हारी भावना देखने मनुष्य रूप में यहां आया था। तुमने जो मेरी स्तुति की है वह वैदिक मंत्रों के रहस्यों से भरी हुई है। अतः तुम मुझसे मनइच्छित वर मांगो।" काल भीति कहने लगा कि भगवान यदि आप प्रसन्न हैं, तो सदैव यहां पर ही निवास करिये। यहां पर जो कोई भी दान-पुण्य करेगा उसका फल अक्षय होगा। भगवान शंकर कहने लगे कि जहां लिंग वहां पर सदैव निवास करता हूं। आकाश में तारका भय लिंग, पाताल में हाठकेश्वर लिंग तथा भूमण्डल में स्वयम् त्रहलिंग यह तीनों ही शुभ होते हैं। इनका पूजन अक्षय फल को देने वाला होता है। जो इस काल अष्टमी के दिन इस शिवलिंग पर जल चढ़ायेगा वह शिव स्वरूप ही हो जायेगा। वत्स, तुम नन्दी के साथ मेरे दूसरे द्वारपाल हो। हे वत्स! काल मार्ग पर विजय प्राप्त करने के कारण तुम्हारा नाम महाकाल के नाम से इस संसार में प्रसिद्ध होगा।

देवशयनी एकादशी

सूत जी कहते हैं—"आषाढ़ शक्ल पक्ष एकादशी देवशयनी एकादशी कहलाती है—और उस एकादशी से चतुर्मास का संकल्प कर प्रथम भगवान विष्णु जी को श्वेत वस्त्र पहनावें और श्वेत वर्ण की शय्या पर भगवान विष्णु को शयन करायें। इसके बाद वेदपाठी ब्राह्मणों से दूध, दही, घृत, शहद और शर्करा से पंचामृत स्नान करायें फिर गंधादि सब चीजों से भगवान की पूजा करें और प्रार्थना करें—'हे देवेश! हे जनार्दन! हे लक्ष्मीकांत! आपको शमन करा रहा हूं। आपके सन्मुख होकर मैं चतुर्मास व्रत का नियम ग्रहण करता हूं। आप मेरे समस्त मनोरथ पूर्ण कीजिये'।"

"व्रत करने से जो फल मिलता है अब वह तुमसे मैं कहता हूं!

"चतुर्मास का व्रत आरम्भ करके उसे किसी भी प्रकार खण्डित न करें। जो मनुष्य पूर्ण वर्ष इस व्रत को करते हैं, उनका तेज सूर्य के समान हो जाता है।"

"जो मनुष्य चतुर्मास में भगवान विष्णु की षोडशोपचार विधि से पूजा करते हैं वे महाप्रलय तक बैकुण्ठ का वास करते हैं।"

"जो नित्य प्रति भगवान के मन्दिर में आकर सफाई करते हैं। या जल छिड़कते हैं। गोबर से लीपते हैं। रंग से चित्र बनाते हैं, वे सात जन्म तक धर्म-परायण रहते हैं और अन्त में विष्णु लोक को प्राप्त होते हैं।"

"जो भगवान के निमित्त सुवर्ण कलश ब्राह्मण को देते हैं, वह इन्द्रलोक में जाकर अक्षय सुख का भोग करते हैं।"

"जो तुलसी से भगवान की पूजा करते हैं और सुवर्ण की तुलसी ब्राह्मणों को दान देते हैं, वे स्वर्ण विमान में बैठकर वैष्णव गति को प्राप्त होते हैं।"

"जो धूप दान करते हैं अथवा दीपक जलाते हैं या प्रदक्षिणा करते हैं। नमस्कार

करते हैं तथा घुटनों के बल बैठकर दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करते हैं। जो संध्या के समय देवता के स्थान में दीपक या तेल का दान करते हैं, वे मनुष्य विष्णु का चरणामृत पान करते हैं।"

"जो भगवान विष्णु के मन्दिर में जाकर एक सौ आठ बार गायत्री मंत्र तीनों काल जपते हैं, वे मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होते।"

"गायत्री का जाप और ध्यान करने से या उद्यापन शास्त्र की पुस्तकें दान करने से विद्या का लाभ होता है।"

"जो मनुष्य चतुर्मास में, प्रतिदिन तिल का हवन करता है, सुवर्ण का दान करता है वह सब पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।"

"जो भगवान शिव पर नित्य प्रति पुर्वा चढ़ाता है और व्रत के अंत में सुवर्ण की पुर्वा दान देता है, उसके बहुत बड़ी आयु वाली सन्तान उत्पन्न होती है।"

"जो अट्ठाइस तोले के पात्र दान देता है, वो संसार मुक्त हो जाता है तथा माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता।"

"इस प्रकार आलस्यरहित होकर चतुर्मास का व्रत धारण करना चाहिए। व्रत के अन्त में अच्छा बजने वाला घण्टा दान देना चाहिए। इसको दान करने वाला सारे पापों से छूट जाता है।"

"भगवान विष्णु के शयन के समय जो मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार तिल सहित सुवर्ण और वस्त्र का दान करता है, वह अन्त समय में शिव लोक को जाता है।"

"जो चतुर्मास में प्रतिदिन, उत्तम वस्त्र में लपेटकर, दूध का घड़ा दक्षिणा सहित दान करता है और व्रत की समाप्ति पर ब्राह्मण का चमेली के फूलों से सत्कार करता है और पूजन करता है, तो वह अति सुन्दर व सुशील स्त्री को प्राप्त करता है। यदि कन्या हो तो उसे सुन्दर व गुणवान पति मिलता है।"

"यदि सारे मास पर्यन्त दान देने की शक्ति न हो तो पांचों पर्वों में दान करना चाहिए।"

"चतुर्मास की समाप्ति पर वस्त्र आदि दान करने चाहिएं। चतुर्मास की प्राप्ति पर जो मनुष्य ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा देता है वह निश्चय ही विष्णुलोक को प्राप्त होता है।"

"जो चतुर्मास में खीरा, नमक, घी, शहद और फलों को शिवजी की प्रसन्नता के लिए नहीं खाता है और फिर उन्हीं वस्तुओं को कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन ब्राह्मणों को दान करता है, इस चन्द्र व्रत के सेवन से रूपलोक प्राप्त होता है।"

"जो चतुर्मास में फलों का त्याग करता है वह विष्णुलोक को प्राप्त होता है।"

"श्रावण मास में शाक नहीं खाना चाहिए। भाद्रपद में दही या दूध और कार्तिक में दास का त्याग करना चाहिए और मूली तथा गाजर आदि भी नहीं खाना चाहिए। करौंदा, ईख तथा मसूर भी नहीं खाना चाहिए। खाट पर भी सोने का त्याग कर देना चाहिए। चतुर्मास में गुड़ के छोड़ने वाला राजा होता है। तेल छोड़ने वाला सुन्दर अंगों वाला, कुम्भे के तेल को छोड़ने से शत्रुओं का नाश होता है और एक व्रत करने वाला मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है।"

"इन चारों मासों में जो नख और केशों को धारण करता है वह बहुत बड़ी आयु वाला होता है।"

"जो मनुष्य "**ॐ नमो नारायण**" इस मन्त्र का जप चार मास तक करता है, उसको अनन्त फल प्राप्त होता है।"

"जो मनुष्य हरि के मन्दिर में एक लाख परिक्रमा करता है, वह विमान में बैठकर विष्णुलोक को प्राप्त होता है।"

"तीन रात्रि पर्यन्त भोजन के त्यागने से स्वर्ग में देवताओं के समान आनन्द भोगता है।"

"पराये अन्न के त्याग से मनुष्य देवता तुल्य हो जाता है।"

"जो चार मास तक प्रजापत्य व्रत करता है वह कामिक, वाचिक था मानसिक तीनों प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।"

"जो मनुष्य तृप्त कृच्छ द्वारा शयनकाल को व्यतीत करता है, वह पुनरावृत्ति से मुक्त होकर परम स्थान को प्राप्त होता है।"

"जो मनुष्य चन्द्रायण व्रत द्वारा चार मास व्यतीत करता है, वह दिव्य देह होकर शिवलोक को जाता है।"

"जो मनुष्य चार मास तक अन्न का त्याग करता है, वह भगवान की सायुज्यता को प्राप्त होता है।"

"जो चतुर्मास में पांच गव्य (दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर) का भोजन करता है, वह चन्द्रायण व्रत के फल को प्राप्त होता है।"

"जिस दिन भगवान सोते हैं। अथवा जिस दिन भगवान जागते हैं उस दिन अनन्य मन होकर व्रत करने वाले मनुष्य को भगवान उत्तम गति देते हैं।"

गुरु पूर्णिमा

आषाढ़ माह की शुक्ल पूर्णिमा को व्यास पूजा या गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन शिष्य अपने गुरु की पूजा करते हैं तथा यथा सम्भव गुरु को भेंट देते हैं।

इसी पूर्णमासी को कोकिला व्रत भी कहा जाता है। जब भी आषाढ़ मास आता

है, तब ही इस व्रत को किया जाता है। यह व्रत भी सौभाग्य को देने वाला है। यह व्रत (एक मास तक जिस वर्ष में दो आषाढ़ हों।) प्रथम आषाढ़ की पूर्णमासी से लेकर दूसरे आषाढ़ की पूर्णमासी तक किया जाता है।

इस व्रत को करने वाली स्त्रियां, सूर्योदय से पहले उठकर, शौचादि से निवृत होकर सुगंधित आंवले का तेल लगाकर स्नान करती हैं। आठ दिन ऐसा करने पर शरीर में 'वच' पीसकर लगाती हैं और प्रातःकाल सूर्य भगवान का पूजन करती हैं।

व्रत कथा—एक समय प्रजापति दक्ष ने यज्ञ किया, उन्होंने द्वेषभाव से श्री शिवजी को नहीं बुलाया, परन्तु श्री शिवजी के मना कर देने पर भी पार्वती जी यज्ञ कुण्ड में कूदकर दाह को प्राप्त हो गयीं।

शिवजी को पता लगने पर उन्होंने वीरभद्र उत्पन्न किया, जिसने दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर दिया और देवताओं के अंग भंग कर दिये। तब देवता भगवान विष्णु के पास गये और उनके आग्रह से श्री शिवजी ने देवताओं को पूर्ववत् कर दिया, परन्तु पार्वती जी को आज्ञा का उल्लंघन करने के अपराध में 'कोयल वन' जाने का आदेश दिया। इसके पश्चात् अवधि पूरी होने पर एक मास तक इस व्रत को करने से हिमाचल के घर जन्म लेने पर श्री शिवजी की अर्धांगिनी बनी।

अतः स्त्रियों का यह परम धर्म है कि वे सदैव अपने पति की आज्ञा को मानें।

योगिनी एकादशी

सूत जी कहते हैं—"हे ऋषियों! आषाढ़ कृष्ण एकादशी को एकादशी का व्रत और एकादशियों की तरह ही होता है। इस एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस दिन व्रत रखकर भगवान नारायण की मूर्ति को स्नान कराके भोग लगाते हुए पुष्प, धूप, दीप से आरती उतारनी चाहिए। निर्धन ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयष्कर है। इस दिन (एकादशी) के प्रभाव से पीपल का वृक्ष काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं तथा अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।"

व्रत कथा—एक समय की बात है कि अलकापुरी में धनद कुबेर के यहां एक हेम नामक माली रहता था; वह भगवान शंकर के पूजनार्थ नित्य प्रति मानसरोवर से फूल लाया करता था। एक दिन की बात है वह कामोमत हो अपनी स्त्री के साथ स्वच्छन्द बिहार करने के कारण फूल लाने में प्रमाद कर बैठा और कुबेर के दरबार में देर से पहुंचा।

क्रोधी कुबेर के श्राप से वह कोढ़ी हो गया। कोढ़ी रूप में वह जब मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में पहुंचा, तब उन्होंने योगिनी एकादशी करने की आज्ञा दी। व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ खत्म हो गया और दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्ग को चला गया।

प्रदोष व्रत

आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी को प्रदोष का व्रत होता है। इस दिन व्रत धारण करके श्री शिवजी का पूजन करके एक समय भोजन किया जाता है। भोजन सात्विक पदार्थों का होना चाहिए। रात्रि में जागरण करें तथा कथा सुनें।

व्रत कथा–आर्यवर्त में चित्रवमी नाम का एक प्रसिद्ध राजा था। उस राजा की विष्णु तथा शिव में भक्ति थी। चित्रवर्मा के अनेक पुत्र थे। उसकी सीमन्तनी नाम की एक कन्या थी। राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर कन्या की जन्मकुंडली के अनुसार भावी फल पूछे। उनमें एक अति विद्वान् ज्योतिषी ने कहा–"महाराज!" यह कन्या दमयंती के समान परम सुन्दरी, सरस्वती के समान सब कलाओं को जानने वाली, लक्ष्मी के समान स्वर्गगुण सम्पन्न दस हजार वर्ष तक अपने स्वामी के सब आनन्द भोगेगी।"

इसके पश्चात् दूसरे विद्वान ने कहा–"यह कन्या चौदहवें वर्ष में विधवा हो जायेगी।" ऐसा सुनकर राजा को वज्रपात के समान दुःख हुआ, परन्तु फिर यह समझकर कि जो कुछ होता है भाग्य के अनुकूल होता है, उसमें देव इच्छा प्रबल है। ऐसा सोचकर चिन्ता छोड़िये।"

सीमन्तनी धीरे-धीरे सयानी होती गयी और उसने जब अपने भावी वैधव्य की बात सुनी तो उसको बहुत दुःख हुआ। वह मैत्री की शरण में गई और चरणों में पड़कर कहने लगी कि हे माता! मैं आपकी शरण में आई हूं। आप मुझे सौभाग्य बढ़ाने वाले सत्यकर्म का उपदेश करें।

मैत्री ने कहा–"सुन्दरी! तुम शिव की शरण में जाओ और प्रदोष व्रत करो। जिससे आपत्ति पड़ने पर भी उससे बच जाओगी, परन्तु घोर-से-घोर कलेश और संकट पड़ने पर भी इस व्रत को मत छोड़ना।"

उसी दिन से उसने भगवान शिव का पूजन आरम्भ कर दिया। निषध देश के राजा नल की पत्नी दमयंती के इन्द्रसेन नाम का पुत्र था। उसके चित्रांगद नाम का पुत्र हुआ। चित्रवर्मा ने राजकुमार चित्रांगद को बुलाकर, गुरुजनों की आज्ञा से अपनी पुत्री सीमन्तनी का विवाह चित्रांगद के साथ कर दिया और उस विवाह में बड़ा उत्सव हुआ।

एक समय राजकुमार जमना पार जाने के लिए कुछ मित्रों के साथ नौका पर बैठे, भाग्यवश नाव मल्लाहों सहित नदी के भंवर में फंसकर डूब गयी। उस समय वहां पर बड़ा कोलाहल हुआ और विलाप से आकाश मण्डल गूंज उठा। सीमन्तनी ने जब यह समाचार सुना तो मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी। चित्रवर्मा यह समाचार सुनकर व्याकुल हो गये और यमुना किनारे आकर मूर्च्छित होकर गिर पड़े। राजा इन्द्रसेन

भी सुनकर अति दुखित हुए।

इसके पश्चात् गुरुजनों के समझाने-बुझाने पर घर लौटे।

राजा चित्रवर्मा ने मृत दामाद को जल प्रवाह किया और शनैः-शनैः सीमन्तनी को धैर्य बंधाया। पतिव्रता सीमन्तनी ने सती होकर परलोक जाने का विचार किया परन्तु पिता के स्नेह ने उसे रोक दिया। तब वह विधवा का जीवन व्यतीत करने लगी। प्रदोष व्रत उसने विधवा होने पर भी नहीं छोड़े। वह सदैव शिव चरणों में वन्दना करती रही। इस प्रकार तीन वर्ष बीत गये।

इधर इन्द्रसेन को दबाकर उसके भाइयों ने उसका राज्य छीन लिया और उसको पकड़कर बन्दी बना लिया।

इन्द्रसेन का पुत्र चित्रांगद यमुना के जल के नीचे ही नीचे जाता रहा और यहां तक कि तक्षक के पाताल लोक में पहुंच गया और वहां पर उसने देखा कि तक्षक नाम का सुन्दर महल है। राजकुमार ने आदर के साथ उनको देखकर सर झुकाकर प्रणाम किया और तक्षक नाग ने नागिनों से पूछा-"यह कौन है?" उन नागिनों ने उत्तर दिया-"इसको हम यमुनाजी में डूबते हुए लाई हैं और नाम तथा कुल से परिचित न होने के कारण आपके पास लाई हैं।"

तब तक्षक ने राजकुमार से पूछा-"हे राजकुमार! तुम कौन हो?" राजकुमार बोला-"महाराज! भूमण्डल में एक निषध नाम का देश है वहां के राजा इन्द्रसेन का पुत्र चित्रांगद हूं। विवाह के पश्चात् ससुराल में टीका हुआ है कि यमुना में नौका विहार करता हुआ जल में डूब गया। बड़े पुण्यों के प्रताप से अब यहां आपके दर्शन हुए हैं। मैं धन्य हूं जो आपने मुझसे वार्तालाप किया।"

ऐसे मनोहर वचन सुनकर तक्षक ने कहा-"तुम कौन से देवता की पूजा करते हो?" राजकुमार ने कहा-"सब देवों के देव श्री महादेव जी मेरे आराध्य देव हैं।"

राजकुमार के वचन सुनकर तक्षक का चित्त प्रसन्न हो गया और वो कहने लगा-"मैं भी श्री महादेव जी का उपासक हूं। मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं; क्योंकि तुम बालक होने पर भी शिवभक्ति के तत्व को जानते हो।"

नागराज ने कहा-"हे राजकुमार! तुम्हें यहां किसी भी प्रकार की पीड़ा नहीं होगी और इच्छानुसार यहां पर रहोगे।"

तब राजकुमार हाथ जोड़कर कहने लगा-"मैंने समय पर विवाह कर लिया है, मेरी स्त्री उत्तम व्रत धारण करने लगी है और मैं अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र हूं। वह सब मुझको मरा हुआ समझकर शोक सागर में डूबे होंगे। अतः आप कृपा करके मुझे उसी मृत्युलोक में पहुंचा दें।"

नागराज ने कहा-"हे राजकुमार! तुम भूलोक में जा सकते हो। जब भी तुम मुझको याद करोगे मैं प्रकट हो जाऊंगा।"

ऐसा कहकर नागराज ने राजकुमार को एक सुन्दर अश्व भेंट किया। जो इच्छानुसार चलने वाला था। अनेक लोकों में उसकी गति थी। नागराज ने ही साथ में राजकुमार को दिव्य वस्त्र और आभूषण भेंट किये। अपने पुत्र को राजकुमार के साथ भेजा और राजकुमार को भूलोक जाने की आज्ञा दी। थोड़ी देर में राजकुमार घोड़े पर सवार हो गया और घोड़ा गिरने लगा। इसके पश्चात् वह घोड़े से उतरकर यमुना किनारे पर जा बैठा। इसी समय सीमन्तनी अपनी सखियों के साथ यमुना तट पर आई। उसने नाग कुमार के साथ दिव्य पुरुष को देखा और राजकुमार ने भी सीमन्तनी को देखकर मन में विचार किया कि इसे पहले कहीं अवश्य देखा है। राजकुमारी को पास बुलाकर उसने पूछा कि तुम किसकी कन्या हो? और तुम्हारे पति कौन हैं? इस पर राजकुमारी ने कहा कि पहले आप बताइये कि आप कौन हैं? आपके पीछे ये दिव्य पुरुष कौन हैं और आप स्वजन की भांति प्रतीत होते हैं।

इतना कहकर राजकुमारी आंखों में आंसू भरकर बहुत देर तक रोती रही फिर मूर्च्छा खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसके शोक का सब हाल सुनकर राजकुमार बहुत दुःखी हुआ और वह चुपचाप बैठा रहा।

सीमन्तनी ने बारम्बार राजकुमार की ओर देखा और उसके अंग चिन्हों और स्वर आदि लक्षणों, अवस्था के प्रमाण तथा रूप-रंग आदि से निश्चय करके हृदय में प्रेम से अधीर हो गयी और अपने मन में विचार करने लगी कि मैत्री जी ने कहा था कि तुम घोर विपत्ति पड़ने पर भी इस व्रत को मत छोड़ना, उसी का तो यह फल नहीं है?

एक ज्योतिष ने मेरा सुहाग दस हजार वर्ष का बताया था कि उनका वचन सत्य होगा, यह ईश्वर के बिना कौन जान सकता है और कई दिन से मुझे मंगलसूचक शुभ शकुन भी दिखाई दे रहे हैं।

भगवान शंकर जी के आगे कौन-सी चीज दुर्लभ है।

उसको सोचते हुए देखकर राजकुमार ने कहा—"भद्रे! मैं तुम्हारे शोकग्रस्त पिता से यह कहने जा रहा हूं कि तुम्हारे पति तुम्हें शीघ्र ही मिलेंगे।" इस प्रकार कहकर राजकुमार घोड़े पर सवार होकर अपने दोनों सहायकों के साथ शीघ्र ही अपने राज्य में पहुंचे।

वहां पहुंचकर राज सिंहासन पर बैठे हुए बन्धुओं के स[illegible]य जाकर नागराज के पुत्र ने कहा कि तुम सब लोग महाराज इन्द्रसेन को इसी समय कारागार से छोड़ दो। महाराज के पुत्र चित्रांगद पाताल लोक से यहां आ गये हैं। मैं नागराज का पुत्र हूं। यदि आप कुछ आनाकानी करोगे तो मेरे बाणों द्वारा तुम्हारा नाश कर दिया जाएगा। नागराज के पुत्र के वचनों को सुनकर सब का[illegible]नका सिंहासन तुरन्त छोड़ दिया।

मेरा पुत्र आ रहा है, यह बात सुनकर राजा की आंखों से प्रेम के आंसू छलक पड़े और वे आनन्द में डूब गये। महारानी की भी यही दशा थी। मंत्री और पुरोहित आगे जाकर चित्रांगद से मिले और उसे हृदय से लगाकर महाराज के पास लाए। चित्रांगद ने महल में पहुंचकर सर्वप्रथम अपने पिता और माता के चरण छुए।

राजा ने अपने पुत्र को हृदय से लगा लिया। उन्होंने अपने मन में यह माना कि मेरी पुत्रवधू भगवान शंकर जी की सेवा करती थी। इसी से यह सब हुआ है।

यह मंगलवार्ता दूतों द्वारा महाराज चित्रवर्मा को भी कहला भेजी, उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी कन्या को बुलाकर उन्होंने उसके सब वैधव्य चिन्हों का परित्याग करवाया। तत्पश्चात् उसे नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषित कराया।

कुछ दिनों के उपरान्त चित्रांगद अपनी ससुराल में आकर सीमन्तनी को वहां से अपने घर ले आया। उसके पिता ने बहुत-सा धन, आभूषण, दास और दासियां देकर विदा किया। अपने ससुर की आज्ञा से सीमन्तनी के साथ विदा होकर अपने घर आ गया। कुछ समय पश्चात् राजा इन्द्रसेन अपने चित्रांगद को राज्य का भार सौंपकर वन को चले गये।

चित्रांगद ने अपनी पत्नी सीमन्तनी के साथ दस हजार वर्षों तक विविध प्रकार के भोगों को भोगा और अन्त में मोक्ष को प्राप्त हुए।

कोकिला व्रत

यह त्योहार जब आषाढ़ दो होते हैं उसके पहले मास की पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक होता है। इससे हर दिन नदी में स्नान करके ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा जमीन पर सोयें। एक समय भोज करें। जीवों को न सतायें। इसमें नदी के जल से या तालाब के जल से स्नान का अधिक महत्व होता है। इस व्रत से नारी का सौभाग्य अचल रहता है। पति की रक्षा होती है।

कोकिला व्रत कथा—एक बार दक्ष प्रजापति ने बहुत बड़ा भारी यज्ञ किया। उस यज्ञ में सभी देवताओं को बुलाया, परन्तु अपने दामाद शंकर जी को नहीं बुलाया। जब सती को पता चला तो वह मयके जाने का आग्रह करने लगीं। शंकर जी के लाख समझाने पर भी पार्वती जी चली गयीं। वे अपने मयके जाकर बड़ी अपमानित हुईं।

अपमान सहन ना हो पाने के कारण वे यज्ञ कुण्ड में कूदकर भस्म हो गयीं। शिवजी को जब सारा वृतान्त ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त क्रुद्ध हो अपने गणों से बोले कि जाकर दक्ष के यज्ञ को तहस-नहस कर दो। गणों के ऐसा करने पर भी देवगणों ने स्तुति कर शंकर जी से क्षमा याचना की। शिवजी ने सती जी को दस हजार

वर्ष तक कोकिला बने रहने का श्राप दिया। तत्पश्चात् दस हजार वर्ष के उपरान्त पार्वती का जन्म हुआ। पार्वती जी ने व्रत कर शंकर जी का वरण किथा। इसीलिए इसे कोकिला व्रत कहते हैं।

रथ यात्रा

रथ यात्रा आषाढ़ शुक्ल दौज को होती है। इस दिन श्री कृष्ण जी, सुभद्रा देवी और श्री बलराम जी को सजाकर रथ पर बैठाकर नगर या गांव में सवारी निकालनी चाहिए। साथ में कृष्ण की प्रतिमा भी बलराम के पास सजाकर रखनी चाहिए।

फिर उन प्रतिमाओं को मन्दिर में रखना चाहिए। व्रत रखने वाले को मूर्ति के समीप ही सोना चाहिए। व्रत को पूरा करने हेतु ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिए। इस दिन व्रत को रखने वाले स्त्री–पुरुषों की शेषनाग रक्षा करते हैं और उन्हें सब ऐश्वर्य प्राप्त होकर अन्त में स्वर्ग प्राप्त होता है तथा उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

बलराम स्तुति

जय हो कणिनाथ अनन्त विभ्मो, यह विश्व अभेय अधार तुमारे।
तुम हो दुरज्ञेय अयोगिन को, तुमको श्रुति नेति च नेति उचारे।
निज योग सुसिद्ध हितारथ को, तब पाय मुसीबत है मुनितारे।
तुमरे पद पंकज ने मुख जो, तिसको नहि होवत बोध उबारे।
भव बन्ध पंदाबुज द्वन्दन को, कालिका कल सौरभ गन्ध सुहाई।
तब श्वास श्रुति पत्रमान रमाकर, साथ मिली दशहुं दिशी छाई।
विषयांडज वायस ना सारमा सुतके, मल को दुरगन्ध बिलाई।
ललना तनु प्रेम पुरीष भरा, जिस घ्राण विषे तिसने नहि पाई।

□□□



अध्याय-5



श्रावण मास

श्रावण मास का माहात्म्य

एक बार सनत् कुमार जी शिवजी से श्रावण मास का माहात्म्य पूछने लगे, तब शिवजी बोले–"हे सनत् कुमार! हमें सब मासों में श्रेष्ठ श्रावण मास अत्यन्त प्रिय है। इस मास में एक समय भोजन करना चाहिए। जिस कामना से जो इस मास का व्रत करता है, उसकी कामना अवश्य पूरी हो जाती है। इस मास में रविवार को सूर्य का व्रत, सोमवार को मेरी पूजा और एक समय भोजन, मंगलवार को मंगला गौरी का व्रत, बुधवार के दिन बुध का, बृहस्पति के दिन बृहस्पति का, शुक्रवार के दिन 'जीवन्तिका देवी' तथा हनुमान और नृसिंह देवं का व्रत शनिवार का होता है।

तिथियों के व्रत इस प्रकार हैं–शुक्ल पक्ष की दूज को आडम्बर व्रत होता है, तीज को गौरी का व्रत होता है, चतुर्थी को दुर्गा गणपति का इसी व्रत का दूसरा नाम विनायकी चतुर्थी भी है। पंचमी को नाग पंचमी का अथवा यह तिथि मनु के बदलने की भी है। षष्ठी के दिन सुपोदन व्रत होता है। इस मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को नक्त व्रत का विधान कहा है। दशमी को आशा देवी का, एकादशी को हरि भगवान का पवित्रारोपण, द्वादशी के दिन हरि भगवान का श्रीधर नाम से पूजन होता है तथा पूर्णमासी के दिन उत्सर्जन, उपाकर्म, समादीप तथा रक्षाबंधन होता है।

श्रावण कृष्ण की चतुर्थी को संकष्ट व्रत, पंचमी भानद, श्रावण कृष्ण अष्टमी को जन्माष्टमी व्रत और अमावस्या को पिठोरा व्रत–इन सब तिथियों में अलग–अलग देवताओं की पूजा होती है।

एकम को अग्नि की, दूज को ब्रह्मा की, तीज को गौरी की, चौथ को गणपति की, पंचमी को सर्प की, षष्ठी को स्कंध की, सप्तमी को [illegible] अष्ठमी को शिव की, नवमी को [illegible] दशमी को यम की, एकादशी को विश्वदेव

द्वादशी को हरि भगवान की, त्रयोदशी को कामदेव की, चतुर्दशी को शिव की, पूर्णमासी को चन्द्रमा की तथा अमावस्या को पितरों की।

इसी मास में जब सूर्य की संक्रान्ति से बारह और चालीस घड़ी बीत जायें तब अगस्त्य ऋषि का उदय होता है, अगस्त्य ऋषि के लिए सात दिन पहले से ही अर्घ्य देना चाहिए।

भगवान शिव कहते हैं–"सनत् कुमार मैंने श्रावण मास के व्रतों का संक्षेप में तुमसे वर्णन किया। विस्तारपूर्वक वर्णन करें, सौ वर्षों में भी नहीं किया जा सकता।"

सनत् कुमार जी कहने लगे–"स्वामिन! आपने व्रतों का विवरण संक्षेप में किया है। अब जरा विस्तारपूर्वक मुझको सुनाइये।"

शिवजी कहते हैं–"हे योगेश! जो एक समय भोजन करता है उसे बारह मास के वक्त भोजन का फल प्राप्त होता है, दिनास्त के पश्चात् तीन घंटे तक संध्या कहलाती है। इसमें भोजन, मैथुन, निद्रा और स्वाध्याय यह कर्म नहीं करने चाहिएं। जब संन्यासी सन्ध्या के समय भोजन और गृहस्थ जिस समय तारे दिखने लग जायें उस समय भोजन करें। संन्यासी को रात्रि का भोजन निषिद्ध कहा गया है परन्तु दिन के अष्टम प्रहर को ही ठीक कहा गया है। बुद्धिमान पुरुष पहले व्रत का संकल्प करें फिर व्रत आरम्भ करें।

अब एक लक्ष्य की पूजा विधि कहते हैं। लक्ष्मी की इच्छा रखने वाला, बिल्व पत्र से शान्ति चाहने वाला, दुर्गा के अंकुरों से आयु चाहने वाला, चम्पा के पुष्पों से, विद्या की इच्छा रखने वाला, मल्लिका के फूलों से, पुत्र की इच्छा के लिए कटेली के पुष्पों से, बुरे स्वप्नों के नाश के लिए उत्तम धान्य से–इस प्रकार जिस-जिस इच्छा से पूजा करें, वही इच्छा पूर्ण हो जाती है। वेदी बनाकर ब्रह्मादिक देवताओं का पूजन करें।

नाग पंचमी

नाग पंचमी श्रावण लगते ही पंचमी को आती है। इस दिन से एक दिन पहले चौथ को बाजरा भिगो दें और अपने खाने का भोजन बना लें। फिर दूसरे दिन जबड़ा भोजन करें। दूसरे दिन पंचमी को उठकर घर लीपकर एक रस्सी में सात गांठ लगाकर सांप बनायें। उसे एक चौकी पर रखकर उसकी पूजा करें।

"कच्चा दूध, घी चीनी मिलाकर चढ़ायें–थोड़ा-सा कच्चा मीठा व दूध सांप के बिल में डाल दें और थोड़ी-सी बिल की मिट्टी लाकर दूध डालकर चक्की-चूल्हे पर सर्प के निशान बनायें। उनको कच्चा दूध भीगे हुए बाजरे और घी से पूजें और दक्षिणा चढ़ायें।

फिर अपनी सास, जेठानी, दादस आदि को मीठे बाजरे का बायना देकर पैर

छुएं। नाग पंचमी की कहानी सुनें, कथा सुनकर बिल से लाई मिट्‌टी में गेहूं के दाने बो दें।

नाग पंचमी की कथा—किसी नगर में एक सेठ रहता था। उसके सात पुत्र थे। सातों के विवाह हो गये थे। सबसे छोटी बहू अत्यन्त सुशील व गुणवान थी। एक दिन बड़ी बहू सभी छोटी बहुओं से बोली, चलो आज पीली मिट्‌टी खोद लायें। घर लीपेंगी।

सातों बहुएं मिट्‌टी खोदने चल दीं। जहां से वे मिट्‌टी खोद रही थीं। वहीं पर एक सर्प निकला। उसे देखकर बड़ी बहू मारने लगी, तभी छोटी ने उसे रोक दिया तथा सर्प को वहीं बैठे रहने को कहा।

इतना कहकर वे सातों वहां से वापिस आ गयीं। आकर वे सब अपने कामों में लग गयीं। छोटी बहू भी सर्प से कही बात भूल गयी।

दूसरे दिन छोटी बहू को अपनी कही बात याद आयी। सभी जेठानियों को साथ लेकर जब वह गड्‌ढे पर गयी तो उसने उस सर्प को वहीं बैठे देखा। छोटी बहू दूर से ही बोली—भैया! राम-राम। सर्प कहने लगा कि तुम मुझे भैया कह रही हो नहीं तो मैं तुम्हें खा जाता। छोटी बहू बोली, तुम तो मेरे भाई हो, तुम मुझे कैसे खा जाते। सर्प कहने लगा, अच्छा आज से मैं तेरा धर्म का भाई और तू मेरी धर्म की बहन है। बता तुझे क्या चाहिए?

छोटी बहू बोली, भैया! मेरी जेठानी की पायजेब खो गई हैं। उन्हें ला दो। सर्प ने उसे पायजेब ला दी। जेठानी उसे पहनकर खुशी से घर चली आई। छोटी बहू से बड़ी बहू बोली, यह तो कोई देवता है। कुछ दिन बाद सर्प भाई बनकर उसके घर आया और छोटी बहू को लिवा लाया।

उसने छोटी बहू की बहुत खातिरदारी की। एक दिन सर्प की मां बोली मैं जरा घूमने जा रही हूं। तू अपने भाई को दूध ठण्डा करके पिला देना।

उसने उसे गर्म दूध पिला दिया जिससे उसकी पूंछ और मुंह जल गये। उसकी मां जब लौटी तो सर्प का हाल देख उसे बहुत गुस्सा आया, परन्तु वह चुप रही। एक दिन सर्प बोला—छोटी को उसकी सास के भेज दो। मां ने भी उसकी बात मान ली और उसे खूब धन देकर विदा किया।

सर्प छोटी बहू से बोला, यहां सात कोठे हैं इनमें से छः कोठों में से कोई-सा भी खोल ले, परन्तु सातवां मत खोलना। बहन ने जिद करके वही सातवां कोठा खोल लिया। जैसे ही उसने सातवां कोठा खोला वहां एक बड़ा अजगर फुंफकारता हुआ निकला। तभी वह बोली, दादा राम-राम! अजगर बोला, तूने मुझे दादा कह दिया वरना तुझे मैं खा जाता। छोटी बहू बोली, तुम मेरे दादा जो हो। तुम मुझे कैसे खा सकते थे। अजगर बोला, तू मेरी धर्म की बेटी है, मैं तेरा धर्म का बाबा

हूं। बता तुझे क्या चाहिए, तब वह बोली, मुझे हार चाहिए। अजगर ने उसे एक बहुत कीमती हीरों का हार दिया—और वह अपनी सास के घर चली आई—साथ में उसका भाई भी आया।

जेठानी बोली, जब तेरे दादा, भैया नाग देवता हैं तो तू चांदी-सोने के बोरे भरकर मंगवा ले। यह बात सर्प ने सुन ली वह तभी अपनी मां के पास पहुंचा और कहने लगा—मां! बहन ने सोने-चांदी की बोरी मंगाई है, मां बोली, तो वहां सोने-चांदी की बोरी पहुंचा दो। जब वह वहां दोबारा पहुंचा तो फिर जेठानी कहने लगी, अगर तुझे झाड़ना है तो अपने भाई से सोने-चांदी की झाड़ू मंगाकर उससे झाड़। यह सुनकर सर्प अपने घर पहुंचा और मां से कहने लगा, मां! मेरी बहन को सोने-चांदी की झाड़ू का ताना मारा है मैं तो उसे सोने-चांदी की झाड़ू बनवाकर दूंगा। मां बोली—जैसे तेरी इच्छा हो कर। उसने सोने-चांदी की झाड़ू बनवाकर बहन के घर पहुंचा दी।

उसी शहर के राजा की रानी ने अब छोटी बहू के घर की चर्चा सुनी तो वह राजा से बोली, मुझे साहूकार की छोटी बहू का हार चाहिए। छोटी बहू को राजा ने बुलाकर कहा कि यह हार हमारी रानी को दे दो।

छोटी बहू ने वह हार रानी को दे दिया तथा अपने भाई को याद करके कहा, रानी के हार पहनते ही वह सर्प बन जाये।

जब रानी ने हार पहना तो वह हार उसे सर्प बनकर काटने लगा। रानी रोने लगी और राजा से बोली, साहूकार की बहू मेरे ऊपर जादू-टोना कर गयी है।

राजा ने साहूकार की बहू को बुलाकर कहा कि तू हमारी रानी पर कैसा जादू-टोना करके गई है। इस पर छोटी बहू बोली, मैंने रानी पर कोई टोटका नहीं किया। यह हार सर्प ने मुझे दिया है। यह हार मैं ही पहन सकती हूं, दूसरे को यह हार सर्प बनकर काट लेता है।

राजा ने साहूकार की बहू को हार लौटा दिया और उसे बहुत-सा धन दिया। यह देखकर छोटी बहू की जेठानी ने ईर्ष्यावश उसके पति को सीखा दिया। रात्रि में उसके पति ने उसे पीटकर पूछा, तू इतना धन कहां से लाती है? तब उसने सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। यह सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ तभी से नाग पंचमी की पूजा होने लगी।

रूद्रावर्ति व्रत

क्षिप्रा नदी के तट पर एक उज्जयिनी नाम की नगरी है, उस नगरी में सुगन्धा नाम की एक अति सुन्दर वैश्या रहती है। उस वैश्या ने अपने भोग का मूल्य एक सौ मोहर रखा हुआ था। उसने अनेक युवकों का धर्म नष्ट किया हुआ था। उसने

बहुतों को लूटकर धक्के मारकर घर से बाहर निकाल दिया था।

उस वैश्या के शरीर से सुगन्धी निकलती रहती थी, जिसका विस्तार एक कोस का था। वह वैश्या छः राग और छत्तीस रागनियां गाया करती थी।

एक दिन वैश्या क्षिप्रा नदी के तट पर जा पहुंची और वहां उसने कुछ ब्राह्मणों को जिनमें वशिष्ठ ऋषि भी थे, ध्यान लगाते देखा। श्री वशिष्ठ जी के दर्शन मात्र से उस वैश्या की बुद्धि पाप से हटकर धर्म की ओर चली गयी।

वैश्या ने ऋषि को बारम्बार प्रणाम करके उनसे अपने पाप कर्मों के नाश का उपाय पूछने लगी। उस वैश्या के विनययुक्त वचनों को सुनकर श्री वशिष्ठ जी कहने लगे कि सुगन्धे! मैंने तुम्हारे सब पापों को समझ लिया, तुम शीघ्र ही काशी जी चली जाओ और वहां जाकर श्री शिवजी का रूद्रावर्ति व्रत करो। तुम अवश्य ही परम गति को प्राप्त हो जाओगी।

शिवजी कहते हैं कि–हे सनत् कुमार! तब वह वैश्या अपना सब धन, मित्र तथा नौकरों को साथ लेकर काशी को चली गयी। इसके बाद वह वैश्या अपने पंच भौतिक शरीर को त्यागकर श्री शंकर भगवान की मूर्ति में समा गयी।

अब इसका उद्यापन सुनो! श्री पार्वती जी सहित सोने की श्री शिवजी की मूर्ति बनावें, चांदी का नंदीश्वर बनवाकर, इसके पश्चात् विधिवत् इनकी पूजा करके रात्रि को जागरण करें और प्रातःकाल होते ही नदी में स्नान करें। आचार्य का वरण करके ग्यारह ब्राह्मणों सहित घृत, पायस और बिल्व का हवन करें, रूद्र सूक्त गायत्री मूल मंत्र से पूर्णाहुति करें, ग्यारह उत्तम सपत्नीक ब्राह्मणों को भोजन करायें–इस प्रकार करने से मुक्ति हो जाती है।

शिवजी कहते हैं कि–हे सनत् कुमार! अब लिंग पूजा का माहात्म्य कहते हैं। एक लिंग के माहात्म्य का ही जब आक्षय फल है, तो कोटि लिंग का तो कहना ही क्या है। यदि कोटि लिंग न बन सकें तो हजार ही बनायें। यदि हजार न बन सकें तो सौ ही बना लें, यदि इसमें एक लिंग भी बनाकर पूजा करें तो वह प्राणी मेरे समीप आ जाता है। इस व्रत से स्त्रियों का वंध्यापन दूर हो जाता है, जो पंचामृत से श्री शिव को अभिषेक करता है वह कलश में मेरे समीप एक कल्प तक वास करता है। जो इस मास में चावल नहीं खाता केवल दविष्पान्न पंचामृत से स्नान कराये वद माक्षे को प्राप्त होता है।

जो पत्ते में भोजन करते हों उनको स्वर्ण पात्र मिलते हैं। जो भूमि पर शयन करता है वह कैलाशवासी होता है। जो इस मास में एक बार भी स्नान करता है उसे एक वर्ष के स्नान का फल मिलता है। इस मास में जो कोई पुरुष सूक्त का पाठ करता है, वह वेदों का पारगामी होता है। व्रत के पश्चात् हवन आदि करके इसका उद्यापन करना चाहिए।

रोटक व्रत

यदि श्रावण मास की एकम को सोमवार हो तो उसको रोटक व्रत कहते हैं। यह व्रत लक्ष्मी को बढ़ाने वाला और सब कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है। प्रात:काल उठकर व्रत का संकल्प करें फिर अखण्डक बिल्प पत्र से ही शिवजी का पूजन करें। नीलकमल, चम्पा, मालती और आक के फूलों से शिवजी का पूजन करें। ऋतु फलों को शिवजी को अर्पण करें, पूजन करके अर्घ्य दें। जो खेती सहित भूमि का दान का फल होता है, वह इस व्रत के करने से होता है। धन की इच्छा वाला इसको पांच वर्षों तक करे।

स्वर्ण गौरी व्रत

श्रावण शुक्ल तृतीया को स्वर्ण गौरी नामक व्रत होता है। प्रात:काल व्रत का संकल्प करें, फिर षोडशोपचार विधि से शिव-पार्वती का पूजन करें, फिर प्रार्थना करके सोलह उत्तम ब्राह्मणों को बायन दें। इस प्रकार सोलह वर्ष, आठ वर्ष, चार वर्ष करके इसका उद्यापन करें। शिव और पार्वती व्रत षोडशोपचार विधि से पूजन करें। सोलह बायन दें। चावल के बने हुए सोलह पकवान बांस की टोकरी में रखकर सोलह वस्त्रों से युक्त सोलह सपत्नीक ब्राह्मणों को दें।

व्रत कथा—सरस्वती के सहारे सुविला नाम से प्रसिद्ध एक पुरी थी। चन्द्रप्रभा नाम का राजा उस पुरी में राज्य करता था। उस राजा की महादेवी और विशाला नाम की दो स्त्रियां थीं। एक दिन वह राजा शिकार खेलने वन में गया और वहां पर उसने अनेक प्रकार के पशुओं को मारा। राजा को जंगल में घूमते-घूमते प्यास लगी। जलस्रोत की खोज में राजा इधर-उधर भटकने लगा।

वहां घूमते-घूमते राजा ने एक अति सुन्दर सरोवर और बाग देखा। राजा ने उस सुन्दर सरोवर के तट पर बैठकर उसके जल को पिया। उसने वहां पर कुछ अप्सराओं को गौरी पूजन करते हुए देखा।

राजा ने पूछा—"आप किसका व्रत और पूजन कर रही हैं?" वह कहने लगीं—"हम सब मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली स्वर्ण गौरी का व्रत और पूजन करती हैं।" राजा ने कहा—"सुन्दरियों, इस व्रत की विधि आप विस्तारपूर्वक मुझसे कहिए।" तब अप्सराओं ने कहा—"श्रावण शुक्ल तृतीया को यह स्वर्ण गौरी नाम वाला व्रत किया जाता है। इसमें सोलह तार का एक डोरा पुरुष अपने दायें हाथ में और स्त्रियां अपने बायें हाथ में बांधती हैं।"

यह सुनकर चन्द्रप्रभा ने भी व्रत किया और डोरा अपने हाथ में बांध लिया

और **फिर श्री शिव**–पार्वती का पूजन करके प्रार्थना की।

इसके पश्चात् जब राजा अपने घर वापिस आया, तो बड़ी रानी इस डोरे को देखकर **क्रोधित** होकर उस डोरे को तोड़कर एक सूखे वृक्ष पर फेंक दिया उस वृक्ष पर **डोरा** गिरते ही वह वृक्ष हरा हो गया।

इस वृतान्त को जानकर छोटी रानी ने डोरा उठाकर अपने बायें हाथ में बांध लिया, उसी दिन से छोटी रानी राजा को अधिक प्यारी हो गयी और बड़ी रानी से राजा को घृणा हो गयी। बड़ी रानी डोरे का अपमान करने से राजा से त्यागी हुई दुःखी होकर वन में चली गयी, परन्तु वन में भी रानी का तिरस्कार होता रहा।

एक दिन रानी घोर वन में थककर सो गयी। स्वप्न में देवी को देखकर स्तुति करने लगी, स्वर्ण गौरी का आशीर्वाद पाकर उसने व्रत किया, व्रत के करने से राजा स्वयं वन में आकर रानी को ले गये और वह अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर बैकुंठ को प्राप्त हो गई।

शीतला सप्तमी

श्रावण शुक्ल सप्तमी को शीतला सप्तमी कहते हैं। इस दिन दीवार में देवताओं तथा पुरुषों, बालकों, स्त्रियों और घर की सब चीजों के चित्र बनाकर षोडशोपचार विधि से सब जल देवताओं के लिए ऋतु फलों को अर्पण करें, ब्राह्मणों को बायन दें। इस प्रकार सात वर्ष तक करते रहें। बालक सहित जल देवताओं की प्रतिमा को एक पात्र में रखकर उनकी पूजा करें। उद्यापन से दूसरे दिन हवन आदि करके ब्राह्मणों को भोजन करायें।

व्रत कथा–पहले समय में सौराष्ट्र देश में शोभन नामक नगर में धनिक नाम वाला अत्यन्त धनी और धर्मात्मा रहता था। उसने एक निर्जन वन में बावड़ी बनवाई और उसके पास ही एक सुन्दर बाग भी लगवाया और सुन्दर वृक्ष लगवाये।

परन्तु कुछ समय पश्चात् उस बावड़ी का जल सूख गया और उसमें एक बूंद भी जल की नहीं रही। एक दिन जल की चिन्ता में वह उस बावड़ी के नजदीक ही सो गया। रात्रि में उसे स्वप्न में देव आज्ञा हुई कि यदि आदर सहित इस बावड़ी पर अपने पोते की हमारे निमित्त बलि दें, तो बावड़ी जल से भर जायेगी। जल देवता ऐसा कहकर अन्तर्ध्यान हो गये।

जब धनिक ने यह स्वप्न देखा तो उसने अपने परम धार्मिक पुत्र द्रविण से यह सब वृतांत कहा, द्रविण कहने लगा–"पिताजी! धर्म से बढ़कर इस संसार में कोई वस्तु नहीं है। पुत्रादि सब कुछ नाशवान है। बड़ा शीतांशु और छोटा चंडाशु है। आप शीतांशु की बलि दे दें। इसमें विचार करने की कोई बात नहीं है, परन्तु स्त्रियां छोटे दिल की होती हैं उनसे यह बात गुप्त रखनी चाहिए। गुप्त रखने का

उपाय यही है कि मेरी स्त्री गर्भवती है और प्रसव काल भी समीप ही आ गया है। जब वह अपने पिता के घर जाएगी। प्रसव के पश्चात् आयेगी। छोटा लड़का भी उसके साथ जायेगा। अतः हे तात! उस समय यह काम निर्विघ्नतापूर्वक हो सकता है।" धनिक प्रसन्न होकर कहने लगा–"हे पुत्र! तुम धन्य हो, जिसकी धर्म में ऐसी आस्था है और मैं भी धन्य हूं, जिसका तुम जैसा पुत्र हो।"

कुछ समय पश्चात् धनिक की पुत्रवधू को उसके पिता के घर से बुलावा आया और वह वहां पर चली गयी। द्रविण ने अपनी स्त्री से कहा–"यह बड़ा लड़का हमारे पास रहेगा और छोटे को तुम अपने साथ ले जाओ।" उसकी स्त्री ने ऐसा ही किया।

धनिक की पुत्रवधू के जाने के बाद धनिक और द्रविण शीतांशु के शरीर में तेल लगाकर सुन्दर कपड़े पहनाकर वरूण देवता के पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र आने पर, बड़ी प्रसन्नता से बावड़ी तट पर खड़ा करके कहने लगा–पुत्र के बलिदान से वरूण देवता प्रसन्न हों–और ऐसा कहकर अपने पुत्र की जल देवता के निमित्त बलि दे दी। ऐसा करने पर जल देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसी समय बावड़ी पानी से भर गयी।

वह दोनों पिता-पुत्र बावड़ी के जल के भर जाने के कारण अति प्रसन्न और पुत्र-शोक से दुःखी होकर अपने घर पर आये। द्रविण की पत्नी के पुत्र उत्पन्न हुआ और वह तीन माह पश्चात् अपने दोनों बालकों को साथ ले अपने घर की तरफ़ चल दी।

जब वह रास्ते में बावड़ी के पास आई तो बावड़ी में जल भरा देखकर बहुत प्रसन्न हुई कि मेरे ससुर का धन और परिश्रम सफल हुआ।

उस दिन श्रावण मास की सप्तमी थी। उसने शीतला का व्रत किया और दही और चावल मंगाकर सुन्दर पाक बनाया। जल देवता की पूजा करके चावल और ककड़ी का नैवेद्य अर्पण किया। ब्राह्मणों को दान देकर स्वयं भी भोजन किया और दूसरों को भी भोजन कराया। इसके पश्चात् सुन्दर पालकी में बैठकर अपने घर की तरफ चल दी। तब जल देवता आपस में बात करने लगे–"इसने बड़ी श्रद्धा के साथ हमारा व्रत किया है। जिससे हमने इसको पुत्र दिया, परन्तु यदि इसको अपना पहला पुत्र न मिला तो हमारा प्रसन्न होना निरर्थक है।" ऐसा विचार कर शीतांशु को जल से निकालकर उसकी माता के पीछे कर दिया और उस बालक को माता ने पीछे से देखा तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और वह भी आश्चर्य करने लगी कि यह बालक यहां पर कैसे आ गया! द्रविण की पत्नी जब घर आ रही थी तो धनिक और द्रविण दोनों सोचने लगे कि वे शीतांशु की मां को क्या जवाब

देंगे। उसी समय द्रविण की पत्नी तीनों बच्चों को लेकर घर आ गयी।

दोनों पिता और पुत्र तीनों बालकों को देखकर अत्यन्त चकित रह गए और एक-दूसरे की ओर देखने लगे और सुशीला से कहने लगे–"तुमने कौन से पुण्य वाले व्रत को किया है! तुम पतिव्रता हो और धन्य हो! शीतांशु को मरे हुए दो मास हो गये। तुमने पुनः इसको प्राप्त किया और बावड़ी भी जल से भरी गई। तुमने सारे कुल का उद्धार कर दिया।"

पति ने भी बड़े प्रेम से देखा और सास ने भी बड़ी प्रसन्नता की।

शिवजी के व्रत

श्रावण महीने के सम्पूर्ण सोमवारों को यह व्रत किया जाता है। प्रत्येक सोमवार को गणेश, शिव, पार्वती, नन्दी व कीर्तिकेय जी की पूजा की जाती है। जल, दूध, दही, शहद, घी, चीनी, जनेऊ, चन्दन, रोली, बेलपत्र, धतूरा, धूप, दीप एवं दक्षिणा से भगवान पशुपति का पूजन करना चाहिए। कपूर से आरती करके रात्रि में जागरण करें। सोलह सोमवार व्रत कथा तथा माहात्म्य सुनना चाहिए। यह व्रत करने वाले और गुणगान करने वाले पर भगवान शिव अपनी कृपादृष्टि रखते हैं।

मंगला-गौरी पूजन

गौरी व्रत श्रावण में जितने भी मंगल आते हैं, को रखा जाता है। इस दिन गौरी जी की पूजा करनी चाहिए। यह व्रत मंगलवार को किया जाता है। इस कारण इसको मंगला-गौरी व्रत कहते हैं। यह व्रत स्त्रियों के लिए है।

स्नान करने के उपरान्त एक पट्टे पर चावल की और सफेद कपड़े पर गेहूं की 16 छोटी-छोटी ढेरी बना लें। उसी पट्टे पर चावल रख गणेश जी एवं गेहूं की ढेरी पर कलश स्थापित करें।

एक आटे का चौमुखी दीपक, धूप जलाकर संकल्प करें। सर्वप्रथम गणेश जी का पंचामृत, जनेऊ रोली, सिंदूर, सुपारी, लौंग, पान, चावल, फूल, इलायची, प्रसाद, बेलपत्र, फल, मेवा से पूजन करें, दक्षिणा चढ़ायें और आरती करें। जल से भरे कलश में आम की टहनी लगाकर सकोरे में गेहूं का आटा रखकर उस पर सुपारी रखें और जौ के आटे में दक्षिणा दबाकर दें। कलश, चावलों और गेहूं की ढेरियों की भी गणेश जी की तरह पूजा करें। इन पर खाली जनेऊ चढ़ायें। मंगला-गौरी के पूजन हेतु थाली में चकला रख, उस पर गंगाजी की मिट्टी से गौरी की मूर्ति काढ़ लें और एक लोई बनाकर रख लें। पहले मंगला-गौरी की मूर्ति को जल, दूध, दही, घी, चीनी, शहद आदि का पंचामृत बनाकर स्नान करायें। स्नान कराकर कपड़े

पहनायें तथा नथ पहनाकर रोली, चन्दन, सिंदूर, हल्दी, चावल, मेंहदी, काजल लगाकर 16 तरह के फूल चढ़ायें। 16 माला, 16 तरह के पत्ते चढ़ायें। 16 आटे के लड्डू, फल, 16 तरह की मेवा 16 बार चढ़ायें। 16 बार 7 तरह का अनाज, फल 16, जीरा, 16 धनिया, 16 पान, 16 सुपारी, 16 लौंग, 16 इलायची एक सुहाग की डिब्बी में रोली, कंघा, शीशा, 16 चूड़ी या मेंहदी, काजल, हिंगुल, सिंदूर, एक रुपया तथा दो बिंदी बनाकर उसमें 16 तार की चार बत्तियां बनायें एवं कपूर से आरती उतारें, फिर परिक्रमा करें। 16 लड्डुओं का बायना सासु जी को पांव छूकर पास लगाकर दें। इसके पश्चात् भोजन कर लें। एक ही अनाज बिना नमक का खायें। दूसरे दिन मंगला-गौरी को तालाब या कुएं के पास विसर्जन करके भोजन करें।

कामिका (पवित्रा) एकादशी

यह व्रत श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी को रखते हैं। कामिका एकादशी को 'पवित्रा' के नाम से भी जाना जाता है। प्रातः स्नान करके भगवान विष्णु की मूर्ति या प्रतिभा को पंचामृत में स्नान कराके भोग लगाना चाहिए। आचमन के बाद धूप, दीप, चंदन इत्यादि सुगंधित पदार्थों से आरती उतारनी चाहिए।

व्रत कथा—एक समय की बात है किसी गांव में एक ठाकुर निवास करते थे। क्रोधी ठाकुर की एक ब्राह्मण से ठन गयी। परिणामस्वरूप ब्राह्मण मारा गया। इस पर उन्होंने उसकी तेरहवीं करनी चाही, परन्तु समस्त ब्राह्मणों ने भोजन करने से इन्कार कर दिया, तब उन्होंने समस्त ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि भगवन्! मेरे पाप कैसे दूर होंगे? इस प्रार्थना पर उसे सब ब्राह्मणों ने कामिका एकादशी का व्रत रहने की आज्ञा दी। ठाकुर ने वैसा ही किया। रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास जब शयन कर रहा था, तभी उसे स्वप्न दिखा। स्वप्न में भगवान ने कहा—"हे ठाकुर! तेरे सब पाप दूर हो गये। अब तू ब्राह्मण की तेरहवीं कर सकता है। तेरे घर सूतक नष्ट हो गया है।" ठाकुर तेरहवीं करके ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हो, विष्णुलोक को गया।

शिवरात्रि व्रत

यह व्रत श्रावण मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को रखा जाता है। इस व्रत में रोली, भात, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, बिल्व, पत्र, बेर, भंग, फल, धतूरे, पुष्प, पंचामृत, दही, गंगाजल से शिवजी की पूजा करनी चाहिए। शिव पर चढ़ा नैवेद्य नहीं खाना चाहिए।

व्रत कथा—किसी गांव में चन्द्रसेन नामक एक दुष्ट लड़का था। अपनी मां

के लाड-प्यार व कुसंगति के कारण वह जुआ, चोरी आदि करने लगा। एक दिन उसके पिता ने लड़के से एक अंगूठी प्राप्त की जो कि चन्द्रसेन जुए में हार गया। जैसे ही वह भोग चुराकर भागा, लोगों ने उसे खूब पीटा। वह भूख, प्यास व चोरी के कारण बिना भोग खाये ही मर गया। उसे लेने के लिए यमदूत व शंकर भगवान के गण आए। भूखे-प्यासे रहकर व्रत रखने व शिवरात्रि में जागरण के कारण तथा नैवेद्य का भोग न खाने के कारण वह शिवलोक का अधिकारी बना। यमदूत वापिस लौट गए।

पुत्रदा एकादशी

पुत्रदा एकादशी श्रावण की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनायी जाती है। इस दिन भगवान जनार्धन की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए तथा व्रत रखना चाहिए। भगवान जनार्धन को पहले ऊंचे आसन पर बैठाना चाहिए। तत्पश्चात् उनके चरण धोकर आचमन करायें तथा भोग लगायें, इसके बाद उन्हें स्नान कराकर वस्त्राभूषण पहनायें।

उनकी धूप, दीप आदि से आरती उतारकर पूजा करें। इसके पश्चात् वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन करायें और श्रद्धानुसार दान देकर आशीर्वाद प्राप्त करें। दिन भर कीर्तन करें तथा रात्रि को भगवान के चरणों में ही शयन करें।

दिन में एक समय फलाहार करें। इस प्रकार व्रत करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

प्रथम व्रत कथा—बहुत प्राचीन काल की बात है कि माहिष्मति नगर में महोजीत नामक राजा राज्य करता था। राजा बहुत ही धर्मात्मा, न्यायप्रिय व दानी थे, परन्तु वे निःसंतान थे।

इसी कारण राजा अत्यन्त दुःखी रहते थे। इसी दुःख के कारण राजा ने अपने राज्य के ऋषियों को बुलाया और सन्तान-प्राप्ति का उपाय पूछा।

तब लोमंश ऋषि बोले—"तुमने पिछले जन्म में श्रावण की पुत्रदा एकादशी को एक गाय को तालाब से पानी पीने से हटा दिया था। उसी के श्राप से आप निःसंतान हैं। इस श्राप से मुक्ति हेतु तुम श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का व्रत करो और जागरण कराओ। इस प्रकार तुम्हें उस पाप से मुक्ति मिलेगी और तुम्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।"

ऋषि की बात मानकर राजा और रानी ने श्रावण मास की शुक्ल पक्ष एकादशी का व्रत किया। व्रत के प्रभाव से रानी के नवें मांस में एक सुन्दर पुत्ररूपी रत्न पैदा हुआ।

पुत्र पाकर राजा-रानी सुखपूर्वक रहने लगे तथा राजा ने सम्पूर्ण राज्य में पुत्रदा एकादशी की घोषणा करा दी। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रजा सुखपूर्वक रहने लगी।

दूसरी व्रत कथा—बहुत समय पहले की बात है कि कंचनपुर नामक नगर में एक सूरसेन नामक राजा राज्य करते थे। उसके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी। राजा के यहां किसी बात की कमी नहीं थी। वे बड़े धर्मात्मा, दानी और प्रणपालक थे। राज्य की ओर से उनकी आत्मा सन्तुष्ट थी, परन्तु मन-ही-मन वो अत्यन्त दुःखी रहते थे। दुःखी करने का कारण यह था कि वे सन्तानहीन थे। उन्हें हर समय यही चिन्ता सताती थी कि मेरी मृत्यु के पश्चात् इस राज्य का उत्तराधिकारी कौन बनेगा? उनके 101 रानियां थीं, वे भी इसी कारण दुःखी रहती थीं।

राजा की इस चिन्ता के कारण उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। यहां तक कि एक समय ऐसा आया कि उनको हर समय बुखार रहने के कारण मियादी बुखार हो गया। राजा की ऐसी दशा देखकर मन्त्रीजी दुःखी रहने लगे। उन्होंने राजा को बहुत समझाया परन्तु सब व्यर्थ गया। अपने सभी प्रयत्न विफल देखकर मन्त्री भूतपूर्व मन्त्री के पास गये तथा उन्हें सभी हाल कह सुनाया।

तब भूतपूर्व मन्त्री बोला—राजा से कहो कि वह अपने राज्य के सभी विद्वान् और ज्योतिषों को बुलायें तथा उनसे सन्तान-प्राप्ति का उपाय पूछें।

भूतपूर्व मन्त्री के कहे अनुसार मन्त्री ने राजा के पास जाकर पुराने मन्त्री की सलाह बतायी। मन्त्री की बात को मानकर राजा ने अपने नगर में यह घोषणा करवा दी, राज्य के सभी विद्वान् व ज्योतिषी राजदरबार में पहुंचे। जब सभी विद्वान व ज्योतिषी राजदरबार में पहुंचे, तब राजा ने कहा, हे महानुभावों! आप सबको मैंने इसलिए कष्ट दिया कि मेरे सन्तान नहीं है। कृपा कर कोई ऐसा उपाय कहो कि जिससे मुझे पुत्र और इस राज्य को उत्तराधिकारी की प्राप्ति हो।

राजा की बात को सुनकर सभी विद्वानों, ज्योतिष पण्डितों ने शास्त्रों में देखा परन्तु उन्हें राजा के सन्तान का कोई योग दिखाई नहीं दिया। तब विद्वानों ने राजा को अत्यन्त विनम्र भाव से समझाया कि आपके सन्तान का योग नहीं है।

उनकी बात सुनकर राजा बहुत दुःखी हुए। राजा के दुःख को समझते हुए एक वृद्ध विद्वान् पण्डित बोला, महाराज! श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी पुत्रदा एकादशी कहलाती है।

उस दिन आप व्रत करें तथा भगवान का पूजन करें। वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा भिक्षुओं को दान दें। रात्रि में भगवान की मूर्ति को समक्ष रखकर ही सोयें। हो सकता है कि भगवान की कृपा से आपको पुत्र रत्न की प्राप्ति हो।

राजा ने वृद्ध विद्वान् सहित सभी विद्वानों को प्रणाम कर दक्षिणा दे विदा किया।

तब राजा ने भी पुत्रदा एकादशी का व्रत करने का प्रण किया।

महल में पहुंचते ही सभी रानियां पूछने लगीं। तब राजा ने रानियों से कहा—विद्वानों ने मुझे श्रावण शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत रखने को कहा है। फिर रानियों ने भी कहा, हम भी इस व्रत को करेंगी। रानियों के इस प्रकार के हर्षित निवेदन को सुनकर राजा को अत्यन्त सुख की प्राप्ति हुई। वह प्रफुल्लित चित्त से पुत्रदा एकादशी की प्रतीक्षा करने लगा।

जब श्रावण मास की शुक्ल पक्ष पुत्रदा एकादशी आई तब राजा ने रानियों सहित व्रत धारण किया। वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा देकर विदा किया।

जब रात्रि हुई तब राजा अपनी रानियों सहित भजन–कीर्तन के उपरान्त अपनी इन्द्रियों को वश में करके भगवान की मूर्ति के समीप ही भूमि पर सोया।

रात्रि में भगवान ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा, हे राजन! मैं तुम पर प्रसन्न हूं। तुम्हारी प्रत्येक रानी से तुम्हें एक–एक पुत्र प्राप्त होगा; अर्थात् तुम्हें 101 पुत्रों की प्राप्ति होगी। जो अत्यन्त सुन्दर, विद्वान् और चरित्रवान होंगे।

सुबह प्रातःकाल में आंख खुलने पर राजा ने अपनी रानियों को जगाकर स्वप्न का सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। स्वप्न को सुनकर रानियां अत्यन्त प्रसन्न हुईं। दूसरे दिन राजा ने बहुत–सा धन दान दिया। भिखारियों को पेटभर कर भोजन कराया।

कुछ समय उपरान्त राजा की प्रत्येक रानी के गर्भ से एक–एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिनका रूप चन्द्रमा के समान सुन्दर था। राजा ने विद्वानों और वेदपाठी ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें सुन्दर व स्वादिष्ट भोजन कराकर वस्त्राभूषण भेंट किये और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

इसके पश्चात् राजा सम्पूर्ण राज्य में घोषणा करा दी—प्रत्येक एकादशी को सम्पूर्ण जनता व्रत रखे और व्रत के नियमों का पालन व पूजन करे।

पुत्रों की प्राप्ति के पश्चात् राजा के सारे दुःख दूर हो गये। राजा और उसकी रानियां सुख भोगकर अन्त समय में मोक्ष को प्राप्त हुईं।

रक्षाबन्धन (श्रावणी)

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को ब्राह्मण जाति का सबसे बड़ा पर्व होता है। इसी दिन सोन पूजे जाते हैं, रक्षाबंधन होता है।

कथा—एक बार देवता एवं दैत्यों में बारह साल तक युद्ध चलता रहा, इस अवसर पर दैत्यों के प्रहार को सहन करने में इन्द्रादि सब देवता असमर्थ हो गए। जब देवताओं की जीत की कोई आशा न रही तो उन्होंने यह बात इन्द्र से कह दी।

तत्पश्चात् इन्द्र ने अपने गुरु बृहस्पति के पास जाकर कहा–"हे गुरुदेव! इस समय हमारी शक्ति इतनी क्षीण हो गयी है कि हम दैत्यों को हराने में असमर्थ हैं, अतः वे शीघ्र ही हमारी इन्द्रपुरी पर अधिकार कर लेंगे। अब हमें क्या करना चाहिए?"

देवराज की बातें सुनकर अभी गुरु बृहस्पति उन पर विचार कर ही रहे थे कि वहीं खड़ी हुई इन्द्राणी ने हाथ जोड़कर कहा–"हे प्राणनाथ! इसका उपाय मैं अभी किये देती हूं। इस उपाय को करने के बाद युद्ध में दैत्यों को आप अवश्य जीत लेंगे। इसमें सन्देह नहीं।"

ऐसा कहकर इन्द्राणी भवन में गयीं तथा रक्षाबंधन सूत्र ले आयीं एवं स्वस्तिवाचन एवं पूजन करने के पश्चात् यह रक्षासूत्र इन्द्र के दाहिने हाथ में बांध दिया।

इस तरह इन्द्राणी द्वारा रक्षासूत्र बंधवाने के पश्चात् ज्यों ही देवराज पुनः दैत्यों से युद्ध करने गये तो उनकी मार को न सहकर सब दैत्य मरते-गिरते एवं भागते हुए दृष्टिगोचर हुए तथा जीत का बिगुल बजाकर देवताओं सहित इन्द्र हँसी-खुशी अपने घर में आ गये।

इस तरह जो पुरुष श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को पत्नी, बहन, बुआ, विप्र तथा अन्य किसी हितकारी से रक्षा-सूत्र बंधवायेगा, वह इन्द्र की भांति ही सुखी हो जायेगा।

□□□





अध्याय-6

भाद्रपद मास

भाद्रपद मास का माहात्म्य

इस मास में स्नान करने तथा व्रतों को करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप नाश हो जाते हैं। इसके सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है-

एक समय नारद जी सब लोकों में घूमते-घूमते ऋषि अम्बरीष के घर पर आये। अम्बरीष ने नारद जी का अत्यन्त भाव से सत्कार करके पाध, अर्ध आदि से उनका पूजन किया और कहने लगे कि-"महाराज! मैं धन्य हूं जो आपने मुझको दर्शन दिये। इस समय मनुष्य कलियुग के प्रताप से बुहत-से पाप-कर्मों में लगे हुए हैं और बड़े-बड़े यज्ञ, तप असाध्य हो गये हैं। पाप करने से अति दुःखों को प्राप्त हो रहे हैं। अतः यदि कोई आप मुझको ऐसा सूक्ष्म-सा सरल उपाय बतायें जो समस्त पापों का नाश करने वाला हो, आपकी अति कृपा होगी।"

नारद जी कहने लगे-"हे राजा अम्बरीष! मैं तुमको मासों में अति उत्तम मास भाद्रपद का माहात्म्य सुनाता हूं जो मेरे पिता ब्रह्माजी के प्रार्थना करने पर भगवान विष्णु जी ने सुनाया था। उत्तम, मध्यम अथवा अवधम किसी भी प्रकार का मनुष्य क्यों न हो इस उत्तम मास के व्रत करने तथा माहात्म्य सुनने से अति पवित्र होकर, बैकुण्ठ लोक को प्राप्त हो जाता है। इसके सम्बन्ध में मैं तुमको एक प्राचीन कथा कहता हूं-

प्राचीन समय में माहिष्मतिपुर में शंबल नाम वाला एक अत्यन्त हानि और कृष्णक्षत्री था। वह कृष्ण होने के कारण अपने धर्म को छोड़कर वैश्यों का कर्म किया करता था। देवयोग से उसके कोई पुत्र नहीं था। उसकी पत्नी सदैव अपने पति की सेवा किया करती थी। उसका नाम सुमति था। वह सदैव ब्राह्मणों की निन्दा किया करता था।

एक समय भाद्रपद मास के आने पर नगर के बहुत-से स्त्री-पुरुष भाद्रपद के स्नान आदि हेतु तैयार हुए। शंबल की स्त्री सुमति ने भी भाद्रपद स्नान करने

का निश्चय किया। शंबल को उसने बहुत समझाया तब कहीं वह स्नान करने को तैयार हुआ, परन्तु दूसरे दिन ही उसको तीव्र ज्वर हो गया। नित्य ही स्नान के समय उसे ज्वर हो जाता और वह स्नान नहीं कर सका। ज्वर के कारण वह अति दुर्बल हो गया और शीत आने पर उसकी मृत्यु हो गयी और वह यमपुरी पहुंच गया तथा वह अनेक प्रकार की नर्क की यातनाएं भोगकर कुत्ते की योनि में पड़ा।

इस योनि में भूख और प्यास से अति दुःखी होकर अति दुर्बल हो गया। कुछ काल व्यतीत होने पर वह वृद्ध हो गया, जिससे उसके सभी अंग शिथिल हो गये। एक दिन उसको मांस का एक पिण्ड मिल गया। किसी पूर्व जन्म के प्रताप से उस समय भाद्रपद मास और शुक्ल पक्ष थी। अकस्मात् वह मांस पिण्ड उसके मुख से छूटकर जल में गिर गया, वह भी व्याकुल होकर उस मांस पिण्ड के पीछे जल में कूद गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसी समय भगवान के पार्षद दिव्य विमान लेकर आये और उसको बैकुण्ठ चलने को कहा। उसने कहा–"मैंने तो किसी भी जन्म में कोई पुण्य कर्म नहीं किया फिर बैकुण्ठ कैसा?" पार्षदों ने कहा–"तुमने अन्जाने में ही भाद्रपद मास में स्नान करके अपने प्राण गंवाये हैं। पुण्य के प्रताप में तुमको बैकुण्ठ प्राप्त हो रहा है।"

अम्बरीष कहने लगे–"जब अज्ञात स्नान का फल इस प्रकार का होता है, तो जब श्रद्धा से स्नान तथा दान किया जायेगा तो कितना पुण्य होगा।"

बूढ़ी तीज

यह भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनायी जाती है। इस दिन व्रत रखकर गायों का पूजन करें तथा सात गायों के लिए सात आटे की लोई बनायें और उनको गुड़, घी आदि सहित गायों को खिला दें, फिर स्वयं भोजन करें। इस दिन बहुओं के श्रृंगार का सामान व साड़ी (सिंघारा) दिया जाता है और बहुएं चीनी और रुपयों का बायना निकालकर अपनी सासू मां के पैर छूकर देती हैं।

कजरी तीज

यह भी भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनायी जाती है। यह खास तौर से बनारस के आस-पास मनायी जाती है। नाव में बैठकर कजरी बाम के गीत गाये जाते हैं। कजरी गीत गाने व सुनने वालो का मन मस्त हो जाता है।

गणेश चतुर्थी

भाद्रपद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का व्रत चैत्र की चतुर्थी की तरह करते हुए कथा सुननी चाहिए। इसको बहुला चतुर्थी भी कहते हैं।

गूंगा पंचमी

यह त्योहार भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन नागों की पूजा की जाती है।

सर्वप्रथम एक कटोरी में दूध लेकर सर्पों को पिलाना चाहिए; अर्थात् सांपों के बिलों में डाल देना चाहिए फिर घर आकर दीवार को गेरू से पोतकर दूध में कोयला घिसकर चौकोर घर जैसा बनाकर उसमें पांच सर्प बनायें और उनको जल, कच्चा दूध, रोली, चावल, बाजरे का आटा, घी और चीनी मिलाकर चढ़ायें, साथ में दक्षिणा भी चढ़ायें। तत्पश्चात् नागपंचमी की कहानी सुनें। भीगे हुए मोठ, बाजरे का बायना निकालकर अपनी सासू मां के पैर छूकर दें।

इस व्रत के प्रभाव से स्त्री सौभाग्यवती होती है, पति की विपत्तियों से रक्षा होती है तथा सभी मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं।

चाना-छठ

यह व्रत भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। यह व्रत केवल कुंवारी कन्याओं को करना चाहिए। इस दिन व्रत रखने वाली कुंवारियां निराहार रहकर पूजन करती हैं। एक पट्टे पर जल से भरे लोटे पर रोली से एक स्वास्तिक (सतिया) बनायें और लोटे की किनारी पर रोली से सात बिन्दी लगायें।

एक गिलास गेहूं से भरकर उस पर दक्षिणा रखें। फिर हाथ में सात-सात दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। कहानी सुनने के पश्चात् लोटे में भरे जल से चन्द्रमा को अर्घ्य देकर गेहूं और दक्षिणा को ब्राह्मणी को दे दें। जिस समय कहानी सुनते हैं उस समय एक कलश जल का भरकर रख लेते हैं और बाद में उसी जल से भोजन तैयार करें।

चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करें।

चाना छठ की कहानी—एक नगर में एक साहूकार व उसकी पत्नी रहते थे। वे अपना कोई भी कार्य स्वयं ना करके नौकरों से करवाते थे। साहूकार की पत्नी बर्तनों को सूंघ-सूंघकर देखती थी कि बर्तन गंदा तो नहीं है। कुछ समय पश्चात् उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। उसकी उन्होंने बड़े होने पर शादी कर दी।

विवाह के कुछ समय उपरान्त साहूकार व उसकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के बाद साहूकार तो बैल बना और साहूकारिनी कुतिया। वे दोनों अपने बेटे के घर ही पहुंच गये। साहूकार का बेटा बैल से खूब काम करवाता, दिन भर खेत जुतवाता और कुएं से पानी खिंचवाता। कुतिया उसके घर की रखवाली करती थी। एक वर्ष के पश्चात् उसके पिता का श्राद्ध आया। श्राद्ध के दिन खूब पकवान बनाये

गये, खीर भी बनायी गयी। खीर को ठण्डा करने के लिए बहू ने उसे थाली में रख दिया। उसी समय एक चील उड़ती हुई आई उसके मुख में मरा हुआ सर्प था। वह सर्प चील के मुंह से छूटकर खीर में गिर गया। यह सब कुतिया बैठी हुई देख रही थी, परन्तु उसकी बहू को कुछ पता नहीं था।

कुतिया सोचने लगी, यदि खीर किसी ने खायी तो तुरन्त ही मर जायेगा, अतः अब क्या करना चाहिए? कुतिया अभी सोचने लगी ही थी कि भीतर से उसकी बहू खीर उठाने आई। कुतिया ने खीर में मुंह दे दिया। जब लड़के की बहू ने कुतिया को खीर में मुंह देते हुए देखा तो वह उसके पीछे डण्डा लेकर भागी। जब बहू ने कुतिया की पीठ पर डण्डा मारा तो उसकी पीठ की हड्डी टूट गयी। रात्रि में कुतिया बैल के पास आयी और बोली–आज तो तुम्हारा श्राद्ध था। तुम्हें तो खूब भोजन मिला होगा।

बैल बोला–मैं तो दिन भर खेत में ही कार्य करता रहा। आज तो मुझे कुछ भी नहीं मिला। कुतिया बोली–जो आज श्राद्ध की खीर बनी थी उसमें चील ने सर्प डाल दिया था। उस खीर को कोई खाकर मर न जाये इसी कारण मैंने उस खीर में मुंह दे दिया था जिस कारण बहू ने मेरी पीठ पर ऐसा डण्डा मारा कि मेरी हड्डी टूट गयी। इससे बहुत दर्द हो रहा है और कुछ खाने को भी नहीं मिला।

यह सब बातें बहू सुन रही थी। उसने कुतिया और बैल की सब बातें अपने पति से कहीं। तब लड़के ने ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा कि मेरे माता–पिता किस योनि में हैं? तब ज्योतिष बोला–तुम्हारे यहां जो बैल है वह तुम्हारे पिता और तुम्हारे घर में जो कुतिया है वही तुम्हारी मां है।

लड़का बोला–तब इनका उद्धार कैसे होगा? ज्योतिषी बोला–तुम अपनी कुंवारी कन्याओं को भाद्रपद लगते ही जो चाना छठ आती है उसका व्रत रखवाओ तब तुम्हारे माता–पिता का उद्धार हो जायेगा। लड़के ने ऐसा ही किया, जिससे उसके माता–पिता पशु योनि से छूटकर दिव्य देह धारण कर स्वर्ग को चले गये।

चाना छठ का उजमन–जिस साल जिस लड़की का विवाह हो उस साल वह लड़की चाना छठ का उजमन करे। व्रत पूजा पहले की तरह करे। कहानी सुनकर सात जगह 4–4 पूरी और सोरा रखे। उन पर कुछ मीठा और दक्षिणा रखकर सासू जी को पांव छूकर दे। अपने साथ सात कुंवारी कन्याओं को व्रत कराये। रात्रि में अर्घ्य देकर सातों लड़कियों सहित भोजन करे। साथ में एक कुंवारे लड़के को भी भोजन कराये। यदि उन सात कन्याओं में कोई ब्राह्मण की लड़की हो तो उसे दक्षिणा दे।

ललिता व्रत

यह व्रत भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को ही किया जाता है। इस

दिन ललिता देवी की पूजा होती है।

इस दिन व्रत रखने वाली स्त्रियों को सुबह स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करने चाहिएं। नदी में से बालू या रेत लाकर पिण्ड (आकृति) बनाकर उसे कांसे के पात्र में रखें। इसी प्रकार पांच पिण्ड बनायें। उन पिण्डों का पूजन ललिता देवी का ध्यान करके करें। फिर कमल, कनेर, मालती, गुलाब आदि के फूल चढ़ायें।

पूजा के उपरान्त हाथ जोड़कर खड़े हो जायें और निम्न प्रार्थना करें–

गंगाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नील पर्वत।
स्नात्वा कनखले देवि हर लब्धवती पतिम्॥
ललिते सुभमे देवि सुख सौभाग्यदायिनी।
अनन्त देहि सौभाग्यं मध्य तुम्यं नमो नमः॥

अर्थात् हे देवी! अपने गंगाद्वार कुशववर्त्त बिल्वक नील पर्वत और कनखल तीर्थ में स्नान करके भगवान शिव की पत्नी रूप में प्राप्त किया है। सुख और सौभाग्य देने वाली ललिता देवी आपको बार–बार नमस्कार है, आप मुझे अक्षय सौभाग्य दीजिये।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए चम्पा के फूलों द्वारा ललिता देवी की विधिपूर्वक पूजा करें और भोग लगायें।

खीर, ककड़ी, कुम्हड़ा, नारियल, अनार, बिजौरा, नींबू, तुण्डीर कारवेल्स आदि देवी के आगे रखें। साथ ही धान, दीप, अगर, धूप, लक, करंजक, गुड़, फूल आदि कान के आभूषण, लड्डू आदि आपनीय शक्ति की वस्तुएं रखकर भोग लगायें। रात्रि में जागरण करें। प्रातः देवी जी को नदी के किनारे ले जायें। वहां पर उनकी पूजा करें। जो सामान उनके सामने रखा था वह ब्राह्मणों को दे दें। फिर नदी में स्नान कर घर आकर हवन करें।

देवताओं और पितरों का पूजन करके कन्याओं और 15 ब्राह्मणों को भोजन करायें। भोजन के बाद दक्षिणा देकर उन्हें विदा करें।

इस ललिता व्रत के करने वाली स्त्री की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह व्रत सभी प्रकार के दान, व्रत आदि से ऊपर है। मृत्यु के बाद वह स्त्री ललिता देवी की सखी बनकर शिव–धाम में चिरकाल तक सुख भोगती है और उसका पति शिव के समीप रहकर सुख भोगता है।

केसरिया की जात

भाद्रपद की कृष्ण पक्ष अष्टमी को केसरिया की जात लगती है। इस दिन हाथ में दाल का दाना लेकर किसी भी दिशा में जल चढ़ा दें और नारियल भी चढ़ा दें। केसरियाजी के नाम का दूध, रोली, चावल, फूल, प्रसाद तथा दक्षिणा भी चढ़ायें।

जन्माष्टमी

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में अर्द्धरात्रि को परम-पावन भगवान श्री कृष्ण ने भूतल पर भारतवर्ष की नगरी मथुरा में अवतार लेकर भक्तों का उद्धार करते हुए कंस आदि को मौत के घाट उतार दिया था, इतना ही नहीं उन्होंने धर्मात्मा पाण्डवों की रक्षा करते हुए कौरवों का नाश करने और संसार को ज्ञान सूर्य से प्रकाशित करने के लिए गीता जैसे अमूल्य ग्रन्थ का निर्माण किया था। स्वयं गीता में भगवान ने कहा है कि जब-जब भूतल पर धर्म का पालन न होकर पाप का साम्राज्य होगा, तब7तब ये अवतार धारण करके पापियों का संहार करता हुआ भक्तों का उद्धार करूंगा।

अतः समय-समय पर विष्णु भगवान भूतल पर अवतार धारण करके दुष्टों का दमन और सज्जन साधुओं की रक्षा किया करते हैं।

जन्माष्टमी को भगवान का व्रत करते हुए यम नियमों का पालन करना चाहिए। पूजा-पाठ के साथ ही भागवत् गीता व महाभारत का श्रवण करना चाहिए। भगवान के चरित्रों का भली प्रकार वर्णन सुनना चाहिए और उनके कार्यों के उद्देश्यों से भली प्रकार परिचित होना चाहिए। इसके अलावा मन्दिरों की प्रतिमाओं को नवीन वस्त्राभूषण पहनाकर मन्दिरों को विशेषरूप से सजाते हुए भगवान की झांकियां निकाली जाती हैं।

गूंगा नवमी

भादवा बदी नवमी को गूंगा नौमी कहते हैं। इस दिन महापराक्रमी पीरवर गूंगा ने जन्म लेकर मलेच्छों का मान-मर्दन करते हुए हिन्दू धर्म की रक्षा की थी।

इस दिन तेल के गुलगुले बनाकर और पूरी बनाकर वीरवर की पूजा कर बच्चों को भोजन खिलाकर उत्सव मनाया जाता है। कई महानुभावों का यह भी विश्वास है कि गूंगा के पूजन से सर्पों का भय कम हो जाता है।

जया एकादशी

भाद्रपद कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम जया एकादशी है, इस दिन चैत्र की एकादशी का व्रत करके कथा सुननी चाहिए।

बछवारस

यह भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष द्वादशी को मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियों

को गाय-बछड़ों की पूजा करनी चाहिए। अगर किसी के गाय-बछड़े न हों तो किसी दूसरे के गाय-बछड़ों की पूजा करें। अगर गांव में भी न हों तो मिट्टी के गाय-बछड़े बनाकर उनकी पूजा करें। ऊपर दही में भीगा हुआ बाजरे का आटा, घी आदि चढ़ायें। रोली से तिलक करें। चावल चढ़ायें, दूध चढ़ायें फिर बछवारस की कहानी सुनें।

मोठ, बाजरे पर रुपये रखकर बायना निकालकर सासू मां को पैर छूकर दे दें। इस दिन बाजरे की ठण्डी रोटी खायें। गाय का दूध, दही, गेहूं, चावल आदि न खायें। यह व्रत पुत्र होने के बाद ही किया जाता है। अपने कुंवारे लड़के की कमीज पर स्वास्तिक का निशान बनाकर पहनायें और कुएं की पूजा करें। इससे बच्चों की जीवनरक्षा होती है। वह भूत-प्रेत और नजर से बचा रहता है।

बछवारस की कथा—एक राजा के सात बेटे और एक पोता था। एक दिन राजा ने सोचा, कुआं बनवाया जाए। उसने कुआं बनवाया लेकिन उसमें पानी नहीं आया। तब राजा ने पण्डितों से कुएं में पानी न आने का कारण पूछा। तब ब्राह्मणों ने कहा—महाराज! अगर आप यज्ञ करायें और अपने पोते की बलि दें तो पानी आयेगा।

राजा ने ऐसा ही करने की आज्ञा दे दी। यज्ञ की तैयारियां हुईं और बच्चे की बलि दी गयी। बच्चे की बलि देते ही पानी बरसने लगा, कुआं पानी से भर गया। राजा ने जब समाचार सुना तो वह अपनी रानी सहित कुआं पूजने गये।

घर में साग-सब्जी न होने के कारण गाय के बछड़े को काटकर बना दिया। जब राजा और रानी पूजा करके वापिस आये तब राजा ने कहा—गाय का बछड़ा कहां है? तब नौकरानी ने कहा—उसे तो मैंने काटकर साग बना दिया। तब राजा बोला—पापिन! तूने यह क्या किया!

राजा ने उस मांस की हांडी को जमीन में गाड़ दिया और सोचने लगा कि गाय को किस प्रकार समझाऊंगा। गाय शाम को जब वापिस आयी तो हांडी के गड़े स्थान पर सींग से खोदने लगी। हांडी में सींग लगते ही उसमें से गाय का बछड़ा व राजा का पोता बाहर निकला। तभी इसी दिन का नाम बछवारस पड़ गया तथा गाय और बछड़ों की पूजा होने लगी।

हरितालिका व्रत

भाद्रपद कृष्ण तीज को हरितालिका व्रत किया जाता है। इसमें भगवान शंकर-पार्वती की मूर्ति बनाकर उनकी पूजा की जाती है और एकाहार रहते हुए व्रत करते हुए कथा श्रवण की जाती है।

कथा—एक बार हिमालय राजा ने अपनी पुत्री पार्वतीजी का विवाह विष्णु

भगवान से कर देने का निश्चय किया और इसके लिए उन्हें राजी भी कर लिया, परन्तु पार्वती यह नहीं चाहती थीं; क्योंकि उनकी इच्छा शिवजी से विवाह करने की थी इसलिए वे बड़ी दुखित हुईं और इसका भेद जब अपनी सखी को बताया तो वह पार्वतीजी को लेकर ऐसी कन्दरा में छुप गयी, जहां किसी को उनका पता लगाना असम्भव था।

पार्वती को घर में न देखकर राजा को बड़ी चिन्ता हुई और अपने दूतों को उनका पता लगाने के लिए इधर-उधर भेजा और स्वयं भी उनकी खोज में निकल पड़े।

इधर पार्वतीजी ने उस दिन से भगवान शंकर की मिट्‌टी की प्रतिमा बनाकर उनका पूजन आरम्भ कर दिया। इस पर प्रसन्न होकर भगवान शंकर पार्वतीजी के पास पहुंचकर कहने लगे-"मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं अतएव मन-इच्छा वर मांगो।" इस पर पार्वतीजी ने हाथ जोड़कर कहा-"प्रभु! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी धर्मपत्नी बनाकर कृपा कीजिए।" भगवान शंकर ने कहा-"ऐसा ही होगा।"

इसी समय उन्हें खोजते हुए पर्वतराज भी वहां आ पहुंचे और पार्वतीजी को सखी के साथ वहां देखकर पूछने लगे-"यहां आकर तुम्हारा छुपने का क्या कारण है?"

पिता की बात सुनकर लजाते हुए पार्वतीजी ने सारी बात खोलकर उनको सुना दी। पुत्री की बातें सुनकर महाराज हिमालय ने उनका विवाह शिव के साथ करना स्वीकार कर लिया। तदोपरान्त पार्वती अपनी सखी के संग पिता के साथ चल दी। जिस दिन पार्वतीजी का सखी द्वारा हरण किया गया था, उसी दिन पार्वती जी ने भगवान शंकर का व्रत किया। उस दिन भाद्रपद शुक्ल तीज थी, इसलिए इसे हरितालिका व्रत कहते हैं।

इस व्रत को करने से कुंवारियों को मनचाहा पति मिल जाता है तथा सुहागिन के स्वामी की आयु लम्बी होती है।

गणेश चतुर्थी

भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को गणेश-पूजन महोत्सव होता है और लड्डुओं का भोग लगाया जाता है। भोग से पूर्ण विधिवत् गणेशजी का पूजन होता है। इसी दिन डण्डा चौथ मनाते हैं। गणेश पूजन होता है और गुल्ली-डण्डा बजाकर लोगों से चन्दा लिया जाता है।

इस दिन चन्द्रमा देखने से भगवान कृष्ण को कलंकित होना पड़ा था; इसलिए इसका नाम पथरवा चौथ भी है।

कथा–एक समय पार्वती जी स्नान कर रही थीं। उस समय कोई सखी उनके पास न थी इसलिए उन्होंने अपने मैल से गणेश जी को बनाकर उन्हें द्वार पर खड़ा कर आज्ञा दी कि–"मेरी आज्ञा बिना किसी को भीतर ना आने देना।"

माताजी की आज्ञा सुनकर गणेशजी अपना डण्डा लेकर द्वार पर खड़े हो गये। थोड़ी देर के पश्चात् भगवान शंकर जी वहां आये और उन्होंने भीतर प्रवेश करना चाहा परन्तु गणेशजी ने कहा कि अन्दर जाने की आज्ञा नहीं है, ऐसा माताजी ने कहा है।

गणेशजी के वचन सुनकर भगवान ने कहा–"हे मूर्ख! निषेधाज्ञा का यह अर्थ नहीं है कि घर का स्वामी भी प्रवेश नहीं कर सकता। इसका मतलब है कि अन्य जाने-अनजाने पुरुषों को भीतर मत जाने दो। यदि उनका यह आशय नहीं है तो जाकर अपनी मां से पूछ लो।

गणेशजी ने कहा–"व्यर्थ बात से क्या! मैं न तो भीतर पूछने ही जाऊंगा और न ही किसी को भीतर प्रवेश करने दूंगा। जब तक कि वे यहां आकर स्वयं मुझे नहीं हटाएंगी, तब तक मैं किसी को भीतर प्रवेश नहीं करने दूंगा। फिर चाहे वह कोई भी होगा।

इधर तो भगवान शंकर और गणेशजी के बीच कहा-सुनी हो रही थी और उधर पार्वतीजी स्नान कर पूजा में बैठ गयीं और उनके मन से यह बात सर्वथा निकल गयी कि मैंने गणेशजी को निषेधाज्ञा देकर द्वार पर खड़ा कर रखा है।

इधर बात बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ी कि क्रोधित होकर भगवान शंकर ने गणेशजी का सिर काट दिया और भीतर प्रवेश करके पार्वतीजी से कहने लगे–"आज तुमने ऐसे दुष्ट को द्वार पर खड़ा कर दिया जो तुम्हारी आज्ञा के बिना मुझे भी भीतर प्रविष्ट होने से रोक रहा था; इसलिए मैंने उस दुष्ट का सिर उतार दिया।"

शिवजी के वाक्यों को सुनकर पार्वतीजी दुःखी होकर बोलीं–"भगवान! यह आपने अच्छा नहीं किया जो इस अबोध बालक की बातों में आकर उसका मस्तक ही उतार दिया। अतः कृपा करके उसे न केवल नवजीवन ही दीजिये अपितु ऐसे मातृभक्त को सर्वोपरि पूजनीय बनाने की भी कृपा कीजिये।

पार्वतीजी की प्रार्थना सुनकर सब जीवों पर दया करने वाले भगवान शंकर ने गणेशजी को नवजीवन प्रदान करते हुए कहा–"पार्वती! तेरे पुत्र को मैंने न केवल नवजीवन ही दिया है, अपितु उसके हाथी जैसा मस्तक लगाते हुए उसे सब देवों में प्रथम पूजनीय भी बना दिया है अतः आज से जो भी कार्यारम्भ में गणेशजी का नाम लेगा वह विघ्नों से रहित होकर सब प्रकार के कार्यों को सम्पूर्ण करेगा। इसमें कदाचित् सन्देह नहीं है।"

पथरवा चौथ व्रत की कथा—ससेनजीत यादव ने भगवान सूर्य नारायण की प्रार्थना करके सिद्धिपाता समयन्तक मणि प्राप्त की थी। वह नित्य उसे अपने गले में धारण किये रखता था। एक दिन वह भगवान कृष्ण की सभा में चला गया। वहां उसे कई यादवों ने इस मणि को भगवान श्री कृष्ण को समर्पण कर देने के लिए कहा, परन्तु उसने यह बात यूं ही कहा-सुनी में टाल दी।

एक दिन उसका भाई प्रसेनजीत उस मणि को लेकर जंगल में शिकार खेलने चला गया। वहां उसे एक शेर ने मार दिया। जब कई दिन तक प्रसेनजित वापिस नहीं लौटा तो ससेनजित ने श्रीकृष्ण को दोषी ठहरा दिया कि मणि कृष्ण के पास है। उन्होंने ही प्रसेनजीत को मार दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने जब यह बात सुनी तो वे चिन्तित और लज्जित होते हुए मणि की तलाश में जंगल की ओर चल पड़े और प्रसेनजीत के कंकाल के पास पहुंचकर उसे मारने वाले सिंह के पद चिन्हों का पीछा करते हुए एक गुफा में पहुंच गए। वहां जाकर उसने जाम्वंत की अत्यंत सुन्दरी कन्या को उस मणि से खेलते हुए देखा।

तत्पश्चात् उन्होंने मणि देने के लिए जाम्वंत से प्रार्थना की और उसके मना करने पर उसे युद्ध में पराजित करके मणि को प्राप्त किया। हार जाने पर जाम्वंत ने अपनी सुन्दर कन्या को श्रीकृष्ण के समर्पित कर दिया।

उसके बाद जाम्वंती को लेकर श्री कृष्ण द्वारिकापुरी लौट आये और सभा में ससेनजित को बुलाकर मणि की कथा के साथ-साथ समयन्तक मणि उसे सौंप दी।

उक्त घटना से ससेनजीत इतना लज्जित हुआ कि उसने अपनी लड़की सत्यभागा का विवाह भगवान श्री कृष्ण के साथ कर दिया और समयचक्र मणि उसे गहने के रूप में प्रदान कर दी।

जो मनुष्य इस कथा को भक्तिपूर्वक सुनेंगे उनको भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को चाँद को देखने का कदाचित् दोष नहीं लगेगा।

दुबड़ी साते

यह पर्व भादो शुक्ल पक्ष की साते को आता है। इस दिन दुबड़ी की पूजा करनी चाहिए। एक पट्टे पर दुबड़ी (कुछ बच्चों की मूर्ति, सर्पों की मूर्ति, एक मटका एवं एक औरत का चित्र) मिट्टी से बना लें। उनको चावल, जल, रोली, आटा, घी, चीनी मिलाकर लोई बनाकर उनसे पूजें। दक्षिणा चढ़ायें तथा बाजरा चढ़ायें। मोठ, बाजरे का बायना निकालकर सासू जी को पांव छूकर दे दें। फिर दुबड़ी साते की कहानी सुनें। इस दिन ठण्डा खाना नहीं खाना चाहिए। यदि इसी वर्ष किसी लड़की का विवाह हो तो वह उजमन करें। उजमन में मोठ, बाजरे की तेरह पूड़ी

एक थाली में लेकर और एक रुपया तथा एक साड़ी पर हाथ फेरकर अपनी सासू जी को पांव छूकर दे दें।

व्रत की कथा—एक साहूकार था, उसके सात पुत्र थे। जब वह अपने किसी बेटे का विवाह करता, उसी समय उसका वह बेटा मर जाता है। इस समय उसके छः पुत्र मर चुके थे। एक दिन की बात है कि छोटे बेटे की बात चली शादी तय हो गयी, रिश्तेदारों को न्यौते भी भेज दिये गये।

जब इस लड़के की बुआ आ रही थी तो उसे राह में एक बुढ़िया मिली। वह चक्की में आटा पीस रही थी। वहां लड़के की बुआ बैठ गयी और बुढ़िया के पांव लगी। बुढ़िया बोली—"बेटी तू कहां जा रही है?" तब उसने सब हाल कह सुनाया। बुढ़िया बोली—"वह तो घर से निकलने पर दरवाजे के नीचे दबकर मर जायेगा। अगर वहां से भी बच गया तो मार्ग में जहां बारात रुकेगी, वहां पेड़ गिर जायेगा और वह दबकर मर जायेगा। यदि वहां से बच गया तो ससुराल में दरवाजा गिरने से दबकर मर जायेगा। यदि वहां भी ना मरा तो सातवें फेरे पर सर्प काट लेगा तथा मर जायेगा।"

यह बात सुनकर लड़की की बुआ कहने लगी—"मां! क्या उसके बचने की कोई युक्ति है?" तब बुढ़िया बोली—"है तो सही किन्तु कठिन है। सुन, उस लड़के को पीछे की दीवार फाड़कर निकालना, पेड़ के नीचे बारात न रुकने देना, ससुराल में भी पीछे से दरवाजा काटकर ले जाना। भांवरों पर एक कटोरा दूध का भरकर रख लेना, एक तांत का फांसा बनाकर रख लेना और फिर सांप आयेगा, उसे दूध पिलाकर बांध देना, फिर सांपिन आयेगी और वह सांप को मांगेगी फिर तुम उससे अपने छः भतीजों को मांग लेना, वह उन्हें जीवित कर देगी। साथ ही इस बात को किसी को मत सुनाना, नहीं तो सुनाने वाले और सुनने वाले दोनों की मृत्यु हो जायेगी। फिर लड़का नहीं बच सकता।" यह कहकर बुढ़िया जाने लगी और बोली—"मेरा नाम दुबड़ी है।"

यह सुनकर बुआ घर आ गयी। जब बारात जाने लगी, तब वह मार्ग रोककर खड़ी हो गयी और कहने लगी—"पीछे से दरवाजा बनाकर ले जाओ जब पीछे के दरवाजे से लड़का निकला तो घर का पुराना दरवाजा गिर गया। तब सब कहने लगे कि बुआ ने तो अच्छा किया। जब बारात चलने लगी तो बुआ भी जाने लगी। सबने मना किया कि औरतें बारात में नहीं जातीं पर वह नहीं मानी और बारात के साथ चल दी।

रास्ते में जब बारात पेड़ के नीचे रुकने लगी तो उसने मना किया, दूल्हे को वहां से हटाकर धूप में बिठाया। दूल्हे के बैठते ही पेड़ गिर गया। तब सभी लोग

हैरानी के साथ-साथ खुश हुए। जब ससुराल बारात पहुंची तो वहां भी उसने पीछे के रास्ते जाने को कहा। सबने उसकी बात मान ली। जैसे ही बारात पिछले दरवाजे से अन्दर घुसी, आगे का दरवाजा गिर गया। तब भी लोगों ने आश्चर्य से बुआ को देखा।

जब भांवरे पड़ने लगे तब उसने एक कटोरा दूध और एक तांत का फांसा बनाकर रख लिया। जब सातवीं भांवर पड़ने लगी तभी सर्प आया। बुआ ने सर्प के आगे दूध कर दिया, दूध पीते समय सांप को उसने तांत से बांध लिया। जब सांपिन आई और उसने सांप को मांगा तो बुआ ने अपने छः भतीजे मांग लिए।

सांपिन ने उसके छः भतीजे जीवित कर दिये और सांप को लेकर चली गयी। इस तरह उसे अपने सातों भतीजे मिल गये। बारात जब घर वापिस आई तब लड़के की बुआ ने सप्तमी के दिन दुबड़ा की पूजा करवाई। इसी से इसको दुबड़ी साते कहते हैं।

"हे मैया! जैसे तुने बुआ को उसके भतीजे दिये ऐसे सबको देना।"

परिवर्तनी-पद्मा एकादशी

यह लक्ष्मी का परम अह्लदकारी व्रत है। इसे पद्मा एकादशी भी कहते हैं तथा इसे परिवर्तनी, करवट बदलनी एकादशी भी कहते हैं। आषाढ़ मास से शेष शय्या पर निद्रा-मग्न विष्णु भगवान भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को करवट बदलते हैं; इसीलिए इसका नाम करवट बदलनी एकादशी भी है।

इस व्रत को धारण करके प्रातः स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। धूप, दीप, पंचामृत, फल, पुष्प आदि से भगवान विष्णु व लक्ष्मी जी का पूजन करना चाहिए तथा उनकी आरती करनी चाहिए। देवताओं ने अपने राज्य को पुनः पाने हेतु महालक्ष्मी का ही पूजन किया था। इस दिन भगवान वामन का भी व्रत व पूजन किया जाता है।

गौ गिरजा व्रत

यह व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को किया जाता है। इस दिन गौओं की पूजा होती है। साथ में भगवान लक्ष्मी नारायण की भी पूजा की जाती है। सर्वप्रथम एक मण्डप बनायें। उसमें भगवान की मूर्ति को स्नान कराकर प्रतिस्थापित करें एवं अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषण, पहनाकर आरती उतारें। फिर गौओं की पूजा करें एवं निम्नलिखित मंत्र पढ़कर गाय को नमस्कार करें-

पंचगावः समुप्पन्नाः मध्यगाने महोदधौ।
तेरा मध्ये तुया नन्द, तस्मै धेन्वे नमौ नमः॥

अर्थात् पांच सागर का मंथन होने पर उस समय पांच गाय पैदा हुईं। उनके बीच में नंदा नाम वाली गाय है, उस गाय को बार-बार नमस्कार है।

पुनः निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण कर गाय ब्राह्मण को दान दें-

गावो ममागतः सन्तु गावो ये सन्तु पृष्ठतः।
गावों में पार्श्वत! सन्तु गावो मध्ये वसाभ्यहमा॥

अर्थात् गायें मेरे आगे रहें, गाये मेरे पीछे रहें, गाय मेरी बगल में निवास करें तथा मैं गायों के मध्य में रहूं।

तत्पश्चात् ब्राह्मण का सत्कार कर विदा करें एवं आशीर्वाद प्राप्त करें। जो इस तरह व्रत धारण करता है उसे हजारों अश्वमेघ एवं राजशूय यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

अनन्त चतुर्दशी व्रत

भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को शेष शय्या पर क्षीर सागर में सोने वाले विष्णु भगवान की पूजा होती है। पूजा के अन्त में निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें-

अनन्त सर्व नागः नामधिपः सर्वकामदः।
सदा भूयात प्रसन्नो मे भक्तानाम भयंकर॥

यहां विष्णु का कृष्ण रूप है तथा शेषनाग काल रूप से विद्यमान रहते हैं। इसलिए दोनों की सम्मिलत पूजा की जाती है। इस व्रत की पूजा-विधि इस प्रकार है-प्रातः नित्य क्रिया और स्नानादि से निवृत होकर चौकी के ऊपर मण्डप बनाकर उसमें अक्षत सहित या कुशा के सात कणों से शेष भगवान की प्रतिमा स्थापित करें। उसके समीप चौदह गांठ लगाकर हल्दी से रंगे कच्चे डोरे को रखें एवं गंध अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करें। इसके बाद अनन्त देव का ध्यान करके शुद्ध अनन्त को अपनी बायीं भुजा में धारण करना चाहिए। यह तागा अनन्त फल देने वाला है।

व्रत कथा-धर्मराज युधिष्ठिर ने जब राजसूय यज्ञ किया, उस समय यज्ञ मण्डप इतना मनोरम बनवाया कि जल स्थल की भिन्नता प्रतीत ही नहीं होती थी। जब टहलते हुए दुर्योधन उस यज्ञ मण्डप में पहुंचा तो अचानक कुण्ड में गिर पड़ा। तो द्रोपदी ने यह देखकर उपहास करते हुए कहा-"अन्धों की संतान अन्धी ही होती है।"

यह बात दुर्योधन के हृदय में तीर-सी लगी। बदला लेने हेतु पाण्डवों को द्युत क्रीड़ा में परास्त कर प्रतिज्ञानुसार उन्हें बारह वर्ष का बनवास दिया।

युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण को सम्पूर्ण वृतान्त सुनाकर उन संकटों को

दूर करने हेतु युक्ति पूछी। श्री कृष्ण ने उन्हें अनन्त भगवान का व्रत करने की सलाह दी तथा कथा भी सुनायी।

प्राचीन काल में सुमंत नामक ब्राह्मण ने अपनी सुशीला नाम की कन्या का विवाह कौडिन्य ऋषि के साथ कर दिया। कौडिन्य ऋषि को सुशीला के साथ रास्ते में ही संध्या हो गयी। पूछने पर उन्होंने अनन्त व्रत की महिमा बताई। सुशीला ने भी व्रत का अनुष्ठान कर चौदह गांठों वाला डोरा अपने हाथ में बांधकर कौडिन्य के समीप आई। कौडिन्य के पूछने पर उसने उस डोरे का रहस्य बताया। कौडिन्य ने डोरा तोड़कर अग्नि में डाल दिया। इससे अनन्त भगवान का अपमान हुआ जिससे उनकी सुख-समृद्धि समाप्त हो गयी।

कौडिन्य पश्चाताप से उद्विग्न हो उस डोरे के लिए वन में चले गये। वन में घुमाते हुए वे भूमि पर गिर पड़े। तब अनन्त भगवान ने उन्हें दर्शन देकर कहा-"हे कौडिन्य! तुमने मेरा तिरस्कार किया था। उसी से तुम्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा। ज्ञान हो गया हो तो अब घर जाकर अनन्त का अनुष्ठान चौदह वर्षों तक करो, इससे तुम्हारे दुःख-दरिद्रता नष्ट हो जायेंगे और तुम धन-धान्य से सम्पन्न हो जाओगे।"

कुशोष्पादिनी अमावस्या

भाद्रपद की अमावस्या को यह अमावस्या मनायी जाती है। इस दिन सभी लोग अपने पितरों को जल देते हैं। उनकी पूजा करते हैं। इसके लिए जंगल से कुशा उखाड़ते हैं। कुशा उखाड़ते समय **'हुं फट'** मन्त्र बोलते जाना चाहिए।

सती व्रत

यह व्रत भाद्रपद की अमावस्या को किया जाता है। इस दिन सती की पूजा करनी चाहिए। इस दिन सती जी के मन्दिर में जाकर जल, कलावा, नारियल, प्रसाद, पूड़ी, फूल, रोली, चावल, मेंहदी, काजल, चूड़ी, हींगुल, लड्डू आदि चढ़ाकर दक्षिणा चढ़ायें।

सती की धोकमारना-पट्टे को जल से धोकर उस पर तेरह-तेरह रोली, मेंहदी तथा कागज से कुड़ो बनायें और प्रत्येक कुड़ो पर मीठी पूड़ी, मीठा, चीनी, प्रसाद और मीठी चीली और कच्चा नारियल चढ़ायें और फिर एक दीया जलायें और सती को दण्डवत् कर अपने भी टीका लगायें।

ऋषि पंचमी व्रत

यह व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की पंचमी को आता है। इसे स्त्रियों और पुरुषों को अलग-अलग ढंग से करना चाहिए।

स्त्रियों के लिए व्रत विधि—पंचमी के पहले दिन गंगास्नान को जायें और पंचमी को व्रत रखकर वापिस आयें। यदि गंगाजी न जा सकें तो घर पर इस प्रकार स्नान करें—

सुबह 108 बार मिट्टी से हाथ धोयें। मिट्टी, गोबर, तुलसी की मिट्टी, पीपल की मिट्टी, गंगाजी की मिट्टी, गोपीचंदन, बिल्व, आंवला, गंगाजल, गऊ मूत्र—इन सबको जल में मिलाकर हाथ-पैर धोयें।

108 बार मुंह में उंगली से दातुन करें, 100 बार कुल्ला करें, 108 बार पत्ता सिर पर रखकर 108 बार लोटे से जल डालकर स्नान करें। स्नान करके नये कपड़े पहनें। गणेशजी और अरुन्धतीजी की पूजा करें। सोलह प्रकार से सप्तऋषियों की पूजा करें। (1. कश्यप, 2. अक्षि, 3. भारद्वाज, 4. विश्वामित्र, 5. गौतम, 6. जयादग्नि, 7. वशिष्ठ)—इन ऋषियों की कथा सुनें। पूजा की सामग्री मंगायें।

पूजा के बाद सात केले, घी, चीनी और दक्षिणाशस्त्र दें। बाद में उसे किसी ब्राह्मण को दे दें। शाम को सात बजे के बाद भोजन करें। इस दिन, नमक, दूध, घी, चीनी नहीं खायें। केवल वृक्ष के पके फल ही खायें।

पुरुषों के लिए व्रत विधि—प्रातःकाल गंगास्नान करें। घर आकर अपने हाथों से वेदी बनायें उसे गोबर से लीपकर साफ कर लें। इसके पश्चात् कुशा का आसन बिछाकर, वहां सुगंधित अगरबत्ती, फूल, धूप और सुन्दर दीपों के द्वारा उपर्युक्त सातों ऋषियों की पूजा करें।

पूजा के बाद अर्घ्य दें। विद्वान् पुरुषों को चाहिए कि बिना बोये पदार्थों; जैसे समा के चावल का भोग लगायें। इसी भोग को प्रसाद के रूप में उपस्थित जनों को बांटकर व्रत रखने वाला पुरुष स्वयं खा ले।

जो प्राणी इस प्रकार व्रत करता है, वह इस लोक में सुख भोगता हुआ सप्तऋषियों की कृपा से दिव्यलोक ही जाता है।

महालक्ष्मी का डोरा

महालक्ष्मी का डोरा दुबड़ी साते को (सोलह तार के डोरे में) सोलह गांठ लगाकर, हल्दी की गांठ घिसकर उनमें रंग कर लें। फिर महालक्ष्मी की कहानी सुनकर उस डोरे को पहन लें।

महालक्ष्मी का डोरा खोलें—श्राद्ध लगते ही अष्टमी को महालक्ष्मी का डोरा खोलें। इस दिन शाम को स्नान करके नये वस्त्र पहनकर पूरी आदि सामान बनायें। फिर एक पट्टे पर एक पीपल की टहनी और एक लोटा रख लें। लोटे पर सतिया काढ़कर सोलह बिन्दी लगायें।

इसके बाद पीपल की पूजा करें और सोलह सुहाली सीरा व पूरी चढ़ायें। पीपल

के दोनों ओर 2 आटे के चौमुखा दीपक रख दें फिर बायें हाथ की तरफ का दीपक पीछे फेंक दें और दाहिने हाथ का दीपक ढक कर रख दें।

फिर सोलह दाने गेहूं के लेकर वही कहानी सुनें जो डोरा लेने के दिन सुनी थी। एक कटोरी में सीरा और रुपया रखकर बायना काढ़कर सासू मां को पैर छूकर दें।

रात्रि में लोटे के जल और सोलह दाने गेहूं से चन्द्रमा को अर्घ्य दें और भोजन कर लें।

भभुत सिद्ध की जात

भाद्रपद की शुक्ल सप्तमी को भभुत सिद्ध की जात लगती है, एक पट्टा रखकर उस पर सतिया काढ़कर दक्षिणा, जल, रोली, चावल, लड्डू, नारियल चढ़ाकर टीका करें। फिर हाथ जोड़कर (दण्डवत् प्रणाम) कर लें।

राधाष्टमी व्रत

यह व्रत भादो कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रखा जाता है। इस दिन श्री राधा जी का जन्म हुआ था। इस दिन राधा और कृष्ण जी की पूजा करनी चाहिए। पहले राधा जी को पंचामृत से स्नान करायें। फिर उनका श्रृंगार करें। भोग लगायें फिर धूप, दीप, फूल आदि से आरती उतारें। इस प्रकार पूजा करने पर मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और इस लोक और परलोक में भी सुख पाता है।

रामदेव जी की जात

भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की दशमी को रामदेव जी की जात लगती है। यदि रामजी का मन्दिर हो तो मन्दिर में, नहीं तो घर में ही रामजी की जात दे दें। जल, रोली, चावल, चूरिमा, नारियल, दक्षिणा चढ़ायें। सभी टीका लगा लें और रामजी का नाम लेकर धोक मारें। (दण्डवत् प्रणाम करें)।

विश्वकर्मा पूजा

जिस मिल मालिक का जिस तरह का भी कार्य हो विश्व कर्मा के दिन समस्त पूजा सामग्री से विश्वकर्मा जी की श्रद्धापूर्वक पूजा करें।

वामन द्वादशी

वामन द्वादशी भाद्रपद शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मनायी जाती है। इस दिन

भगवान वामन की पूजा समस्त सामग्री से करनी चाहिए। पूजा करने के बाद वामन भगवान का 52 पेड़ा और उन पर 52 दक्षिणा रखकर भोग लगावें। फिर एक डलिया में एक कटोरी चीनी, एक कटोरी शरबत, एक कटोरी चावल और एक कटोरी दही व दक्षिणा रखकर ब्राह्मणों को दे दें।

इस दिन व्रत रखकर उज़मन भी करना चाहिए। उजमन से वामन भगवान बहुत ही प्रसन्न होते हैं। उजमन से ब्राह्मणों को माला गऊमुखी, कमण्डल, लाठी, आसन, गीता, फल, छाता, खड़ाऊं व दक्षिणा दें। इस प्रकार यह द्वादशी मनाने पर स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

उमा-महेश्वर व्रत

यह व्रत भाद्रपद मास की पूर्णिमा को किया जाता है। इस दिन भगवान महेश्वर और उमा की पूजा करनी चाहिए। सबसे पहले सुबह उठकर स्नानादि करके प्रार्थना करें कि "हे प्रभो! मैं आज आपका व्रत धारण करूंगा।" फिर भगवान महेश्वर की मूर्ति को स्नान कराकर बेल के पत्तों, फूल, धूप आदि से आरती उतारें और शंकर जी की स्तुति करें।

रात्रि को मन्दिर में ही जागरण करें। इस प्रकार यह व्रत 15 वर्षों तक करना चाहिए। इसके बाद इसी प्रकार पूजा कर ब्राह्मणों को दान दें और भोजन खिलाकर, दक्षिणा देकर विदा करें।

जो इस प्रकार व्रत रखता है, वह पृथ्वी पर सुयश पाता है, और धन-धान्य से परिपूर्ण होकर, अन्त में भगवान शंकर के लोक को जाता है।

गाज का व्रत

यदि किसी के लड़का हुआ हो या लड़के की शादी हुई हो तो उसी साल भाद्रपद में शुभ दिन देखकर गाज का व्रत कर उजमन करें। सात जगह चार-चार पूरी, लोटे पर सतियां काढ़कर 7 दाने गेहूं के हाथ में लेकर गाज की कहानी सुनें। फिर चुनरी पर रुपये रखकर सीरा, पूरी पर हाथ फेरकर सासुजी के पांव छूकर दे दें। फिर सूर्य भगवान को लोटे से अर्घ्य देकर सात ब्राह्मणियों सहित स्वयं भोजन कर लें। भोजन करने के बाद उन ब्राह्मणियों को टीका कर दक्षिणा दे दें।

गाज की कथा—एक राजा था और एक रानी थी। वे दोनों महल में रहते थे। एक दिन रानी बोली—हे गाज माता! यदि मेरे गर्भ रह जाये तो मैं तेरा शृंगार करूं। तब रानी के गर्भ रह गया परन्तु रानी ने शृंगार नहीं किया। कुछ दिन उपरान्त रानी बोली—हे गाज माता! यदि मेरे पुत्र हो तो मैं दुबारा शृंगार करूं। तब रानी

के लड़का भी हो गया परन्तु रानी इस बार भी श्रृंगार करना भूल गयी।

एक दिन रानी का लड़का पालने में सो रहा था तभी गाज माता के कोप से बहुत तेज आंधी आई जो पालने सहित लड़के को उड़ाकर ले गयी और एक भील-भिलिनी के यहां ले जाकर रख दिया। उन भील-भीलिनी के न तो धन था और न लड़का। वे जंगल की घास खा-खाकर जीवन निर्वाह करते थे।

जब भील जंगल से वापिस आया तो उसने पालने में लड़का देखा। उसे देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हो उसे खिलाने लगा। एक धोबी था जो राजा व भील दोनों के ही कपड़े धोता था। राजा के महल में यह शोरगुल हो रहा था कि गाज माता लड़के को उड़ाकर ले गयी। तभी धोबी बोला कि मैंने आज ही लड़का पालने सहित भील के घर देखा है। तब राजा बोला--भील को यहां बुलाकर लाओ। भील को राजमहल में ले जाया गया। तब राजा ने भील से पूछा कि तेरे घर पालने में लड़का कैसे पहुंचा? तब वह भील बोला—हे महाराज! मैं गाज माता का व्रत करता हूं। अत: गाज माता ने खुश होकर मुझे लड़का दिया है। तभी राजा-रानी को याद आई कि हमने गाज माता का श्रृंगार बोला था, परन्तु वह पुत्र होने के बाद भी नहीं किया इसलिए हमारा पुत्र चला गया।

तब रानी बोली—हे गाज माता! हमारा पुत्र ला दो। मैंने आपके जितने श्रृंगार बोले थे उनसे दुगने श्रृंगार कर दूंगी। गाज माता ने राजा-रानी का पुत्र ला दिया। तब रानी ने खूब उजमन किये। भील-भीलिनि के भी गाज माता की कृपा से पुत्र हो गया और उन्हें खूब धन दिया।

□□□





अध्याय-7

आश्विन मास

आश्विन मास का माहात्म्य

आश्विन मास में हमारी पृथ्वी और लोक या ज्योतिषचक्र के अनुसार अन्तर बहुत थोड़ा रह जाता है। अतः श्राद्ध के पुण्य का फल इस लोक से पितृलोक में बहुत सरलता से पहुंच जाता है।

एक समय महाकाल का चरित्र सुनने के लिए राजा करन्घम श्री महाकाल (जिनके दर्शन मात्र से पापी लोग पाप मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं, के आश्रम पर गये।) उनकी पूजादि करके उन्हें प्रणाम किया और उनकी स्तुति करने लगे और उनके पास बैठ गये। तब मुस्कराते हुए महाकाल जी ने उनकी अगवानी की और सत्कारपूर्वक उनको अर्घ्य प्रदान किया, फिर कुशल प्रश्न के पश्चात जब राजा सुखपूर्वक बैठे तो उन्होंने महाकाल जी से पूछा कि–"भगवान मेरे मन में सदैव संशय बना रहता है कि मनुष्यों द्वारा जो पितरों को अर्पण किया जाता है, उनमें जल तो जल ही में चला जाता है फिर हमारे पूवर्ज किस तरह से तृप्त होते हैं और इसी तरह विंद आदि सब दान भी, अतः हम यह बात किस प्रकार से मान लें कि यह हमारे पितर आदि के उपभोग में आता है?"

महाकाल ने कहा कि–"हे राजन! पितरों और देवताओं की योनि ही ऐसी है कि दूर कही बातें भी सुन लेते हैं। दूर की पूजा भी ग्रहण कर लेते हैं। दूर की स्तुति से भी सन्तुष्ट हो जाते हैं। इसके सिवाय यह भूत, भविष्य और वर्तमान की सभी बातों को जानते हैं। पांचों तन्त्राज्ञायें, मन-वृद्धि और अहंकार तथा प्रकृति इन तत्वों का बना हुआ शरीर होता है, इसके अन्दर दसवें तत्व के रूप में साक्षात् भगवान विष्णु निवास करते हैं, अतः देवता और पितर गन्ध तत्व से तृप्त हो जाते हैं। शब्द तत्व से रहते हैं तथा तत्व को ही ग्रहण करते हैं। और किसी को पवित्र देखकर उनके मन को बड़ा संतोष होता है। जैसे पशु का भोजन तृण है और मनुष्यों का भोजन अन्न कहा जाता है, वैसे ही देव योनियों का भोजन अन्न का सार तत्व

है। सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति, अचिन्त्य एवं ज्ञान गम्भ है।

अतः वह अन्न-जल का सार तत्व ही ग्रहण करते हैं। शेष तो स्थूल वस्तु है वह यहीं स्थित देखी जाती है।

कृष्ण अष्टमी

आश्विन कृष्ण अष्टमी को अपने पुत्र की आयु बढ़ाने के लिए या जिसके पुत्र होकर मर जाते हैं, इस व्रत के करने से पुत्र जीवित और चिरायु होते हैं।

अष्टमी को नित्यकार्य करने के पश्चात् सोने की प्रतिमा बनाकर सूर्य नारायण का पूर्वोक्त षोडशोपचार विधि से पूजन करें। एक समय बाजरा तथा चने के अन्न का भोजन करें, ब्रह्मचर्य से रहें, सारी रात जागरण करें, दूसरे दिन प्रातः समय उठकर, स्नानादि करके व्रत का आरम्भ करने के निमित्त ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें। फिर स्वयं भी भोजन करें। इस प्रकार पांच या सात वर्ष तक करने के पश्चात् इसका उद्यापन करें। इस प्रकार जो मनुष्य इस व्रत को करते हैं उनके पुत्र चिरायु होते हैं।

व्रत कथा--एक समय धौम्य नामक ऋषि की पत्नी सुकेसी के छः पुत्र हुए, परन्तु विवाह होते ही पुत्र की मृत्यु हो जाती। इस दशा में सुकेसी ने अपने प्राणों का त्याग करने का निश्चय किया। तब धौम्य ऋषि ने उसका धैर्य बंधाया और वह पुरी से भगवान कृष्ण के पास चले गये। वहां जाकर ऋषि ने कहा-"तुम्हें राज्य पर धिक्कार है, जिसमें स्त्रियों के पुत्रों की मृत्यु उसके माता-पिता के सामने होती है। यदि किसी का पुत्र अपने माता-पिता के सामने मृत्यु को प्राप्त हो जाये तो उस देश के राजा को अधर्मी समझना चाहिए। अन्यथा, धर्मात्मा राजा का राज्य कभी भी पुत्र की मृत्यु माता-पिता के सामने नहीं हो सकती। तुमको राज्य करने का कोई अधिकार नहीं है।"

भगवान कृष्ण कहने लगे-"हे ब्राह्मण! जीना अथवा मरना यह तो अपने कर्मों के अधीन है, इसमें किसी का कोई वश नहीं चलता, तुम्हारे पुत्रों का तुम्हारा इतना ही संयोग था।" तब धौम्य ऋषि कहने लगे, "यदि तुम मेरे पुत्र की रक्षा का वचन नहीं दोगे तो मैं और मेरी स्त्री यहीं पर अपने प्राण दे देंगे।"

उनके वचनों को सुनकर श्री कृष्ण जी बोले-"हे ब्राह्मण! अब थोड़े ही दिनों में आश्विन कृष्ण अष्टमी आने वाली है, उस दिन तुम भगवान सूर्य की प्रसन्नता के लिए, उनके पुत्र जीजि के नाम का व्रत करो। इस व्रत के करने से तुम्हारे सब पाप नष्ट हो जायेंगे और तुम्हारा सातवां पुत्र जीवित रहकर चिरायु होगा। इस कार्य में तुम्हारी रक्षा मैं स्वयं करूंगा।"

सातवें पुत्र के होते ही धौम्य ऋषि ने सपत्नीक इस व्रत को किया और सूर्य

भगवान से पुत्र के चिरायु होने की प्रार्थना की। ब्राह्मण की प्रार्थना और व्रत के प्रभाव से, सूर्य के रथ की गति रुक गई और उन्होंने अपनी माला में से एक पुष्प निकालकर ऋषि की पत्नी पर गिरा दिया और उनका रथ आगे बढ़ने लगा। कुछ काल व्यतीत होने पर ब्राह्मण के पुत्र के प्राणों को हरने यमराज आया तो ब्राह्मणी उसे देखकर चिल्लाई और धौम्य ऋषि ने उसी समय भगवान श्री कृष्ण की आराधना की, तब भगवान श्री कृष्ण उसी समय आकर ब्राह्मणी से कहने लगे कि तुम किसी प्रकार का भय मत करो, सूर्य का दिया हुआ पुष्प पुत्र के शरीर से स्पर्श कर दो और उस पुष्प को यमराज पर फेंक दो, यमराज स्वयं ही भस्म हो जायेगा। ब्राह्मण ने ऐसा ही करना चाहा, परन्तु जब वह पुष्प यमराज को मारने लगा तो यमराज भाग खड़ा हुआ। ब्राह्मण ने पुष्प उठाकर यमराज की तरफ फेंका तो यमराज के लगते ही यमराज काला स्याह शनिश्चर के रूप सा हो गया। भगवान ने ब्राह्मण के पुत्र को अभयदान दिया, तब शनिश्चर को पीपल के वृक्ष पर रहने का स्थान दिया।

इस प्रकार से सूर्य पुत्र जीजि के व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण के पुत्र के प्राण बच गये और ब्राह्मण और ब्राह्मणी पुत्र-शोक के दुःख से मुक्त हो गये। अतः जो कोई सूर्य पुत्र जीजि के व्रत को करता है, उसके पुत्र और पौत्र चिरायु को प्राप्त होते हैं। जो कोई इस कथा को सुनता या पढ़ता है उसे भी कभी पुत्र7शोक प्राप्त नहीं होता।

आशा भगौति का व्रत

यह व्रत मुख्यतः स्त्रियों के लिए होता है। इसके करने से अन्न, धन, सुख, सौभाग्य की वृद्धि होती है। कन्या को मनचाहे सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है। निर्धन को धन एवं निपुत्र को पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है।

इस व्रत को करने वाले सूर्योदय से पूर्व स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। आठ कोनों को गोबर-मिट्टी से चौका देकर आशा भगौति की कथा सुनें। फिर आठ कोनों पर 8-8 दूब, 8-8 पैसे, 8-8 चीटकी, 1-1 सुहाली और 1-1 फल चढ़ायें। 8-8 रोली की, 8-8 काजल की बिन्दी रखें। आठों कोनों पर 1-1 दीपक जलायें। इस प्रकार नित्यप्रति 8 रोज तक पूजन करें। कहानी सुनें। आठवें रोज 1-1 सुहाग पिटारी आठों कोनों पर चढ़ायें और इसी रोज व्रत भी रखते हैं।

व्रत वाले आठों दिन 7 सुहाली का बायना काढ़कर सासू जी को चरण छूकर देना चाहिए। स्वयं भी आठ सुहाली तथा फल एक समय खाकर व्रत रखें। इस प्रकार यह व्रत 8 वर्ष तक करें। नवें वर्ष में उजमन करें।

उपरोक्त विधि के अनुसार आशा भगौती का पूजन करना चाहिए। इसके लिए

आठ सुहाग पिटारी मंगवायें, जिनमें सुहाग की सभी वस्तुएं हों, फिर आठ सुहाग पिटारी आठों कोनों पर चढ़ाकर एक सुहाग पिटारी सासू जी को चरण छूकर दें। आठों सुहाग पिटारियों में एक-एक सुहाली भी रख दें।

इसके बाद आठ सुहागिन ब्राह्मणियों को भोजन कराकर प्रत्येक को एक-एक सुहाग पिटारी और दक्षिणा दें। आशा भगौति का पूजन करें, उसके बाद उनके व्रत तथा कहानी पढ़नी या सुननी चाहिए।

व्रत कथा—बहुत समय पहले की बात है कि हिमालय नामक एक राजा के गौरी तथा पार्वती नाम की दो पुत्रियां थीं। एक दिन हिमालय ने उन दोनों को बुलाकर पूछा—"तुम दोनों किसके भाग्य का खाती हो?"

इस पर पार्वती बोली—"मैं तो अपने भाग्य का खाती हूं।"

गौरी ने कहा—"मैं तो आपके ही भाग्य का खाती हूं।"

यह सुनकर राजा ने पुरोहित को बुलाकर गौरी के लिए राजकुमार और पार्वती के लिए भिखारी वर ढूंढने को कहा। पुरोहित राजआज्ञा से वर खोजने निकल पड़ा।

शिव रूप में भिखारी को देखकर पुरोहित ने पार्वती जी का विवाह उस भिखारी से तय कर दिया और गौरी का विवाह सुन्दर राजकुमार से तय कर दिया।

कुछ दिनों के उपरान्त गौरी की बारात का स्वागत खूब धूमधाम से किया गया। साथ ही बहुत-सा दहेज भी दिया, परन्तु जब पार्वती की बारात आई तो राजा ने उनका कोई सत्कार नहीं किया, केवल कन्यादान देकर पार्वती को विदा कर दिया।

शिवजी पार्वती को लेकर कैलाश पर्वत पर आ गए। पार्वती जहां कदम रखतीं वहीं की घास जल जाती। यह देखकर शिवजी ने पण्डितों से इसका कारण पूछा।

पण्डितों ने सोच-विचार कर कहा—"पार्वती व इनकी भाभियां आशा भगौति का व्रत करती थीं। इनकी भाभियों ने मायके जाकर उजमन व्रत किया; किन्तु पार्वती ने उजमन नहीं किया। यदि पार्वतीजी भी अपने घर जाकर व्रत तथा उजमन करें तो सब दोष दूर हो जायेगा।"

इस प्रकार पण्डितों के बताने पर शिवजी और पार्वती जी खूब कपड़े व गहने पहनकर पार्वतीजी के मायके जाने को तैयार हुए। कुछ दूर जाने पर उन्होंने देखा कि एक रानी के बच्चा होने वाला था। वह बहुत कष्ट में थी। यह देखकर पार्वती जी शिवजी से बोलीं—"हे नाथ! बच्चा होने में बहुत कष्ट होता है, अतः मेरी कोख बन्द कर दो।"

शिवजी ने कहा—"तुम कोख बन्द करवाकर बहुत पछताओगी। ऐसा मत करवाओ।"

थोड़ी दूर चलकर देखा फिर घोड़ी के बच्चा हो रहा है, उसे भी बहुत कष्ट

है। यह देखकर पार्वती जी ने फिर शिवजी से कहा—"हे नाथ! आप मेरी कोख बन्द कर दें, तभी आगे चलूंगी।"

जब बहुत समझाने पर भी पार्वतीजी ना मानी तो उन्होंने निराश होकर पार्वती जी की कोख बन्द कर दी। वे सजे-धजे आगे बढ़ गये।

उधर गौरी ससुराल में बहुत दुःखी थी। इधर जब पार्वती शिवजी के साथ अपने मायके पहुंचीं तो उनके माता-पिता एकाएक उन्हें पहचान न सके। जब पार्वती जी ने अपना नाम बताया तो राजा-रानी बहुत खुश हुए। राजा को अपनी कही हुई पुरानी बातें याद आ गयीं। उन्होंने पार्वती से पुनः पूछा—"तू किसके भाग्य का खाती है?" पार्वतीजी ने कहा—"मैं तो अपने भाग्य का खाती हूं।"

यह कहकर पार्वतीजी अपनी भाभियों के पास चली गयीं। वे आशा भगौति का व्रत व उजमन कर रही थीं। पार्वतीजी के निवेदन पर शिवजी ने एक मुन्दड़ी भेजकर कहा—"इससे जो भी मांगोगी मिलता जायेगा।"

पार्वतीजी के मांगते ही मुन्दड़ी ने समस्त सामानों का ढेर लगा दिया। इसके बाद सबने बड़ी धूमधाम से व्रत व उजमन किया। राजा के निवेदन करने पर शिवजी ने खूब मिष्ठान व स्वादिष्ट भोजन किया। यह देखकर लोग कहने लगे, "पार्वती भिखारी को दी गई थी लेकिन अपने भाग्य के कारण राज कर रही है।"

शिवजी ने इतना भोजन किया कि भण्डारगृह में पतली सब्जी के सिवा कुछ ना बचा। पीछे से पार्वतीजी वही सब्जी खाकर व पानी पीकर शिवजी के साथ चल पड़ीं।

मार्ग में जब शिवजी ने पार्वती से भोजन के विषय में पूछा तो बोलीं—"हे नाथ! जो आपने खाया वही मैंने भी खाया।" शिवजी ने हँसकर कहा—"तुम तो सब्जी व पानी पीकर ही आई हो।"

पार्वती जी ने बात को गुप्त रखने का निवदेन किया। थोड़ी देर बाद जब आगे चले तो सूखी घास पर पैर पड़ते ही वह हरी हो गयी। आगे चलने पर घोड़ी के पास घोड़ी का बच्चा खेलता मिला। यह देखकर पार्वती जी बोलीं—"स्वामी! मेरी कोख खोल दो।"

शिवजी ने कहा—"मैंने तुम्हें पहले ही मना किया था। कोख बन्द मत कराओ।" जब और आगे बढ़े तो उन्हें पूजन हेतु रानी यमुना जाती हुई मिलीं। पार्वतीजी के पूछने पर शिवजी ने उन्हें उस पीड़ा प्रसव पीड़ाग्रस्त रानी के विषय में याद दिलाया। अब तो पार्वती जी हट करने लगीं। शिवजी ने मैल से गणेश जी बनाकर सब नेग चारकर पार्वतीजी से यमुना पूजन कराया।

इसके बाद पार्वती जी बोलीं—"मैं तो सुहाग बांटूंगी।"

यह सुनकर सभी पार्वतीजी से सुहाग लेने आईं। ब्राह्मणी एवं वैश्य नारियां

सुहाग लेने देर से पहुंचीं। शिवजी ने इन्हें भी सुहाग देने को कहा। पार्वतीजी ने कहा—मैं सबको बांट चुकी हूं। शिवजी के आग्रह करने पर उन्हें भी थोड़ा-थोड़ा सुहाग दे दिया। इस प्रकार किसी को निराश न होना पड़ा।

अतः हे पार्वती जी! जैसे आपने उन सबको सुहाग दिया, वैसे ही हमें भी सुहाग देना। यह व्रत और उजमन कुमारी लड़कियों के लिए विशेष रूप से फलदायी है।

महालक्ष्मी व्रत

महालक्ष्मी व्रत राधा अष्टमी से आरम्भ होता है तथा आश्विन कृष्ण पक्ष की अष्टमी को समाप्त होता है। इस दिन लक्ष्मी जी की पूजा करनी चाहिए।

सर्वप्रथम लक्ष्मी जी की मूर्ति को स्नान कराके फिर नये-नये वस्त्र पहनाकर भोग लगायें तथा आचमन कराकर फूल, धूप, दीप, चन्दन इत्यादि से आरती करें एवं भोग को आरती के पश्चात् वितरण कर दें। रात्रि में चन्द्रमा निकलने पर उसे अर्घ्य दें एवं आरती करें फिर स्वयं भोजन करें। इस व्रत के करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा सुख मिलता है।

व्रत कथा—प्राचीन समय में किसी गांव में एक विद्वान् गरीब ब्राह्मण रहता था, जो नियम का बहुत पक्का था। एक जंगल में पुराना विष्णु भगवान का मन्दिर था। इसमें वह नित्य प्रति नियम से पूजा करने जाया करता था। उसकी पूजा को देखकर भगवान विष्णु उस पर प्रसन्न हुए तथा उसे दर्शन दिए।

भगवान ने उसे धन देने का निश्चय कर लिया तथा उसे धन प्राप्त करने का तरीका बताया कि मन्दिर के सामने एक औरत कंडे थापने आती है, सुबह आकर उससे अपने घर रहने का आग्रह करना और तब तक न छोड़ना जब तक वह तुम्हारे घर रहने के लिए स्वीकार न कर ले। वह मेरी स्त्री लक्ष्मी है। उसके तुम्हारे घर आते ही सारे दुःख दूर हो जायेंगे। इतना कहकर भगवान अन्तर्ध्यान हो गये और ब्राह्मण अपने घर चला गया।

दूसरे दिन सुबह सवेरे ही मन्दिर में जाकर आंचल पकड़ लिया। उसने देखा कि वह एक ब्राह्मण है, उससे उन्होंने आंचल छोड़ने को कहा। ब्राह्मण बोला—"तुम मुझसे वादा करो कि तुम मेरे घर में वास करने जाओगी।"

इस प्रकार लक्ष्मी जी उस ब्राह्मण के घर वास करने लगीं। अतः उसका घर धन-धान्य से भर गया।

अतएव यह व्रत लक्ष्मी जी के नाम से ही जाना जाता है।

इन्दिरा एकादशी

आश्विनी कृष्ण पक्ष एकादशी को इन्दिरा एकादशी कहते हैं। इस दिन शालिग्राम

की पूजा कर व्रत करना चाहिए। पवित्र होकर शालिग्राम को पंचामृत से स्नान कराकर वस्त्र पहनायें। भोग लगायें और पूजा-आरती करें। पंचामृत वितरण कर शालिग्राम पर तुलसी दल अवश्य चढ़ायें। इस तरह जो इस व्रत को करते हैं, वे करोड़ों पितरों का उद्धार कर स्वर्गलोक को जाते हैं।

व्रत कथा—एक राजा इन्द्रसेन माहिष्मति नगरी में राज्य करते थे। उनके माता-पिता दिवंगत हो चुके थे। अकस्मात् एक दिन उन्हें स्वप्न आया कि तुम्हारे माता-पिता यमलोक में कष्ट भोग रहे हैं। निद्रा भंग होने पर वे चिंतित हुए कि किस तरह इस यातना से पितरों को मुक्त कराया जाये? इस विषय पर मंत्री से परामर्श किया। मंत्रीजी ने विद्वानों को बुलाकर पूछने की सलाह दी। राजा ने ऐसा ही किया। समस्त ब्राह्मणों के उपस्थित होने पर स्वप्न की बात पेश की गयी। ब्राह्मणों ने कहा—"राजन! अगर आप सकुटुम्ब इन्दिरा एकादशी का व्रत करें तो आपके पितरों की मुक्ति हो जायेगी। उस दिन आप शालिग्राम की पूजा तुलसी आदि चढ़ाकर ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें एवं उनका आशीर्वाद लें।

इससे आपके माता-पिता स्वयं ही स्वर्गलोक को चले जायेंगे। आप रात्रि को मूर्ति के पास ही शयन करना।" राजा ने ऐसा ही किया। जब वह मन्दिर में सो रहा था तभी भगवान के दर्शन हुए एवं उन्होंने कहा —"हे राजा! व्रत के प्रभाव से सभी तेरे पितर स्वर्गलोक पहुंच गये।"

उस दिन से इस व्रत की महत्ता अत्यधिक बढ़ गयी।

नवरात्रारम्भ (नवरात्रों का व्रत)

आश्विनी शुक्ला प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रों का व्रत और भगवती दुर्गा की उपासना होती है। जिसमें मां भगवती दुर्गा प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनचाहा वरदान देकर उन्हें सब तरह के कलेशों से रहित करती हुई सुखी बना दिया करती हैं।

अपने घर में किसी स्थान पर साफ-सुथरा तथा गाय के गोबर से लीपकर दुर्गा जी की प्रतिमा को प्रतिस्थापित करते हैं तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं। नव दिन पाठ के साथ हवन और ब्राह्मण को भोजन कराना भी वांछनीय है।

दशहरा पर्व (विजय दशमी)

इस पर्व को आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाते हैं। भगवान राम ने इसी दिन लंका पर चढ़ाई करके विजय प्राप्त की थी।

ज्योतिर्निबन्ध में लिखा है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय 'विजय' नामक काल होता है। वह सब कार्यों को सिद्ध करने वाला होता

है। विजय दशमी हमारा राष्ट्रीय पर्व है। प्रमुख रूप से यह क्षत्रियों का पर्व है। दशमी के दिन रामचन्द्र जी की सवारी बड़ी सज-धज कर निकलती है तथा रावण वध की लीला का दर्शन होता है। इस दिन नीलकण्ठ का दर्शन अत्यधिक शुभ माना जाता है।

कथा—एक बार पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा—"लोगों में जो दशहरे का पर्व प्रचलित है, इसका क्या फल है?" शिवजी ने बताया कि आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल में तारा उदय होने के समय 'विजय' नामक काल होता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले राजा को इस समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का योग हो तो और भी शुभ है। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने इसी 'विजय' काल में लंका पर चढ़ाई की थी। अतएव यह दिन अत्यधिक पवित्र दिन कहा गया है। क्षत्रिय लोग इसे अपना मुख्य पर्व मानते हैं। शत्रु से युद्ध करने का प्रसंग न होने पर भी इस काल में राजाओं को अपनी सीमा का उल्लंघन अवश्य करना चाहिए। अपने तमाम दल-बल को सुसज्जित करके पूर्व दिशा में जाकर शमी वृक्ष का पूजन करना चाहिए। पूजन करने वाला शमी के सामने खड़ा होकर इस तरह ध्यान करे—"हे शमी! तू सब पापों का नष्ट करने वाला है। शत्रुओं को भी पराजय देने वाला है। तूने अर्जुन का धनुष धारण किया एवं रामचन्द्र जी से प्रिय वाणी कही।"

पार्वती जी बोलीं—"शमी वृक्ष ने अर्जुन का धनुष कब और किस कारण धारण किया था और रामचन्द्र जी से कब और कैसे प्रियवाणी कही थी? सो कृपा कर समझाइए।"

शिवजी ने उत्तर दिया—"दुर्योधन ने पाण्डवों को जुए में हराकर इस शर्त पर वनवास दिया था कि वे प्रकट रूप से 12 वर्ष तक वन में चाहे जहां फिरें, परन्तु एक वर्ष बिल्कुल अज्ञातवास में रहें। अगर इस वर्ष में उन्हें कोई पहचान लेगा तो उन्हें 12 वर्ष का और भी वनवास काटना होगा। उस अज्ञातवास के समय अर्जुन अपना धनुषबाण एक शमी वृक्ष पर रखकर राजा विराट के यहां वृहन्नला के वेश में रहे थे। विराट के पुत्र उत्तर ने गौओं की रक्षा के लिए अर्जुन को अपने साथ-साथ लिया और अर्जुन ने शमी के वृक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। शमी वृक्ष ने अर्जुन के हथियारों की रक्षा की थी। विजय दशमी के दिन श्री रामचन्द्र जी से लंका कर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान करते समय शमी वृक्ष ने कहा था—"आपकी विजय होगी।" अतएव विजय काल में शमी वृक्ष की पूजा होती है।

एक बार राजा युधिष्ठिर के पूछने पर भी श्री कृष्ण जी ने उन्हें बतलाया था कि हे राजन! विजय दशमी के दिन राजा को स्वयं अलंकृत होकर अपने दासों

एवं हाथी-घोड़ों का शृंगार करना चाहिए और बाजे-गाजे के साथ मंगलाचार करना चाहिए। उस दिन अपने पुरोहित को साथ लेकर पूर्व दिशा में प्रस्थान करके अपनी सीमा से बाहर जाना चाहिए एवं वहां वस्तु पूजा करके अष्ट दिक्पालों और पार्थ देवताओं की वैदिक मंत्रों से पूजा करनी चाहिए। शत्रु की मूर्ति एवं पुतला बनाकर उसकी छाती में बाण लगाएं एवं पुरोहित वेद मन्त्रों का उच्चारण करें। ब्राह्मणों की पूजा करके हाथी-घोड़ा, अस्त्र-शस्त्र आदि का निरीक्षण करना चाहिए। यह सब क्रिया सीमांत में करके अपने महल में लौट आना चाहिए। इस प्रकार जो राजा इस विधि से पूजन करता है वह सदा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

श्राद्ध

आश्विन मास की पूर्णमासी से श्राद्ध चालू हो जाते हैं और अमावस्या तक रहते हैं। इसे श्राद्ध पक्ष कहते हैं। इसमें अपने पितरों की शक्ति के लिए ब्राह्मण व ब्राह्मणियों को सुन्दर-सुन्दर भोजन कराकर दक्षिणा दें। फिर पितरों को जल देकर अर्पण करते हैं।

यदि किसी पुरुष का श्राद्ध हो तो ब्राह्मण को भोज कराकर धोती-गमछा और दक्षिणा देकर विदा करें। स्त्री का श्राद्ध होने पर ब्राह्मणी को भोजन खिलाकर साड़ी तथा दक्षिणा देकर विदा करें। खीर, पूरी, इमरती की रसोई से पितर बहुत तृप्त होते हैं।

सांजी

सांजी का त्योहार अमावस्या से दशमी तक रहता है। कुंवारी लड़कियों को सांजी पूजा करनी चाहिए। दीवाल पर गोबर से सांजी की मूर्ति बनाकर पूजन करना चाहिए। सांजी को भोग लगाकर आरती उतारें। इस प्रकार नित्य प्रति तरह-तरह के सांजी के स्वरूपों की पूजा करनी चाहिए। दशमी के दिन सांजी को उतारकर तालाब या नदी में प्रवाहित कर दें।

पितृ विसर्जन (अमावस्या)

आश्विन मास की अमावस्या ही पितृ विसर्जन की अमावस्या कही जाती है। इस दिन सोलह ब्राह्मणों को भोजन करायें, इससे पितृ तृप्त होते हैं और जाते समय वे सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देकर जाते हैं।

इस दिन शाम को दीपक जलाने के समय दरवाजे पर पूड़ियां आदि खाने का सामान रख देते हैं और दीपक भी जलाकर रख देते हैं। इसका कारण है कि

पितर जाते समय भूखे ना जायें। दीपक जलाने का आशय है कि उन्हें रास्ता साफ दिखाई दे।

अशोक व्रत

यह व्रत आश्विन की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को किया जाता है। इस दिन अशोक के वृक्ष की पूजा करनी चाहिए। व्रत धारण करने वाले अशोक के वृक्ष की घी, गुड़, हल्दी, रोली, कलावा आदि से पूजा करें और उसका पूजन करके जल चढ़ावें।

यह नियम 12 वर्ष तक करें। बारह वर्षों के उपरान्त एक सोने का वृक्ष बनायें और उसका पूजन करके अपने कुलगुरु को समर्पित कर दें। जो मनुष्य इस प्रकार व्रत धारण करते हैं वे अन्त में शिवलोक को जाते हैं तथा इस लोक में भी शिव-कृपा से सुखी रहते हैं।

पापांकुशा एकादशी

आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी पापांकुशा एकादशी कहलाती है। इस दिन भगवान विष्णु की समस्त सामग्री से पूजा करनी चाहिए। इस दिन ब्राह्मणों को भोजन करायें। भोजन के उपरान्त भूमि, गौ, अन्न, उपानह, छत्र आदि देकर विदा करें और आशीर्वाद लें। धनी आदमी, तालाब, बगीचा, धर्मशाला और प्याऊ लगवाते हैं। आप यदि धनाभाव ग्रस्त हैं, तो दिन में हरि का भजन कर रात्रि में भगवान के चरणों में ही शयन करें।

इस प्रकार व्रत रखने से भगवान उनके पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। यह एकादशी पापों को अंकुश के समान छेद देती है। इसलिए इस एकादशी को पापाकुंशा एकादशी के नाम से पुकारते हैं।

पापांकुशा एकादशी की व्रत कथा—एक समय विन्ध्याचल पर्वत पर एक महाक्रूर क्रोधन नाम का व्याध रहता था। उसने अपने सम्पूर्ण जीवन में जीव हत्या, चोरी, लूट, मधपान, झूठ, कलह आदि घोर पातक किये। जब उसकी मृत्यु का समय आया तो एक दिन पहले यमराज बोला—दूतों! क्रोधन नामक व्याध को कल यहां पर लाना है।

यह बात दूतों ने क्रोधन व्याध को बता दी। यह सुनकर क्रोधन व्याध घबराया हुआ महात्मा अंगिरा के यहां पहुंचा। अंगिरा ऋषि उसकी बात सुनकर बोले—कल आश्विन मास की शुक्ल पक्ष एकादशी है। यह पापों का नाश करने वाली है। तू कल सच्ची भक्ति से व्रत रख और भगवान विष्णु की पूजा यथा विधि कर, इससे तेरे सम्पूर्ण कष्ट नष्ट हो जायेंगे।

उसने ऐसा ही किया। इस व्रत के प्रभाव से भगवान विष्णु के पार्षद कुस व्याध को सुन्दर विमान पर बैठाकर विष्णुलोक ले गये।

पद्मनाथ द्वादशी

यह व्रत आश्विन मास की शुक्ल पक्ष द्वादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान पद्मनाथ की पूजा करनी चाहिए। इस दिन भगवान भी जागने के लिए अंगड़ाई लेते हैं और कमल पर बैठे हुए ब्रह्मा (ॐकार) की ध्वनि करते हैं। सबसे पहले भगवान की मूर्ति को स्नान करायें। वस्त्रादि पहनाकर भोग लगायें। आचमन कराकर फूल, दीप, धूप, चन्दन आदि से आरती उतारें। ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा वस्त्र, स्वर्ण आदि दान देकर विदा करें।

जो इस प्रकार व्रत करते हैं वे भगवान के श्वेत दीप की प्राप्ति के अधिकारी होते हैं। उन्हें अपनी इच्छा के अनुरूप फल की प्राप्ति होती है।

वाराह चतुर्दशी व्रत

यह व्रत आश्विन शुक्ल पक्ष की चौदस को किया जाता है। इस दिन भगवान वाराह की पूजा करनी चाहिए। व्रत रखने वाले पहले वाराह भगवान को स्नान करायें। उन्हें भोग लगायें, तत्पश्चात आचमन कराकर आरती उतारें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा देकर विदा करें।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं उनकी भगवान वाराह भूत-प्रेतों से रक्षा करते हैं और अन्त में वे दिव्यलोक को जाते हैं।

शरद पूर्णिमा

आश्विन मास की पूर्णिमा शरद पूर्णिमा कहलाती है। शरद पूर्णिमा से ही स्नान और व्रत आरम्भ हो जाते हैं। माताएं अपनी सन्तान की मंगल कामना के लिए व्रत रखती हैं और देवी-देवताओं की पूजा करती हैं। अनिष्ट निवारण के लिये टोना-टोटका करती हैं। अधिकतर टेसू और सांजी शरद पूर्णिमा के दिन ही गंगा प्रवाह किये जाते हैं। शरद पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा व पृथ्वी में दूरी बहुत कम होती है इसलिए अमृत प्राप्त करने की इच्छा से शरद पूर्णिमा की रात्रि को खीर, घी और चीनी मिलाकर जमाने के लिए रख देते हैं। इस दिन जमाये गये घी-खांड तथा खीर बहुत स्वादिष्ट लगते हैं तथा स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद होते हैं।

इस दिन चन्द्रमा की रोशनी में सुई में धागा पिरोते हैं। दूसरे, आंखों की रोशनी बढ़ती है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में घी, खीर रखकर दूसरे दिन खानी चाहिए।

इस दिन व्रत करके कहानी सुनें। एक पट्टे के ऊपर जल से भरा लोटा और एक गिलास भरकर गेहूं रख लें। दोनों पर रोली से सतिया काढ़कर चावल और दक्षिणा चढ़ायें और टीका लगायें। तेरह दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। फिर गेहूं से भरे गिलास का बायना निकालकर ब्राह्मणी को दे दें। लोटे के जल और गेहूं की दानों से (जिन्हें हाथ में लेकर कहानी सुनी थी) चन्द्रमा को अर्घ्य दें।

इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ रात्रि का महारास किया था। इसलिए इस पूर्णिमा का ब्रज में बहुत महत्त्व है। इस परम्परा को ब्रज के निवासी अब भी मानते हैं। आज के दिन ब्रज में जगह-जगह पर 15-16 मण्डलियां एक साथ महारास करती हैं।

इस दिन शंकर जी के पुत्र कार्तिकेय जी की भी पूजा की जाती है। कुछ जगहों पर भाई की रक्षा हेतु बहनें व्रत रखती हैं।

शरद पूनो की कथा—एक साहूकार था। उसके दो पुत्री थीं, जिनमें से एक बेटी शरद पूनो का पूरा व्रत रखती थी और एक आधा व्रत रखती थी। जो शरद पूनों का पूरा व्रत रखती थी उसकी सन्तान जीवित रहती थी और जो आधा व्रत करती थी उसकी सन्तान होते ही मर जाती थी।

पण्डितों से पूछने पर उसे अपनी गलती का पता चला। पण्डितों ने बताया कि तू शरद पूनो का आधा व्रत करती है, इसी कारण तेरी सन्तान मर जाती है। तभी से उसने शरद पूनो को पूरा व्रत रखना शुरू कर दिया; परन्तु फिर भी उसके लड़का होते-होते ही मर गया। उसने अपने मरे हुए लड़के को पीढ़े पर सुलाया और अपनी बहन को बुला लायी।

उसने अपनी बहन को बैठने के लिए वही पीढ़ा दिया, जिस पर उसका मरा हुआ लड़का पड़ा था। लड़का उसके घाघरे को छूते ही जीवित हो गया। तब बड़ी बहन बोली—अगर मैं बैठ जाती तो यह मर जाता। तब उसकी बहन बोली—बहन यह तो मरा हुआ था, परन्तु तुम्हारे शरद पूनो के व्रत के प्रभाव से जीवित हो गया। अपनी बहन की बात सुनकर वह बहुत खुश हुई। तभी से इस व्रत का महत्त्व बढ़ गया।

□□□





अध्याय-8

कार्तिक मास

कार्तिक मास का माहात्म्य

कार्तिक मास की कथा सुनने मात्र से मनुष्य के सब पाप नष्ट होकर बैकुण्ठ लोक की प्राप्ति हो जाती है।

एक समय श्री नारायण जी ब्रह्मलोक में गये और सारे जगत के कर्ता श्री ब्रह्माजी को अति विनीत भाव से कहने लगे—"आप सारे जगत के कर्ता और सर्वज्ञ हो, अतः आप धर्मोपदेश की कोई सुन्दर कथा कहिए क्योंकि मैं भगवान का भक्त और आपका दास हूं तथा आप कार्तिक मास की कथा भी कहिए; क्योंकि मैंने सुना है कि कार्तिक मास भगवान को अति प्रिय है। और इस मास में किया हुआ व्रत नियमन पादन दिया हुआ अनन्त फल को प्राप्त होता है।" ब्रह्मा जी कहने लगे—"हे पुत्र! तुमने अति सुन्दर प्रश्न किया है, क्योंकि कुरूक्षेत्र पुष्कर तथा तीर्थों का वास इतना फल नहीं देते हैं, जैसे कि कार्तिक मास का फल है।"

प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर व्रत करने वाला शौच आदि से निवृत होकर, बारह अंगुल अथवा सुगन्धित वृक्ष का दातुन करे। श्राद्ध के दिन, सूर्य-चन्द्रमा के ग्रहण के दिन, एकम, अमावस्या, नवमी, छठ, एकादशी तथा रविवार को दातुन नहीं करना चाहिए।

स्नान करने वाला श्री गंगाजी, शिव सूर्य, विष्णु का ध्यान करके स्नान कर जल से बाहर आकर शुद्ध वस्त्र धारण करे। तिल आदि से देवता ऋषि और मनुष्य (पितर) का तर्पण करे। इस प्रकार स्नान तर्पण के पश्चात् चन्दन, फल और पुष्प आदि से भगवान को अर्घ्य देना चाहिए।

ब्रह्मा जी कहने लगे—"हे नारद! भ्रती मनुष्य फिर भगवान के मन्दिर में जाकर षोडशोपचार विधिं से भगवान का पूजन करे। मंजरी सहित तुलसी भगवान पर चढ़ावे। जो मनुष्य मंजरी सहित भगवान शालिग्राम का एक बून्द भी चरणामृत पान कर लेता है, वह बड़े-बड़े पापों से मुक्त हो जाता है और जो कोई शालिग्राम

की मूर्ति के आगे अपने पितरों का श्राद्ध करता है, उसके पितर को बैकुण्ठ लोक प्राप्त होता है। अक्षतों से भगवान विष्णु का पूजन, शंख के जल से शिव का पूजन, बिल्व पत्र से सूर्य का पूजन, तुलसी से गणेश जी का, धतूरे के पुष्पों से विष्णु का, केतकी के पुष्पों से शिव की पूजा करनी चाहिए।

गंगा और यमुना और तुलसी का स्नान बराबर है। इन तीनों से ही यमपुरी के दर्शन नहीं होते।

एक समय नारद जी ब्रह्मा जी से कहने लगे—"हे ब्राह्मण! कार्तिक मास का माहात्म्य आप मुझसे विधिपूर्वक कहिए।" तब ब्रह्मा जी कहने लगे—"हे पुत्र! मैं तुम्हें एक पुराना इतिहास कहता हूं!

एक समय की बात है श्री सत्याभामा जी ने भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न किया कि भगवान! मैं पहले जन्म में कौन थी? मेरे पिता कौन थे? जिससे मैं त्रिलोकीनाथ की सबसे प्रिय अर्धांगिनी बनी। मेरे कहने मात्र से आपने स्वर्ग से कल्प वृक्ष मेरे आंगन में लगा दिया।

इतनी बात सुनकर कृष्ण अति प्रेम से हाथ पकड़कर कल्प वृक्ष के नीचे ले गये और बड़े स्नेह से कहने लगे—'हे सत्यभामे! आप मुझे सब पत्नियों में प्रिय हैं, अतः मैं आपसे गुप्त-अति गुप्त बात कहने में भी संकोच नहीं करूंगा'।"

कार्तिक व्रत कथा

पहले सतयुग में मायापुरी में अत्रिकुल में वेद तथा शास्त्रों का पारगामी वेदशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह सूर्य का बड़ा भक्त था। वह नित्य ही अग्नि तथा अतिथि की सेवा करता हुआ सूर्य की आराधना किया करता था। उसके कोई पुत्र न था, परन्तु बड़ी आयु में उसके एक कन्या हुई जिसका नाम गुणवती था। उसने अपनी कन्या का विवाह अपने शिष्य चन्द्र के साथ कर दिया। एक दिन वह ब्राह्मण अपने जामात सहित लकड़ी लेने जंगल में गया। वन में वे दोनों एक राक्षस के हाथों मारे गये और वहां के क्षेत्र के प्रभाव से बैकुण्ठ को गये। गुणवती दुःख से ग्रस्त हो मूर्च्छा खाकर भूमि पर गिर पड़ी।

जब उसे चेतना आई तो उसने घर का सामान बेचकर उन दोनों की अंत्येष्टी क्रिया की और मेरी प्रिय एकादशी और कार्तिक का व्रत करने लगी। कार्तिक मास में जो प्रातःकाल स्नान करता है; जागरण, दीपदान, भगवान के मन्दिर की सफाई, पूजन करता है वह मनुष्य जीवन मुक्त हो बैकुण्ठ को प्राप्त होता है।

एक समय वह दुर्बल शरीर वाली, स्नान के निमित्त गंगाजी में प्रवेश करते ही उसकी सारी देह शीत के मारे कांपने लगी और वह शिथिल हो गयी। उसी समय हमारे तुलापार्षदों ने उसको विमान में बैठाकर बैकुण्ठ पहुंचा दिया। कार्तिक

के व्रत के प्रभाव से तुम सत्यभामा होकर हमारी प्रिय बनीं। आजन्म तुलसी रोपने से तुम्हारे आंगन में कल्पवृक्ष है। तुमने कार्तिक में जो दीपदान किया, इसी से तुम्हारे घर में लक्ष्मी का वास है। अत: हे सत्यभामे! जो मनुष्य कार्तिक मास में व्रत करता है, वह तुम्हारी तरह हमको प्रिय है।

जालंधर वध कथा

इस प्रकार बार-बार पूछने पर भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया, तो इन्द्र ने क्रोध में आकर अपना वज्र उसके कंठ पर मारा, उसी समय उसका कंठ नीला हो गया, परन्तु इन्द्र का वज्र भी भस्म हो गया। फिर उसकी आंख में से प्रचण्ड अग्नि (मानो इन्द्र समेत सारे ब्रह्माण्ड को जला देगी) निकली। यह कौतुक देखकर श्री बृहस्पति जी शिवजी की यह सारी लीला जानकर इन्द्र को दण्डाकार झुका करके हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे—"हे त्रिपुरी! आपको नमस्कार है।"

इस प्रकार स्तुति सुनकर श्री बृहस्पति कहने लगे—"यदि आप प्रसन्न हैं तो इन्द्र की रक्षा करिये और संसार का दाह करने वाली इस अग्नि को शान्त करिये। तब शिवजी कहने लगे कि नेत्र से निकली हुई अग्नि वापिस कैसे जाये! ऐसा कहकर अग्नि को आंखों में से निकालकर दूर फेंक दिया और वह अग्नि गंगा सागर में गिरकर बालक बनकर रोने लगी। इसके रोने के घोर शब्द को सुनकर सारी पृथ्वी कांप गयी।

यह लीला देखकर ब्रह्माजी वहां पर आ गये और उस बालक को देखकर कहने लगे कि यह बालक किसका है? सागर ने आदर भाव से कहा—"ब्राह्मन् यह बालक मेरा है।" ऐसा कहकर बालक को ब्रह्माजी की गोद में दे दिया और कहा—"इसके जात कर्म संस्कार कराइये।"

उस बालक ने ब्राह्माजी की दाढ़ी को पकड़कर इतनी जोर से मरोड़ा की ब्रह्मा जी की आंखों में आंसू आ गये। ब्रह्माजी बोले—"इसके दाढ़ी पकड़ने से हमारी आंखों में आंसू आ गये, अतः इसका नाम जालन्धर है। यह क्योंकि शिव के अंश से उत्पन्न हुआ है, इसलिए सिवाय शिव के और किसी के हाथ से नहीं मारा जायेगा।"

ब्रह्माजी ने शुक्लाचार्य जी को बुलाकर उसका राज्याभिषेक करके अन्तर्ध्यान हो गये। समुद्र ने कमल नेमि की कन्या वृन्द्र से उसका विवाह कर दिया जो कि अत्यन्त सुन्दर व पतिव्रता थी। वह सदैव अपने पति की सेवा में लगी रहती थी, इसी कारण जालन्धर अत्यन्त बलशाली हो गया। जालन्धर दैत्य की शरण पाकर अब निर्भयता से पृथ्वी पर आकर घूमने लगे। उसी समय शुक्लाचार्य जी से, राहू का काटा हुआ सिर देखकर जालन्धर ने पूछा, "इसका क्या कारण है?"

शुक्राचार्य ने अमृत मंथन की सम्पूर्ण कथा कह सुनाई। यह सारी कथा सुनकर

दैत्यपति ने अति क्रोध में आकर घरूमर दैत्य को अपना दूत बनाकर इन्द्र की सुधमी सभा में भेजा। घरूमर अहंकार से बिना इन्द्र को नमस्कार करे कहने लगा—"दैत्य पति ज़ालन्धर ने मुझे भेजा है, सो उनका संदेश सुन लो! दैत्य राज कहते हैं कि समुद्र मंथन के समय जो रत्न तुमने लिए हैं, वह अन्याय है, उन पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं।"

इन्द्र ने कहा—"समुद्र सदैव हमारे शत्रु दैत्यों की रक्षा करते हैं अतः उनको मंथकर सब रत्न हमने ग्रहण कर लिये हैं। दूत ने एब समाचार जालन्धर दैत्यों को सुनाया और वह क्रोध करके देवताओं को जीतने का उपाय सोचने लगा। वह सब दिशाओं और पाताल से सब दैत्यों को बुलाने का उपाय सोचने लगा। उसने सब दिशाओं और पाताल से सब दैत्यों को बुलाकर और शुम्भ तथा निशुम्भ को अपना सेनापति बनाकर देवताओं के साथ युद्ध करने के लिए रण से बाहर निकल आया। उधर देवता भी सब दैत्यों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गये और घमासाम युद्ध होने लगा। इस युद्ध में जो दैत्य मारे जाते थे, उनको शुक्राचार्य अपनी संजीवनी विद्या से जीवित कर देते थे और देवताओं को बृहस्पति जी मदराचल की दिव्य औषधियों से जीवनदान देते थे। जब शुक्राचार्य ने मदराचल की औषधियों का सब वृतान्त जालंधर को सुनाया और जालंधर की आज्ञा पर, दैत्यों ने द्रोणाचल पर्वत को उठाकर समुद्र में फेंक दिया जब बृहस्पति जी ने पर्वत को उस स्थान पर न देखा तो घबराकर देवताओं को रण से भागने को कहा, तब सब देवता डरके मारे चारों दिशाओं की ओर भागने लगे।

जब जालन्धर देवताओं का पीछा करते हुए सुमेरु पर्वत तक गया, तब इन्द्रादिक सब देवता भगवान विष्णु की सेवा में स्तुति करने लगे।

उनकी स्तुति सुनकर विष्णु जी गरुड़ पर बैठकर चल पड़े। तब लक्ष्मी जी ने पूछा—"भगवान कहां पर जा रहे हैं?" भगवान बोले—"देवताओं की रक्षार्थ दैत्यों से युद्ध करने ज़ा रहा हूं।"

श्री लक्ष्मी जी ने कहा—"आप मेरे भाई को किस प्रकार मारेंगे?" विष्णु जी कहने लगे कि वह शंकर जी के अंश से उत्पन्न हुआ है, अतः वह उन्हीं के हाथों मारा जायेगा।"

विष्णु जी और जालंधर में घोर युद्ध हुआ। उससे प्रसन्न होकर विष्णु जी कहने लगे कि मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं, तुम मुझसे कोई भी वर मांग लो। जालंधर बोला—आप लक्ष्मी जी सहित और अपने गणों सहित मेरे घर पर निवास करो। भगवान ने अपने वचनों के अनुसार ही किया।

इसी तरह से देव, यज्ञ, किन्नर, गंधर्व आदि से उसने सभी रत्न हर लिए और सब पर राज्य करने लगा।

नारद जी आगे कहने लगे—"एक समय राजा जालंधर का वैभव देखने हम उनकी दूरी में गये। जालन्धर ने हमारा बड़ा आदर किया और पूछने लगे—हे मुने! हमारे यहां आपका आगमन कैसे हुआ? मैंने कहा—हे दैत्यराज! हम कैलाश गये थे। वहां का वैभव देखकर हम चकित रह गये, परन्तु यहां पर आकर देखा तुम्हारा वैभव शिव से भी अधिक है, परन्तु स्त्री सहित है आपके पास कई एक अप्सराएं और नाग कन्याए हैं परन्तु पार्वती जैसी कान्ती वाली स्त्री कोई भी नहीं है। जटा जूट षडमाला पहने हुए शिव के पास ऐसी स्त्री रत्न को देखकर मैंने यही निश्चय किया कि शिव के बराबर तुम्हारा वैभव नहीं है।

यह सब बातें सुनकर पार्वतीजी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर जालन्धर ने राहु को दूत बनाकर भेजा और राहु चन्द्रमा के समान उज्ज्वल कैलाश को अपने तेज से काला करता हुआ आया। द्वारपाल नन्दी द्वारा रोका गया परन्तु फिर शिव स्वामी, दैत्यराज जालन्धर ने कहा—"तुम जैसे श्मशानवासी के पास पार्वती शोभा नहीं देती। यह पार्वती जैसा स्त्री रत्न उन्हें ही अर्थात् त्रिलोकीनाथ के साथ नाथ को ही शोभा देती है।"

इतना सुनते ही शिवजी के भृकुटि से एक ऐसा भयंकर पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसका सिंह के समान मुख, जलती अग्नि के समान लाल नेत्र, ऊपर को खड़े हुए बाल, वह रा[illegible] को खाने के लिए दौड़ा, तब शिव से राहु भयभीत होकर कहने लगा कि—"[illegible]व! मैं ब्राह्मण हूं और दूत हूं।" यह सुनकर शिवजी ने राहु को आ[illegible] फेंक दिया और वहां से बर्वर देश में जाकर गिरा।

इस प्रकार भयंकर पुरुष राहु को छोड़कर शिव के पास आया और कहने लगा—"महाराज! मैं भूखा हूं मुझे कुछ खाने को दो।" शिवजी बोले—तू अपने आपको ही खा ले। वह अपने हाथ-पैर धड़ तक खा गया, तब उसका सिर तथा मुख ही रह गया।

तब शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—"आज से तुम्हारा नाम कीर्तिमुख हुआ और तुम हमारे द्वारपाल हुए।"

जब जालंधर ने राहु की यह दशा देखी तो उसे बड़ा क्रोध आया और वह दैत्यों की एक करोड़ सेना एकत्रित कर शिव के साथ युद्ध करने हेतु अपनी नगरी से बाहर निकला। बाहर आते ही कई अपशकुन हुए।

जब दैत्य ने कैलाश पर चढ़ाई कर दी तो देवताओं के स्मरण करने से विष्णु जी वहां उपस्थित हुए। तब शिवजी ने पूछा, "आपने जालंधर को क्यों नहीं मारा?" तब विष्णु जी ने कहा—"हे भगवान! वह आपके अंश से उत्पन्न है अतः आपके ही हाथों मारा जायेगा।"

तब शिवजी ने सब देवताओं से तेज लिया और उसमें अपना तेज मिलाकर

ज्वालामयी सुदर्शन चक्र और वज्र बनाया। देवताओं और दैत्यों में युद्ध होने लगा। शुक्राचार्य द्वारा दैत्य जीवित हो रहे थे। शिवजी ने तालजहा नाम वाली एक कन्या उत्पन्न की जो दैत्यों को मारकर खाने लगी तथा शुक्राचार्य को लेकर अन्तर्ध्यान हो गयी। दैत्य रण से भागने लगे, तब जालंधर ने अपने सेनापति शुम्भ-निशुम्भ और कालनेमि को भेजा। उनके आने से शिवगणों में भगदड़ मच गयी।

तब नन्दी गणेश और कार्तिकेय जी युद्ध करने आये। गणेशजी के घायल हो जाने पर डाकिनी, साकिनी, कुमांड, भैरव, वीरभद्र सब उनकी सहायता हेतु दौड़े। जब जालंधर दैत्य स्वयं युद्ध करने आया तब उसने गणेशजी, कार्तिकेय जी को अपने बाणों से घायल कर दिया। अपने सेनापतियों की दशा देखकर सभी गण भागने लगे, उन्हें भागता देख स्वयं शिवजी बैल पर सवार हो रण में आये। शिवजी ने आते ही सडूरामा का सिर काट दिया, बलाहक के इकट्ठे दो टुकड़े कर दिये। चस्मर को बांधकर पृथ्वी पर गिरा दिया। जालंधर जब खड्ग लेकर दौड़ा तो उसके खड्ग के दो टुकड़े कर दिये। इस पर द्वन्द्व युद्ध होने लगा।

सभी देवता नाचने-गाने लगे। शिवजी की माया के वशीभूत होकर नाचने गाने लगे। शिवजी की माया में फंसकर दैत्य जालंधर शिव रूप में मां पार्वती के पास पहुंचा। जालंधर की माया जानकर पार्वती जी अन्तर्ध्यान हो गयीं। विष्णु जी को बुलाने पर पार्वती ने विष्णु को सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। विष्णु जी बोले–"यह दुष्ट अपनी पत्नी बल पर ही जीवित है। यदि इसकी पत्नी का पतिव्रता धर्म नष्ट हो जाये तब ही देवताओं की रक्षा हो सकेगी।" इतना कहकर विष्णु जी वहां से चले गये।

जालंधर भी पार्वतीजी को ना पाकर वापिस रणभूमि में आये और शिवजी को कई बाणों से ढक दिया।

इधर वृन्दा ने स्वप्न में अपने स्वामी (पति) को तेल मले नंगे शरीर भैंसे पर सवार होकर दक्षिण दिशा में जाते हुए देखा। वृन्दा स्वप्न से अत्यन्त विचलित थी, इसी कारण उसे सम्पूर्ण महल में कहीं भी आराम नहीं मिला और वह वन की ओर चल दी। वहां उसे सिंह मुख वाले दो राक्षस मिले जिन्हें देखकर वह डरकर भागने लगी। आगे जाकर उसे एक तपस्वी अपने दो चेलों सहित आता दिखा। तपस्वी ने अपनी हुम्कार मात्र से उन राक्षसों को भगा दिया। वृन्दा तपस्वी से हाथ जोड़े विनती भरे स्वर में बोली–"महाराज! मेरे पति शिवजी से युद्ध करने गये हुए हैं। आप बताएं किसकी विजय होगी; क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं।" थोड़ी ही देर में वहां जालंधर दैत्य का सिर और धड़ आकर गिरे, जिन्हें देखकर वृन्दा मूर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़ी। मूर्च्छा खुलने पर वह उसे जीवित करने हेतु तपस्वी से प्रार्थना करने लगी। ऋषि अन्तर्ध्यान हो गये और जालंधर जीवित हो गया।

एक मैथुन के पश्चात् पति के वेश में विष्णु को देखकर क्रोधित हो विष्णु को श्राप दे दिया–"तुमने मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट किया है तुम्हें धिक्कार है। जो दो राक्षस तुमने माया से बनाये थे वही दोनों तुम्हारी स्त्री का हरण करेंगे। तुम्हारा चेला बंदर होकर तुम्हारी सहायता करेगा। तुम पत्थर हो जाओ।"

भगवान बोले–यदि मैं पत्थर (शिला) हो जाऊंगा तो तुम मुझे वृक्ष के रूप में मिलोगी। भगवान विष्णु के मना करने पर भी वह अपने पति के चरण कमलों का ध्यान करके अग्नि में प्रवेश कर गयी।

तब शिवजी ने बड़ा भयंकर रूप धारण कर अनेक बाण मारे। शुम्भ-निशुम्भ रण छोड़कर भागने लगे, तब शिवजी ने उनको श्राप दिया कि तुम पार्वती के हाथों मारे जाओगे।

भगवान विष्णु वृन्दा के सतित्व से प्रभावित होकर अनन्त व्याकुल थे। उन्हें व्याकुल देख शिव आज्ञा से सभी देवता योगमाया की स्तुति करने लगे तभी आकाशवाणी हुई–"हे देवताओं! गौरी सरस्वती लक्ष्मी मैं ही हूं। तुम्हारे सारे कार्य वे ही सिद्ध करेंगी। इतना सुनकर सभी देवता उन तीनों देवियों की आराधना करने लगे। तीनों देवियों ने एक-एक बीज दिया। लक्ष्मी जी ने अपना बीज ईर्ष्यायुक्त होकर दिया था अतः सरस्वती से अमला, गौरी से तुलसी और लक्ष्मी जी से मालती। ईर्ष्या के कारण मालती निंदित है। आमला एवं तुलसी भगवान को अधिक प्रिय हैं। इसी प्रकार वृन्दा ने तुलसी होकर भगवान का संभोग पाया।

करवा चौथ की पूजा विधि

करवा चौथ के दिन अर्थात् कार्तिक मास की चतुर्थी के दिन लकड़ी का पाट-पूजकर उस पर जल का भरा लोटा रखें। बायना निकालने के लिए एक मिट्टी का करवा रखकर करवे में गेहूं व उसके ढक्कन में चीनी और नकद रुपये रखें। फिर उसे रोली से बांधकर गुड़, चावल से पूजा करें। पुनः 13 बार करवे का टीका करें उसे सात बार पाट के चारों तरफ घुमावें तब भी हाथ में 13 दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। कहानी सुनने के पश्चात् करवे पर हाथ फेरकर सासू जी के पांव छुएं। तदुपरान्त वह तेरह दाने गेहूं व लोटा यथा स्थान रख दें। रात होने पर चांद देखकर चन्द्रमा को अर्घ्य दें। इस तरह करके प्रसाद खाकर व्रत रखने वाली स्त्री व्रत खोले। करवा चौथ करने वाली को चाहिए कि बहन और बेटी को भी व्रत की सामग्री भेजे।

करवा चौथ कथा–एक साहूकार था जिसके सात पुत्र और एक पुत्री थी। सातों भाई व बहन एक साथ बैठकर भोजन करते। एक दिन कार्तिक चौथ का व्रत आया तो भाई बोला–"बहन, आओ भोजन करें। बहन ने कहा कि आज चौथ

का व्रत है। चाँद उगने पर खाऊंगी। भाइयों ने सोचा कि चाँद उगने तक बहन भूखी रहेगी। यह सोचकर एक भाई ने दीया जलाया। दूसरे भाई ने छलनी लेकर उसे ढका और नकली चाँद दिखाकर बहन से कहने लगे, "चल, चाँद उग आया है, अर्घ्य दे ले।"

बहन अपनी भाभियों से बोली—चलो अर्घ्य दे लें। भाभियां बोलीं—तुम्हारा चाँद उगा होगा। हमारा तो रात को उगेगा, बहन ने अकेले ही अर्घ्य दे दिया और खाना खाने लगी। पहले ग्रास में बाल निकला, दूसरे में किकर, तीसरे में ससुराल से पति की बीमारी का संदेश आ गया।

मां ने लड़की को विदा करते हुए कहा—मार्ग में जो बड़ा मिले उसके पांव छूकर सुहाग का आशीष ले। पल्ले पे गांठ लगा लेना और उसे कुछ रुपये देना। मार्ग में उसे जो भी मिला उसने यही आशीष दिया। तुम सात भाइयों की बहन हो। तुम्हारे भाई सुखी रहें। तुम उनका सुख देखो। किसी ने भी सुहाग का आशीष नहीं दिया। जब वह ससुराल पहुंची तो दरवाजे पर खड़ी ननद के पांव छुए और उसने आशीष दिया—सुहागन रहो, सपूती हो। तो उसने पल्ले में गांठ बांधकर ननद को सोने का सिक्का दिया।

जब भीतर गयी तो सास बोली—तेरा पति धरती पर पड़ा है। उसके पास जाकर उसकी सेवा करने लगी। सास दासी के हाथ बची-कुची रोटी भेज देती। इस तरह बीतते-बीतते मंगसिर की चौथ आई तो चौथ माता बोलीं—"करवा ले, करवा ले भाइयों की प्यारी करवा ले। लेकिन जब उसे चौथ माता नहीं दिखीं तो वह बोली—"मां आपने ही मुझे उजाड़ा है आप ही मेरा उद्धार करोगी।"

चौथ माता बोलीं—पौष की चौथ आयेगी वही तुम्हारा उद्धार करेगी। तुम उससे सब कहना वह तुम्हारा सुहाग देगी। इसी प्रकार पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और सावन, भादों की चौथ आकर यह कहकर चली गयीं कि आगे आने वाली से लेना। असौज की चौथ आयी तो उसने बताया कि—कार्तिक की चौथ तुम पर नाराज है, उसी ने तुम्हारा सुहाग लिया है, वहीं वापस कर सकती है. वह आये तो उसके पांव पकड़कर विनती करना। यह कहकर वह भी चली गयीं।

जब कार्तिक की चौथ आई तो वह क्रोध में बोली—भाइयों की प्यारी करवा ले, दिन में चाँद उगानी करवा ले, व्रत खंडन करने वाली करवा ले, भूखी करवा ले। यह सुनकर चौथ माता को देखकर उसके पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगी। वह बोली—"हे चौथ माता! मेरा सुहाग आपके हाथ में है। आप मुझे सुहागन करें।" तब माता बोलीं—"पापिन! हत्यारी! मेरे पांव पकड़कर क्यूं बैठ गयी।" तब बहन बोलीं—"हे मां! मुझसे भूल हो गयी। अब मुझे क्षमा कर दें, अब कोई भूल न होगी।" तब माता ने खुश होकर आंखों से काजल, नाखूनों से मेंहदी एवं टीके से रोली

लेकर छोटी अंगुली से उसके आदमी पर छींटा दिया। उसका आदमी उठकर बैठ गया। और बोला—आज मैं बहुत सोया। वह बोली क्या सोया? पूरे बारह महीने हो गये, अतः जाकर चौथ माता ने सुहाग लौटाया।

तब उसने कहा—शीघ्रता से माता का उजमन करो। जब चौथ की कहानी सुनी, करवा पूजन किया तो प्रसाद खाकर दोनों पति-पत्नी चौपड़ खेलने बैठ गये।

नीचे से दासी आई। उसने सासू जी को जाकर बताया। तब से सम्पूर्ण गांवों में यह प्रसिद्धि होती गयी कि—सब स्त्रियां चौथ का व्रत करें तो सुहाग अटल रहेगा। जिस तरह साहूकार की पुत्री को सुहाग दिया, उसी तरह सबको सुहाग दे। यही करवा चौथ के व्रत की पुरातन महिमा है।

श्री गणेशजी की कथा—वह बुढ़िया हमेशा गणेशजी की पूजा किया करती थी। गणेश जी उस बुढ़िया से कहते थे—मां तू जो चाहे सो मांग ले। बुढ़िया कह देती थी, भगवान! मुझे मांगना नहीं आता, कैसे और क्या मांगू? तब गणेशजी ने कहा—अपने बेटे-बहू से पूछकर मांग ले।

तब बुढ़िया ने बेटे से पूछा कि गणेशजी कहते हैं कि तू कुछ मांग ले, बता क्या मांगूं? बेटा बोल—मां! धन मांग ले। बहू से पूछा तो बोली—पोते मांग ले।

तब बुढ़िया ने सोचा कि ये तो अपने-अपने मतलब की चीज मांग रहे हैं। यह सोचकर बुढ़िया अपनी पड़ोसिन के पास गयी और उससे पूछा। पड़ोसिन बोली—बुढ़िया तू तो थोड़े ही दिन जीयेगी। धन और पोतों से क्या लाभ, तू अपनी आंखें मांग ले जिससे तेरा जीवन आराम से कट सके।

बुढ़िया ने पड़ोसिन की बात भी नहीं मानी और घर में जाकर विचारने लगी कि ऐसी चीज मांगूंगी कि जिससे बेटा-बहू भी खुश हो जायें और मुझे भी आराम हो जाये।

अगले दिन गणेशजी आये और बोले—बुढ़िया! जो चाहे मांग ले। बुढ़िया बोली—महाराज! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे नौ करोड़ की माया निरोगी काया, अमर सुहाग, आंखों की ज्योति नाते, पोती और सम्पूर्ण परिवार का सुख और समय पर मोक्ष दे। तब गणेशजी बोले—बुढ़िया मां तूने तो हमे ठग लिया। खैर, तूने जो मांगा है वह तुझे मिलेगा। इस प्रकार कहकर गणेशजी अन्तर्ध्यान हो गये। बुढ़िया को मांगे अनुसार सब मिल गया। हे गणेशजी! जैसे तुमने बुढ़िया को समस्त सुख दिया वैसे सब को देना।

करवा चौथ का उजमन—उजमन करने के लिए एक थाल में तेरह जगह चार-चार पूड़ी और थोड़ा-थोड़ा सीरा रख लें। उसके ऊपर एक साड़ी-ब्लाउज और अपनी श्रद्धा अनुसार रुपये रख लें। फिर उस थाली के चारों ओर रोली, चावल और जल से हाथ फेरकर अपनी सासू मां को पैर छूकर दे दें।

इसके बाद तेरह ब्राह्मणियों को भोजन करायें। उनके रोली की बिन्दी लगाकर यथाशक्ति दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर विदा करें।

अहोई अष्टमी

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी को मनाया जाता है, इस दिन पुत्रों की मातायें पूरे दिन व्रत करती हैं।

इस दिन सायंकाल तारे निकलने के पश्चात् दीवार पर अहोई बनाकर उसकी पूजा करें। व्रत रखने वाली मातायें कहानी सुनें। कहानी सुनते समय एक पत्ते पर जल से भरा लोटा रखें। एक चांदी की अहोई बनवायें और दो चांदी के मोती एक डोरे में डलवायें जिस तरह हार में पेंडिल लगा होता है। उसकी जगह चांदी की अहोई लगवाएं और डोरे में चांदी के मोती डलवा दें। फिर अहोई की रोली, चावल, दूध-भात से पूजा करें। जल के लोटे पर एक सतिया काढ़कर एक कटोरे में सीरी और रुपये का बायना निकालकर और हाथ में सात दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। फिर अहोई को गले में पहन लें। जो बायना निकाला था उसे सासूजी के पांव छूकर दें।

अष्टमी के पश्चात् किसी अच्छे दिन अहोई गले में से उतारकर, जितने बेटे होवें उतनी बार और जितने बेटों का विवाह हुआ हो, उतनी बार दो चांदी के दाने डालती जायें। जब अहोई उतारें उसको गुड़ से भोग लगाकर तथा जल के छीटें देकर रख दें। चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करें।

इस दिन ब्राह्मणों को दान में पेठा अवश्य देना चाहिए। यह व्रत छोटे बच्चों के कल्याण के लिए किया जाता है, अहोई देवी के चित्र के साथ-साथ बच्चे के चित्र भी बनवायें एवं उनकी पूजा करें।

अहोई व्रत कथा—प्राचीन काल की बात है भारतवर्ष के दतिया नामक नगर में चन्द्रभान नाम का साहूकार रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रिका गुणवान व पतिव्रता थी। उसके कोई भी सन्तान जीवित नहीं रहती थी। दोनों दुःखी होकर सोचा करते थे कि—हमारी मृत्यु के पश्चात् इस वैभव का कौन स्वामी होगा?

एक दिन वे निश्चय करके घर-बार छोड़कर जंगल में निवास करने चले गये। जब दोनों चलते-चलते थक जाते तब बैठ जाते फिर चलने लगते। इसी तरह वे बद्रिकाश्रम के निकट एक शीलकुण्ड के पास पहुंचे। वहां पहुंचकर दोनों ने अन्न-जल त्याग दिया। जब उन्हें भूखे-प्यासे सात दिन हो गये तो वहां आकाशवाणी हुई कि तुम लोग अपने प्राण मत त्यागो। यह दुःख तुम्हें पूर्व जन्म के कारण मिला है।

अतएव हे साहूकार! अब तुम अपनी पत्नी से अहोई अष्टमी के दिन जो कार्तिक

कृष्ण पक्ष को आती है व्रत रखवाना। इस व्रत के प्रभाव से अहोई से अपने पुत्रों की दीर्घायु मांगना। व्रत के दिन रात्रि को राधाकुण्ड में स्नान करवाना। कार्तिक पक्ष की अष्टमी आने पर चन्द्रिका ने बड़ी श्रद्धा से अहोई देवी का व्रत धारण किया एवं रात्रि को साहूकार राधाकुण्ड में स्नान करने गया। साहूकार जब स्नान करके घर वापिस आ रहा था तो मार्ग में अहोई देवी ने उसे दर्शन दिये एवं बोलीं—"साहूकार! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं, तुम मुझसे कुछ भी वर मांग लो।"

साहूकार अहोई देवी के दर्शन कर, बहुत प्रसन्न हुआ और कहा—मां! मेरे बच्चे कम उम्र में ही देवलोक को चले जाते हैं। इसलिए मां, उनकी दीर्घायु होने का आशीर्वाद दीजिये। अहोई देवी बोलीं—ऐसा ही होगा। इतना कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गयीं।

कुछ दिन उपरान्त साहूकार के यहां एक पुत्र पैदा हुआ, जो बड़ा होने पर विद्वान, बलशाली, प्रतापी और आयुष्मान हुआ। अगर किसी स्त्री के पुत्र हुआ हो या पुत्र का विवाह हुआ तो अहोई व्रत की समाप्ति का उत्सव करे। एक थाली में सात जगह पूड़ी एवं थोड़ा-सा सिरा रखे। इसके अतिरिक्त एक साड़ी-ब्लाउज, एक रुपया रखकर थाली में रखे एवं थांली में चारों ओर हाथ फेरकर पूड़ी का बायना वितरण कर दे। अगर लड़की कहीं अन्य जगह हो तो उसके लिए बायना वहीं भेज देना चाहिए।

अहोई का उजमन—यदि किसी स्त्री के बेटा हुआ हो या बेटे का विवाह हुआ हो तो होई का उजमन करे। एक थाली में सात जगह चार-चार पूड़ी और थोड़ा-थोड़ा सीरा रखे। साथ ही एक साड़ी-ब्लाउज रखे। फिर थाली के चारों ओर जल का हाथ फेरकर अपनी सासू मां के पैर छूकर दे दे। साड़ी-ब्लाउज सासू पहन ले और बायना बांट दे। यदि लड़की कहीं दूर हो तो उसके लिए बायना वहीं भेज दे।

रमा या रम्भा एकादशी

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है। इस दिन भगवान का समस्त सामग्री से पूजन करें। भोग लगाकर आरती उतारें। आरती के उपरान्त भोग को बांट दें। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराकर अपनी शक्ति के अनुसार दान-दक्षिणा देकर विदा करें।

इस प्रकार जो व्रत धारण करता है, उसे इस लोक व परलोक दोनों में सुख मिलता है। एकादशी की कृपा से स्वर्ग में रम्भा या रमा आदि अप्सरायें सेवा करती हैं।

रमा या रम्भा एकादशी की कथा—एक समय भारतवर्ष में एक मृचुकुन्द

नाम का दानी, धर्मपरायंण और महाप्रतापी राजा हुआ था। उसको एकादशी व्रत पर पूरा विश्वास था, इसी कारण वह एकादशी व्रत धारण भी करता था। साथ ही साथ उसके राज्य में सभी नियमपूर्वक एकादशी क. व्रत भी करते थे। उसके एक चन्द्रभागा नाम की एक रूपवती, गुणवती और धर्मपरायण पुत्री थी।

बाप और बेटी दोनों ही भगवान केशव के पूर्ण भक्त थे। उनकी पुत्री चन्द्रभागा का विवाह राजा चन्द्रसेन के पुत्र के साथ हुआ। जो राजा मृचुकुन्द के पास ही रहता था। जब एकादशी आयी तो सभी व्यक्तियों ने व्रत धारण किया। सोभन कुमार ने कमजोर होते हुए भी व्रत धारण किया।

सोभन कुमार को व्रत के प्रभाव से मन्दराचल पर्वत पर स्थित देवनगर में निवास मिला। वहां उसकी सेवा में रम्भादिक अप्सरायें भी थीं। एक दिन राजा मृचुकुन्द घूमता-घूमता मन्दराचल पर्वत पहुंचा। उसने वहां अपने दामाद को देखा। वह तभी अपनी पुत्री के पास लौट आया और आकर सम्पूर्ण वृतान्त अपनी पुत्री को कह सुनाया।

तब चन्द्रभागा ने अपने पिता से मंदराचल जाने की आज्ञा मांगी और वहां गयी। वहां पर रम्भादिक अप्सरायें दोनों पति-पत्नियों की सेवा किया करती थीं। इस प्रकार वे स्वर्ग के समान सुख भोगने लगे।

गोवत्स द्वादशी का व्रत

यह त्योहार कार्तिक कृष्ण पक्ष की द्वादशी को मनाया जाता है। इस दिन गायों और बछड़ों की पूजा की जाती है। व्रत रखने वाला इस दिन प्रातः स्नान कर गाय और बछड़ों का पूजन करे। फिर उनको आटे का गोला बनाकर खिलाये। इस दिन गाय का दूध, गेहूं की बनी वस्तुएं और भैंस, बकरी का दूध और कटे फल नहीं खाये। इसके बाद गोवत्स द्वादशी की कहानी सुने। फिर ब्राह्मणों को फल दान करे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करे।

गोवत्स द्वादशी की कथा-बहुत समय पूर्व की बात है, भारतवर्ष में स्वर्णपुष्प नाम का एक बहुत रमणिक नगर था। वहां देवरावी नाम का राजा राज्य करता था। राजा बहुत धर्मात्मा, दानी और गौ माता का सेवक था। उसके यहां एक गाय, बछड़ा और भैंसें रहती थीं। उस राजा के दो रानियां थीं। एक का नाम सीता और एक का नाम गीता था। सीता भैंस से प्यार करती थी और उसे अपनी सखी की तरह मानती थी, जबकि गीता गाय और बछड़े से प्रेम करती थी। वह गाय को सहेली और बछड़े को अपने बच्चे के समान प्रेम करती थी।

एक दिन भैंस सीता से बोली-"हे रानी! गाय का बछड़ा होने से मुझे द्वेष है। सीता ने कहा-अगर ऐंसी बात है तो मैं सब काम ठीक कर लूंगी। सीता ने

उसी दिन गाय के बछड़े को उठाकर गेहूं के ढेर में दबा दिया—इस बात का किसी को पता न चला। जब राजा खाना खाने गया तो उसके महल में मांस की वर्षा होने लगी। चारों ओर महल में मांस और रक्त दिखाई देने लगा। जो खाना रखा था वह पखाना बन गया। यह देख राजा बहुत चिन्ता में पड़ गया कि यह सब क्या है? उसी समय आकाशवाणी हुई कि राजन्! तेरी स्त्री सीता ने गाय के बछड़े को काटकर गेहूं की ढेरी में दबा दिया है। इसी कारण यह सब हुआ है। इतना सुनकर राजा गुस्से से कांपने लगा। तभी दुबारा स्वर गूंजा कि हे राजन्! कल गोवत्स द्वादशी है। अतः भैंस को शहर से बाहर निकालकर तुम व्रत रखकर गाय के बछड़े को मन में विचारकर उनकी पूजा करना। गाय, भैंस का दूध और फल नहीं खाना। साथ ही गेहूं की कोई वस्तु भी न खाना। तब तेरा सब पाप दूर हो जायेगा और बछड़ा भी जीवित हो जायेगा।

जब गाय शाम को आयी तो वह भी बछड़े के बिना बेचैन हुई। दूसरे दिन राजा ने आकाशवाणी के अनुसार ही कार्य किया। पूजा करते समय जैसे ही बछड़े को मन में याद किया वैसे ही बछड़ा गेहूं के ढेर से निकल आया। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और गोवत्स द्वादशी का व्रत करने की पूरे राज्य में घोषणा करवा दी।

धनतेरस

धनतेरस कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन घर में लक्ष्मी का आवास मानते हैं। इस दिन की धन्वन्तरी वैद्य समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, अतः वह धनतेरस को "धनवन्तरी जयन्ती" भी कहते हैं।

यह दिन दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन बाजार से नया बर्तन खरीदकर घर में लाना शुभ माना जाता है।

धनतेरस की कथा—एँक दिन भगवान विष्णु लक्ष्मी जी के साथ मृत्युलोक में घूम रहे थे। एक जगह भगवान विष्णु कुछ सोचकर लक्ष्मी जी से बोले—मैं एक जगह जा रहा हूं। तुम यहीं पर बैठ जाओ लेकिन दक्षिण दिशा की ओर मत देखना। इतना कहकर भगवान विष्णु दक्षिण दिशा की ओर ही चले गये। जब लक्ष्मी जी ने भगवान विष्णु को दक्षिण दिशा की ओर जाते देखा तो सोचा कि भगवान ने मुझे तो दक्षिण दिशा की ओर देखने से भी मना कर दिया और स्वयं उसी ओर जा रहे हैं, जरूर उसमें कोई भेद है।

इतना विचार कर लक्ष्मी जी इस भेद को जानने के लिए दक्षिण दिशा की ओर देखने लगीं। उस दिशा में उन्हें पीली सरसों का खेत दिखाई दिया। उसे देखकर

लक्ष्मी जी की आंखें ललचायीं। उन्होंने वहां जाकर अपना शृंगार किया। आगे चलकर उन्हें गन्ने का खेत दिखाई दिया, वहां से गन्ना तोड़कर चूसने लगीं। जब भगवान विष्णु वहां से लौटे तो लक्ष्मी जी को वहां देखकर क्रोध करने लगे। उनके हाथ में गन्ना देखकर कहने लगे कि तुमने खेत के गन्ने तोड़कर बहुत बड़ा अपराध किया है, इसके बदले तुम्हें इस गरीब किसान की बारह वर्ष तक सेवा करनी होगी।

यह सुनकर लक्ष्मी जी घबराईं, परन्तु जो बात भगवान के मुख से निकल गयी वही उनको करनी थी। तब भगवान लक्ष्मी जी को छोड़कर क्षीर सागर में चले गये। लक्ष्मी जी भगवान की आज्ञा मानकर उस किसान के घर चली गयीं और उस किसान की नौकरानी बनकर उसकी सेवा करती रहीं। जिस दिन लक्ष्मी जी किसान के घर में पहुंचीं, किसान का घर उसी दिन से धन-धान्य से पूर्ण हो गया। जब बारह वर्ष बीत गये लक्ष्मी जी जाने लगीं; किन्तु किसान ने उन्हें जाने से रोक लिया। जब विष्णु भगवान ने देखा कि लक्ष्मी जी नहीं आईं तो वह किसान के घर गये और लक्ष्मी जी से चलने के लिए कहने लगे, परन्तु किसान ने लक्ष्मी जी को नहीं जाने दिया।

तब भगवान विष्णु बोले—अच्छा तुम अपने परिवार सहित गंगा स्नान के लिए जाओ और गंगाजी में इन चार कौड़ियों को छोड़ देना। जब तक तुम वापिस नहीं आयेंगे, तब तक हम नहीं जायेंगे। किसान ने ऐसा ही किया। जैसे ही किसान ने कौड़ियां पानी में छोड़ीं तभी चार हाथ पानी से निकलकर उन कौड़ियों को ले गये।

जब किसान ने ऐसा देखा तो वह गंगाजी से बोला—हे गंगा मैया! तेरे अन्दर से ये चार हाथ किसके निकले? तब गंगाजी कहने लगीं—हे किसान! ये चारों हाथ मेरे ही थे। तू जो ये कौड़ियां मुझे भेंट के लिए लाया है किसने दी हैं? तब किसान बोला—मेरे घर दो प्राणी आये हैं उन्होंने ही ये कौड़ियां दी हैं। तब गंगाजी बोलीं तेरे घर जो औरत रहती है वह लक्ष्मी जी हैं और जो आदमी आया है वह विष्णु भगवान हैं। तू लक्ष्मी को मत जाने देना नहीं तो तू पहले की ही भांति गरीब हो जायेगा। यह सुनकर वह वापिस अपने घर आया। घर आकर भगवान से आकर कहने लगा—मैं इनको घर से जाने नहीं दूंगा। तब भगवान बोले—यह तो इनका दोष था जिसका मैंने इनको दण्ड दिया था। इनके दण्ड के बारह वर्ष पूरे हो गये इसलिए अब तो इन्हें जाना ही होगा। तब किसान बोला—मैं इन्हें नहीं जाने दूंगा। भगवान हंसकर कहने लगे—हे किसान! लक्ष्मी जी बड़ी चंचल हैं। ये आज नहीं तो कल तेरे घर से अवश्य ही चली जायेंगी। तुम तो क्या, अच्छे-अच्छे लक्ष्मी जी को नहीं रोक पाये।

इस पर किसान कहने लगा—मैं इन्हें नहीं जाने दूंगा। तब लक्ष्मी जी बोलीं—हे किसान! यदि तुम मुझे रोकना चाहते हो तो सुनो! कल तेरस है। अतः कल तुम

घर को लीप-पोतकर साफ-सुथरा रखना। रात्रि को घी का दीपक जलाकर रखना। तब मैं तुम्हारे घर में आऊंगी। उस समय तुम मेरी पूजा करना, परन्तु तुम्हें दिखाई नहीं दूंगी। किसान ने कहा-अच्छा मैं ऐसा ही करूंगा। इतना कहकर लक्ष्मी जी दशों दिशाओं में फैल गयीं और भगवान देखते ही रह गये।

दूसरे दिन किसान ने लक्ष्मी जी के बताये अनुसार ही कार्य किया। उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। इसके बाद वह हर साल पूजा करता रहा। उसको देखकर और व्यक्ति भी पूजा करने लगे हैं। हे लक्ष्मी जी! जैसे तुम उस गरीब किसान के आईं, वैसे सबके आना। हमारे भी आना।

रूप चतुर्दशी

यह चतुर्दशी कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में चौदस को आती है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण रूप-सौंदर्य को देते हैं। इस दिन व्रत भी रखा जाता है।

रूप चतुर्दशी की कथा-एक समय भारतवर्ष में हिरण्यगर्भ नाम के नगर में एक योगिराज रहते थे। उन्होंने अपने मन को एकाग्र करके भगवान में लीन होना चाहा। अतः उन्होंने समाधि लगायी उनके शरीर में कीड़े पड़ गये। बालों में छोटे-छोटे कीड़े लग गये। आंखों के रोओं और भौंहों पर जूंयें जम गयीं, इससे योगिराज बहुत दुःखी हुए। इतने में वहां नारद जी घूमते-घूमते वीणा और खरताल बजाते हुए आ गये। तब योगिराज बोले-"हे भगवान! मैं भगवान के चिन्तन में लीन होना चाहता था परन्तु मेरी यह दशा हो गयी।

तब नारद जी बोले-हे योगिराज, तुम चिन्तन करना जानते हो परन्तु देह-आचार का पालन नहीं जानते। इसलिए तुम्हारी यह दशा हुई है। तब योगिराज ने नारद जी से देह-आचार पूछा। तब नारद जी बोले-आचार से अब कोई लाभ नहीं है। अब मैं जैसा कहूं तुम वैसा ही करना। फिर देह-आचार बताऊंगा। नारद जी बोले, अब के कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को तुम व्रत रख कृष्ण भगवान की पूजा करना, उस पूजा से तुम्हारा शरीर पहले जैसा रूपवान हो जायेगा। योगिराज ने ऐसा ही किया। उसका शरीर स्वर्ण के समान हो गया। उसी दिन से इसको रूप चतुर्दशी भी कहते हैं।

नर्क चतुर्दशी

यह कार्तिक शुक्ल पक्ष की चौदस को आती है। इस दिन भगवान कृष्ण की पूजा करनी चाहिए। कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। इस दिन अग्रांकित मन्त्र पढ़कर भगवान पर फूल चढ़ाते हैं-

मन्त्र–

वसुदेव सुतं देव नरकासुर भदैनम्।
देवकी परमानन्दम् कृष्णम् वन्दे जगदगुरुम्॥

दोहा–

वासुदेव के पुत्र जो, नरकासुर के काल।
रखे देवकी पुत्र सम, सभी झुकोव भाल॥

इस प्रकार जो पूजा करते हैं, नर्क छोड़कर स्वर्ग को जाते हैं।

नर्क चतुर्दशी की कथा–बहुत समय पहले की बात है एक रन्तिदेव नाम का राजा हुआ था। वह पूर्व जन्म में बहुत धर्मात्मा और दानी था, उस पुण्य के प्रताप से महाराजा हुआ। इस जन्म में भी उसने बहुत पुण्य किये। जब उसका अन्त समय आया तो उसे यमदूत लेनें को आये। तो राजा ने बड़े दुःखी मन से कहा–यमदूतों! मैंने जीवन में कभी अधर्म न करके सदैव दान–पुण्य किए हैं फिर मुझे नर्क की यातना क्यों दी जा रही है?

यमदूतों ने कहा–राजन! एक बार आपके द्वार पर आकर एक अतिथि भूखा–प्यासा चला गया और आपने उसका वाणी से भी सत्कार नहीं किया। इसलिए इस पाप में आपको कुछ दिन के लिए नर्क का दुःख अवश्य भोगना पड़ेगा।

यमदूतों की यह बात सुनकर राजा ने उनको कुछ क्षण ठहरने के लिए प्रार्थना की और तत्पश्चात तुरन्त अपने मन्त्रियों को बुलवाकर दीन–अनाथों को इच्छानुसार धन–द्रव्य देकर उन्हें सन्तुष्ट करने को कहा। चूंकि उस दिन नर्क चतुर्दशी थी, इसी कारण उस दिन के दान–पुण्य से सन्तुष्ट हो गये। राजा नर्क ना जाकर स्वर्ग को चला गया।

दीपावली पूजन

सामान्यतः दीपावली पूजन का अर्थ लक्ष्मी पूजा से लगाया जाता है, किन्तु इसके अन्तर्गत वरुण, नवग्रह षोडशमातृका, गणेश, महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती, कुबेर, तुला, मान व दीपावली की पूजा भी होती है।

पूजन का समय–दीपावली प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास में कृष्णपक्ष की अमावस्या को मनाई जाती है।

दीपावली पूजन के लिये आवश्यक सामग्री

लक्ष्मी व गणेश की मूर्तियां, लक्ष्मी सूचक सोने अथवा चाँदी का सिक्का, लक्ष्मी स्नान के लिये स्वच्छ कपड़ा, लक्ष्मी सूचक सिक्के को स्नान के बाद पोंछने के

लिये एक बड़ी व दो छोटी चौकियां। बही खाते, सिक्कों की थैली, लेखनी, काली स्याही से भरी दवात, तीन थालियां, एक साफ कपड़ा, धूप, अगरबत्ती, मिट्टी के बड़े व छोटे दीपक, रूई, माचिस, सरसों का तेल, शुद्ध घी, दूध, दही, शहद, शुद्ध जल।

पंचामृत (दूध, दही, शहद, घी व शुद्ध जल का मिश्रण)

मधुपर्क (दूध, दही, शहद, व शुद्ध जल का मिश्रण)

हल्दी व चूने का पाउडर, रोली, चन्दन का चूरा, कलावा, आधा किलो साबुत चावल, कलश, दो मीटर सफेद वस्त्र, दो मीटर लाल वस्त्र, हाथ पोंछने के लिये कपड़ा, कपूर, नारियल, गोला, मेवा, फूल, गुलाब अथवा गेदें की माला, दूर्वा, पान के पत्ते, सुपारी, बताशे, खांड के खिलौने, मिठाई, फल, वस्त्र साड़ी आदि, सूखा मेवा, खील, लौंग, छोटी इलायची, केसर, सिन्दूर, कुंकुम, गिलास, चम्मच, प्लेट, कड़छुल, कटोरी, तीन गोल प्लेट, द्वार पर टांगने के लिये वन्दनवार।

दीपावली पूजन की तैयारी

चौकी पर लक्ष्मी व गणेश की मूर्तियां इस प्रकार रखें कि उनका मुख पूर्व या पश्चिम में रहे। लक्ष्मी जी, गणेश जी के दाहिनी ओर रहें।

पूजन कर्त्ता मूर्तियों के सामने की तरफ बैठें।

कलश को लक्ष्मी जी के पास चावलों पर रखें। नारियल को लाल वस्त्र में इस प्रकार लपेटें कि नारियल का अग्रभाग दिखाई देता रहे व इसे कलश पर रखें। यह कलश वरुण का प्रतीक है।

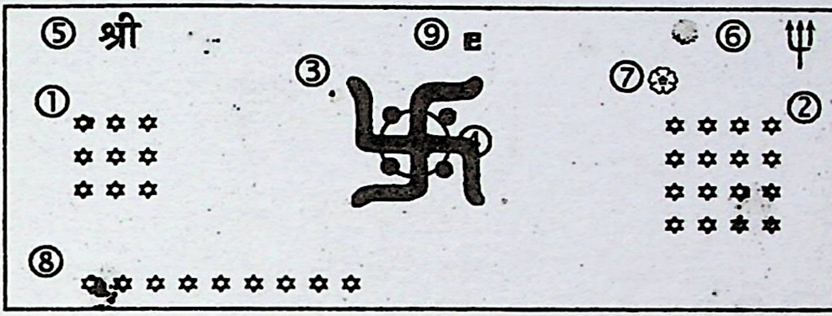
दो बड़े दीपक रखें। एक में घी भरें व दूसरे में तेल। एक दीपक चौकी के दायीं ओर रखें व दूसरा मूर्तियों के चरणों में। इसके अतिरिक्त एक दीपक गणेश जी के पास रखें।

मूर्तियों वाली चौकी के सामने छोटी चौकी रखकर उस पर लाल वस्त्र बिछाएं।

कलश की ओर एक मुट्ठी चावल से लाल वस्त्र पर नवग्रह की प्रतीक नौ ढेरियां (3×3) बनायें। गणेश जी की ओर चावल की सोलह ढेरियां (4×4) बनायें। ये सोलह मातृका (2) की प्रतीक हैं। नवग्रह व सोलह मातृका के बीच स्वास्तिक का चिन्ह (3) बनायें। इसके बीच में सुपारी (4) रखें व चारों कोनों पर चावल की ढेरी। सबसे ऊपर बीचों-बीच ओऽम् लिखें।

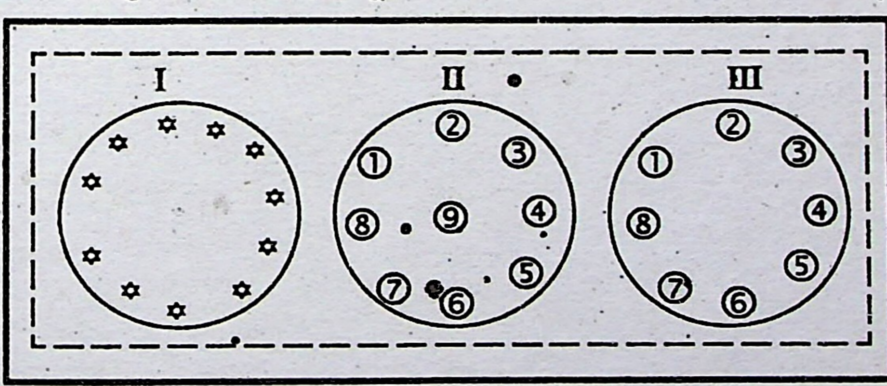
लक्ष्मी जी की ओर श्री का चिन्ह (5) बनायें। गणेश जी की ओर त्रिशूल, (6) चावल का ढेर लगायें, (7) (ब्रह्मा जी का प्रतीक)। सबसे नीचे चावल की नौ ढेरियां

बनायें। (8) (मातृका की प्रतीक) इन सबके अतिरिक्त बहीखाता, कलम-दवात व सिक्कों की थैली भी रखें।



छोटी चौकी की व्यवस्था

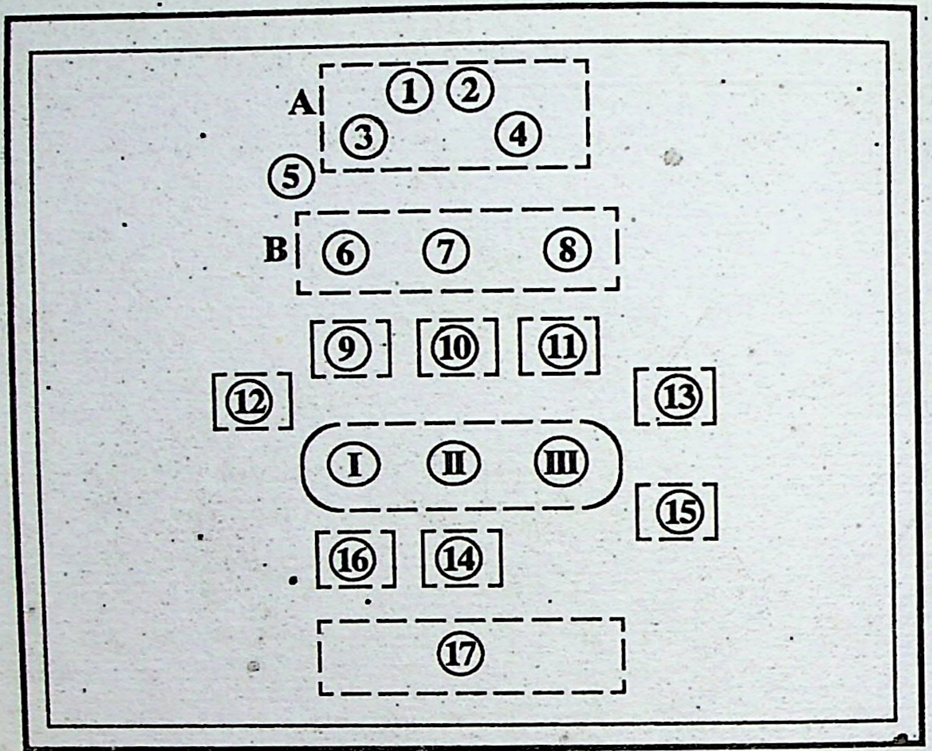
छोटी चौकी के सामने तीन थाली व पानी का कलश रखें। थालियों की निम्नानुसार व्यवस्था करें—1. ग्यारह दीपक, 2. (i) खील, (ii) बताशे, (iii) मिठाई (iv) वस्त्र, (v) आभूषण, (vi) चन्दन का लेप, (vii) सिन्दूर कुंकुम, (viii) सुपारी, (ix) पान 3. (i) फूल, (ii) दूर्वा (iii) चावल, (iv) लौंग, इलायची, केसर-कपूर, (v) हल्दी चूने का लेप, (vi) सुगन्धित पदार्थ, (vii) धूप, अगरबत्ती, (viii) एक दीपक।



पूजन की थालियों की व्यवस्था

ध्यान दें—उपरोक्त सम्पूर्ण व्यवस्था चित्र 3 के अनुसार होगी।

इन थालियों के सामने यजमान बैठे। आपके परिवार के सदस्य आपकी बाईं ओर बैठें। कोई आगन्तुक हो तो वह आपके या आपके परिवार के सदस्यों के पीछे बैठे।



सम्पूर्ण व्यवस्था

(A) (B) चौकी

(1) लक्ष्मी, (2) गणेश, (3) (4) मिट्टी के दो बड़े दीपक, (5) कलश, जिस पर नारियल रखें, वरुण) (6) नवग्रह (7) षोडशमातृकाएं, (8) कोई प्रतीक, (9) बहीशाता, (10) कलम ओर दवात, (11) नकदी की संदूकची, (12) थालियां I, II, III, (13) जल का पात्र, (14) यजमान, (15) पुजारी, (16) परिवार के सदस्य, (17) आगन्तुक।

दीपावली पूजन का प्रारम्भ

सबसे पहली पवित्रीकरण करेंगे–

आप हाथ में पूजा के जलपात्र से थोड़ा-सा जल ले लें और अब उसे मूर्तियों के ऊपर छिड़कें। साथ में मंत्र पढ़ें। इस मंत्र और पानी को छिड़क करके आप अपने आपको, पूजा की सामग्री को और अपने आसन को भी पवित्र कर लें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तर शुंचिः ॥

अर्थ—ओम मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र अथवा किसी भी दशा में स्थित हो, जो कमल नयन भगवान विष्णु का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर सब ओर से शुद्ध हो जाता है।

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः
कूर्मोदेवता आसने विनियोगः

अर्थ—आदिमन्त्र का मेरू पृष्ठ ऋषि है, सुतल छन्द है तथा कूर्म देवता है। इस मन्त्र से आसन शुद्धि का विनियोग (संकल्प) करता हूं।

अब पृथ्वी पर जिस जगह आपने आसन बिछाया है, उस जगह को पवित्र कर लें और मां पृथ्वी को प्रणाम करके मंत्र बोलें—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

अर्थ—ओम, हे पृथ्वी देवी, तुमने सम्पूर्ण लोकों को धारण कर रखा है और भगवान विष्णु ने तुमको धारण किया है, हे देवि! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र कर दो।

पृथिव्यै नमः आधारशक्तये नमः

अर्थ—पृथ्वी को नमस्कार है, आधार शक्ति को नमस्कार है।

अब आचमन करें

पुष्प, चम्मच या अंजलि से एक बूंद पानी अपने मुंह में छोड़िए और बोलिए—

ॐ केशवाय नमः स्वाहा

और फिर एक बूंद पानी अपने मुंह में छोड़िए और बोलिए—

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा

फिर एक तीसरी बूंद पानी की मुंह में छोड़िए और बोलिए—

ॐ वासुदेवाय नमः स्वाहा

आचमन विद्यातत्त्व, आत्मतत्त्व और बुद्धि तत्त्व का शोधन करने के लिए किया जाता है।

प्राणायाम

आचमन करने के बाद आंखें बन्द करके मन को स्थिर कीजिए और गहरी सांस लीजिए। प्राणायाम भगवान के साकार रूप को ध्यान करने के लिए, मनः संयोग और ध्यान के लिए किया जाता है।

अब—

'ॐ' स्वस्तिवाचन करना होगा। आप हाथ में पुष्प, अक्षत (अर्थात् चावल) और थोड़ा जल लेकर बोलिए—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

एष् वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजंते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति।

ॐ गणानां त्वा गणपति छ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति छ हवामहे निधिनां त्वा निधिपति छ हवामहे॥ वसो मम।

आहमजानि गर्भधर्मा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशांतिर्भवतु सर्वारिष्टशांतिर्भवतु।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति! सब प्रकार से शान्ति हो! सब अरिष्टों की शान्ति हो।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतए नमः
ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः
ॐ शचीपुरंदराभ्यां नमः
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः
ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः
ॐ कुलदेवेभ्यो नमः
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः
ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः
एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु
ॐ अविघ्नमस्तु

ॐ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्ष्यो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

अर्थ—ओम सुन्दर मुख वाले, एक दांत वाले, कपिल वर्ण तथा हाथी जैसे कानों वाले, लम्बोदर, विकट रूप, विघ्नों के नाशकर्ता, सबके नायक, धूम्रकेतु, गणों के अध्यक्ष, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजमान है, जो हाथी के जैसे मुख वाले हैं, गणेश जी के इन बारह नामों का जो पाठ करता है और इन्हें सुनता है, वह निर्विघ्न रहता है। विद्या के आरम्भ में, विवाह के समय, घर में प्रवेश करते अथवा बाहर जाते हुए, संग्राम में अथवा संकट में जो गणेश के इन नामों का पाठ करता है, उसे किसी प्रकार विघ्न नहीं व्याप्त होता।

अब प्रणाम कीजिए।

यह स्वस्तिवाचन था।

अब हमें संकल्प करना है। यह संकल्प हर एक पूजा में प्रधान होता है।

संकल्प—आप हाथ में अक्षत लें, पुष्प और जल ले लीजिए। कुछ द्रव्य भी ले लीजिए। द्रव्य का अर्थ है कुछ धन। ये सब हाथ में लेकर के संकल्प कीजिए और इसे बोलिए—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः तत् सत्

अर्थ—ओम, विष्णु! विष्णु! विष्णु! आप ही सत्य स्वरूप हैं!

आज और अब श्री भगवान विष्णु की आज्ञा से दत्तचित्त होकर ब्रह्म और अग्नि को साक्षी कर दूसरे प्रहर के अर्धभाग में श्री श्वेत वाराह कल्प में सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में अष्टाविंशति कलियुग में, कलि के प्रथम चरण में, भूलोक में....

अब जिस देश में पूजा कर रहे हैं, उस देश का नाम लीजिए। (जिस भी देश में हों, उस देश का नाम लेते हुए उसके साथ 'देशे' ऐसा शब्द जोड़ दीजिए)

अब आप जिस जगह रहते हैं, उसका नाम बोलिए। साथ में 'नाम नगरे या ग्रामे' जोड़ दीजिए।

अब बोलिए—

अद्य श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य
ब्रह्मणो अह्नि द्वितीयप्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे
सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके
श्वेतवाराहकल्पे विक्रमादित्य सम्वत् 2053
मासानाम् मासोत्तमे मासे कार्त्तिकमासे
कृष्णपक्षे अमावस्यायां दीपावली पुण्यपर्वणि
ग[illegible]तिनवग्रहकलशादि पूजनपूर्वकं

महालक्ष्मीपूजनकरणार्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं
प्राप्तलक्ष्मी चिरकाल-संरक्षणार्थं
स्थिरलक्ष्मी-प्राप्त्यर्थं
श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थं
सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकं
आयुरारोग्य-ऐश्वर्य्य-अभिवृद्‌ध्यर्थं
व्यापारे लाभार्थं सुखसम्पत्तिप्राप्त्यर्थं
श्रुतिस्मृतिपुरोणोक्त-फल-प्राप्त्यर्थं
गणपति-नवग्रह-कलशादि-पूजनपूर्वकम्
महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी-कुबेरादिनाम् च पूजनं करिष्ये।
इति संकल्पः ॥

अर्थ—श्वेत वाराह कल्प में, विक्रमादित्य संवत 2053 श्रेष्ठ मास, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में, अमावस्या को दीपावली के पुण्य पर्व के अवसर पर गणेश जी, नवग्रह, कलश आदि के पूजन पूर्वक महालक्ष्मी का पूजन करने के लिए, अप्राप्त लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, प्राप्त लक्ष्मी के चिरकाल तक संरक्षण के लिए, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की प्रीति के लिए सब प्रकार के अरिष्टों की निवृत्ति के साथ आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य की अभिवृद्धि के लिए, व्यापार में लाभ के लिए, सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए, श्रुति, स्मृति पुराणों में कहे गए फल की प्राप्ति के लिए गणपति नवग्रह, कलश आदि की पूजा पूर्वक महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, लेखनी, कुबेर आदि की पूजा करता हूं। यही मेरा संकल्प है।

यह सब बोलकर आपने अपने हाथ में जो अक्षत (चावल), पुष्प, द्रव्य आदि ले रखे हैं, उन्हें भगवती के चरणों में चढ़ा दीजिए।

इसके बाद गणेश जी का पूजन कीजिए।

गणेश पूजन

गणपति जी को प्रणाम कीजिए। थोड़ा-सा गंध, पुष्प लेकर उनके चरणों में डाल दीजिए और फिर बोलिए—

गजाननं भूतगणादिसेवितं।
कपित्थजम्बुफलचारुभक्षणम् ॥
उमासुतं शोकविनाशकारकम्।
नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥

उमामहेश्वराभ्याम् नमः।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

अर्थ–हाथी के जैसे मुख वाले, भूतगण आदि द्वारा सेवित तथा कपित्थ एवं सुस्वादु जम्बूफल का भक्षण करने वाले उमा के पुत्र, शोक का विनाश करने वाले, विघ्नेश्वर के चरण-कमलों को नमस्कार करता हूं। उमा महेश्वर को नमस्कार करता हूं। श्रीमान् महागणाधिपति को नमस्कार करता हूं।

अब पुष्प या चम्मच से थोड़ा-सा जल लें और बोलिए–

पादयोर्पाद्यम् समर्पयामि

अर्थ–चरण प्रक्षालन के लिए जल समर्पित करता हूं।

भगवान गणपति के चरणों में जल चढ़ा दीजिए।

अर्घ्य–फिर पुष्प या चम्मच से थोड़ा-सा जल लीजिए और बोलिए–

हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

अर्थ–दोनों हाथों में अर्घ्य समर्पित करता हूं।

और फिर श्रीचरणों में जल डाल दीजिए।

आचमन–ले लीज़िए, उसी तरह पुष्प, या चम्मच से थोड़ा-सा जल फिर लीजिए और बोलिए–

मुखे आचमनीयम् समर्पयामि

अर्थ–मुख में आचमन समर्पित करता हूं।

जल गणेश जी के मुंह की तरफ ले जाइए और जल छोड़ दीजिए।

अब स्नान करवाए–वैसे ही जल लीजिए और इस बार बोलिए–

स्नानीयम् समर्पयामि।

अर्थ–स्नान समर्पित करता हूं।

और श्रीगणेशजी के ऊपर जल डाल दीजिए।

अब गंध (रोली) ले लीजिए, बोलिए–

गंधम समर्पयामि।

अर्थ–गन्ध समर्पित करता हूं।

और रोली के छींटे गणेशजी के ऊपर डालिए, फिर लाल रोली से तिलक लगा दीजिए।

और फिर अक्षत ले लीजिए। अब अक्षत लेकर के बोलिए–

गंधांते अक्षतान् समर्पयामि।

अर्थ–गन्ध के पश्चात् अक्षत समर्पित करता हूं।

और फिर गणेश जी पर चावल चढ़ा दीजिए।

पुष्प—इस बार पुष्प लीजिए और बोलिए—

पुष्पम् समर्पयामि।

अर्थ—पुष्प समर्पित करता हूं।

और पुष्प चढ़ा दीजिए।

धूप—थोड़ी-सी धूप लीजिए और बोलिए—

धूपम् आघ्रापयामि।

अर्थ—घ्राण के लिए धूप समर्पित करता हूं।

और श्रीचरणों के पास धूप जलाकर रख दीजिए।

दीपक ले लीजिए—एक दीपक ले लीजिए और बोलिए—

दीपं दर्शयामि।

अर्थ—दीप दिखाता हूं।

और दीप जलाकर गणपतिजी के सामने रख दीजिए। दीप जलाने के बाद थोड़ा-सा जल हाथ में लगाकर रूमाल से पोंछ लीजिए और इसे बोलिए—

हस्तं प्रक्षालयामि।

अर्थ—हाथ धुलवाता हूं।

नैवेद्य—थोड़ा-सा मिष्ठान्त (मिठाई) ले लीजिए और बोलिए—

नैवेद्यं समर्पयामि।

अर्थ—नैवेद्य समर्पित करता हूं।

और मिठाई गणपति के सामने रख दीजिए।

आचमन—हाथ में जल लेकर बोलिए—

आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—आचमन के लिए जल समर्पित करता हूं।

और जल डाल दीजिए।

ताम्बूल—अब हाथ में पान के पत्ते और उस पर सुपारी, लोंग, इलाइची रखकर बोलिए—

ताम्बूलं समर्पयामि।

अर्थ—ताम्बूल समर्पित करता हूं।

और उन्हें ताम्बूल भी चढ़ा दीजिए।

ऋतुफल ले लीजिए और बोलिए—

ऋतुफलं समर्पयामि।

अर्थ—ऋतुफल समर्पित करता हूं।

फिर फल चढ़ा दीजिए।

अब द्रव्य दक्षिणा ले लीजिए और बोलिए—

द्रव्यदक्षिणाम् समर्पयामि।

अर्थ—दक्षिणा के लिए द्रव्य समर्पित करता हूं।

और उसे भी श्रीचरणों में चढ़ा दीजिए।

और अब नमस्कार। अब हाथ जोड़कर नमस्कार कर लीजिए—

'नमस्कारनम्' इस प्रकार गणेश जी की पूजा हो गई।

अब आपको वरुण पूजा यानी कलश पूजन करनी है—

वरुण पूजा

आवाह्न—हाथ में थोड़ा-सा जल ले लीजिए और बोलिए—

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानक्षदाशास्ते यजमानो हविर्भिः
अहेडमानो वरुणेहवोध्युरूशुस्मान आयुः प्रमोषीः ॥

अर्थ—ओम, मैं उस तत्वरूप ब्रह्म को प्राप्त होता हूं, जिसकी ब्रह्मा द्वारा हवियों से सदा हवन किया जाता है और मैं वरुण देवता को भी जानता हूं, जो वरुण देवता आयु प्रदान करने वाला है, वह मुझे दीर्घायु प्रदान करे।

ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवते वरुणाय नमः।

अर्थ—ओम भू! भुवः स्वः, भगवान वरुण को नमस्कार है।

आवाहनं समर्पयामि।

अर्थ—आवाहन समर्पित करता हूं।

और आवाह्न के बाद और फिर कलश पर छिड़क दीजिए। हाथ में फूल, चावल, गंध, द्रव्य आदि ले लीजिए और बोलिए—

सर्वोपचारार्भेगंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अर्थ—सब प्रकार के गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि समर्पित करता हूं।

गंगे च चमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अर्थ—यह जल, जो समर्पित किया जा रहा है, उसमें गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी का निवास हो। और हाथ की सब सामग्री कलश पर चढ़ा दीजिए। अब फल लेकर के कलश के ऊपर रख दीजिए और फिर रोली से कलश के ऊपर टीका लगा दीजिए। फल और मिष्ठान ले लीजिए। वरुण भगवान के लिए कलश के पास रख दीजिए और बोलिए—

अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावहयामि

अर्थ—इस कलश में सब तीर्थों का आह्वान करता हूं।

पूजयामि नमस्करोमि।

अर्थ—मैं इसकी पूजा करता हूं, इसको नमस्कार करता हूं।

कलशे वरुणाय नमः।

अर्थ—कलश रूपवर्ण को नमस्कार है।

नवग्रह पूजा

अब नवग्रह पूजन होगा।

हाथ में अक्षत और पुष्प ले लीजिए और बोलिए—

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरांतकारी
भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः
सर्वेग्रहाः शांतिकराः भवंतु।

अर्थ—ओम, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु आदि सब ग्रहों की शांति हो।

हाथ की सामग्री चढ़ा दीजिए। हाथ में जल ले लीजिए और बोलिए—

आदित्यादिनवग्रहेभ्यो नमः

अर्थ—सूर्यादि नवग्रहों को नमस्कार है।

और जल से नवग्रह के ऊपर छींटे दीजिए।

अब हाथ में रोली ले ले लीजिए और इसके भी छींटे लगा दीजिए और नौ फल और नौ ही मिठाइयां ले लीजिए, क्योंकि नौ ग्रह हैं। उन्हें भी चढ़ा दीजिए।

फिर पान लेकर उसी तरह चढ़ा दीजिए। धूप जला दीजिए। दीपक जलाकर के दिखाइए और दीपक को रख दीजिए। कुछ द्रव्य (रुपय-पैसे) भी चढ़ा दीजिए। यही द्रव्य दक्षिणा होगी और सब पूरा हुआ और अब मथ्था टेक लीजिए। इसके बाद भगवती षोडश मात्रिका का पूजन किया जाता है।

भगवती षोडश मात्रिका

हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प ले लीजिए। सोलह माताओं को नमस्कार कर लीजिए और बोलिए—

गौरी पद्माशची मेधा सावित्री विजया जया
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः
हृष्टिः पुष्टिस्तया तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः
गणेशेनाधिकापूज्याः वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः।

अर्थ–गौरी, पद्मा, शचि, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माताएं, लोकमाताएं, दृष्टि, पुष्टि, तुष्टि तथा अपने कुल की देवियां–ये सोलह प्रकार से निर्दिष्ट मातृशक्तियां मनुष्य की अभिवृद्धि (उन्नति) के लिए पूज्य हैं तथा इनकी पूजा गणेश पूजा से भी जरूरी है।

पाद्य–जल ले लीजिए। बोलिए–

पादयोर्पाद्यम् समर्पयामि।

अर्थ–चरण प्रक्षालन के लिए जल समर्पित करता हूं।

और जल छिड़क दीजिए।

अर्घ्य ले लीजिए और बोलिए–

हस्तयोरर्घ्यम् समर्पयामि

अर्थ–हाथों में अर्घ्य समर्पित करता हूं।

थोड़ा–सा जल छिड़क दीजिए।

आचमन–जल ले लीजिए और बोलिए–

मुखे आचमनीयम् समर्पयामि्

अर्थ–मुख में आचमन समर्पित करता हूं।

जल छिड़क दीजिए।

गंध–सुगन्ध द्रव्य ले लीजिए। बोलिए–

गंधम् आघ्रापयामि।

अर्थ–घ्राण के लिए गन्ध समर्पित करता हूं।

अक्षत–ले लीजिए, हाथ में अक्षत लीजिए। बोलिए–

अक्षतान् समर्पयामि।

अर्थ–अक्षत समर्पित करता हूं।

और अक्षत चढ़ा दीजिए।

पुष्प–ले लीजिए, हाथ में पुष्प लेकर बोलिए–

पुष्पानि समर्पयामि।

अर्थ–पुष्प समर्पित करता हूं।

और पुष्प चढ़ा दीजिए।

धूप–पुनः धूप जलाइए और बोलिए–

धूपम् आघ्रापयामि।

अर्थ–घ्राण के लिए धूप समर्पित करता हूं।

बोलने के बाद धूप को रख दीजिए।

दीपक–दीपक जलाकर बोलिए–

दीपं दर्शयामि।

अर्थ—दीप दिखाता हूं।

और दीपक दिखाकर रख दीजिए और हाथ धो लीजिए। यह जरूरी है।

नैवेद्यं—अर्थात् थोड़ा-थोड़ा पुष्प, फल, मिष्ठान्न लीजिए और बोलिए—

नैवेदयं निवेदयामि।

अर्थ—नैवेद्य निवेदित करता हूं।

बोलकर नैवेद्य चढ़ा दीजिए।

द्रव्य दक्षिणा—सोलह जगह थोड़े-थोड़े पैसे रख दीजिए और बोलिए—

द्रव्यदक्षिणाम् समर्पयामिं

अर्थ—दक्षिणा के लिए धन समर्पित करता हूं।

अब नमस्कार कर लीजिए।

सोलह माताओं की पूजा के बाद रक्षा-बन्धन होता है—

रक्षाबन्धन

रक्षाबंधन विधि में मोली लेकर भगवान गणपति पर चढ़ाइए और फिर अपने हाथ में बंधवा लीजिए और तिलक लगा लीजिए।

अब आनन्दचित्त से निर्भय होकर महालक्ष्मी की पूजा प्रारम्भ कीजिए—

महालक्ष्मी पूजन

ध्यान—हाथ में पुष्प या अक्षत लेकर महालक्ष्मी पूजन का आप विधान करें। इसमें सबसे पहले ध्यान—

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मी दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।
सा नित्यं पद्महस्त मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥

अर्थ—जो देवी पद्मासन पर स्थित हैं, विपुल कटितट वाली हैं, कमलनयना हैं, गम्भीर गोलाकार नाभि वाली हैं, जो स्तनों के भार से नमित हैं, जो स्वच्छ वस्त्र का उत्तरीय धारण किए हैं, जो लक्ष्मी दिव्य रूप धारिणी हैं और नाना प्रकार के मणियों से युक्त स्वर्णकलश द्वारा जिन्हें स्नान कराया जाता है, वे भगवती लक्ष्मी हाथ में कमल धारण किए, सब प्रकार के मंगल से युक्त, नित्य प्रति मेरे घर निवास करें।

हाथ में जो सामग्री है, उसे देवी के चरणों में चढ़ा दीजिए और लक्ष्मी को बुलाने को आह्वान करते हैं। अब आह्वान करना है। दोनों हाथ जोड़कर तालु ऊपर

करके देवी से कहिए 'मां, मेरे घर, व्यापार, संस्थान में आप पधारिए। आपका स्वागत है।' फिर बोलिए–

ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥
देवीम् आवाहयामि ॥

ओम, सब लोकों की जननी, शूल धारिणी, तीन नेत्र वाली, सब देवताओं से युक्त, उनकी स्वामिनि, देवी का मैं आह्वान करता हूं। मैं देवी का आह्वान करता हूं।

आसन–देवी को आसन दीजिए। पुष्प हाथ में लेकर आसान फूल से दिया जाता है और अब बोलिए–

ॐ तत्पकांचनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्थ–ओम, स्वर्ण वर्ण की आभा वाली, मुक्तामणि पर विराजमान, स्वच्छ कमल के दिव्य आसन को ग्रहण कीजिए।

आसनं समर्पयामि ॥

अर्थ–आसन समर्पित करता हूं।

पुष्प देवी जी के चरणों में डाल दीजिए।

पाद्यम–हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर बोलिए–

ॐ गंगादितीर्थसंभूतं गंधपुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥
पादयोर्पाद्यम् समर्पयामि।

अर्थ–ओम, गंगा आदि तीर्थों से युक्त, गंध पुष्प आदि से संयुक्त, मैं आपके चरण धोता हूं, इस जल को ग्रहण कीजिए, आपकी जय हो, चरण प्रक्षालन के लिए जल समर्पित करता हूं।

और श्रीचरणों में जल डाल दीजिए।

अर्घ्य–किसी चम्मच से या दौने में अर्घ्य अर्थात् जल, गंध, पुष्प लेकर बोलिए–

ॐ अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते ॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

अर्थ–ओम, अष्ट गंध से युक्त परिपूर्ण स्वर्ण-पात्र के सहित मेरा दिया हुआ अर्घ्य ग्रहण कीजिएं। हे महालक्ष्मी आपको नमस्कार है। अर्घ्य समर्पित करता हूं।

और अर्घ्य भी चढ़ा दीजिए।

आचमन—चम्मच में थोड़ा-सा जल लीजिए और बोलिए—

ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥
आचमनीयं सपर्पयामि।

अर्थ—ओम, सब लोकों की शक्ति स्वरूप, ब्रह्मा, विष्णु आदि द्वारा सेवित, मैं आपको आचमन समर्पित करता हूं। हे लक्ष्मी आप बहुत मनोहर हैं। आचमन समर्पित करता हूं।

क्योंकि आचमन मुंह में किया जाता है, इसलिए मुंह की तरफ चम्मच ले जाइए और नीचे डाल दीजिए।

स्नान—सोने या चांदी का सिक्का लीजिए। इनसे भगवती का प्रतिरूप मान लिया जाता है। एक कटोरी में थोड़ा-सा जल लेकर के सिक्के को उस में रख लीजिए और बोलिए—

ॐ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमांभोरूहवासिनि।
स्नानं कुरुस्व देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥
स्नानम् समर्पयामि्।

अर्थ—ओम, हे स्वर्ण कमल पर निवास करने वाली! आपके लिए मन्दाकिनी से जल लाया गया है। यह जल सुगन्धि से परिपूर्ण है। आप कृपया स्नान करें। स्नान समर्पित करता हूं।

अब सिक्के को निकालकर कपड़े से पोंछ लीजिए। यह देवी का स्नान हो गया।

पंचामृत-स्नान—अब सिक्के को पंचामृत में डुबो दीजिए और बोलिए—

ॐ पंचामृतसमायुत्कं जाह्नवीसलिलं शुभम्।
गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भत्कवत्सले ॥
पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

अर्थ—ओम, पंचामृत से युक्त, शुभ गंगाजल प्रस्तुत है। हे भक्तवत्संले! विश्वजननि स्नान के लिए उसे ग्रहण करो। पंचामृत स्नान समर्पित करता हूं।

सिक्के को निकालकर कपड़े से पोंछ लीजिए। यह देवी पंचामृत-स्नान हो गया।

शुद्धोदक-स्नान—अब एक कटोरी जल की ले लीजिए और उसी सिक्के को उसमें डुबो कर बोलिए—

ॐ तोयं तव महादेवि! कर्पूरागरूवासितम्।
तीर्थभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं भक्तवत्सले।
शुद्धोदकं समर्पयामि ॥

अर्थ–ओम, हे महादेवि! हे भक्तवत्सले! कपूर चंदन आदि से सुगन्धित जल आपके स्नान के लिए तीर्थों से लाया गया है। शुद्ध जल समर्पित करता हूं। अब सिक्के को निकालकर पोंछ लीजिए। यह हो गया देवी का शुद्ध जल स्नान।

वस्त्र–पूजा के वस्त्र हाथ में ले लीजिए और बोलिए–

ॐ दिव्याम्वरं नूतनं ही क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥
वस्त्रं समर्पयामि।

अर्थ–ओम, हे जगदम्बा अत्यन्त मनोहर नवीन दिव्य वस्त्र आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। इसे ग्रहण करें। वस्त्र प्रस्तुत करता हूं।

देवी के वस्त्र रख दीजिए।

उपवस्त्र–महालक्ष्मी के लिए चुन्नी या ओढ़नी लीजिए और बोलिए–

कंचुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मंगले जगदीश्वरि ॥
उपवस्त्रं समर्पयामि।

अर्थ–हे मंगलकारिणी जगदीश्वरी नाना रत्नों से युक्त कंचुकी तथा उपवस्त्र मैं आपको समर्पित करता हूं। कृपया ग्रहण करें। उपवस्त्र समर्पित करता हूं।

देवी को यह उपवस्त्र सावधानी से ओढ़ा दीजिए।

मधुपर्क का पात्र लेकर बोलिए–

ॐ कापिलम् दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि! मधुपर्कं गृहाण मे ॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

अर्थ–ओम, हे देवि! मधुपर्क के लिए कपिला गाय के दूध से बना दही, जो कि कुंदकली और चन्द्रमा के समान धवल वर्ण का है, मधु से युक्त है, आपकी सेवा में स्वर्ण-पात्र में प्रस्तुत है। कृपया इस मधुपर्क को ग्रहण करें। मधुपर्क समर्पित करता हूं।

मधुपर्क देवी के सामने चढ़ा दीजिए।

अब आभूषण ले लीजिए, भगवती को पहनाई जाने वाली चूड़ियां या गहने हाथ में लेकर के–

ॐ स्वभावसुंदराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥
आभूषणम् समर्पयामि।

अर्थ–ओम, स्वभाव से सुन्दर अंगों वाली, नाना देवताओं को आश्रय देने वाली, हे शुभे! अनेक प्रकार के आभूषण आपको समर्पित करता हूं। कृपया ग्रहण कीजिए।

आभूषण समर्पित करता हूं।

चूड़ियां या गहने भी देवी के चरणों में चढ़ा दीजिए, रख दीजिए।

और गंध ले लीजिए—हाथ में रोली और गंध ले लीजिए और बोलिए—

श्रीखण्डागरूकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्ते भक्त्वत्सले ॥
गंधं समर्पयामि।

अर्थ—हे भक्तवत्सले! आपको नमस्कार है। आपके विलेपन के लिए चंदन, कपूर और कस्तूरी का श्रीखंड प्रस्तुत है। कृपया ग्रहण कीजिए। गन्ध समर्पित करता हूं।

रोली और गंध के छींटे दे दीजिए।

चंदन—हाथ में पिसे हुए चंदन की कटोरी ले लीजिए और बोलिए—

ॐ केशरागुरुकर्पूर चंदनादि-समन्वितम्।
विलेपनं महादेवि तुभ्यं दास्यामि भक्तितः ॥
चंदनं समर्पयामि।

ओम, हे महादेवि! मैं भक्तिपूर्वक आपके विलेपन के लिए केसर, अगुरु, कपूर, चंदन आदि से युक्त ये लेप प्रस्तुत करता हूं। कृपया इसे ग्रहण करें। चंदन समर्पित करता हूं।

देवी के माथे पर चंदन का टीका लगा दीजिए। लाल चंदन की कटोरी हाथ में ले लीजिए और बोलिए—

ॐ रक्तचंदनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चंदनं गंधसंयुतम ॥
रक्तचंदनं समर्पयामि।

अर्थ—ओम, पारिजात से उत्पन्न, लाल चंदन से युक्त, गन्ध युक्त चंदन सेवा में प्रस्तुत है। कृपया इसे ग्रहण करें। रक्तचंदन समर्पित करता हूं।

देवी के माथे पर इसका भी टीका लगा दीजिए।

और अब सिंदूर ले लीजिए। बोलिए—

ॐ सिंदूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये।
भक्तयो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिंदूरं समर्पयामि।

अर्थ—ओम, हे देवि! आपको सिन्दूर का तिलक बहुत प्रिय है, अतः लाल रंग का यह सिंदूर आपकी सेवा में यह भक्त प्रस्तुत करता है। कृपया इसे ग्रहण करें। सिन्दूर समर्पित करता हूं।

देवी के माथे पर सिंदूर की बिंदी लगा दीजिए।

हाथ में कुंकुम ले लीजिए और बोलिए–

ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरुपिणम्।
अखण्डकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥
कुंकुमं समर्पयामि।

अर्थ–ओम, दिव्य स्वरूप, कामरूप, कामदाता, अखंड कामनाओं व सौभाग्य की दाता कुंकुम ग्रहण कीजिए। कुंकुम समर्पित करता हूं।

देवी के माथे पर कुंकुम की बिंदी लगा दीजिए।

अक्षत–अब हाथ में अक्षत लेकर बोलिए–

ॐ अक्षतान्निर्मलान् च शुभ्रान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान्महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम् ॥
अक्षतान् समर्पयामि।

अर्थ–ओम, शुभ्र मुक्तामणियों से युक्त, निर्मल अक्षत समर्पित करता हूं। हे महादेवि! इन्हें ग्रहण करें। मुझे निर्मल बुद्धि प्रदान करें। अक्षत समर्पित करता हूं।

और हाथ के अक्षत डाल दीजिए।

पुष्प–हाथ में कुछ पुष्प ले लीजिए। पुष्प लेकर बोलिए–

ॐ मन्दारपारिजातादयाः पाटली केतकी तथा।
मरूवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥
पुष्पानि समर्पयामि।

अर्थ–ओम, मन्दार, परिजात, पाटलि, केतकी, मोगरा, गेंदा इत्यादि के पुष्प ग्रहण कीजिए। आपको बार-बार नमस्कार है। पुष्प समर्पित करता हूं।

फूल चढ़ा दीजिए।

पुष्पमाला–हाथ में माला लीजिए और बोलिए–

ॐ पद्मशंखजवापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणं त्वं सुरेश्वरि ॥
पुष्पमालां समर्पयामि।

अर्थ–ओम, हे सुरेश्वरी! पद्मशंख, सहस्त्रदल कमल से युक्त पुष्पमाला सेवा में प्रस्तुत है। इसे ग्रहण कीजिए। पुष्पमाला समर्पित करता हूं।

भगवती को माला पहना दीजिए। माला लम्बी हो तो खड़े होकर के पहनानी पड़ेगी।

अब दूर्वा हाथ में ले लीजिए। हरी घास लीजिए और बोलिए–

ॐ विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥
दूर्वां समर्पयामि।

अर्थ–ओम, क्षीर सागर से उत्पन्न, सर्व प्रकार से सुशोभित, विष्णु आदि सब देवताओं की प्रिय! दूर्वा स्वीकार कीजिए। दूर्वा समर्पित करता हूं।

हाथ से घास भी डाल दीजिए।

और अतर (इत्र) या कोई भी सुगन्धित द्रव्य ले लीजिए और बोलिए–

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि! दयानिधे।
सर्वलोकस्य जननि! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥
सुगंधम् समर्पयामि।

अर्थ–ओम, सब लोकों की जननि, दयानिधे! लोकेश्वरी! मेरे द्वारा दिया गया स्नेह ग्रहण कीजिए। सुगंध समर्पित करता हूं।

अतर जो हो, उसे चढ़ा दीजिए।

अब इसके बाद अंग पूजा है–

अंगपूजा

इसमें देवी के विभिन्न अंगों की पूजन होता है। आप बोलिए–

ॐ चपलायै नमः
ॐ चंचलायै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कात्यायिन्यै नमः
ॐ जगनमत्रे नमः
ॐ विश्ववल्लभायै नमः
ॐ कमलवासिन्यै नमः
ॐ पद्मकमलायै नमः
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः
ॐ श्रियै नमः
इत्यंगपूजा।

इसके बाद अष्ट सिद्धि पूजा होती है–

अष्ट सिद्धि पूजा

ॐ अणिम्ने नमः
ॐ महिम्ने नमः
ॐ गरिम्ने नमः
ॐ लघिम्ने नमः
ॐ प्राप्त्यै नमः

ॐ प्राकाम्यै नमः
ॐ ईषितायै नमः
ॐ वशितायै नमः
इति अष्टसिद्धिपूजनम्

इसके बाद पूर्वादि क्रम से अष्ट महालक्ष्मी पूजन होता है।

अष्ट महालक्ष्मी पूजन

ॐ आद्यालक्ष्म्यै नमः
ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः
ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः
ॐ काम लक्ष्म्यै नमः
ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः
ॐ योगलक्ष्म्यै नमः
इति अष्टलक्ष्मीपूजनम्।

यह अष्ट महालक्ष्मी पूजन अंग पूजा में सम्पन्न हुआ।

अब धूप चढ़ेगी।

धूप—धूप ले लीजिए और बोलिए—

ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
धूपम् आघ्रापयामि।

अर्थ—ओम, वनस्पति के रसों से उत्पन्न, मनोहर गंध द्रव्य, सब देवताओं को प्रिय धूप स्वीकार कीजिए। धूप समर्पित करता हूं।

देवी के आगे धूप जला दीजिए।

और दीपक जलाकर दीपक लीजिए और बोलिए—

ॐ कार्पासवर्त्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥
दीपं दर्शयामि।
हस्तं प्रक्षालयामि।

अर्थ—ओम, परमेश्वरी! अन्धकार का नाश करने वाला दीपक स्वीकार कीजिए। यह दीपक कपास की बत्ती से युक्त है। घृतपूर्ण है। अत्यन्त मनोहर है।

दीपक दिखाता हूं। हस्त प्रक्षालन करता हूं।

दीपक दिखाने के बाद हाथ धोने की क्रिया अवश्य की जाती है।

नैवेद्य–जिस थाली में मेवा, मिठाई, मिश्री, फल, गंध, पुष्प और जो शुद्ध पकवान आपने मां के लिए तैयार किए हैं या आए हैं, हलवा, पूरी, कचौरी उसे ले लीजिए।

नैवेद्यं गृहयताम् देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।
षड्सैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ॥
नैवेद्यम् निवेदयामि।

अर्थ–हे लक्ष्मी देवि! आपको नमस्कार है। सब प्रकार से खाने योग्य षड्रस से युक्त दिव्य नेवैद्य ग्रहण कीजिए। हे लक्ष्मी देवी, आपको नमस्कार है। नैवेद्य निवेदित करता हूं। धीरे-धीरे पान कीजिए।

थाली मां को अर्पण कर दीजिए। चम्मच या पुष्प से थोड़ा-सा जल लेकर के देवी के मुंह की ओर दिखा करके बोलिए–

मध्ये मध्ये पानीयम्

अर्थात् खाने के बीच में मां को थोड़ा-सा जल पिलाइए।

अब ऋतुफल ले लीजिए। ऋतु के अनुसार जो भी फल आए हों, हाथ में ले लीजिए और बोलिए–

ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः संतु मनोरथाः ॥
ऋतुफलम समर्पयामि

अर्थ–ओम, सब प्रकार के फलों को फलित करने वाली, तीनों लोकों के जड़-चेतन मनोरथों को पूर्ण करने वाली हे देवी, तुम्हें ऋतु फल समर्पित करता हूं। कृपया इसे ग्रहण करें। ऋतुफल समर्पित करता हूं।

फल भगवती के पास रख दीजिए।

आचमन भगवती को आचमन करवा दीजिए। पुष्प से या चम्मच से थोड़ा-सा जल लेकर के नीचे छोड़ दीजिए और बोलिए–

ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतामिदं देवि! प्रसीद त्वं महेश्वरि ॥
आचमनीयम् समर्पयामि।

अर्थ–ओम, हे देवि! कपूर से सुगन्धित शीतल निर्मल जल आचमन के लिए सेवा में प्रस्तुत है। हे महेश्वरी! आप प्रसन्न हों, आचमन प्रस्तुत करता हूं।

भगवती के मुंह की ओर थोड़ा-सा दिखाकर के और जल छोड़ दीजिए।

अखंड ऋतुफल ले लीजिए अर्थात नारियल जैसा फल, जो कि टूटा नहीं

है, हाथ में ले लीजिए और बोलिए–

इदं फलंमयानीतं सारसं च निवेदितम्।
गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणम्याम्यहम् ॥
अखण्डऋतुफलम् समर्पयामि।

अर्थ–आपकी सेवा में ये रसपूर्ण फल लाए गए हैं, हे परमेश्वरी! इन्हें ग्रहण करें। मैं आपको नमस्कार करता हूं। आप प्रसन्न हों। अखण्ड ऋतुफल समर्पित करता हूं।

अखण्ड ऋतुफल को चढ़ा दीजिए।

अब ताम्बूल (पूंगीफल) ले लीजिए। हाथ में पान के पत्ते लीजिए। उसके ऊपर सुपारी, इलायची, लोंग, कपूर, पुष्प आदि रखकर के बोलिए–

ॐ एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ताम्बूलं पूंगीफलानि समर्पयामि।

अर्थ–ओम, आपकी सेवा में इलायची, लौंग, कपूर, केसर आदि से युक्त सुपारी से समन्वित पान प्रस्तुत है। कृपया ग्रहण करें। ताम्बूल (पान) सुपारी समर्पित करता हूं।

पान के पत्ते, सुपारी इत्यादि छोड़ दीजिए।

अब दक्षिणा–दक्षिणा में अपनी श्रद्धा और अपनी शक्ति के अनुसार जो आप चढ़ाना चाहते हैं, वह हाथ में ले लीजिए और बोलिए–

ॐ हिंरण्यंगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।
द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

अर्थ–ओम, अनन्त पुण्य फल प्रदान करने वाली हे देवि! मैं आपको शान्ति की प्रार्थना करता हूं। दक्षिणा स्वरूप द्रव्य समर्पित करता हूं।

दक्षिणा चढ़ा दीजिए।

और अब प्रार्थना–हाथ जोड़ के प्रार्थना कीजिए–

प्रार्थना

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्त सदा यत्तवपादपङ्कजम्।
परावरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्या तवकामसिद्धये ॥
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्न स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते ॥

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ॥

अर्थ–मुक्ता से जटित मुकुट वाले सुर–असुर, इन्द्र आदि सदा ही आपके चरण–कमलों की वंदना करते हैं। आपके चरणों में झुकते हुए मंगल की कामना करते हैं। कामनाओं को सिद्ध करने वाली हे देवि! मैं आपको नमस्कार करता हूं। हे महालक्ष्मी भवानी! सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली। सबके द्वारा पूजित देवी, आप मुझ पर प्रसन्न हों। हे महालक्ष्मी! मैं आपको नमस्कार करता हूं। हे माता लक्ष्मी! तू सब देवताओं को वर देने वाली है, तुझे प्राप्त कर लेने वालों को जैसी सुखमय अवस्था होती है, वैसी ही अवस्था तेरा पूजन करने से मेरी भी हो जाए। अर्थात् मुझे सर्वविद् समृद्धि प्राप्त हो जाए, जिससे सुख मिल सके।

महालक्ष्म्यै नमः

अर्थ–महालक्ष्मी को नमस्कार है।

महालक्ष्मी को प्रणाम कीजिए और अंजुलि भरकर के खील, बताशे, खिलौने, जो चीनी के बने हुए हैं, हाथी, घोड़े, ये ले लीजिए और चढ़ा दीजिए।

और प्रणाम कीजिए।

अब महाकाली, महारस्वती और कुबेर इत्यादि का पूजन करेंगे।

महाकाली का पूजन

इसका अर्थ है, स्याही, दवात, लेखनी, इनका पूजन। दवात लेकर उस पर मौली बांध दीजिए और लाल रोली से दवात पर स्वस्तिक का चिन्ह बना दीजिए और आगे लिखे मंत्र को बोलिए–

ॐ मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥
या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदाभव ॥
श्रीमहाकाल्यै नमः।

अर्थ–ओम, लेखनी से युक्त हे मसि (स्याही) तू चित्रगुप्त के सम्पूर्ण बहीखातों में विद्यमान है अथवा उसकी बहियों के आशय को भी जानती है। तू सर्वदा मेरे पत्रों के लेख को सुन्दर अक्षरों से युक्त बना। जो वेदान्त की माया सांख्यिकी प्रकृति रूपिणी शक्ति है, वही चन्ड मुन्ड नामक दैत्यों का विनाश करने वाली है। ऐसी वह शक्ति सम्पूर्ण देवताओं से पूजित है और वह शक्ति हमको वर देने वाली बने।

महासरस्वती पूजन

नमस्कार कीजिए।

अब महासरस्वती का पूजन होगा। महासरस्वती पूजन का अर्थ है–लेखनी

पूजन। अब लेखनी का पूजन है, तो कलम, पेन आदि का, बहीखाता का अर्थात् लेजर और एकाउन्ट बुक्स जो हैं, वो लिखने वाले का, जो कलम है, उसकी पूजा, मां सरस्वती का पूजन माना जाता है।

कलम को मोली बांध दीजिए। रोली से टीका भी लगा दीजिए और अब ध्यान कीजिए और बोलिए—

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फाटिकमालिकां विद्धतीं पद्मासनेसंस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुधिप्रदां शारदाम् ॥
लेखन्यैः नमः

अर्थ—ओम, शुक्ल वेश धारिणी, ब्रह्मविचार का सार, परम आदि शक्ति जगद्व्यापिनी, वीणा, पुस्तक धारण करने वाली, अभय का वरदान देने वाली, जड़ता रूपी अंधकार का अपहरण करने वाली, हाथ में स्फटिक माला धारण करने वाली, पद्मासन पर विराजमान परमेश्वरी, भगवती बुद्धि देने वाली हे शारदा! हे सरस्वती! मैं आपकी वन्दना करता हूं। लेखनी को नमस्कार है।

नमस्कार कीजिए। लेखनी को विराजमान कर दीजिए अर्थात् लेखनी को रख दीजिए। अब बहीखाता, बसना आदि अर्थात् एकाउंट बुक्स, लेजर बुक्स को ले लीजिए। इनके ऊपर केशर से और रोली से स्वस्तिक बनाइए। ॐ बोलिए और बना दीजिए।

स्वस्तिक के ऊपर अक्षत वगैरह रख दीजिए। बहीखाता को विराजमान कर दीजिए। इनके ऊपर हरे मूंग और फल रख दीजिए और इनका पूजन कर दीजिए। बोलिए—

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा।
ॐ वीणापुस्तकधारिण्यैः नमः।

मां सरस्वती को प्रणाम कीजिए।

अर्थ—ओम, जो देवी कुन्द-कली, चन्द्रमा और तुषार का धवल हार धारण करने वाली हैं, जो शुभ्र वस्त्रों से युक्त हैं, जिनके हाथों में वीणा सुशोभित है और जो श्वेत कमल पर विराजमान हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि देवताओं द्वारा सदा ही पूजी जाती हैं, वे सरस्वती देवी मेरी रक्षा करें, वे भगवती मेरी सम्पूर्ण जड़ता का अपहरण करें। ओम, वीणा, पुस्तक धारण करने वाली देवी को नमस्कार है। हे देवी, मैं आपका आह्वान करता हूं, मुझ पर कृपा करें। आप मेरे कोष की वृद्धि करें। नित्य प्रति सुरेश्वर द्वारा रक्षित रहे, कुबेर को नमस्कार है।

कुबेर पूजन

हाथ में अक्षत ले लीजिए और बोलिए—

आवाहयामि देव त्वमिहायाहि कृपां कुरू।
कोशं वर्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥
कुबेराय नमः।
धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

अर्थ—हे धनाध्यक्ष, हे देव, नरयान पर सवारी करने वाले हे राजराजेश्वर! हे महात्मन कुबेर! आपको नमस्कार है।

तिजौरी या बक्स, अलमारी, या दराज पर सिंदूर या रोली के छींटे लगा दीजिए और एक स्वस्तिक भी बना दीजिए। नमस्कार कर लीजिए।

यह हो गया कुबेर पूजन।

अब तुला और मान पूजन होगा। उनके ऊपर रोली के छींटे लगा दीजिए। हाथ में पुष्प और चावल लीजिए और प्रार्थना कीजिए, बोलिए—

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

सब देवताओं की शक्ति का आप ही आधार हैं, हे देवि! आप जगत को धारण करने वाली हैं और समस्त विश्व के जीवों की साक्षीभूत हैं, आपको नमस्कार है।

पुष्प और अक्षत छोड़ दीजिए। यह तुला और मान का पूजन सम्पन्न हो गया।

दीपावली पूजन

अब दीपावली पूजन होगा। थाली में जो दीपक रखे हुए हैं, उनको अब जला दीजिए। हाथ में रोली और चावल लीजिए। अब प्रार्थना कीजिए—

भो दीप ब्रह्मरूप त्वमन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृहँस्तेजः प्रवर्धय ॥
ॐ दीपेभ्यो नमः।

अर्थ—हे दीप! आप ब्रह्म रूप हैं। आप अन्धकार का निवारण करने वाले हैं। आप मेरे द्वारा की गई इस पूजा को ग्रहण करें तथा तेज की वृद्धि करें। ओम, दीपक को नमस्कार है।

रोली के छींटे लगा दीजिए। हाथ में चावल ले करके पुनः बोलिए—

ॐ चक्षुर्द सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्
आर्तिकयं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

अर्थ–ओम, सब लोकों को चक्षु प्रदान करने वाले, अंधकार का नाश करने वाले दीपक द्वारा यह भक्त आपकी आरती करता है। हे परमेश्वरी! आप इसे स्वीकार कीजिए।

थाली के दीपकों के ऊपर चावल छोड़ दीजिए। अब इन दीपकों को आप स्वयं या अपने बच्चों से या अपने परिजनों से घर या ऑफिस के विभिन्न स्थानों पर रख दीजिए। यही दीपावली पूजन है। यही दीप पूजन है। यही दीपावली है।

अब हम लोग आरती करेंगे। आरती या निराजन, जिस थाली में पुष्प, गंध, कपूर, धूप, दीप इत्यादि, मेवा, मिठाई, भोग-प्रसाद आदि रखा हुआ है, उस थाली को ले लीजिए। थाली को हाथ में लेकर के घुमा-घुमा करके और थाली बाएं से दाहिनी ओर, नीचे से ऊपर घुमाइए। थाली से एक 'ॐ' का आकार बनाइए।

साथ-साथ में गाइए–

लक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि-दिन सेवत, हर-विष्णु-धाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तू ही है जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
तू ही है पाताल-निवासिनि, तू ही है शुभ-दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, जग निधिकी त्राता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
जिस घर थारो वासो, वाही में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले मन नहीं घबराता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
तुम बिना यज्ञ न होवे, वस्त्र न होए पाता।
खान-पान का वैभव, तुम बिन कुन दाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
शुभ-गुण मन्दिर योक्ता, क्षोरनिधि जाता।
रत्न चतुर्दश तों को, कोई नहिं पाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द अति उमगे, पाप उतर जाता ॥ॐ जय लक्ष्मी माता॰
शान्तिः शान्तिः शान्तिः

लक्ष्मी मैया की जय। जय लक्ष्मी माता। आरती की थाली नीचे रख लीजिए। जरा-सा जल छोड़ दीजिए। आरती के बाद थोड़ा-सा जल छोड़ना जरूरी है और

अब हाथ में पुष्प ले लीजिए और पुष्पांजलि कीजिए। अंजलि-भर जो फूल ले रखे हैं, उन्हें लक्ष्मी माता के चरणों में अर्पित कर दीजिए। मां को प्रणाम कीजिए। माथा टेक लीजिए। नमस्कार करके सामर्थ्य के अनुसार कुछ द्रव्य चढ़ा दीजिए।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

पूजा सम्पन्न हो गई।

अब श्रीसूक्त का पाठ होगा

श्रीसूक्त

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वदा मम गृहे लक्ष्मीनिवासार्थं
श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्रीत्यर्थं श्रीसूक्तस्य पाठमहमं करिष्ये॥

सपरिवार, सकुटम्ब, सदा ही मेरे घर में लक्ष्मी का निवास हो। इस भाव से श्री महालक्ष्मी देवी की प्रीति के लिए मैं श्रीसूक्त का पाठ करता हूं।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ 1 ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ 2 ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ 3 ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ 4 ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ 5 ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मी ॥ 6 ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ 7 ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ 8 ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ 9 ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ 10 ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ 11 ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ 12 ॥
आर्द्रां
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ 13 ॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ 14 ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ 15 ॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥
इति श्रीसूक्तम् समाप्तम्।
श्री सूक्त सम्पन्न हुआ।
अब हम लक्ष्मी सूक्त का पाठ करेंगे–

लक्ष्मी सूक्त

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिय विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥ 1 ॥
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ 2 ॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ 3 ॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥ 4 ॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रा बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥ 5 ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ 6 ॥

न क्रोधो न च मात्सर्य न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥ 7 ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ 8 ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमि नमाम्यच्युवल्लभाम् ॥ 9 ॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ 10 ॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
श्रषयः श्रियः पुत्राश्च मयि श्रीर्देवीदेवता मताः ॥ 11 ॥
ऋणरोगादिदांरिद्र्यपापक्षुदमपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ 12 ॥
श्रीवर्चस्वामायुष्यमारोग्यमाविधाच्छुभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ 13 ॥
इति ऋग्वेदोक्तं लक्ष्मीसूक्तं समाप्तम्।

ऋग्वेदोक्त लक्ष्मी सूक्त सम्पन्न हुआ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत् सर्वं क्षम्यताम् देविं प्रसीद परमेश्वरि ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजांचैव न जानामि। क्षमस्व परमेश्वरि ॥

क्षमा याचना

हे परमेश्वरी! यदि आपकी आराधना में कहीं अक्षर, पद भ्रष्ट हो गया हो या कोई छन्द मात्राहीन हो गया हो, तो आपसे प्रार्थना है कि आप उस सबको क्षमा करें। हे देवि! हे परमेश्वरी! आप प्रसन्न हों। मैं न तो आह्वान जानता हूं, न ही विसर्जन की विधि, मैं ठीक से पूजा करना भी नहीं जानता हूं, अतः हे परमेश्वरी! त्रुटियों के लिए आप मुझे क्षमा करें।

त्राहि माम्

रक्ष माम्

आप मेरी रक्षा करें।

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 1 ॥
नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोऽस्तु ते ॥ 2 ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 3 ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मंत्रमूर्त्ते सदा देवि महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 4 ॥
आद्यंतरहिते देवि आदयाशक्ते महेश्वरि।
योगदे योगसम्भूते महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 5 ॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ते महोदये।
महापापहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 6 ॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 7 ॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मीर्नमोऽस्तुते ॥ 8 ॥
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद भक्तिमान् नरः।
सर्वसिधिमवाप्नोति महालक्ष्मीप्रसादतः ॥ 9 ॥
अक्षस्त्रक्परशु गदेषुकलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकाम्।
दण्डम् शक्तिमसिंच चर्म जलजं घन्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तेः प्रवालप्रभाम्।
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्यिताम् ॥
महालक्ष्मीरहम शत्रु पुनः स्वयंभूवेऽन्तरे।
हिताय सर्वदेवानाम् जाता महिषमर्दिनी ॥
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं हनिष्यामि महासुरान् ॥
ॐ अलक्ष्मीं कृष्णवर्णां कृष्णवस्त्रपरिधानां
कृष्णगंधानुलेपनां तैलाभ्यक्तशरीरां
मुक्तकेशीं द्विभुजां वामहस्ते गृहीतभस्मनीं
दक्षिणहस्ते सम्मार्जनीं गर्दभारूढ़ां
लौहाभरणभूषितां विकृतदंष्टां कलहप्रियाम्।
ॐ अलक्ष्मी त्वं कुरूपासि कुतसितस्थानवासिनी।
सुखरात्रौ मया दत्तां गृह्ण पूज्यंच शाश्वतीम्।

दीपावली पूजन कथा

एक बार अनेक मुनियों ने श्री सनत कुमार से पूछा–"भगवान! दीपावली के दिन भगवती लक्ष्मी के साथ अनेक देवी-देवताओं की पूजा का जो महत्व बताया गया है, उसका क्या कारण है? क्योंकि दीपावली तो केवल लक्ष्मी का पर्व है?"

मुनि की उचित शंका का समाधान करते हुए सनत कुमार ने कहा–

"मुनिवृन्द! दैत्यराज बलि का प्रताप जब समस्त भुवनों में फैल गया तो उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी देवताओं को बन्दी बना लिया था। उसके कारागार में लक्ष्मी के साथ सभी देवी-देवता बन्दी थे। कार्तिक की अमावस्या के दिन वामन रूपधारी भगवान विष्णु ने जब बलि को बांध लिया तो सब लोग कारागार से मुक्त हुये। कारागार से मुक्त होकर सबने लक्ष्मी के साथ ही क्षीर सागर में जाकर शयन किया था, इसलिये दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के साथ हमें उन सबके शयन का अपने-अपने घरों में उत्तम प्रबन्ध कर देना चाहिये जिससे कि लक्ष्मी के साथ वहां निवास करें, अन्यत्र न जायें। देवताओं और लक्ष्मी की यह शय्या मनुष्य द्वारा कभी प्रयुक्त न हो। उस पर स्वच्छ सुन्दर तकिया, रजाई आदि भी रहें, कोमल एवं सुगन्धित कमल पुष्पों को भी रखना चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी कमलामयी की गयी हैं। हे मुनिवृन्द! जो लोग इस विधि से लक्ष्मी की पूजा करते हैं, उनको छोड़कर लक्ष्मी अन्यत्र कहीं नहीं जाती। इसके विपरीत जो लोग दीपावली को प्रमाद और निद्रा में बिताते हैं, उनके घर पर दरिद्रता का निवास होता है।

दीपावली की रात्रि में लक्ष्मी का आह्वान करते समय उनके मनोहर स्वरूप का ध्यान करना चाहिए, फिर गाय के दूध का खोया बनाकर उसमें मिश्री, कपूर, इलायची आदि सुगन्धित चीजें डालकर लड्डू बनाना चाहिये जिससे लक्ष्मी जी का भोग लगाया जाए। इसके अतिरिक्त अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोज्य, भज्य पेय, घोल, चारों प्रकार के व्यंजन एवं पुष्प फलादि भी लक्ष्मी को भेंट करने चाहियें। तदनन्तर दीपदान का विधान है। दीपदान के समय कुछ दीपकों को अपने प्रियजनों के अनिष्ट की निवृत्ति के लिए मस्तष्क के चारों ओर से घुमाकर किसी चौराहे या श्मशान भूमि में रखवा देना चाहिये। नदी, तालाब, कुएं, चौराहे आदि सार्वजनिक स्थानों पर दीपदान करना चाहिये तथा ब्राह्मणों को दक्षिणा एवं भोजन वस्त्रादि से सत्कृत करना चाहिये।

राजा को चाहिए कि दीपावली के दूसरे दिन प्रातःकाल गांव के सभी बालकों को बुलाकर कहें कि–

आज हमारे गांव के सभी बालक विविध प्रकार के खेल खेलें। जब बालक खेल, खेल रहे हों तो राजा अनुचरों द्वारा इनकी सूचना प्राप्त करे कि बाल कौन-सा

खेल खेलते हैं? किन्तु इनकी सूचना बालकों को नहीं होनी चाहिये। यदि बालक आग जलाकर खेल खेलें किन्तु आग में लपट न दिखायी पड़े तो समझ लेना चाहिये कि अगले वर्ष राज्य में दुर्भिक्ष पड़ने वाला है। यदि बालक रोने-पीटने का खेल खेलते हैं तो राजा पर कोई विपत्ति आने वाली है या अनावृष्टि होने वाली है। यदि वे हंसी-मजाक का खेल खेलते हैं तो राजा को सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति समझनी चाहिये। यदि बालक आपस में लड़ जायें तो युद्ध की सम्भावना समझनी चाहिये। यदि लड़की को घोड़ा बनाकर खेलें तो राजा को किसी अन्य राज्य पर विजय की सूचना समझनी चाहिये। इसी प्रकार बालकों की विविध क्रीड़ाओं से राजा के शुभाशुभ की सूचना समझने का विधान है। इस अवसर पर जुआ खेलने की भी कल्पित आज्ञा है। इस दूषित प्रथा को, मेरे विचारों से तो खामख्वाह शास्त्र सम्मत बनाने की चेष्ट की गई है, कहा गया है कि चूंकि दीपावली के तीनों दिन असुरराज बलि के राज्य दिवस के रूप में स्मरण किये जाते हैं, अतएव इनमें कुछ असुर प्रवृत्तियों का होना भी आवश्यक है। इसी प्रसंग में राजा बलि की पूजा करने का भी विध ाान है।

द्वितीय कथा

एक बार महाराजा युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण जी से पूछा-"हे पुरुषोत्तम! स्थान, पुत्र, आयु तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्य को देने वाला व्रत हमसे कहिये।"

भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने कहा-"पहले सतयुग के आदि में जब व्रत आदि दैत्यों ने स्वर्ग को जीत लिया, तो इन्द्र ने व्रत के सम्बन्ध में देवर्षि नारद जी से पूछा था। देवराज इन्द्र के प्रश्न को सुनकर देवर्षि नारद ने कहा-

"पूर्व समय में एक सुन्दर अपूर्व नगर था, वहां पर रत्नों की ही भूमि और रत्नों के ही पर्वत थे। वहां की सुन्दर स्त्रियों के नयनरूपी बाणों से कामदेव तीनों लोगों को वश में करता था। उस नगर में अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष उत्पन्न होते थे और विचित्र भूषण भी थे। उनकी रचना को देखकर विश्वकर्मा अपना सिर आश्चर्य से झुकाते थे। वहां का राजा मंगल नाम का था। उस राजा की चिल्ला देवी और चोल देवी नाम की दो रानियां थीं। एक दिन राजा मंगल चोल देवी के साथ अपने गगनचुम्बी महल की छत पर बैठा हुआ था कि उसने समुद्र के जल से घिरा हुआ एक स्थान देखा। उस स्थान को देखकर राजा ने खुश होकर रानी चोल से कहा-

हे चंचलाक्षि! देखो, इस स्थान पर मैं तुम्हारे लिए एक नन्दन वन को भी लज्जित करने वाला बाग लगाऊंगा। अगले दिन ही राजा मंगल के आदमियों को उस स्थान पर एक बगीचा लगाने का आदेश दे दिया और थोड़े दिनों में ही वहां पर अनेक वृक्षों, लताओं, पक्षीगणों से घिरा हुआ एक बगीचा तैयार हो गया और,

फिर एक दिन वहां पर एक काले रंग का सुअर आया जिसने आकर समस्त बगीचे को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, यही नहीं उस भयंकर सुअर ने बगीचे के पालकों में से भी बहुत-सों को मार गिराया, इस पर बाकी बगीचे के पालकों ने भयभीत होकर राजमहल में आकर यह समाचार महाराज मंगल को सुनाया। पालकों की बात सुनकर महाराजा मंगल ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि वह तुरन्त ही जाकर उस सुअर को मार डालें। सिपाहियों के साथ राजा मंगल भी बगीचे में पहुंचा और बगीचे को चहुंओर से घेर लिया गया, साथ ही यह घोषणा कर दी कि जिस मार्ग से यह सुअर निकल जायेगा उस मार्ग में उपस्थित सिपाही का सिर काट डाला जायेगा। राजा मंगल की बात सुनकर वह सुअर राजा की ओर से ही होकर निकल गया और राजा चाबुक से घोड़े को पीटता रह गया, फिर राजा ने अपने घोड़े का रुख उस ओर को मोड़ दिया जिस ओर को वह सुअर गया था। तत्पश्चात् राजा सिंह, व्याघ्रों से युक्त एक घोर वन में जा पहुंचा जिसमें ताल, तमाल, हिताल, शाल और अर्जुन के सैंकड़ों वृक्ष थे। राजा उस सुअर को ढूंढ रहा था कि एक स्थान पर उससे मुकाबला हो गया। राजा ने उसको देखने के साथ ही भाला उसके शरीर में घुसेड़ दिया। भाले के लगने के साथ ही उस सुअर ने अपना प्रधान शरीर त्यागा और गंधर्व शरीर धारण कर लिया और विमान पर बैठकर राजा मंगल से कहने लगा–

हे महिपाल! तुम्हारा कल्याण हो। जिस प्रकार आपने मुझे सुअर देह से छुड़ाया है उसका रहस्य सुनो। एक बार देवताओं से घिरे हुए श्री ब्रह्मा जी बैठे थे और मैं ताल स्वर में गा रहा था कि मैं गाते-गाते भूल गया। इस पर श्री ब्रह्मा जी ने मुझे शाप दे दिया–हे चित्ररथ! तू पृथ्वी पर जाकर सुअर होगा और जिस समय सम्पूर्ण राजाओं को जीतने वाला राजा मंगल तुझे मारेगा तो तू उस योनि से छूटकर गन्धर्व योनि प्राप्त करेगा, अतएव हे राजेश्वर! आपकी कृपा से मैंने इस अधम योनि से छूटकर पुनः गन्धर्व शरीर को धारण किया है। अब मैं प्रसन्न होकर आपको एक ऐसा दान दूंगा जोकि देवताओं को भी दुर्लभ है, अब मैं जो देता हूं, उसे आप ग्रहण कीजिये। यह महालक्ष्मी व्रत रूप वर है। इस व्रत को करने से आप चक्रवर्ती राजा हो जायेंगे। अब आप शीघ्र प्रसन्नतापूर्वक अपनी नगरी को चले जाइये। हे पाण्डव नन्दन! इस प्रकार वह गन्धर्व राजा मंगल से महालक्ष्मी का व्रत कहकर शीतकाय के बादल के समान अन्तर्ध्यान हो गया। गन्धर्व के अन्तर्ध्यान होने के साथ ही ज्योंहि राजा मंगल अपनी राजधानी की ओर जाने के लिए तैयार हुआ, त्योंहि बगल में पोटली दबाये एक ब्राह्मण के पुत्र को देखा। उस ब्राह्मण पुत्र को देखकर राजा मंगल ने अपनी आदत के अनुसार अपने होठों पर मुस्कुराहट बिखेरकर उससे पूछा–

हे बटुक! तुम देवता, दानव, गन्धर्व में से कौन हो? सत्य-सत्य कहो। इस

घोर वन में किसलिये आये और कहां से आये हो?

भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज बोले—

हे राजन! राजा की बात सुनकर और उसको आशीर्वाद देकर उस ब्राह्मण ने कहा—मैं आपके देश में आपके हाथ ही उत्पन्न हुआ हूं, जो आप आज्ञा देंगे वैसा ही करूंगा।

राजा मंगल ने कहा—हे विप्रनन्दन! यदि यहां पर कोई तालाब हो तो वहां से मेरे लिए थोड़ा जल ला दो।

हे युधिष्ठिर! राजा मंगल की बात सुनकर वह नूतन नाम वाला ब्राह्मण राजा को एक वृक्ष के नीचे बिठाकर घोड़े पर सवार हो जहां पर से पक्षियों का स्वर सुनाई दे रहा था उसी दिशा को चल दिया और थोड़ी दूर जाने के बाद एक मनोहर सरोवर पर पहुंच गया। यह रमणीक सरोवर नाना प्रकार के कमल, बनमाला, चक्रवाक आदि पक्षियों से युक्त, वायु के सैकड़ों यत्नों को विफल करने वाला, मीठे जल वाला, महर्षि अगस्त्य की पिपासा को शांत करने वाले समुद्र से भी अधिक शीतल तथा स्वच्छ जल से परिपूर्ण था। इसके बाद ज्योंहि वह ब्राह्मण उस तालाब के किनारे पहुंचा, त्योंहि उसका घोड़ा कीचड़ में फ़ंस गया। जब वह ब्राह्मण घोड़े से नीचे उतर आया और तालाब के चारों ओर नजर घुमाकर देखने लगा। हे राजन् तब उसने देखा कि दिव्य वस्त्र और अलंकार धारण किए हुए बहुत-सी मनोहर स्त्रियां पूजा कर रही हैं। तब वह ब्राह्मण उन स्त्रियों के पास जाकर उनको हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगा—

माताओं! आप भक्तियुक्त होकर यहां क्या कर रही हैं, इसकी विधि तथा फल मुझसे कहें।

नूतन की बात सुनकर दयाभाव से वह स्त्रियां कहने लगीं—हे ब्राह्मण कुमार! एकाग्रचित्त से भक्तिपूर्वक सुनो। जो जगदम्ब तीनों लोक में माया प्रकृति और शक्ति नाम से प्रसिद्ध है उसी महालक्ष्मी का व्रत हम कर रही हैं। हे विप्र! इसकी विधि ा इस प्रकार है।

संकटा व्रत-विधि

इस व्रत का आरम्भ भाद्रपद अष्टमी के दिन से किया जाता है। उस दिन प्रातःकाल उठकर सोलह बार हाथ-पांव और मुंह धो, सोलह धागों से सोलह गांठों वाली एक डोरी बनाकर उसे चमेली के पुष्प, कपूर, चन्दन और अन्य प्रकार के सुगन्धित पदार्थों से पूजित कर 'ओइम् महालक्ष्म्यै नमः' इस मन्त्र से सोलह बार अभिमन्त्रित करते हुए इस प्रकार महालक्ष्मी की प्रार्थना करनी चाहिये—

हे महालक्ष्मी! धन, धन्य, भूमि, धर्म-कीर्ति, शोभा, हाथी और पुत्र-पौत्रादिक सब मुझे दीजिये।

हे विपेन्द्र! इस प्रकार महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए उस डोरी को अपने दाहिने हाथ में बांधकर और चावलों के सहित सोलह दूब के पौधों को हाथ में लेकर उनके तारों को जल में डुबोकर अपने शरीर पर मार्जन करते हुए एकाग्रचित्त से इस प्रकार नित्य प्रति आश्विन 'असोज' बदी. 'कृष्णा' अष्टमी तक सुनना चाहिये। तब सोलहवें दिन असोज बदी अष्टमी को जितेन्द्री होकर संध्या समय स्नान कर सफेद वस्त्र पहन पूजागृह में जाना चाहिये और पूर्व की ओर मुख करके स्वच्छ आसन पर बैठकर अष्टदल वाला, श्वेत मोतियों से विभूषित धारण करने वाली कमलासका, मन्द-मन्द मुस्कान करती हुई शरद चन्द्र के तुल्य क्रांति वाली चतुर्भुज दोनों हाथों में कमल धारण किये अभय वर देने वाली तथा दोनों ओर से हाथियों के झुण्डों के जल से सींचे जाने वाली महालक्ष्मी का ध्यान करके अगर, कपूर और चन्दन से श्री महालक्ष्मी की मूर्ति का इस प्रकार आह्वान करना चाहिये-

हे महालक्ष्मी! भगवान श्री विष्णु के साथ यहां आओ। आपके लिये ही मैंने यह षोडशोपचार के पूजन की सामग्री का संग्रह किया है।

हे विप्र नन्दन! इस बात के करने वाले को सोलह दिन के पूर्ण होने पर किस प्रकार व्रत की समाप्ति करनी चाहिये, उस विधि को भी सुनो-

सुवर्ण के मढ़े सींगों वाली गऊ और सुवर्ण तथा अन्न, वस्त्र, किसी वेदपाठी ब्राह्मण को देने चाहियें, यथाशक्ति केवल द्रव्य को ही देना चाहिये, किन्तु उत्तम यह है कि सोलह ब्राह्मणों को जिमाकर उन्हें वस्त्र की दक्षिणा दी जाये।

उन देवियों ने नूतन से कहा-हे व्रिप! हमने तुमसे यह सर्वोत्तम व्रत कहा है जिसके करने से अनायास ही मनोवांछित फल मिल जाया करता है। अतएव इस व्रत को तुम भी करना और अपने राजा से भी करने के लिये कहना। इसके अतिरिक्त यदि कोई भगवत भक्त और श्रद्धावान पुरुष हो तो उसको भी इस व्रत को करने के लिए अवश्य कहना, किन्तु किसी नास्तिक से इसके सम्बन्ध में कुछ न कहना।

भगवान श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने कहा-

हे युधिष्ठिर! इस प्रकार उन स्त्रियों से व्रत के सम्बन्ध में सुनकर नूतन ने घोड़े को कीचड़ से निकाला। उसको पानी पिलाया और स्त्रियों को नमस्कार किया।

कमल के पत्ते में राजा के लिए पानी लेकर घोड़े पर सवार होकर राजा मंगल के पास आ गया और जल देकर व्रत के सम्बन्ध में जो कुछ स्त्रियों से सुना था, उसको कह सुनाया और फिर उसने जिस विधि से उन स्त्रियों ने उसको बताया था वह व्रत स्वयं भी किया और राजा मंगल से भी कराया। हे राजन! इसके पश्चात्

महालक्ष्मी के व्रत के प्रभाव से वह ब्राह्मण कुमार ब्राह्मणों में श्रेष्ठ और राजा मंगल राजाओं में श्रेष्ठ हो गया। तत्पश्चात् राजा मंगल घोड़े पर सवार होकर उस ब्राह्मण को साथ लेकर अपने नगर की ओर चल दिया। जब राजा मंगल अपनी राजधानी के पास पहुंचा तो समस्त नगरवासी उसको आता देखकर भेंट आदि सहित बाजे बजाते हुए ध्वजा, हार तथा कलशों को धारण किये हुए राजा को लेने के लिए आये। राजा के आगमन पर मानो समस्त नगर नाचता हुआ प्रतीत होता था। सुन्दर स्त्रियां नाना प्रकार से सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर राजा का स्वागत करने के लिए आईं जोकि सुरीले तथा रसीले मंगल गीत गा रही थीं। राजा मंगल बाजों के शोर तथा जनसमूह से घिरा हुआ नगर के भीतर प्रविष्ट हुआ और उसके बाद घोड़े से उतरकर रानी चोल देवी के महल में गया। जब ब्राह्मण कुमार नवीन के साथ राजा मंगल रानी चोल देवी के महल में पहुंचा तो रानी उसके हाथ में बंध े हुए डोरे को देखकर विचार करने लगी कि हो न हो शिकार के बहाने राजा किसी दूसरी स्त्री के पास गया था और उस स्त्री ने अपने सौभाग्य के लिए राजा के हाथ में डोरा बांध दिया है। चुनांचे, क्रोध से भर उस अभागी दुष्टा ने वह डोरा तोड़कर फर्श पर फेंक दिया। राजा मंगल चूंकि उस समय अपने नौकर से बातचीत कर रहा था इसलिये वह रानी की इस हरकत को न देख सका। उसी समय राजा मंगल की दूसरी रानी चिल्ला देवी की एक दासी वहां आई, उसने भूमि पर पड़े हुए डोरे को उठा लिया और उस 'डोरे' के तथा श्री महालक्ष्मी के व्रत के सम्बन्ध ा में जो सब कुछ नवीन ने सुना था, वह कह सुनाया। रानी ने उसी समय नवीन को बुलावा भेजा और उसके आदेशानुसार श्री महालक्ष्मी का उत्तमोत्तम व्रत किया।

भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी बोले–हे पाण्डव नन्दन! एक वर्ष बाद जब राजा मंगल ने रानी चिल्ला देवी के महल से बाजे का शब्द सुना तो उसको श्री महालक्ष्मी के पूजन का शुभ दिन याद आया, लेकिन डोरे को हाथ में न पाकर उसने नवीन से उसके सम्बन्ध में पूछा तो उसने सारा किस्सा सुना दिया। जिसे सुनकर राजा ने क्रोध से भरकर कहा–जा दुष्टे! आज मैं तेरे महल में श्री महालक्ष्मी की पूजा न करके चिल्ला देवी के महल में करूंगा। फिर राजा रानी चिल्ला देवी के महल में चला गया। उधर भगवती महालक्ष्मी वृद्धा का रूप धारण करके परीक्षा के लिए रानी चोल देवी के महल में पहुंची, तो रानी ने उससे बहुत से खोटे वचन कहे। हे राजन्! इस प्रकार उस दुष्टा चोल देवी से अपमानित होकर भगवती महालक्ष्मी ने उसे शाप देते हुए कहा–तूने मेरा अनादर किया है, तू शुकरमुखी होगी।

इसके बाद फिर मंगलपुर केलापुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ, फिर भगवती श्री महालक्ष्मी वहां चिल्ला देवी के महल में आई तो वहां पर उनका नाना प्रकार से बहुत आदर-सत्कार किया जिससे उन्होंने वृद्धा का रूप त्यागकर रानी चिल्ला देवी

को साक्षात् दर्शन दिये, चिल्ला देवी ने फिर भगवती महालक्ष्मी को साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया और नाना प्रकार से उसका पूजन किया। उसकी श्रद्धाभक्ति से प्रसन्न होकर भगवती श्री लक्ष्मी जी ने कहा—हे चिल्ला देवी! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हुई हूं, अतएव तुम मुझसे मनचाहा वरदान मांग सकती हो। चिल्ला देवी ने कहा—हे सुरेश्वरी! जो कोई आपका यह सर्वोत्तम व्रत करे, उसका घर जब तक यह सूर्य और चन्द्रमा रहें तब तक आपसे परिपूर्ण रहे और जो कोई इस कथा को सद्भाव से सुने या पढ़े उसको तुम मनवांछित फल देना।

हे राजन! भगवती महालक्ष्मी जी 'तथास्तु' कहकर अन्तर्ध्यान हो गईं। उनके जाने के पश्चात् राजा मंगल और चिल्ला देवी ने श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवती महालक्ष्मी का पूजन किया। तद्नन्तर ईर्ष्यावश होकर चोल देवी रानी चिल्ला देवी के महल में आई, लेकिन द्वारपालों ने उसे बड़ी सख्ती के साथ रोका और टोका। इस पर वह वन की ओर निकल गई। वन में महर्षि अंगिरा ने उसकी विचित्र आकृति को देखकर ज्ञान दृष्टि से सारा हाल जान लिया और भगवती महालक्ष्मी के सम्बन्ध में सबकुछ जानकर उससे महालक्ष्मी का सर्वोत्तम व्रत कराया। हे युधि ष्ठिर! उस व्रत के प्रभाव से रानी चोल देवी 'यशस्विनी' होकर अत्यन्त सुन्दरी हो गई। एक दिन राजा मंगल शिकार के लिये उस जंगल में गया और अप्सराओं जैसी सुन्दर चोल देवी को देखकर उसने महर्षि अंगिरा से पूछा—

महात्मा जी, यह देवी कौन हैं?

महर्षि ने उत्तर में रानी चोल देवी की सारी कथा उसे सुना दी, साथ ही रानी पुनः राजा को सौंप दी। राजा मंगल चोल देवी को साथ लेकर अपनी राजधानी को वापिस लौट आया और रानी चिल्ला देवी व चोल देवी के साथ अनेक प्रकार के भोगों को भोगने लगा। दोनों रानियां गंगा-यमुना के समान आपस में प्रेम सहित मिलकर राजा की सेवा करने लगीं। राज. समस्त प्रकार के सुखों का भोग करने लगा और ब्राह्मण कुमार राजा मंगल का प्रधानमंत्री हुआ। हे राजन्! जिस तरह सब राजाओं में श्रेष्ठ राजा मंगल पृथ्वी के सब प्रकार के लौकिक सुखों को भोगकर अन्त में आकाश में जाकर मोक्ष को प्राप्त हुआ, इसी तरह से जो कोई केवल उसकी कथा को सुनेगा, वह निःसंदेह सब प्रकार से मनवांछित फलों को प्राप्त करेगा। जिस तरह तीर्थों में प्रयाग, देवताओं में भगवान श्री विष्णु जी और नदियों में श्री गंगा जी श्रेष्ठ गिनी जाती हैं, उसी प्रकार यह व्रत सब व्रतों में उत्तम है। हे राजन्! धर्म, अर्थ, काम, मोक्षादि पदार्थों की इच्छा हो, तो श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करो, क्योंकि इसके करने से भगवती श्री महालक्ष्मी प्रसन्न होकर धन, धान्य, भूमि, कीर्ति, आयु, यश, शोभा और घोड़ों, हाथी, पुत्र-पौत्रादिक दिया करती है।

भगवान श्री कृष्णचन्द्र महाराजा युधिष्ठिर से कहने लगे—हे धर्म! जिस प्रकार

देवर्षि नारद के आदेश से देवराज इन्द्र ने इस व्रत को करके मनवांछित फल प्राप्त किया था, उसी प्रकार पुत्र-पौत्रादिक की वृद्धि के लिए समस्त प्रकार के मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिये यह व्रत तुम्हें अवश्य करना चाहिये।

प्रिय पाठकगण! जिस प्रकार यह कथा भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने महाराजा युधिष्ठिर को सुनाई थी उसी प्रकार मैंने आपके सामने वर्णन किया है, अतएव पुत्र-पौत्रादिक की वृद्धि और सब प्रकार के सांसारिक और परलौकिक सुखों की इच्छा से आपको यह भगवती श्री महालक्ष्मी का सर्वोत्तम व्रत अवश्य करना चाहिये।

श्री महालक्ष्मी कहां रहती हैं—जिस घर में गुरुजनों का सत्कार होता है और दूसरों के प्रति मन में क्रोध आने पर भी जहां लोग चुप ही रहते हैं, वहां लक्ष्मी रहती हैं। यह श्री महालक्ष्मी का वचन है।

लक्ष्मी चालीसा

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

अर्थ—जगतमाता महालक्ष्मी, आप मुझ पर दया करो। सदैव मेरे हृदय में निवास करो। मेरी सम्पूर्ण इच्छाओं को सिद्ध करके, मेरे मन की आशा को पूरा करो।

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूं
सब विधि करो सुवास, भक्त जननि जगदम्बिका॥

अर्थ—भक्तों की रक्षा करने वाली माता अम्बा! आप मेरे यहां निवास करो, मैं दोनों हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना करता हूं यह ही मेरी विनती है।

सिंधु सुता मैं सुमिरौ तोही।
ज्ञान, बुद्धि, विद्या दो मोही॥

अर्थ—सागर की पुत्री! मैं सदैव तुम्हारा स्मरण करता हूं। आप मुझे उत्तम ज्ञान, उचित बुद्धि एवं समस्त प्रकार की विद्यायें प्रदान करो।

तुम समान नहीं कोऊ उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

अर्थ—इस संसार में तुम्हारे समान भलाई करने वाला कोई नहीं है। आप हमारी सभी प्रकार की इच्छाओं को पूरा करो।

जै जै भक्त जननि जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥

अर्थ—भक्तों की माता जगदम्बा तुम्हारी जय हो। तुम ही सबको सहारा देने वाली हो।

तुम ही बस घट-घट की वासी।
विनती यही हमारी खासी॥

अर्थ—हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि आप प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करो।

जगजननि जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की हो तुम हितकारी॥

अर्थ—दुःखी लोगों के दुःख को मिटाकर उनकी भलाई करने वाली सिन्धु की पुत्री एवं सम्पूर्ण विश्व की माता की जय हो।

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी।
कृपा करो जग जननि भवानी॥

अर्थ—सम्पूर्ण जगत की माता! आप मुझ पर दया करो। मैं प्रतिदिन तुम्हारा ही स्मरण करता हूं।

केहि विधि अस्तुति करौ तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी॥

अर्थ—भक्त कहता है कि मैं किस प्रकार से तुम्हारी प्रार्थना करूं कि आप मेरे समस्त पापों का नाश करके मुझे अपनी भक्ति प्रदान करें।

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
भक्त जननि विनती सुन मोरी॥

अर्थ—भक्तों की माता अम्बा! आप मेरी प्रार्थना सुन लीजिये तथा मेरी ओर आप अपनी दया से पूर्ण दृष्टि डालिये।

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारे माता॥

अर्थ—ज्ञान, बुद्धि, विजय एवं सुखों को प्रदान करने वाली अम्बे! आप मेरे समस्त कष्टों को दूर करो।

क्षीर सिंधु जब विष्णु मथायौ।
चौदह रत्न सिंधु में पायो॥

अर्थ–जब भगवान विष्णु ने क्षीर सागर का मन्थन करवाया तब सागर में से चौदह रत्न प्राप्त हुए।

चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभुहि बनी दासी॥

अर्थ–उन चौदह रत्नों में तुम ही रत्नों की खान हो तथा भगवान विष्णु की पत्नी बनकर उनकी सेवा करती हो।

जो जो जन्म जहां प्रभु लीन्हा।
रूप बदल तब सेवा कीन्हा॥

अर्थ–जब-जब भगवान विष्णु ने अनेक रूप धारण कर पृथ्वी पर जन्म लिया, तब-तब आपने भी रूप बदल-बदल कर उनकी सेवा की।

स्वयम् विष्णु जब नर तनु धारा।
लीन्हउ अवधपुरी अवतारा॥

अर्थ–जब भगवान विष्णु ने रामचन्द्र जी के रूप में अवधपुरी में जन्म लिया।

तब तुम प्रकट जनकपुर माही।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥

अर्थ–तब तुमने राजा जनक की जनकपुरी में जन्म लिया तथा प्रसन्न मन से रामचन्द्र जी की सेवा की।

अपनायो तोहि अन्तर्यामी।
विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी॥

अर्थ–सम्पूर्ण विश्व के हृदय की बात जानने वाले, तीनों लोकों के स्वामी राम ने तुम्हें अपना लिया।

तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी।
कहं तक महिमा कहौं बखानी॥

अर्थ–तुम्हारे समान कोई नहीं है। मैं कहां तक आपके गुणों का वर्णन करूं?

मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई॥

अर्थ–जो मन से, सुन्दर वचनों से निरन्तर आपकी सेवा करता है वह अपने हृदय से चाहे हुये वरों को पाता है।

तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहि विधि भांति मन लाई॥

अर्थ–जो मनुष्य धोखा, वैर, विरोध एवं चतुरता को त्यागकर हृदय से आपकी पूजा करता है।

और हाल में कहौं बुझाई।
जो यह पाठ करै मन लाई॥

अर्थ–भक्त कहता है कि मैं कहां तक आपके गुणों का बखान करूं। जो लक्ष्मी जी की पूजा मन से करता हूं।

ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित फल पावै सोई॥

अर्थ–उसको कोई संकट नहीं आता तथा अपनी इच्छानुसार वस्तु प्राप्त करता है।

त्राहि त्राहि जे दुःख निवारिणी।
त्रिविध ताप भव बन्धन हारिणी॥

अर्थ–हे अम्बा! सभी प्रकार के अत्यन्त दारुण कष्टों को मिटाने वाली, तीनों प्रकार के पापों को मिटाने वाली एवं संसार रूपी बंधन से मुक्त करने वाली तुम ही हो।

जो यह पढ़े और पढ़वावै।
ध्यान लगाकर सुने सुनावै॥

अर्थ–जो नर-नारी यह चालीसा स्वयं पढ़ता है तथा दूसरों को भी पढ़ने के लिए कहता है ध्यान लगाकर सुनता और सुनाता है।

ताको कोई न रोग सतावै।
पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै॥

अर्थ–उसको किसी प्रकार की बीमारी नहीं होती तथा पुत्र आदि धन-सम्पत्ति को प्राप्त करता है।

पुत्रहीन अरु सम्पत्ति हीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना॥

अर्थ–जो पुत्र या धन से रहित हो, अन्धा या बहरा या कोढ़ी यानी इनमें से कोई भी क्यों न हो?

विप्र बोलायके पाठ करावै।
शंका दिल में कहीं न लावै॥

अर्थ—जो मनुष्य अपने मन में किसी प्रकार की शंका न रखकर ब्राह्मण को बुलाकर इसका पाठ करवाता है।

पाठ करावै दिन चालीसा।
तापर कृपा करै गौरीशा॥

अर्थ—चालीस दिन पाठ करवाने के बाद गौरी मैया उस पर अतुलित दया करती हैं।

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै॥

अर्थ—वह सब प्रकार के धन्य-धान्य से युक्त होता है। उसे किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।

बारह मास करे जो पूजा।
तेहि सर धन्य और नहिं दूजा॥

अर्थ—जो बारह महीने मैया की पूजा करता है, उसके समान भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं है।

प्रतिदिन पाठ करे मन माहीं।
उन सम जग में कहुं नाहीं॥

अर्थ—जो प्रतिदिन हृदय में विनती करता है उसके समान संसार में अन्य कोई नहीं है।

बहु विधि क्या मैं करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥

अर्थ—मैं अनेक प्रकार से आपकी क्या सेवा करूं? भक्तों के विनय करने पर आप उनकी परीक्षा लेती हो।

धरि विश्वास करै व्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजे उर प्रेमा॥

अर्थ—जो पूर्ण भरोसे से उपवास आदि नियम से करता है, उसके अम्बे के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।

जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुणखानी॥

अर्थ—समस्त जगह छाई रहने वाली, अतुलित गुणों वाली लक्ष्मी मैया तुम्हारी जय होवे।

तुम्हरो तेज सबल जग माही।
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहीं॥

अर्थ—इस जगत में तुम्हारा प्रताप अतुलनीय है। तुम्हारे समान दयावान कोई नहीं है।

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोही दीजै॥

अर्थ—भक्त कहता है कि लक्ष्मी मैया आप मेरी ओर भी कृपा दृष्टि डालिये। मेरे कष्टों को मिटाकर मुझे अपनी भक्ति दीजिये।

भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दरशन दीजै दशा निहारी॥

अर्थ—आप हमारी समस्त गलतियों को माफ करके हमारी दशा देख करके अपने दर्शन दीजिये।

बिना दरशन व्याकुल अधिकारी।
तुमहिं अछत सहते दुःख भारी॥

अर्थ—तुम्हारे दर्शन के बिना, दास परेशान है। तुम्हारा स्मरण न करते हुए अनेक कष्टों को पा रहा है।

नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में॥

अर्थ—मेरे शरीर में ज्ञान, बुद्धि आदि जो कुछ भी है, आप अपने उर में यह सभी जानती हैं।

रूप चतुर्भुत करके धारण।
कष्ट मोरे करहु निवारण॥

को प्राप र्थ—आप चारों भुजाओं सहित सुन्दर रूप धारण करके मेरे समस्त दुःखों ओ।

अ

को मिट

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई।
ज्ञान, बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई॥

अर्थ—मैं किस प्रकार आपकी प्रशंसा करूं। मुझ दास के अन्दर इतनी अधिक ज्ञान व बुद्धि नहीं है।

उति के प्रात करत असनाना।
जो कछु बने करे सो दाना॥

अर्थ—जो नर प्रतिदिन प्रातः काल उठकर स्नान करके अपनी इच्छानुसार व श्रद्धाभक्ति से युक्त होकर दान करता है।

अष्टमि व्रत करै जु प्रानी।
हरषि हृदय पूजहिं महारानी॥

अर्थ—जो मनुष्य अष्टमी का उपवास रख के प्रसन्न मन से लक्ष्मी की पूजा करता है।

सोलह दिन पूजा विधि करहीं।
अश्विन कृष्ण जो अष्टामि परहीं॥

अर्थ—अश्विन मास में कृष्णपक्ष की अष्टमी आने तक जो नर निरन्तर सोलह दिन विधि विधान से उपासना करता है।

ताके सब छूटे दुःख दावा।
जो जन सुख सम्पत्ति नित पावा॥

अर्थ—वह मनुष्य सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाकर अन्त में सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करता है।

दोहा—

त्राहि त्राहि दुःख हरणी, हरी बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करहु शत्रु का नास॥
रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु कृपा की कोर॥

अर्थ—भक्त कहता है कि अत्यन्त दारुण दुःखों को शीघ्र मिटा देने वाली, आप मेरी भी सब प्रकार की बाधाओं को दूर करो। शत्रुओं का नाश करने वाली मैया की जय होवे।

अन्त में भक्त रामदास दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है कि हे लक्ष्मी माता! आप अपने भक्त पर भी कृपादृष्टि डालिये।

॥इति श्री लक्ष्मी चालीसा समाप्तम्॥

गणेश चालीसा

दोहा–

जय गणपति सद्गुणसदन, कविवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजा लाल॥

अर्थ–हे सद्गुणों से विभूषित कृपानिधान गणेश जी! आपकी मैं जय जयकार करता हूं। हे माता गिरिजा के पुत्र (माता पार्वती को गिरिजा भी कहते हैं) आप बाधाओं को दूर करने वाले और अपने भक्तों का मंगल करने वाले हैं। मैं आपकी बारम्बार जय जयकार करता हूं।

चौपाई–

जय जय जय गणपति गणराजू।
मंगल भरण करण शुभ काजू॥

अर्थ–हे गणपति! देवताओं द्वारा पूजित श्री गणेश जी! मंगलपूर्ण शुभ कार्यों के अधिष्ठाता! आपकी मैं बारम्बार जय जयकार करता हूं।

जय गजबदन सदन सुख दाता।
विश्व विनायक बुद्धि विधाता॥

अर्थ–हे गजबदन। अपार सुखों को देने वाले, संसार द्वारा पूजित, बुद्धि प्रदान करने वाले श्री गणेश जी! आपकी जय हो।

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावना।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥

अर्थ–आपकी टेढ़ी सूंड और माथे पर लगा त्रिपुण्ड रूपी तिलक बहुत सुन्दर लगते हैं और मन में हर्ष उत्पन्न करते हैं।

राजित मणि मुक्तन उर माला।
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥

अर्थ–आपके सीने पर शोभायमान मणि-मुक्ता की माला एवं सिर पर सोने का मुकुट तथा विशाल नेत्र बहुत सुन्दर लगते हैं।

पुस्तक मणि कुठार त्रिशूर।
मोदक भाग सुगन्धित फूर॥

अर्थ–आपके एक हाथ में सुन्दर पुस्तक है एवं दूसरे हाथ में कठोर त्रिशूल है, आपकी पूजा मोधक अर्थात् लड्डू एवं सुगन्धित फूलों से की जाती है, तो आप प्रसन्न होकर वरदान देते हैं।

सुन्दर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित॥

अर्थ—आपके तन पर सुन्दर पीताम्बर वस्त्र सुशोभित हैं एवं आपके चरणों की खड़ाऊँ साधु-सन्तों के मन में हर्ष उत्पन्न करती हैं।

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता।
गौरी ललन विश्व-विख्याता॥

अर्थ—शिवजी के पुत्र एवं षडानन के भाई गणेश जी! आप धन्य हैं। हे गौरी पुत्र! आपकी महिमा विश्व में विख्यात है।

ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुधारे।
मूषक वाहन सोहत द्वारे॥

अर्थ—नौ सिद्धियां आपके ऊपर चंवर डुलाती हैं और आपकी सेवा में उपस्थित रहती हैं। आपका वाहन मूषक अर्थात् चूहा सदैव आपके द्वार पर उपस्थित रहता है।

कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी।
अति शुचि पावन मंगलकारी॥

अर्थ—आपकी पावन कथा कहने-सुनने से मानव जीवन सार्थक हो जाता है, क्योंकि यह सर्वभांति से शुभ और मंगल प्रदान करने वाली है।

एक समय गिरीराज कुमारी।
पुत्र हेतु तप कीन्हों भारी॥

अर्थ—एक बार गिरीराज पुत्री माता पार्वती ने पुत्र पाने के लिए कठिन तपस्या की थी।

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।
तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥

अर्थ—अपनी कठिन तपस्या समाप्त करने के बाद जब माता पार्वती ने अपूर्व यज्ञ किया तब आप उस स्थान पर ब्राह्मण का वेश धारण करके पहुंचे।

अतिथि जायि कै गौरी सुखारी।
बहुविधि सेवा करि तुम्हारी॥

अर्थ—माता गौरी ने आपको अतिथि समझा और विविध प्रकार से आपकी सेवा की।

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा।
मातु पुत्रं हित जो तप कीन्हा॥

अर्थ–माता गौरी के आतिथ्य सत्कार से अति प्रसन्न होकर आपने वर दिया और कहा, हे माता! पुत्र प्राप्त के लिए आपने कठिन तपस्या की है।

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला।
बिना गर्भ धारण, यदि काला॥

अर्थ–आपकी कठिन तपस्या के फलस्वरूप बिना गर्भ धारण किये, आपको इसी समय अत्याधिक बुद्धिमान पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी।

गणनायक, गुण, ज्ञान, निधाना।
पूजित प्रथम, रूप भगवाना॥

अर्थ–आपको जो पुत्र प्राप्त होगा, वह देवताओं का राजा होगा। गुण और ज्ञान के सागर से विभूषित होगा और साक्षात् भगवान का स्वरूप होगा। किसी भी पूजन से पहले सर्वप्रथम इस बालक का पूजन होगा। अन्यथा कोई भी पूजन सम्पूर्ण नहीं होगा।

अस कह अन्तर्ध्यान रूप है।
पलना पर बालक स्वरूप है॥

अर्थ–इतना कहने के साथ ही गणपति जी अन्तर्ध्यान हो गये और बालक के रूप में पालने पर आ विराजे।

बनि शिशु रुदन जबहि तुम ठानी।
लखि मुख नहि गौरी समानी॥

अर्थ–बालक का रूप धारण करके जब आपने रोना शुरू किया तो आपके सुन्दर मुख को देखकर माता गौरी प्रसन्नता से फूली नहीं समाई।

सकल मगन, सुख मंगल गावहि।
नभ से सुरन, सुमन वर्षावहि॥

अर्थ–आपके जन्म के साथ ही चारों ओर से मंगल गान होने लगा और आकाश से देवतागण पुष्पों की वर्षा करने लगे।

शम्भु, उमा बहु दान लुटावहिं।
सुर मुनि जनसुत देखन आवहिं॥

अर्थ–पुत्र जन्म की प्रसन्नता में भगवान शम्भु एवं माता उमा ने बहुत दान किया और आपको देखने के लिये देवता और मुनि लोग आने लगे।

लखि अति आनन्द मंगज साजा।
देखन भी आये शनि राजा॥

अर्थ—चारों ओर फैले आनन्द को देखकर स्वयं राजा शनि इस अद्‌भुत बालक अर्थात् गणेश जी को देखने के लिए आये।

निज अवगुण मुनि मन माहीं।
बालक देखन चाहत नाहीं॥

अर्थ—अपने दुर्गुणों को सोचकर महाराज शनि ने बालक को देखना नहीं चाहा।

गिरजा कुछ मन भेद बढ़ायो।
उत्सव मोर ने शनि तुहि भायो॥

अर्थ—उनके मन का भेद समझकर माता गिरिजा कहने लगीं, शनि देवता मेरे यहां का उत्सव आपको अच्छा नहीं लगा।

कहन लगे शनि, मन सुकुचाई।
का करिहो, शिशु मोहि दिखाई॥

अर्थ—शनि महाराज ने सकुचाते हुये उत्तर दिया—'माता! आप मुझे बालक को भला क्यों दिखायेंगी? मेरी दृष्टि तो जिस पर पड़ जाती है, उसका अहित ही होता है।'

नहिं विश्वास उमा उर भयऊ।
शनि सों बालक देखन कहाऊ॥

अर्थ—माता उमा को महाराज की बातों का विश्वास नहीं आया। उन्होंने बालक को देखने का आदेश दे दिया।

पड़तहि शनि दुग कीण प्रकाशा।
बालक शिर उड़ि गयो अकासा॥

अर्थ—ज्योंहि शनि की दृष्टि बालक पर पड़ी, उसका सिर धड़ से अलग हटकर आकाश की ओर उड़ गया।

गिरिजा गिरि विकल है धरणी।
सो दुख दशा गयो नहिं बरणी॥

अर्थ—पुत्र की यह दशा देखकर माता गिरिजा विह्वल होकर धरती पर गिर पड़ीं। उनके दुःख का वर्णन नहीं किया जा सकता।

हाहाकार मच्यो कैलाशा।
शनि कीन्ह्यो लखि सुत का नाशा॥

अर्थ—कैलाश पर्वत पर हाहाकार मच गया और यही आर्तनाद सुनाई देने लगा कि शनि ने अपनी दृष्टि डालकर पुत्र का नाश कर दिया।

तुरंत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये।
कटि चक्र सो गज शिर लाये॥

अर्थ–यह समाचार सुनकर विष्णु तुरन्त गरुड़ पर चढ़कर पहुंचे और सुदर्शन चक्र से हाथी का सिर काट कर लाये।

बालक के धड़ ऊपर धारयो।
प्राण मंत्र पढ़ शंकर डारयो॥

अर्थ–भगवान विष्णु ने हाथी का सिर बालक के धड़ पर लगा दिया और भगवान शंकर ने प्राण मंत्र पढ़कर बालक में प्राणों का संचार किया।

नाम 'गणेश' शम्भु तब कीन्हें।
प्रथम पूज्य बुद्धि निधिकर दीन्हें॥

अर्थ–उस समय भगवान शंकर ने बालक का नाम 'गणेश' रखा और आशीर्वाद दिया कि किसी भी पूजन से पहले श्री गणेशजी की पूजा होगी।

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।

अर्थ–भगवान शंकर ने अपने दोनों पुत्र कार्तिकेय (षडानन) एवं गणेश जी को बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए उन्हें पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने की आज्ञा दी।

चले षडानक भरिम भुलाई।
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥

अर्थ–षडानन अर्थात् श्री कार्तिकेय की बुद्धि भ्रम में पड़ गई और वे पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने चल पड़े। जबकि आप एक उपाय सोचकर वहीं बैठे रहे।

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।
तिनके सात प्रदक्षिणा कीन्हें॥

अर्थ–आपने भगवान शंकर एवं माता पार्वती के चरणों का स्पर्श किया और उनके चारों ओर सात बार परिक्रमा कर डाली।

धनि गणेश कहि शिव हिम हर्ष्यो।
नभ ते सुरन सुमन बहु वर्ष्यो॥

अर्थ–भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर श्री गणेश जी को आशीर्वाद दिया और उस समय आकाश से देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की।

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।
शेष सहस सुख सक न गाई॥

अर्थ–आपकी अपरम्पार महिमा का वर्णन तो श्री शेषनाग भी अपने हजारों मुखों से नहीं कर सके।

मैं मति हीन मलीन दुखारी।
करहु कौन विधि विनय तुम्हारी।

अर्थ—मैं बुद्धिहीन, दुःखी व्यक्ति हूं। समझ में नहीं आता कि आपकी किस प्रकार से प्रार्थना करूं?

भगत 'रामसुन्दर' प्रभु दासा।
लख प्रयोग ककरा दुर्वासा॥

अर्थ—भक्त रामसुन्दर प्रभु गणेश जी की प्रार्थना करते हुए कहता है कि प्रभु मेरे ऊपर अपनी कृपा दृष्टि रखिये।

अब प्रभु दया दीन पर कीजै।
अपनी भक्ति शक्ति कुछ दीजै॥

अर्थ—हे प्रभु दया निधान! मुझ दीन पर अपनी कुछ दया कीजिए और अपनी कुछ भक्ति एवं शक्ति मुझे भी दीजिये।

दोहा—

श्री गणेश यह चालीसा पाठ करै धरि ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसैः लहै जगत सनमान॥

अर्थ—जो व्यक्ति श्रद्धा भक्तिपूर्वक श्री गणेश चालीसा का पाठ करता है, उसके घर में सदैव मंगल कार्य होता है एवं जगत में उसका सम्मान बढ़ता है।

गोवर्धन धन पूजा (अन्न कूटोत्सव)

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट उत्सव मनाया जाता है। इसी दिन बालि पूजा, गोवर्धन पूजा इत्यादि होते हैं। इस दिन गोबर का अन्नकूट बनाकर या उसके निकट विराजमान श्री कृष्ण के समान गाय और बगवाल बालों की पूजा होती है। इस दिन मन्दिरों में अनेक प्रकार की खाद्य सामग्रियों का भगवान का भोग लगाया जाता है।

गोवर्धन व अन्नकूट की कथा—एक दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नन्द बाबा से पूछा—हमारे गांव में ये तरह-तरह के पकवान क्यों बनाये जा रहे हैं? इनका क्या महत्त्व है? नन्द बाबा बोले—हे कृष्ण! कल इन्द्र की पूजा होगी। इन्द्र मेघ वर्षा कर हमें अन्न देते हैं। गायों के लिए चारा देते हैं। तब भगवान कृष्ण कहने लगे—बाबा! हमारे गांव में गोवर्धन पर्वत साक्षात देवता हैं उनकी पूजा करो। वे हमारी पूजा स्वीकार करेंगे और प्रकट होकर स्वयं भोजन करेंगे। इन्द्र कुछ भी नहीं है उसकी आप व्यर्थ में ही पूजा करते हैं।

कृष्ण की बात मानकर सभी गोप–गोपिकायें गोवर्धन को पूजने के लिए गये। तब भगवान श्री कृष्ण अपना चतुर्भुज रूप धरकर स्वयं गोबरधन पर्वत पर बैठ गये। गोपने गोपियों के भोग को खाने लगे। तभी से गोबरधन पर्वत का महत्त्व बढ़ गया। इन्द्र के स्थान पर सभी गोबरधन की ही पूजा करने लगे।

भैया दूज टीका

भैया दूज टीका को कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को मनाया जाता है। यह भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन भाई–बहन को साथ–साथ यमुना स्नान करना, तिलक लगवाना, भाई को बहिन के घर भोजन करना अति फलदायी होता है।

इस दिन बहन भाई की पूजा करके उसके दीर्घायु और अपने सुहाग की हाथ जोड़कर यमराज से प्रार्थना करती है। इस दिन सूर्य तनया जमुना जी ने अपने भाई यमराज को भोजन कराया था। इसलिए इसे यम द्वितीया भी कहते हैं। इस दिन श्रद्धा अनुसार भाई स्वर्ण, वस्त्र, मुद्रा आदि बहन को दे।

भैया दूज की कहानी–सूर्य देव की पत्नी का नाम संज्ञा देवी था। उसके एक पुत्र तथा एक पुत्री थी। लड़के का नाम यमराज और लड़की का नाम यमुना था। अपने पति सूर्य नारायण की तेज गर्मी के कारण संज्ञा उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगी। उस छाया से ताप्ती नदी और शनिश्चर का जन्म हुआ। उसके पश्चात् संज्ञा से ही अश्विनी कुमार हुए जो आगे चलकर देवताओं के वैद्य बने। जो संज्ञा छाया बनकर उत्तरी ध्रुव में रहती थी वह यमराज व यमुना के साथ सौतेली मां का सा व्यवहार करने लगी।

अपनी मां के व्यवहार को देखकर यमराज ने संयमनीपुरी छोड़कर यमलोक बसाया और पापियों को दण्ड देने का कार्य शुरू कर दिया। यमुना अपने भाई यमराज के जाते ही गौलोक में चली गयी और कृष्ण अवतार से पहले मथुरा में विश्राम घाट पर आकर रहने लगी।

जब बहुत दिन बीत गये, तब यमराज को अपनी बहन यमुना की याद आयी। यमराज ने अपनी बहन को ढूंढने के लिए अपने दूत भेजे। यमदूत ढूंढते–ढूंढते मथुरा आ पहुंचे परन्तु उन्हें यमुना नहीं मिली। तब यमदूत डरते–डरते यमपुरी पहुंचे और यमुना का ना मिलने का समाचार कह सुनाया। फिर यमराज अपनी यमपुरी से स्वयं गौलोक आये और यमुना जी को ढूंढते–ढूंढते यमुना जी के विश्राम घाट तक पहुंचे। वहां जब यमुना ने सुना कि मेरे भाई आये हैं तो वह बाहर आई और भाई को सत्कार सहित अपने महल में ले गयी और उन्हें भोजन आदि कराया। इससे

प्रसन्न होकर यमराज ने यमुना से कहा—बहन! जो चाहो वर मांग लो। तब यमुना बोली—मुझे कुछ नहीं चाहिए। तब यमराज ने कहा—नहीं बहन, आज तो तुम्हें कुछ ना कुछ मांगना ही होगा।

तब यमुना बोली—भैया! जो नर-नारी मेरे जल में स्नान करें वे यमपुरी ना जायें। यह सुनकर यमराज सोचने लगे यदि ऐसा हो गया तो यमपुरी उजड़ जायेगी। भाई को विचारमग्न देखकर यमुना बोली—अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो सुनो, जो भाई आज के दिन बहन के यहां भोजन करे और बहन के साथ इसी घाट पर विश्राम कर मेरे जल में स्नान करे वह यमलोक को नहीं जायेगा। इस पर यमराज यमुना से बोले—यह बात मुझे स्वीकार है। इस दिन जो भाई बहन के घर भोजन कर तुम्हारे घाट पर विश्राम कर तुम्हारे जल में स्नान नहीं करेंगे उन्हें मैं बांधकर यमपुरी ले जाऊंगा और जो भाई-बहन तुम्हारे पवित्र जल में स्नान करेंगे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

सूर्य छठ

यह छठ कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को आती है। इस दिन व्रत रखकर सूर्य नारायण की पूजा करनी चाहिए। सर्वप्रथम सूर्यदेव को अर्घ्य दें, फूल चढ़ायें, फिर आरती उतारकर साष्टांग प्रणाम करें। सूर्य भगवान की पूजा करने से धन और सन्तान की प्राप्ति होती है और संतान के कष्ट दूर हो जाते हैं। आंखों की बीमारी दूर हो जाती है। अर्घ्य देते समय सूर्य की किरणों को जल में अवश्य देखें।

सूर्य छठ की कथा—बहुत समय पहले की बात है कि बिन्दुसर तीर्थ में एक महीपाल नाम का वैश्य रहता था। वह धर्म का कट्टर विरोधी था। देवताओं की पूजा कभी नहीं करता था। एक दिन उसने सूर्य भगवान को गाली देते हुए उनकी प्रतिमा के समक्ष मल-मूत्र त्याग दिया। इसको देखकर सूर्यदेव क्रोधित हो, बोले—हे दुष्ट! तू अभी अन्धा हो जा। इतने कहते ही वह महीपाल नामक वैश्य अन्धा हो गया। अन्धा होने के कारण वह वैश्य दुःखी रहने लगा।

एक दिन उसने सोचा, इससे तो अच्छा है भगवान मेरे प्राण ही ले लें। इतना सोचकर वह गंगाजी में प्राण त्यागने के लिए चल पड़ा। जब वह रास्ते में जा रहा था तभी उसे नारद जी मिले और कहने लगे—लालाजी, इतनी जल्दी में कहां जा रहे हैं? तब वह वैश्य बोला—महाराज! मैं अन्धा हूं अतः इस कष्ट से दुःखी होकर गंगा में गिरकर प्राण त्यागने जा रहा हूं। तब नारद जी बोले, अरे मूर्ख! तुझे यह कष्ट सूर्य भगवान के क्रोध के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। इसलिए तू कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्टमी को व्रत रखकर सूर्य भगवान की पूजा करना। तब सूर्य भगवान तुझे क्षमा करके तेरे नेत्रों को पुनः ठीक कर देंगे। महीपाल ने ऐसा ही किया और उसकी आंखें उसे पुनः प्राप्त हो गयीं।

आंवला नवमी या युगादि नवमी

यह कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी को आती है। कहते हैं इस दिन से सतयुग प्रारम्भ हुआ था। इसलिए यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तिथि है। इस दिन आंवले के वृक्ष की पूजा होती है। हजारों नर-नारियां आंवलों की पूजा करते हैं और ब्राह्मणों को आंवले के वृक्ष के नीचे भोजन कराकर उन्हें दान-दक्षिणा देते हैं। उन्हें इस दिन आंवला भी दान देना चाहिए।

आंवला या युगादि नवमी की कथा—काशी नगरी में एक वैश्य रहता था, वह बहुत धर्मात्मा और दानी था, परन्तु उसके कोई सन्तान न थी। एक दिन उस वैश्य की स्त्री से एक औरत ने कहा—तू किसी बच्चे की बलि भैरव पर चढ़ा दे तो तेरे सन्तान हो जायेगी। यह बात उस स्त्री ने अपने पति से कही। पति बोला—यह ठीक नहीं है, यदि किसी के बच्चे को मारकर मुझे भगवान भी मिलें तब भी मुझे स्वीकार नहीं है। बच्चे को प्राप्त करने की बात तो बहुत दूर है। पति की बात सुनकर वह चुप रही, परन्तु वह अपनी सहेली की बात नहीं भूली।

इस बात को सोचते-सोचते एक दिन उस वैश्य की स्त्री ने एक लड़की को भैरो बाबा के नाम पर कुएं में डाल दिया। लड़की की मृत्यु हो गयी, परन्तु उसके सन्तान नहीं हुई। सन्तान के बदले उसके शरीर से पाप फूट-फूट कर निकलने लगा। उसको [illegible]या। लड़की की मृत्यु उसकी आंखों के सामने नाचने लगी। वैश्य ने [illegible] स्त्री से उसकी हालत का कारण पूछा तो उसने उस लड़की के विषय में बता दिया। तब वैश्य बोला—यह तुमने अच्छा नहीं किया क्योंकि ब्राह्मण वध, गौवध और बाल बध के अपराध से कोई मुक्त नहीं होता। अतः तुम गंगा के किनारे रहो और नित्य प्रति गंगा स्नान करो।

इस बात को सुनकर वैश्य की पत्नी ने ऐसा ही किया। एक दिन गंगाजी उस वैश्य पत्नी के पास एक बूढ़ी स्त्री का रूप धारण करके आईं और कहने लगीं—हे बेटी! तू मथुरा में जाकर कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी को व्रत रखना और आंवला की पूजा करके मथुरा की परिक्रमा करना। यह व्रत तीन वर्ष में तीन बार करना, इससे तेरा मंगल होगा। इतना कहकर गंगाजी अन्तर्ध्यान हो गईं। उस वैश्य पत्नी ने यह बात अपने पति से कही। पति की आज्ञा ले उसने ऐसा ही किया। मथुरा में जाकर व्रत रखा आंवले की पूजा और मथुरा जी की पांच कोस की परिक्रमा की। उसने यह व्रत तीन वर्ष तक लगातार किया। इस व्रत के प्रभाव से उस वैश्य पत्नी का कोढ़ ठीक हो गया और एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, जो अत्यधिक सुन्दर, सुशील एवं गुणवान था।

ग्रीष्म पंचक

यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसे पंचभीका भी कहते हैं। कार्तिक स्नान करने वाले स्त्री-पुरुष पांच दिन का निराहार (निर्जल) व्रत करते हैं। धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए यह व्रत किया जाता है। कहानी सुनकर गीत गाये जाते हैं।

बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत

यह व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को होता है। इस दिन व्रत रखकर बैकुण्ठ विहारी की पूजा करनी चाहिये। चतुर्दशी के दिन व्रत रखने वाले पहले स्वयं स्नान करके फिर भगवान को स्नान कराकर भोग लगायें। भोग के उपरान्त आचमन लगाकर फूल, दीप, चन्दन आदि से आरती उतारकर भोग को बांट दें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा उन्हें दक्षिणा देकर विदा करें। रात्रि में मूर्ति के सम्मुख ही सोयें। दिन भर कीर्तन करें।

इस व्रत को करने से बैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। मनुष्य सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

बैकुण्ठ चतुर्दशी की कथा—एक समय की बात है भगवान बैकुण्ठ में बैठे हुए थे। तभी उनके पास नारद मुनि आये। नारद जी को देखकर भगवान ने उनके आने का कारण पूछा, नारद जी बोले—आपने अपना नाम कृपानिधान रखा है, परन्तु आपके लोक में तो आपके भक्तजन ही आ पाते हैं। फिर आपकी उनके ऊपर कृपा क्या हुई? वे तो अपने जप-तप के प्रभाव से आपके धाम में आ ही जाते हैं। भगवान बोले—नारद जी, मैं आपकी बात समझ नहीं पाया।

नारद जी बोले—क्या आपने ऐसा सुलभ मार्ग बनाया है जिससे कम सेवा करने वाला भी आपकी शरण में आ सके? तब भगवान बोले—हे नारद जी! यदि आप ऐसा कहते हैं तो सुनो, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चौदस के दिन जो भी मनुष्य मेरी सच्चे मन से पूजा करेगा, वो स्वर्ग द्वार जो देव मन्दिरों में बने हुए हैं, उनमें मेरी सवारी के साथ प्रवेश करेगा—वह बैकुण्ठ को प्राप्त होगा। तभी भगवान ने जया और विजय को बुलाकर कहा—देखो, कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को स्वर्ग का दरवाजा खुला रहना चाहिये। इस दिन जो व्यक्ति नाममात्र को भी मेरी पूजा करे, उसे स्वर्ग में स्थान दें। इस बात को सुनकर नारद जी कहने लगे—हे कृपानिधान! अब आप दीनानाथ कहलाने के अधिकारी हैं। यह कहकर नारद जी हरि-गुण गाते वीणा बजाते चले गये।

कार्तिक पूर्णिमा

कार्तिक स्नान का बड़ा महत्त्व है। इस महीने में ब्रह्ममुहूर्त में स्नान किया जाता है। कार्तिक शरद पूर्णिमा से ही आरम्भ हो जाते हैं। और कार्तिक पूर्णिमा तक महीने भर स्नान होते हैं। बड़ी सुबल स्त्रियां तथा लड़कियां नहरों, तालाबों, कुओं तथा नदियों जहां जैसी सुविधा है स्नान करने जाती हैं। स्नान के उपरान्त पूजा-पाठ करती हैं और कहानी सुनती हैं। हर रविवार को व्रत रखा जाता है और राई-दामोदर की पूजा की जाती है।

कार्तिक के इस अन्तिम दिन स्नान के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं। हवन कर भगवान की पूजा कर दीपक जलायें। यदि श्रद्धा हो तो भगवान को छप्पन प्रकार का भोग लगायें। यह कार्तिक मास समस्त मनोरथ को पूर्ण करने वाला बहुत फलदायक है।

देवोत्थानी (हरि प्रबोधिनी) एकादशी

आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी को जो देव सोते हैं वे इस कार्तिक शुक्ल एकादशी को उठ जाया करते हैं। इस व्रत के दिन स्त्रियां स्नानादि से निवृत होकर आंगन में चौक पूर कर विष्णु भगवान के चरणों को कलात्मक रूप से आंगन में अंकित करती हैं। दिन की तेज धूप में विष्णु के चरणों को ढांप दिया जाता है। प्रातः उन्हें जगाने से पूर्व रात्रि को विधिवत् पूजन किया जाता है। इस दिन गीत-भजनों द्वारा देवी को उठाया जाता है। कई राज्यों में इस दिन नगर, गांव के लड़के साखी गाते हुए अन्न-रुपया, पैसा इकट्ठा करते हैं—और जयकार। बुलाते हुए मिठाईयां खाते हैं। पूजन के बाद व्रत की कथा सुनी जाती है।

तारा भोजन

कार्तिक लगते ही पूर्णिमा से लेकर एक माह तक नित्यप्रति व्रत करें। प्रतिदिन रात्रि में तारों को अर्घ्य देकर फिर स्वयं भोजन करें। व्रत के आखिरी दिन उजमन करें। उजमन में पांच सीदे और पांच सुराई ब्राह्मणों को दें। साड़ी-ब्लाउज और रुपये रखकर अपनी सासू मां को पैर छूकर दें।

छोटी सांकली

छोटी सांकली कार्तिक लगते ही पूर्णिमा से करें। उस दिन बिल्कुल न खायें। फिर दो दिन भोजन करें। इसके पश्चात् फिर ए ॱ दिन भोजन न करें। इसके बीच

में रविवार या एकादशी पड़ जाये तो दो दिन तक बिल्कुल भोजन न करें। इस प्रकार एक माह तक यह क्रम चलता रहे। व्रत पूरे होने पर हवन तथा उजमन करें। तैंतीस ब्राह्मणों को भोजन करायें—और एक ब्राह्मण जोड़े (पति–पत्नी) को भोजन करायें। फिर साड़ी और रुपये अपनी सासू मां को पैर छूकर दें।

बड़ी सांकली

बड़ी सांकली पूर्णमासी से करें। इसमें एक दिन भोजन बिल्कुल न करें। फिर दूसरे दिन भोजन करें। फिर तीसरे दिन भोजन न करें।

एकादशी या रविवार बीच में पड़ जाने पर दो दिन तक भोजन न करें। इस प्रकार एक माह तक क्रम चलता रहे। उजमन आदि छोटी सांकली की तरह ही करें।

चन्द्रायण व्रत

यह व्रत कार्तिक लगते ही पूर्णमासी से लेकर कार्तिक उतरते पूर्णमासी तक करें। प्रतिदिन गंगा या यमुना में स्नान कर भगवान विष्णु और तुलसी जी की पूजा करें। अपने घर में किसी स्थान पर एक घी का अखण्ड दीपक पूरे माह तक जलायें। दीपक के पास ही नदी की मिट्टी में जौ या गेहूं उगा दें। एक तुलसी जी का गमला तथा भगवान की मूर्ति रखकर नित्य उन सबकी पूजा करें और व्रत रखें।

व्रत के पहले दिन शाम को एक गिलास दूध या रस या एक छटांक पिसे हुए बादाम खा लें। दूसरे दिन इसकी दुगनी मात्रा, तीसरे दिन तिगुनी, चौथे दिन चौगुनी मात्रा लें। इस प्रकार पन्द्रहवें दिन पन्द्रहगुनी मात्रा भोजन में लें। सोलहवें दिन फिर एक–एक मात्रा घटाते जायें, सोलहवें दिन चौदहगुनी, सत्रहवें दिन तेरहगुनी इस प्रकार महीने के आखिरी दिन फिर वही मात्रा रह जायेगी, जो मात्रा व्रत के पहले दिन थी।

व्रत के आखिरी दिन पूजा करने के बाद 36 ब्राह्मणियों को भोजन कराकर सुहाग पिटारी देकर विदा करें और साड़ी पर रुपये रखकर अपनी सासू मां को पैर छूकर दें।

तीरायत व्रत

कार्तिक उतरते ही नवमी–दशमी, एकादशी इन तीनों दिन व्रत रखें। द्वादशी के दिन 3 ब्राह्मण और तीन ब्राह्मणियों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें।

❑❑❑



अध्याय-9



मार्गशीर्ष मास

मार्गशीर्ष का माहात्म्य

इस मास को राधा स्नान विधि कहा जाता है। प्रातः समय ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि से निवृत होकर अपने नित्य नियम को करें और देवता और पितरों को अर्पण करें फिर वैष्णव लोगों को तिलक लगाकर भगवान का स्मरण करना चाहिये। मार्गशीर्ष मास में भगवान का पूजन करने से मनुष्य भगवान की सौ लोक मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

पूजा के आरम्भ में पहले मंगल पाठ करें, फिर शंख की पूजा करें और फिर भक्तिपूर्वक मन्त्रों को पढ़ते हुए शंख के जल से भगवान विष्णु को स्नान करायें। कस्तूरी, चन्दन आदि लगाकर अर्घापाद्य, आचमन तथा मधुपर्क विष्णु जी को अर्पण करें। यथा विधि सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों से विष्णु जी को अंलकृत करें, पुष्पों से सिंहासन का पूजन कर उस पर विष्णु जी को विराजमान करें।

स्वादिष्ट नैवेद्य अर्पण कर सुगंधित ताम्बूल अर्पण करके धूप तथा दीपक सामने रखें। आदरपूर्वक प्रणाम कर रात्रि को जागरण करायें। इस प्रकार जो मार्गशीर्ष मास में भक्ति और श्रद्धायुक्त चित्त से विष्णु भगवान की पूजा करता है, वह अवश्यमेव निःसंदेह बैकुण्ठ लोक को जाता है। इस मास में जो विष्णु जी को गौ के दूध से स्नान कराता है, उसको अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है। जो शंख ध्वनि करके विष्णु जी को स्नान कराता है, उसके पितृ स्वर्ग में प्रतिष्ठित होते हैं, जो विष्णु जी के सिर पर घुमाकर शंख के जल से मन्दिर का प्रोक्षण करता है उसके घर में कभी अशुभ नहीं होता। जो विष्णु जी को एक हजार बार स्नान कराता है वह सपरिवार मुक्त हो जाता है। जो चालीस बार शंख के जल से स्नान कराता है वह चिरकाल तक इन्द्रलोक में वास करता है।

जो मनुष्य विष्णु भगवान को स्नान व पूजन करते हुए घण्टा दान करते हैं

वह करोड़ों वर्ष तक विष्णुलोक में वास करते हैं, जो ॐकार ध्वनि से पूजन करते हैं वे निरन्तर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

जो मनुष्य विष्णु जी के निमित्त तुलसी, काष्ट या चन्दन अर्पण करते हैं, वे अश्वमेघ कृतार्थ हो जाते हैं। जो नित्य ही तुलसी पत्रों तथा आंवलों से विष्णु जी की पूजा करते हैं, उन्हें मनवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य विष्णु जी को धूप अर्पित करता है उसके सौ कुलों का उद्धार होता है। जो मनुष्य पुष्प, इलायची, गूगल, हर्ड, कूट, गुड़, शैला, छड़ और नख—इन दस चीजों को मिलाकर दशांग धूप विष्णु जी को अर्पण करता है वह अति दुर्लभ कामनाओं को भी प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य कपूर से विष्णु जी की आरती करता है वह अन्त में उन्हीं में प्रवेश कर जाता है।

जो मनुष्य मार्गशीर्ष मास में कपूर का दीपक जलाता है, वह अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

जो मार्गशीर्ष मास में मन्दिर में, ब्राह्मण के घर, चौराहे पर दीपक जलाता है वह मनुष्य बुद्धिमान, ज्ञान से सम्पन्न तथा चक्षुष्मान हो जाता है।

जो भक्तियुक्त होकर जो भी विष्णु को अर्पण करता है, वे उसी को ग्रहण कर लेते हैं।

भोग लगाने के पश्चात् आचमन कर, ताम्बूल अर्पण करें।

उत्पन्ना एकादशी

यह व्रत मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष में किया जाता है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण की पूजा का विधान है। व्रत रखने वाले को दशमी के दिन रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिये।

एकादशी के दिन ब्रह्मबेला में भगवान का पुष्प, जल, धूप, अक्षत से पूजन करके नीराजन करनी चाहिये। इस व्रत में केवल फलों का ही भोग लगाया जाता है। ब्रह्मा–विष्णु–महेश त्रिदेव का संयुक्त अंश माना जाता है। यह मोक्ष देने वाला व्रत है।

व्रत कथा—एक बार पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती जी को अपने–अपने पतिव्रत पर बड़ा घमण्ड हो गया। नारद इनके गर्व मर्दन के लिए सर्वप्रथम पार्वती जी के पास गये और अत्रि ऋषि पत्नी अनुसूइया की प्रशंसा करने लगे। नारद जी के जाने के उपरान्त पार्वती जी के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई और अनुसूइया का चरित्र भंग करने के लिये दिगम्बर शिव से निवेदन किया—

नारद के मन कछु न भावा।
एक दिन दो कुकुर लड़ावा॥

उक्ति को चरितार्थ करते हुए, ऋषिराज वीणातान में मस्त, विष्णुलोक पहुंचे। वहां भी लक्ष्मी जी से अनुसूइया की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

भला लक्ष्मी कब परगुणगान सुनने वाली थी। नारद के अदृश्य होते ही विष्णु से अनुसूइया का प्रतिव्रत नष्ट करने का आग्रह किया। उधर ब्रह्मलोक में भी जाकर नारद ने सरस्वती से इसी तरह की अनुसूइया की बड़ाई सुनाई।

सरस्वती ने भी इन दोनों देवियों का अनुकरण करते हुए प्रजापति से अत्रि पत्नी के सतीत्व, मर्यादा भंग करने की प्रार्थना की। इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देव अनुसूइया का व्रत भंग करने के लिये चल दिये। अत्रि ऋषि की कुटिया के पास ही तीनों का समागम हुआ। तब एक ही समस्या का समाधान वाले तीनों देव भिखारियों का रूप बनाकर भिक्षाटन करते हुए अनुसूइया के द्वार पर पहुंचे। अनुसूइया के भिक्षा देने पर सब लोगों ने इंकार कर दिया और भोजन करने की इच्छा प्रकट की।

अतिथि सत्कार को ही जीवन समझने वाली अनुसूइया ने भिक्षुकों की बात स्वीकार कर ली। इसके बाद उन्हें स्नानादि से निवृत होने को कहा। तीनों देवों के आते ही श्रद्धा से अनुसूइया जब भोजन की थाली परोस कर लायी। उन लोगों ने इन्कार करते हुए कहा कि-"जब तक तू नग्न होकर नहीं परोसेगी तब तक हम भोजन ग्रहण नहीं करेंगे।" यह सुनकर अनुसूइया पहले तो सिर से पैर तक क्रोध में जल उठी, परन्तु पतिव्रत शक्ति से देवों का प्रयोजन जानकर पतिव्रत के प्रभाव से तीनों देवों को बालक बना दिया।

उसके द्वार अत्रि ऋषि के चरणोदक को छिड़कते ही त्रिदेव छोटे-छोटे बच्चों की तरह खेलने लगे। तब सती ने उन्हें भरपेट भोजन कराया और पालने में झुलाती हुई वात्सल्य प्रेम में दिन व्यतीत करने लगी। इधर काफी समय बीत जाने पर भी त्रिदेवों के ना लौटने पर तीनों देवियां घबराने लगीं। तब एक दिन ज्ञात हुआ कि तीनों देव एक बार अनुसूइया के घर जाते दिखाई दिये थे।

इतना सुनते ही लक्ष्मी, ब्राह्मणी और पार्वती जी अत्रि मुनि के आश्रम में पहुंचीं और अनुसूइया से अपने-अपने पतियों के विषय में पूछा। अनुसूइया ने पालने की ओर संकेत करके अपने-अपने स्वामियों को पहचानने को कहा। लक्ष्मी ने अत्यधिक चालाकी से विष्णु जी को पहचानना चाहा मगर जब पति समझकर उठाया तो भगवान शंकर निकले। इस पर उनका बड़ा उपहास हुआ। इस प्रकार तीनों देवियों के अनुनय विनय करने पर अनुसूइया ने कहा कि इन लोगों ने मेरा दूध पिया है, इसलिए इन्हें बच्चों के रूप में ही रहना होगा। इस पर तीनों के अंग से एक विशिष्ट अवतार हुआ, जिसके तीन सिर और छः भुजाएं थीं। यही दत्तात्रेय ऋषि की उत्पत्ति की कथा है। अनुसूइया ने पुनः पति चरणोदक से तीनों देवताओं को पूर्ववत् कर दिया।

मोक्षदा एकादशी

यह व्रत मोक्षदा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इसके करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व मोहित हुए अर्जुन को श्रीमद भागवत गीता का उपदेश दिया था।

इस दिन भगवान श्री कृष्ण व गीता की पूजन आरती करके उसका पाठ करना चाहिये। इसी दिन महर्षि की पत्नी सती अनुसूइया से दत्तात्रेय उत्पन्न हुए थे। जिन्होंने 24 गुण धारण कर लोगों को शिक्षा दी कि तुच्छ समझी जाने वाली छोटी-छोटी चीजों से भी ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिये और किसी भी प्राणी की अवहेलना नहीं करनी चाहिये।

यह उत्तम व्रत मार्गशीर्ष मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

मोक्षदा एकादशी के दिन मिथ्या भाषण, चुगली व अन्य दुष्कर्मों का परित्याग करना चाहिये। भगवान दामोदर की धूप-दीप-नैवेद्य से पूजा करनी चाहिये। ब्राह्मण को भोजन कराकर दानादि देने से इस व्रत का विशेष फल प्राप्त होता है। इस दिन कृष्ण भगवान का पूजन करके आरती करनी चाहिये।

व्रत कथा—प्राचीन समय में कम्पिल्य नगर में बीरबाहु नाम वाला राजा था। वह राजा बड़ा धर्मात्मा, सत्यवादी और ब्राह्मण भक्त सदैव मेरी भक्ति में लीन रहता था। वह राजा रण में विजयी, कुबेर के समान और पुत्रवान था, उस राजा की स्त्री का नाम कोनिमती था। वह अति सुन्दर और पतिव्रता थी और वह राजा अपनी स्त्री के साथ प्रजा का पालन किया करता था। एक दिन उस राजा के घर महामुनि भारद्वाज आये।

राजा ने उनका बड़ा सत्कार किया, पाद्य, अर्घ्य उन्हें अर्पण करके उनके बैठने के लिए स्वयं अपने हाथ से आसन बिछाया और उनको बिठाकर बड़े विनीत भाव से उनको कहने लगा—"हे महात्मन! मेरे अहो भाग्य हैं तथा मेरे करोड़ों जन्मों के पाप नाश हो गये जो यहां पर पधार कर आपने दर्शन दिये।" फिर राजा कहने लगा—'हे मुनिश्वर! पहले जन्म में मैंने कौन से पुण्य कर्म किये जिससे मुझे यह राज्य व अतुल सम्पत्ति प्राप्त हुई?"

यह सुनकर मुनि भारद्वाज कुछ विचार कर कहने लगे—"राजन! मुझको योग बल द्वारा तुम्हारे पूर्व जन्म के संचित कर्म मालूम हो गये। सो मैं तुमसे कहता हूं। राजा! पूर्व जन्म में तुम शूद्र जाति में उत्पन्न हुए थे, हिंसा में सदैव रत दुष्ट चरित्र, नास्तिक तथा पापी थे और पूर्व जन्म में भी यही स्त्री तुम्हारी पत्नी थी।

यह बड़ी पतिव्रता और निरन्तर आपकी सेवा किया करती थी। तुम्हारे दुष्ट

कर्मों से तुम्हारे सब बन्धुओं ने तुमको त्याग दिया तथा तुम्हारे पूर्वजों से संचित किया हुआ धन भी सब तुमने जब नष्ट कर दिया, परन्तु इस क्षीण अवस्था में भी इस पतिव्रता ने आपको नहीं त्यागा। इस पर तुम दुःखी होकर निर्जन वन में चले गये। एक समय उस निर्जन वन में एक अति भूखा-प्यासा ब्राह्मण आ गया तब तुम्हारी स्त्री ने उसकी बड़ी सेवा की, इस ब्राह्मण के संसर्ग से तुम्हारी बुद्धि में धर्म का संचार हो गया और तुमने उस ब्राह्मण से पूछा-"हे ब्राह्मण, तुम इस घोर वन में कैसे आये?"

तब ब्राह्मण बोलो-"मैं मार्ग भटक गया था और आपने मेरे प्राण बचाये, बताओ मैं तुम्हारी क्या सेवा करूं?" तुम बोले-"महाराज मैं अति पापी और दुष्ट हूं, भाई-बन्धुओं से त्यागा जाकर इस वन में आ गया और नित्य ही जीवों को मारकर अपनी स्त्री सहित इस घोर वन में निर्वाह करता हूं, भगवन! मैं और कुछ नहीं चाहता केवल चाहता हूं कि आप कोई ऐसा उपाय बतायें, जिससे मुझ जैसे पापी का भी उद्धार हो जाए।"

तब वह ब्राह्मण कहने लगा-"मैंने योग द्वारा तुम्हारे सब कार्य जान लिये हैं। पहले जन्म में तुम ब्राह्मण थे। भगवान के परम भक्त थे, परन्तु तुमने दशमी विद्धा, एकादशी का व्रत किया, इसी कारण से तुम्हारी यह दशा हो गई। अब जब भी एकादशी आये तुम भक्तिपूर्वक एकादशी का व्रत करो तो तुम इस दुर्गति से मुक्त हो जाओगे। कुछ दिनों के पश्चात् मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी आई और तुमने अपनी स्त्री सहित इस व्रत को किया और उसी समय तुम देवदूतों सहित स्वर्ग को चले गये और बहुत समय तक स्वर्ग के सुखों को भोग कर उस राज्य तथा वैभव को प्राप्त हो गये, अतः हे राजन! तुम अपने इस भक्तिभाव तथा एकादशी के व्रत के प्रभाव से शीघ्र ही भगवान सालैक्स मुक्ति को प्राप्त होकर सदैव ही सुख भोगोगे। जो लोग एकादशी के व्रतादि से विमुख रहते हैं, उनकी परलोक में भी गति नहीं होती, अतः कलियुग में मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी का व्रत अवश्य रखना चाहिये।

धन व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा का होता है। इस दिन भगवान विष्णु का पूजन करना चाहिये। प्रातः ही व्रत रखने वाले भगवान की प्रतिमा को स्नान कराकर तथा समस्त सामग्री से पूजन कर भोग लगायें और आरती उतारें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर और दान देकर विदा करें।

रात्रि में भगवान की मूर्ति के सामने देवमन्त्रों से आहुति देकर हवन करें और आरती करके उस मूर्ति को दो लाल वस्त्रों से ढक कर ब्राह्मण को दे दो। जो इस

तरह से व्रत रखता है वह मनुष्य धन-धान्य से सम्पन्न होकर स्वर्ग को प्राप्त होता है। हवन करने से अग्निदेव उसके सब पापों को नष्ट कर देते हैं।

नन्दनी नवमी व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष की नवमी को किया जाता है। इस दिन माता जगदम्बा की पूजा करनी चाहिये। व्रत रखने वाले माता जगदम्बा को स्नान कराकर सजे हुए उच्च आसन पर बैठाकर उसके सामने हवन आदि करें। माता जगदम्बा के हवन में खीर की आहुति दें और भोग लगायें। फिर जगदम्बा की आरती उतारें।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं और पूजा करते हैं पापों से मुक्त होंगे और अश्वमेघ यज्ञ के बराबर फल प्राप्त करते हैं और अन्त में ब्रह्मलोक को जाकर सब सुखों को प्राप्त करते हैं।

गीता-जयन्ती

यह जयन्ती मार्गशीर्ष शुक्ल की एकादशी को ही मनाई जाती है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण जी ने महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ होने से पहले अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। इस दिन श्री गीताजी का पूजन करें और आरती करें और इसका पाठ भी करें–गीता सभी वेदों का सार है। इसका प्रचार कृष्ण प्रेमियों में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में विस्तार से फैला हुआ है और अपने सिद्धान्तों और ज्ञान के लिये विख्यात और माननीय है। अगर हर प्राणी इसके एक-एक श्लोक के अनुसार अपने जीवन को बना ले तो वह ईश्वर को बिना तप के प्राप्त कर सकता है।

इस दिन मुनि दत्तात्रेय जी का भी जन्म दिवस मनाया जाता है, इसलिये इसे दत्त जयन्ती भी कहते हैं।

मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत और गंगा स्नान

यह व्रत मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को होता है। इस दिन भगवान नारायण की पूजा की जाती है। सबसे पहले नियमपूर्वक पवित्र होकर स्नान करें और सफेद कपड़े पहनें, फिर आचमन करें। इसके बाद व्रत रखने वाले **"ॐ नमो नारायण"** कहकर आह्वान करें। आसन और गंध-पुष्प आदि भगवान को अर्पण करें। फिर भगवान के गुणगान करें। भगवान के सामने चौकोर वेदी बनायें, जिसकी लम्बाई व चौड़ाई एक-एक हाथ हो। हवन करने के लिये अग्नि स्थापित करें और उसमें तिल, घी, बूरा आदि की आहुति दें। हवन की समाप्ति के बाद फिर भगवान का

पूजन करें और अपना व्रत उनके अर्पण करें और कहें–

पोर्णमास्यं निराहारः स्थिता देवतवाज्ञया।
मोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्ष परेऽहनि शरण भवा॥

अर्थात् हे देव पुण्डरीकाक्ष! मैं पूर्णिमा को निराहार व्रत रखकर दूसरे दिन आपकी आज्ञा से भोजन करूंगा आप मुझे अपनी शरण दें। इस प्रकार भगवान को व्रत समर्पित करके सायं को चन्द्रमा निकलने पर दोनों घुटने पृथ्वी पर टेककर सफेद फूल, अक्षत, चन्दन, जल सहित अर्घ्य दें। अर्घ्य देते समय चन्द्रमा से कहो–हे भगवन! रोहिणी पते! आपका जन्म अग्निकुल में हुआ और आप क्षीर सागर में प्रकट हुये हैं। मेरे दिये हुए अर्घ्य को स्वीकार करें।

इसके बाद चन्द्रमा को अर्घ्य देकर उनकी ओर मुंह करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करें–

"हे भगवन! आप श्वेत किरणों से सुशोभित होते हैं। आपको नमस्कार है, आप लक्ष्मी के भाई हैं आपको नमस्कार है।"

इस प्रकार रात्रि को नारायण भगवान की मूर्ति के पास ही शयन करें। दूसरे दिन सुबह ब्राह्मणों को भोजन करायें और दान देकर विदा करें।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं वो पुत्र, पौत्रादि के साथ सुख भोगकर सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और अपनी 10 पीढ़ियों के साथ बैकुण्ठ को जाते हैं।

❑❑❑





अध्याय-10

पौष मास

पौष मास का माहात्म्य

प्राचीन समय की बात है कि एक दिन श्री देव ऋषि नारद जी भ्रमण करते हुए, धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर की सभा में आये। राजा युधिष्ठिर कहने लगे, "महात्मन आप भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों की वार्ता जानने वाले हैं। कृपा करके यह बताइये कि अब पौष मास आने वाला है इस मास में स्नान, दान, व्रत आदि करने से मनुष्य को क्या फल मिलता है? किस-किस देवता की पूजा की जाती है और क्या फल मिलता है? कृपया विस्तारपूर्वक कहिये।"

नारद जी कहने लगे-"हे राजा युधिष्ठिर! अब सबसे प्रथम स्नान करने की विधि कहता हूं!"

इस मास में स्नान करने वाले को चाहिये कि प्रातः समय ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शौच, स्नानादि से निवृत होकर नित्य नियम करके षोडशोपचार विधि से भगवान का पूजन करें।

स्नान करने वाले को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए असत्य नहीं बोलना चाहिये। अच्छे सदाचारी पुरुषों की संगति करे, दुष्टों की संगति ना करे।

जो मनुष्य बर्तन का त्याग करके केले के पत्र या कमल के पत्र पर भोज करता है वह परम ज्ञान को प्राप्त होकर जीवन-मरण से मुक्त हो जाता है।

शैया को छोड़कर जो भूमि पर सोता है उसके लिए मोक्ष का द्वार खुल जाता है, जो मनुष्य पौष मास में हजामत नहीं बनवाता वह अगले जन्म में राजा के घर जन्म लेता है।

हे राजन! पौष मास में भगवान विष्णु और शिव दोनों का ही पूजन होता है। जो मनुष्य इस मास में स्नान करके नित्य नियम पश्चात् भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, उसकी विधि कहते हैं!

सबसे प्रथम पुरुष सूक्त की सोलह ऋषियों में से पहली चर्चा सहस्त्र शीर्षा,

आदि से भगवान का आह्वान करके सोलह मंत्रों से षोडशोपचार विधि से भगवान का पूजन करें और भगवान से प्रार्थना करें कि भगवान! मेरे सब पापों का नाश करिये और मुझ दीन पर कृपा करिये जिससे मैं मोक्ष पद को प्राप्त हो जाऊं।

गणेश चतुर्थी

पौष मास की चतुर्थी को श्री गणेश जी को प्रसन्न करने के लिये गणेश चतुर्थी का व्रत करें, जिसको चौथ का व्रत कहा जाता है। सारा दिन निराहर रह, रात्रि को चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन किया जाता है तथा कथा भी सुनी जाती है। इस व्रत के करने से सब प्रकार के विघ्नों का नाश हो जाता है और आरोग्यता प्राप्त जाती है।

धन-धान्य की वृद्धि होती है। जो स्त्रियां इस व्रत को करती हैं, उनका सौभाग्य अटल रहता है तथा अच्छी संतान उत्पन्न होती है।

धन संक्रांति

इस माह में जो मनुष्य नित्यनियम करके नित्य स्नान करके श्री शिवजी का पूजन करते हैं और शिवजी के बीज मंत्र **"ॐ नमः शिवाय"** का जप करते हैं-वह सब कष्टों से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त हो जाते हैं।

कथा-प्राचीन समय की बात है कि एक ब्राह्मण का पुत्र जिसका नाम वासुदेव था, बुरी संगति में फंसकर अत्यन्त दुराचारी हो गया और नित्य ही, पाप के कर्म करने लगा। वह वन में जाता था वहां यात्रियों को लूटकर उनकी हत्या कर देता, स्त्रियों का अपहरण करता और उनके साथ बलात्कार कर मदिरापान करता और मांस आदि खाकर सारी-सारी रात वनों में रहता, प्रातः समय होते ही घर में चला आता और सज्जनों की तरह सब कार्य करता था।

संसार के सभी अवगुण, असत्य भाषण, मदिरापान, चोरी करना, स्त्रियों के साथ बलात्कार करना-यह सब पाप उस दुराचारी में हो गये। इन सब पापों के फलस्वरूप उसके कोढ़ निकल आया, उसके शरीर के सब अंग गलने लगे और वह महा दुःखी हो गया।

तब घरवालों ने भी उसे बाहर निकाल दिया और जो कुछ धन उसके पास था वह भी सब नाश हो गया। तब वह भिक्षावृत्ति करके अपना निर्वाह करने लगा। ऐसी दशा में उसने नदी किनारे पर जाकर एक वृक्ष के नीचे अपनी कुटिया बना ली। वहां पर उसे जो कोई भिक्षा में दे जाता उसी से वह अपना उदर पूर्ण करने लगा, इसी प्रकार उसे वहां पर रहते हुए कुछ काल व्यतीत हो गया।

वह नित्य प्रति नदी से जल लाता और कुटी के पास पड़ी हुई एक शिला

पर रख देता, इस प्रकार कुछ जल उसके हाथ से उस शिला पर गिर जाता। इस प्रकार एक समय पौष का मास आ गया और वह इसी प्रकार कार्य करता रहा, उसी प्रकार पौष मास की पूर्णमासी आई तो उसने उस दिन भी उसी प्रकार जल डाला, परन्तु स्नान करके और जल लाने के कारण शीत से उसके प्राण निकल गये। उसी समय यमराज के दूत उसके सूक्ष्म शरीर को पाश में बांधकर ले जाने लगे कि सहसा आकाश से एक सुन्दर विमान उतरा और उनमें से शिव दूतों ने उतरकर यमदूतों से आकर कहा—"यह नर्क में नहीं जा सकता, इसने पुण्य का एक बहुत बड़ा कार्य किया है।"

यमदूत कहने लगे—"इसने तो सारी आयुपर्यन्त बड़े-बड़े पाप के कार्य किये हैं, कोई धर्म का कार्य किया ही नहीं, अतः यह नर्क में ही जाने योग्य है।"

शिव दूत कहने लगे—"इसने पौष मास में शिवजी पर जल चढ़ाया है। यह शिला जो तुम देख रहे हो, शिवलिंग है, जो कि बहुत दिनों से यहां पर विराजमान है, इस भेद को कोई नहीं जानता था, इसी कारण इसकी पूजा नहीं होती थी, इस ब्राह्मण ने पौष मास में इस पर जल चढ़ाने से चाहे वह अज्ञानवश ही हो, इसको यमपुरी जाने से रोक दिया, अब यह शिवलोक को प्राप्त होगा।"

सुफला एकादशी व्रत

यह व्रत पौष कृष्ण पक्ष एकादशी को रखा जाता है। इस दिन भगवान अच्युत की पूजा का विशेष विधान है।

इस व्रत को धारण करने वाले को चाहिये कि प्रातः स्नान करके भगवान की आरती करें और भोग लगायें। ब्राह्मणों और गरीबों को भोजन अथवा दान देना चाहिये। रात्रि में जागरण करते हुए कीर्तन पाठ करना अत्यन्त फलदायी होता है, इस व्रत के करने से सम्पूर्ण कार्यों में अवश्य ही सफलता मिलती है, अतएव इसका नाम सुफला एकादशी है।

व्रत कथा—चम्पावती नगरी में महिष्मति नाम वाला राजा राज्य करता था। उस महिष्मति राजा के चार पुत्र थे। उसमें सबसे बड़ा पुत्र महापापी था। पराई स्त्रियों से रमण करता, सदैव वैश्याओं के संग रहता था। इस प्रकार उस दुष्ट ने पिता का सब धन नष्ट कर दिया। वह नित्य ही बुरे कर्मों में लगा रहता तथा ब्राह्मण, वैष्णव और देवताओं की निंदा किया करता था। तब राजा महिष्मति ने अपने लुम्पक नामक पुत्र को ऐसा कुकर्मी देखकर राज्य से निकाल दिया।

राजा के भय से उसका सभी भाई-बन्धुओं ने परित्याग कर दिया। तब वह लुम्पक अपने मन में विचार करने लगा कि—भाई-बन्धुओं ने तो मुझको त्याग दिया

अब मेरा क्या कर्तव्य है? इस प्रकार उसने सोचकर उस नगरी को त्याग देने का निश्चय किया। इस प्रकार दिन में वन में रहकर रात्रि में नगर में आकर चोरी करूंगा। ऐसा विचार कर वह लुम्पक सदैव के लिये नगरी को त्यागकर वन में चला गया। वह पापात्मा नित्य ही वनचरों की हत्या करता और रात में चोरी करता। नगर के लोग कभी उसको पकड़ भी लेते तो राजा का पुत्र होने के कारण उसको छोड़ देते।

इस प्रकार वह पथभ्रष्ट होकर नित्य ही मांस भक्षण कर केवल फलों को खाया करता, परन्तु उस दुष्ट का आश्रम भगवान को अत्यन्त प्रिय था क्योंकि वहां पर एक बहुत पुराना पीपल का वृक्ष था, उस महावन में यह वृक्ष देवता के समान हो गया था। उसी स्थान में वह पापबुद्धि लुम्पक कुछ काल तक रहता रहा और पाप के कर्म करता रहा। एक समय इस प्रकार उसको वहां पर पौष कृष्ण एकादशी का दिन आ गया। वह वस्त्र न होने के कारण पीपल के समीप आकर इतना दुःखी हुआ कि वह मूर्च्छित हो गया और सारी रात शीत के मारे ठिठुर गया और मृतक के समान हो गया, सूर्य के उदय होने तक उसमें कुछ भी चैतन्यता नहीं आई।

तब एकादशी के दिन दोपहर के समय कुछ चेतना आने पर वह उठकर धीरे-धीरे चलता हुआ कुछ चलने पर शक्ति न होने के कारण गिर गया। विलाप करता हुआ कहने लगा—"ना जाने अब क्या होगा?" शक्ति ना रहने के कारण वह अब जीवहत्या भी नहीं कर सकता था। सारी रात भूख और प्यास से व्याकुल हो जागता रहा। इस प्रकार अकस्मात् ही उससे एकादशी का व्रत हो गया और पीड़ा के मारे ना सोने से सारी रात जागरण भी हो गया और उसके पुण्य का अंकुर उदय हो गया। सूर्य के उदय होने पर एक दिव्य अश्व लुम्पक के आगे आकर खड़ा हो गया और उसी समय आकाशवाणी हुई—"हे राजपुत्र! भगवान वासुदेव की कृपा तथा सुफला एकादशी के व्रत के प्रभाव से तुम्हारा राज्य निष्कंटक हो गया। अब तुम अपने माता-पिता के पास जाओ। निष्कंटक राज्य भोगो।"

ऐसी आकाशवाणी सुनकर उसने तथास्तु कहा, तो वह दिव्य देहधारी हो गया। तब उसने आभूषणों से युक्त होकर घर जाकर पिता को नमस्कार किया।

तब उसके पिता ने उसका राज्याभिषेक किया और उसने बहुत वर्षों तक निष्कंटक राज्य किया। इसके पश्चात् वृद्धावस्था आने पर भगवान विष्णु की भक्ति में परायण होकर अपनी स्त्री सहित वन को चला गया और अपनी आत्मा को पवित्र करके भगवान के बैकुण्ठ लोक को चला गया। सुफला एकादशी का माहात्म्य अश्वमेघ यज्ञ से भी बहुत बढ़कर है।

पुत्रदा एकादशी

यह व्रत पौष शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा का विधान है। इस व्रत को करने से सन्तान की प्राप्ति होती है।

व्रत कथा—पूर्व काल की बात है भगवती नाम वाली एक नगरी थी और उसमें सुकेतु नाम वाला राजा राज्य करता था। उस राजा को सब प्रकार के सुख प्राप्त थे, परन्तु वह राजा सन्तानहीन था। उसने सन्तान हेतु बहुत से यज्ञ, दान और तप किए, परन्तु उसके कोई सन्तान नहीं हुई। इस प्रकार राजा बहुत चिन्तित रहा करता था। वह अपनी स्त्री के सहित बहुत ही दुःखी रहता था।

एक समय राजा घोड़े पर चढ़कर शिकार खेलने के लिये गये। राजा के पुरोहित तथा दूसरे लोगों को इसका कुछ पता नहीं था। तब राजा ने घूमते-घूमते एक बड़े भारी वन में प्रवेश किया। इसमें राजा को दोपहर हो गई और वह भूख और प्यास से अति दुखित हो गया। इधर-उधर भटकते राजा ने एक सुन्दर सरोवर देखा। सरोवर के पास राजा को बहुत-से कांतिमान महात्माओं के दर्शन हुए, राजा ने उनकी पृथक् वन्दना की।

उसी समय राजा की दाहिनी भुजा और दूसरे अंग फड़कने लगे और राजा ने भी इनको शुभ सूचना समझा। राजा ने तपस्वियों को हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

ऋषि कहने लगे—"हे राजन! तुम्हारी क्या इच्छा है, सो कहिये।" राजा बोला—"हे तपस्वियों, आप कौन हैं तथा आपका क्या नाम है? कृपा कर मुझे बताइये।"

ऋषि बोले—"हे राजन! हम विश्वदेवा हैं और यहां पर स्नान करते हैं, राजन! आज से पांचवें दिन माघ लग जायेगा और आज पौष शुक्ल पक्ष की एकादशी है, जिसका नाम पुत्रदा एकादशी है। यह पुत्र की इच्छा रखने वाले मनुष्यों को पुत्र देने वाली है।" राजा कहने लगे—"महाराज! मुझको पुत्र के उत्पन्न होने में बड़ा सन्देह है। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे पुत्र दीजिये।"

मुनि बोले—"राजन! आज के ही दिन अतिविख्यात पुत्रदा एकादशी है, तुम इसका व्रत करो। हमारे आशीर्वाद तथा भगवान के प्रसाद से तुमको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होगी।"

इस प्रकार मुनीश्वर के वचनों को सुनकर राजा बोला—"हे भगवन! मैं धन्य हूं जो आपके दर्शन हुए। मैं आपकी आज्ञानुसार पुत्रदा एकादशी का व्रत अवश्य करूंगा।"

राजा ने मुनियों के कहे अनुसार व्रत किया और व्रत का पालन करके राजा ने बारम्बार मुनिश्वर को प्रणाम किया और फिर राजा अपने घर वापिस आ गया। उसी दिन रानी को गर्भ की स्थिति हो गई और समय पर बड़ा तेजस्वी और पुण्य

कर्म करने वाला पुत्र उत्पन्न हुआ, वह पिता को सन्तुष्ट और प्रजा के पालन में सदैव तैयार रहता था।

जो मनुष्य पुत्रदा एकादशी का व्रत करते हैं, वे पुत्र का सुख भोग कर मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

प्रदोष व्रत

पौष मास की कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को प्रदोष व्रत करना चाहिये। विधि दोनों की एक ही है। व्रती मनुष्य प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शौच, स्नानादि से निवृत होकर अपना नित्य नियम करने के पश्चात् भगवान शिव का षोडशोपचार विधि से पूजन करें और फिर तीसरे पहर भोजन करें।

भोजन में सात्विक पदार्थ हो या तामसी हो, रात्रि को जागरण-कीर्तन करें, दूसरे दिन अर्थात् चतुर्दशी को व्रत का पालन कर प्रदोष के दिन जो कोई इस व्रत को करता है तथा भगवान शिव की पूजा करता है, उसके सब मनवांछित कार्य सिद्ध हो जाते हैं और अन्त में शिवलोक को प्राप्त हो जाता है।

□□□



अध्याय-11



माघ मास

माघ मास का माहात्म्य

धर्मग्रन्थों के अनुसार, इस संसार में आकर जिसने माघ मास का स्नान नहीं किया, उसका जन्म निष्फल गया। माघ मास के स्नान के अनुसार कोई भी यज्ञ, तप तथा ज्ञान नहीं। माघ स्नान के लिये माघ मास का स्नान आवश्यक है। पापों का नाश और स्वर्ग की प्राप्ति इस मास के स्नान से होती है।

मानव शरीर और मन में ईर्ष्या करने वाला, लालची, कृतघ्न तथा नाशवान दुःख से भरा हुआ है। दुःख को धारण करने वाला और दुष्ट दोषों से भरा हुआ है, अतः यह शरीर माघ मास के स्नान के बिना व्यर्थ है।

जल में बुलबुले के समान, मक्खी जैसे तुच्छ जन्तु के समान, यह शरीर माघ स्नान के बिना मृत्यु के समान है; भगवान विष्णु की पूजा न करने वाला ब्राह्मण बिना दक्षिणा के श्राद्ध, आचाररहित कुल यह सब नाश के बराबर ही हैं। गर्व से धर्म का, क्रोध से तप, दृढ़ता के बिना ज्ञान, आलस्य से शास्त्र, गुरुजनों की सेवा करने से स्त्री तथा ब्रह्मचारी बिना जली अग्नि के हवन और बिना साक्षी के मुक्ति का नाश हो जाता है।

जीविका के लिए रहने वाली कथा अपने ही लिए बनाये हुए भोजन की क्रिया, भिक्षा लेकर, किया हुआ यज्ञ यह सब विनाशकारक है। बिना अभ्यास और आलस्य वाली विद्या, असत्य वाणी तथा विरोध करने वाला राजा, जीविका के लिए तीर्थ यात्रा, जीविका के लिए व्रत, संदेहयुक्त मंत्र का जप-वेदना जपने वाले को दान देना, संसार में नास्तिक मंत्र का ग्रहण करना, बिना श्रद्धा के की हुई धार्मिक क्रिया यह सब व्यर्थ है और जिस प्रकार दरिद्री का जीवन व्यर्थ है उसी तरह माघ स्नान के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

माघ स्नान का समय जब आ जाता है तो सब पाप अपने आप नाश के भय से भाग जाते हैं। पापी मनुष्य भी पवित्र होकर स्वर्ग को चले जाते हैं। जिस प्रकार

भगवान की भक्ति की ऊंच-नीच का सबको अधिकार है, उसी प्रकार माघ स्नान का भी सबको अधिकार है।

गणेश चतुर्थी (संकट चौथ)

यह व्रत माघ कृष्ण पक्ष चौथ को किया जाता है। इसी दिन विद्या, बुद्धि-वरिधि या गणेश और चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिये। दिन भर व्रती रहने के पश्चात् सायंकाल चन्द्र-दर्शन होने पर दूध का अर्घ्य देकर चन्द्रमा की विधिवत् पूजा होती है, गौरी गणेश की स्थापना कर उनका पूजन और वर्ष भर उन्हें घर में रखा जाता है।

नैवेद्य सामग्री तिल, ईख, गेजी भांटा, अमरूद, गुड़ और घी से चन्द्रमा, गणेश का भोग लगाया जाता है। यह नैवेद्य रात्रि भर डलिया इत्यादि से ढक कर यथावत् रख दिया जाता है। जिसे पहार कहते हैं। पुत्रवती मातायें पुत्र और पति के सुख समृद्धि के लिए व्रत रखती हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उस ढके हुए नैवेद्य को पुत्र ही खोलता है-और भाई-बन्धुओं को बांटा जाता है, जिससे प्रेम भावना स्थायी होती है।

व्रत कथा-एक समय विषादाग्रस्त देवता लोग भगवान शंकर के पास गये। उस समय भगवान शिव के सन्मुख स्वामी कार्तिकेय और गणेश जी विराजमान थे। शिवजी ने दोनों बालकों से पूछा-तुममें से कौन ऐसा वीर है जो देवताओं का कष्ट निवारण करे? तब कार्तिकेय ने अपने को देवताओं का सेनापति प्रमाणित करते हुए देवरक्षा योग्य और सर्वोच्च देव पद मिलने का अधिकारी सिद्ध किया, इस बात पर शिवजी ने गणेशजी की इच्छा जाननी चाही।

तब गगेशजी ने विनम्र भाव से कहा-"पिताजी आपकी अनुमति हो तो मैं बिना सेनापति बने ही सब संकट दूर कर सकता हूं। बड़ा देवता बनायें या न बनायें, इसकी मुझे चेष्टा नहीं है।"

यह सुनकर हँसते हुए शिव ने दोनों पुत्रों को पृथ्वी की परिक्रमा करने को कहा और यह शर्त रखी-"जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके आ जायेगा वही वीर और सर्वश्रेष्ठ देवता घोषित किया जायेगा।" यह सुनते ही कार्तिकेय बड़े गर्व से अपने वाहन मोर पर चढ़कर पृथ्वी की परिक्रमा करने चल दिये। गणेश जी ने समझा कि चूहे के बल पर सम्पूर्ण परिक्रमा करना कठिन है, इसलिये उन्होंने एक युक्ति सोची। ये सात बार अपने माता-पिता की परिक्रमा करके बैठ गये। मार्ग में कार्तिकेय को पूरे पृथ्वी मण्डल में उनके आगे चूहे के पग दिखाई नहीं दिये।

परिक्रमा करके लौटने पर निर्णय की बारी आई-कार्तिकेय गणेशजी पर कीचड़

उछालने लगे और अपने को सम्पूर्ण मण्डल का एकमात्र पर्यटक बताया। इस पर गणेशजी ने शिवजी से कहा कि–माता–पिता में ही सम्पूर्ण तीर्थ निहित है, इसलिए मैंने आपकी सात परिक्रमा की हैं।

गणेशजी की इस बात को सुनकर सम्पूर्ण देवगणों और कार्तिकेय ने सिर झुका लिया। तब शंकर जी ने उन्मुक्त कण्ठ से गणेशजी की बढ़ाई की और आशीर्वाद दिया कि त्रिलोक में सर्वप्रथम तुम्हारी पूजा होगी। तब गणेश ने पिता की आज्ञानुसार जाकर देवताओं का संकट दूर किया। यह शुभ समाचार जानकर भगवान शंकर ने यह बताया कि–चौथ के दिन चन्द्रमा तुम्हारे सिर का सेहरा बनकर सम्पूर्ण संसार को शीतलता प्रदान करेगा, जो स्त्री–पुरुष इस तिथि पर तुम्हारा पूजन और चन्द्र अर्घ्य देगा, उसका त्रिविध ताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) दूर होगा एवं ऐश्वर्य पुत्र, सौभाग्य को प्राप्त करेगा। यह सुनकर देवगण हर्षातिरेक में प्रणाम कर अन्तर्ध्यान हो गया।

षटतिला एकादशी

यह उत्तम व्रत माघ मास कृष्णा एकादशी को किया जाता है। इस दिन तिल के उबटन को लगाना, तिल की मालिश करना, तिलों का हवन करना, तिल मिश्रित जल पीना, तिलों के बने पदार्थ को खाना, तिलों का दान देना आदि छः प्रकार से तिलों का प्रयोग किया जाता है। पंचामृत में तिल मिलाकर भगवान को स्नान कराना चाहिये। दिन में हरि कीर्तन कर रात्रि में भगवान की मूर्ति के सामने ही सोना चाहिये।

व्रत कथा–प्राचीन काल में वाराणसी में एक अहीर रहता था। दीनता से काहिल वह बेचारा कभी–कभी भूखा ही बच्चों सहित आकाश के तारे गिनता रहता था। उसका पेट भरने का साधन जंगल की लकड़ियां काटकर बेचना था। उसके ना बिकने पर उसे भूखा ही रहना पड़ता था। एक दिन उसने किसी साहूकार के यहां व्रतोत्सव की तैयारी देखकर पूछा–"यह क्या हो रहा है?"

सेठ ने उसे बताया कि–षटतिला नामक इस व्रत को करने से घोर पाप, रोग, हत्या आदि भवबंधनों से छुटकारा तथा धनपुत्र की प्राप्ति होती है। यह सुनकर अहीर ने भी सपरिवार यह व्रत किया, जिसके परिणामस्वरूप वह एक राजा हो गया और बनारस में सम्मानित होने लगा।

बसन्त पंचमी

यह पर्व माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। उत्सव के द्वारा हिन्दू जाति अपना आनन्द व्यक्त करती है। इस रोज लोग संगति दरबार

का आयोजन करते हैं। युवक वृद्ध एवं बच्चे पीले वस्त्र धारण करते हैं। युवतियां पीली चुनरियां धारण कर उत्सव के प्रति अपनी आस्था प्रकट करती हैं। इस उत्सव में ज्ञान की देवी सरस्वती जी की पूजा का विशेष विधान है।

सरस्वती पूजन से पूर्व विधि कलश की स्थापना करके गणेश, सूर्य, विष्णु एवं महादेव जी की पूजा करनी चाहिये। इस दिन होली जलाने के स्थान पर विधि-विधान से पूजन करके बसन्त रखा जाता है। लोग अपने मित्रों को गुलाल मलते हैं तथा रंगों से सराबोर कर देते हैं।

उत्तर-प्रदेश में इस दिन से ही फाग उड़ाना शुरू कर दिया जाता है। फाग की मस्ती लोगों के दिलो-दिमाग पर फाल्गुन की पूर्णिमा तक छायी रहती है। इस दिन से ही होली व धमार गीत प्रारम्भ किये जाते हैं। गेहूं व जौ की स्वर्णित बालियां भगवान को अर्पित की जाती हैं।

व्रत कथा—विष्णु भगवान की आज्ञा से प्रजापति ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करके जब उसे संसार में देखते हैं तो चारों ओर सुनसान निर्जन ही दिखाई देता था। उदासी से सारा वातावरण मूक-सा हो उठा, जैसे किसी के वाणी न हो।

यह देखकर ब्रह्माजी ने उदासी व मलिनता को दूर करने हेतु अपने कमण्डल से जल छिड़का। उन जलकणों के पड़ते ही वृक्षों से एक शक्ति उत्पन्न हुई जो दोनों हाथों से वीणा बजा रही थी तथा दो हाथों में क्रमशः पुस्तक व माला धारण किये हुए थी। ब्रह्माजी उस देवी से वीणा बजाकर विश्व की मूकता एवं उदासी को दूर करने को कहने लगी।

तब उस देवी ने ब्रह्माजी का आदेश पाकर वीणा के मधुर-स्वर नाद से सब जीवों को वाणी प्रदान की, इसलिये उस देवी को माता सरस्वती के नाम से सम्बोधित किया गया। यह देवी सुविधा एवं सद्ज्ञान का भण्डार भरने वाली है। इसलिए घर-घर में माता सरस्वती का पूजन विधि-विधान से किया जाता है।

जया एकादशी

यह उत्तम व्रत माघ मास शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस व्रत को शुद्ध अन्तःकरण से करना चाहिये। इस दिन किसी भी प्रकार के दुर्गण को स्वप्न में भी चित्त में स्थान नहीं देना चाहिये। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। भगवान केशव (श्री कृष्ण) की पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगन्धित पदार्थों से पूजा करके आरती उतारनी चाहिये। भगवान को भोग लगाकर प्रसाद को भक्त स्वयं ग्रहण करें।

व्रत कथा—एक बार की बात है कि इन्द्र की सभा में एक गन्धर्व गीत गा रहा था। लेकिन उसका मन अपनी नवयौवना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर

लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी खटकी। इस पर उन्होंने क्रोधित होकर उसे श्राप दिया–"हे दुष्ट गन्धर्व तू जिसकी याद में मस्त है, वह राक्षसी हो जायेगी।"

यह श्राप सुनकर वह बहुत घबड़ाया और देवराज इन्द्र से क्षमायाचना करने लगा। इन्द्र के कुछ न बोलने पर वह घर चला आया। उसने घर आकर देखा तो उसकी पत्नी वास्तव में पिशाचिनी रूप में मिली।

उसने श्राप निवृत के लिये यत्न किए, लेकिन सब व्यर्थ हैं। अन्त में वह हारकर बैठ गया। अकस्मात् एक रोज उसका साक्षात्कार देवर्षि नारद से हो गया।

देवर्षि नारद के दुःख का कारण पूछने पर उसने आपबीती सुना दी। यह सुनकर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की जया एकादशी का व्रत तथा भगवत कीर्तन करने को कहा। गंधर्व ने नारद के कथनानुसार जया एकादशी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उसकी पत्नी अत्यन्त रूपवानी सौन्दर्यशाली हो गयी।

संक्रान्ति (मकर संक्रान्ति)

जब माघ मास में सूर्य मकर राशि पर आये, तब उस दिन तथा उस समय को संक्रान्ति प्रवेश काल और संक्रान्ति कहते हैं। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से यह हमेशा 14 जनवरी को मनायी जाती है। इस दिन गंगा या यमुना में स्नान करें। ब्राह्मण तथा भिखारियों को यथाश्रद्धा दान दें।

संक्रान्ति के 1–2 दिन पहले बायना निकालने के लिये सफेद तिल, काले तिल, आटे और मूंग की दाल के लड्डू बनायें। काले तिल के लड्डुओं पर दक्षिणा रखकर संक्रान्ति के दिन ब्राह्मणों को दे दें। संक्रान्ति के एक दिन पहले अपने हाथों में मेंहदी लगायें और संक्रान्ति के दिन गंगास्नान करें। बायना काढ़ने के लिये जितने चाहें उतने सफेद तिल के और दाल के लड्डू लें और उन पर रुपये रखकर तथा हाथ फेरकर अपनी सासू जी को पांव छूकर दे दें।

गरीबों और ब्राह्मणों के लिये खिचड़ी दान करें। इसके अलावा श्रद्धानुसार जो भी वस्तु चाहें चौदह वस्तु लेकर उन पर हाथ फेर दें। इन चौदह वस्तुओं को चाहें तो ब्राह्मणों को दे दें। चाहें तो अपने रिश्तेदारों, नन्द, जेठानी, दौरानी आदि को भेज दें। जैसा भी उचित समझें। जितनी चीजों का बायना निकालना हो तो उतनी चीजों और रुपये लड़कियों को बायना काढ़कर उनकी ससुराल भेज दें। संक्रान्ति के 360 नेग होते हैं। इन्हें किसी वृद्ध स्त्री से पूछकर कर लें। जिस लड़की की शादी इसी साल हुई हो उस लड़की को उसी साल घाट-पाट सींचना 2 कोठी मुट्ठी, 3 चूड़ियां मुट्ठी का नियम करें। दूसरे वर्ष उस लड़की से उजमन करायें और उसको ससुराल लड्डू, रुपये भेज दें। लड़की विवाह की साल संक्रान्ति के दिन लड़की

की ससुराल सब तरह के लड्डू, साड़ी, सोने की चूड़ी आदि भेजकर उस लड़की से उजमन करायें। लड़की सब सामान का बायना काढ़कर अपनी सासू जी के पैर छूकर दें। बायने में रुपये भी रखें। संक्रान्ति के दिन विवाहित लड़की व्रत करे। व्रतों का सामान पीहर वाले लड़की की ससुराल भेजें।

शीतला छठ

यह माघ मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को आती है। इस दिन कुत्ते को दूध और रोली से टीका करके उसको ठण्डे-ठण्डे पकवान खिलायें। व्रत रखने वाली स्त्रियां ठण्डे पानी में स्नान कर, ठण्डा भोजन करें और अन्य व्यक्तियों को भी ठण्डा भोजन दें।

यह व्रत अधिकतर बंगाल में किया जाता है। इस व्रत को विधिपूर्वक करने से आयु बढ़ती है।

शीतला छठ की कथा—एक गांव में एक सेठ और सेठानी रहते थे। उनके सात पुत्र और सात पुत्री थीं। उसके सभी बच्चों का विवाह हो गया था। एक दिन उसने गर्म पानी से स्नान कर गर्म ही भोजन किया। ऐसा करने से उसके सभी बच्चों की मृत्यु एक साथ ही हो गई। सेठानी बहुत रोई परन्तु सब व्यर्थ। जब रात्रि में वह सोई थी, तब एक बुढ़िया ने उसे जगाकर कहा—हे सेठानी! कल तूने गर्म पानी से स्नान किया, गर्म भोजन खाया जिस कारण तेरे साथ ये सब हुआ। मैं शीतला माता हूं, यदि कल सुबह तू व्रत रखकर कुत्ते को दही, रोली से टीका लगाकर उसे ठण्डे पकवान खिलायेगी तो तेरे घर के सभी जीवित हो जायेंगे। सेठानी ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और उसके घर के सभी जीवित हो गये। इसलिए इसे शीतला छठ कहते हैं।

मौनी अमावस्या

माघ मास की अमावस्या को मौनी अमावस्या कहते हैं, इस दिन प्राणी पूरे दिन चुप रहता है। यह व्रत एक दिन छः महीने या एक साल जब तक रखना चाहें रख सकते हैं। इस व्रत को धारण करने से मुनि पद की प्राप्ति होती है; अर्थात् अगले जन्म में मुनि कहलाने के अधिकारी हो जाते हैं, अन्त समय में ब्रह्मलोक की भी प्राप्ति होती है। इस दिन युग प्रवर्त्तक मनु जी का जन्म दिवस है। इसलिए इस दिन उनकी याद में मौन धारण करना चाहिये।

इस दिन काले तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर उसमें दक्षिणा रखकर तथा एक लाल कपड़े में बांधकर ब्राह्मणों को दानस्वरूप दे दें। काले तिल से शरीर का उबटन करें और गंगाजी या यमुना जी में स्नान करें।

सूर्य सप्तमी

यह व्रत माघ मास की शुक्ल पक्ष सप्तमी को होता है। इस दिन भगवान सूर्य देव को गंगाजल से अर्घ्य दें। रोली, लाल चन्दन, चावल, लाल पुष्प भोग, फल, जनेऊ, धूप, दक्षिणा चढ़ायें और दीपक, कपूर से आरती उतारें। सूर्य देव की परिक्रमा दें।

इसके उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दान देकर विदा करें। बाद में स्वयं भोजन करें। इस व्रत को करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

भीभाष्टमी व्रत

यह व्रत माघ मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को आता है। इस दिन कौरव और पाण्डवों के बाबा भीष्म पितामह की इच्छामृत्यु हुई थी। इस दिन सूर्य देव उत्तरायण में रहते हैं। भीष्म पितामह के तर्पण के लिये इस दिन व्रत रखकर सूर्य देव को अर्घ्य देना चाहिये। जो इस प्रकार व्रत रखते हैं वे श्री कृष्ण-लोक को प्राप्त होते हैं।

माघ पूनो

यह व्रत माघ मास की पूर्णिमा को रखा जाता है। यह दिन माघ स्नान का अन्तिम दिन होता है। इस दिन प्रयाग स्नान से नरक की यातनायें नहीं भुगतनी पड़तीं और मनुष्य भवसागर से पार होकर विष्णु-लोक को जाता है।

❑❑❑



अध्याय-12



फाल्गुन मास

फाल्गुन मास का माहात्म्य

फाल्गुन मास में जो दान, जप करें, ब्राह्मण-पूजन और भगवान विष्णु का पूजन करें, जो मनुष्य महापातक नाश करने वाले इस व्रत तथा पूजन को करता है वह सब पापों से मुक्त होकर इस लोक तथा परलोक में विविध प्रकार के सुखों को भोगता है तथा समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

फाल्गुन मास में जो फाल्गुन नदी में स्नान करके भगवान गदाधर के दर्शन करते हैं वह पुनः जन्म नहीं लेते। इसी प्रकार फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष के दिन दोपहर के समय फाल्गुन नदी में स्नान करने, दान देने से और विष्णु का पूजन करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।

जानकी नवमी

यह उत्तम व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नवमी को किया जाता है। यह व्रत स्त्रियों द्वारा किया जाता है। इस दिन समस्त सुहाग सामग्रियों से भगवती सीता का पूजन किया जाता है। इस दिन चावल, जौ, तिल आदि का हवन किया जाता है।

व्रत कथा—एक बार राजा जनक के राज्य में अकाल पड़ा था और सभी जीव-जन्तु भूख से पीड़ित होकर नाना प्रकार की व्याधियों से व्याप्त हो गए। इस पर जनक जी ने विद्वान् पंडितों को बुलाकर अकाल के नाश का उपाय पूछा तो उन्होंने कहा—"राजन, आप स्वयं सोने का हल चलाकर रानी के सहयोग से खेती करना शुरू कर दें। इस प्रकार अन्न औषधि उत्पन्न करने के बाद उसी से यज्ञ करोगे तो न केवल आपके राज्य से अकाल का सर्वनाश हो जायेगा, अपितु आपको सन्तान की भी प्राप्ति होगी। क्योंकि आपके राज्य में दान-पुण्य और पूजा-अर्चना

की अधिकता के कारण लोग कृषि कर्म से विमुख हो गए हैं।

ब्राह्मणों के ऐसे उपदेशयुक्त वचनों को सुनकर राजा ने रानी के सहयोग से खेत में सोने का हल चलाया। राजा की देखादेखी अन्य प्रजा भी खेती करने लगी। इसका यह फल हुआ कि सारे राज्य में अन्न, औषधियों का सुकाल होकर प्रजा निहाल हो गई। राजा ने अपने हाथ से उत्पन्न किए अन्न से यज्ञ आरम्भ किया, जिसके फलस्वरूप चारों ओर सुख का साम्राज्य हो गया। राजा-रानी का हल एक घड़े से टकराया। घड़े में एक अंगूठा चूसती हुई कन्या दिखाई दी। उस कन्या का राजा जनक ने नाम जानकी रखा और पालन-पोषण किया। चूंकि भगवती जानकी का जन्म 'सीता' (कुश-हल के अग्र भाग में लगाया जाने वाला एक औजार) के द्वारा हुआ था। इसलिए इनका नाम सीता भी था। इसका विवाह अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र भगवान श्री राम से हुआ।

विजया एकादशी

यह उत्तम फलदायी व्रत फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत में श्री विष्णु का पूजन किया जाता है। व्रत धारण करने वाले को चाहिये कि प्रातःकाल उठकर दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर, स्नानादि से शुद्ध होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करे।

सप्त अन्न युक्त घट स्थापित करें। इसके ऊपर विष्णु भगवान की प्रतिमा स्थापित करें। घड़े के ऊपर जौ से भरा एक बर्तन रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित करें। शुद्ध मन से धूप-दीप के पश्चात् प्रातःकाल अन्न से भरा घड़ा ब्राह्मण को दान देना चाहिये।

व्रत कथा—जब बनवास के समय श्री राम को समुंद्र ने पार करने के लिये मार्ग नहीं दिया तो भगवान राम ने सागर तट पर रहने वाले ऋषि-मुनियों से इसका उपाय पूछा।

भगवान श्री राम की उत्कण्ठा को जानकर ऋषियों ने कहा—"हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम! आप तो अनन्त महासागरों को पार करने वाली महाशक्ति हो फिर भी आपने पूछा ही है तो सुनो—हम ऋषि-मुनि कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व व्रत एवं अनुष्ठान करते हैं, आप भी फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत धारण कीजिये।

भगवान राम को ऋषियों ने व्रत विधान बताते हुए कहा—"इस व्रत को करने के लिये मिट्टी का बर्तन लेकर समानाज पर स्थापित करे।

उसके पास पीपल, आम, बड़ व गूलर के पत्ते रखें। एक बर्तन जौ से भरकर कलश पर स्थापित करो। जौ के बर्तन में श्री विष्णु जी की प्रतिमा रख विधि-विधान से पूजन करो।

रात्रि जागरण के उपरान्त सवेरा होने पर जल सहित कलश को सागर के निमित्त अर्पित कर देना। इसके करने से समुद्र तुम्हें पथ दे देगा। तुम लंका पर विजय प्राप्त करोगे। तभी से इस उत्तम व्रत का समाज में प्रचलन है। व्रत की कथा को सुनकर विष्णु भगवान की आरती करें।

महा शिवरात्रि

इस व्रत को फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को रखा जाता है। सभी आवश्यक सामग्री को जुटाने के पश्चात् व्रत धारण करने वाले को चाहिये कि वह ब्रह्ममुहूर्त में उठकर दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करे। भगवान शिव को अर्घ्य दे, विधि-विधान से पूजन कर शिव चालीसा व आरती का पाठ करे।

व्रत कथा–एक समय की बात है कि किसी देश में एक व्याध रहता था। वह नित्य प्रति बहुत-से जीवों का शिकार कर परिवार का पालन-पोषण करता था। शिवरात्रि के दिन वह व्याध प्रातःकाल में धनुष-बाण लेकर जीव हिंसा के लिए चल पड़ा।

उसे पूरे दिन घूमते रहने पर भी कोई शिकार न मिला। सूर्यास्त के समय वह एक तालाब के किनारे बिल्व वृक्ष पर चढ़कर किसी जीव के आने की राह देखने लगा। वृक्ष के नीचे शिवलिंग स्थापित था। वह अपने बैठने हेतु स्थान बनाने के लिये पत्ते तोड़कर नीचे फेंक रहा था, जो शिवलिंग पर गिर रहे थे।

उसे सामने से एक हिरणी दिखाई दी, ज्योंहि उसने उसे मारने के लिये धनुष उठाया तो हिरनी कातर वाणी में बोली–"हे व्याध! मैं गर्भवती हूं। इस वक्त मेरा प्रसवकाल निकट है। अतः इस वक्त मुझे छोड़कर मुझ पर कृपा करो। मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि प्रसव के पश्चात् मैं बच्चे को अपने पति के सहारे छोड़कर प्रातःकाल ही आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगी।"

हिरणी की विनम्र याचना सुनकर व्याध का हृदय दया से परिपूर्ण हो गया और उसने उसे जाने की सहर्ष अनुमति दे दी। इसके पश्चात् वह पुनः किसी जीव के आने की प्रतिज्ञा करता हुआ औरतों के आगे से बिल्व-वृक्ष की शाखाओं को तोड़कर नीचे गिराने लगा। इसी तरह जागते हुए उसको आधी रात का समय हो

गया, तो उसे पुनः एक हिरणी आती दिखाई दी, ज्योंहि अपना धनुष-बाण सम्भालते हुए निशाना लगाना चाहा, त्योंहि वह क्षमायाचना करते हुए कहा-"हे व्याध! मैं आज ही रजोधर्म से निवृत हुई हूं। अतः मुझे अपने पति के दर्शन कर उनसे सहवास करने की अनुमति दो। मैं सवेरे स्वयं ही उपस्थित हो जाऊंगी।" हिरणी की कातर वाणी से प्रभावित होकर उसे भी जाने की अनुमति दे दी।

इस प्रकार जब रात्रि का तीसरा प्रहर भी समाप्त हो गया तो उसने देखा कि एक हिरणी अपने तीन-चार बच्चों के साथ तालाब पर पानी पीने आई है। जैसे ही व्याध ने धनुष उठाया, तभी हिरणी ने प्रार्थना करते हुए कहा-"हे व्याध! मुझे मत मारो, मैं पति-वियोग से अत्यन्त दुःखी हूं। भूखी-प्यासी उन्हें खोज रही हूं। मुझे प्रातःकाल तक का समय दे दो। मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि मैं सुबह प्रातःकाल ही उपस्थित हो जाऊंगी।" हिरणी की करूण पुकार से उसका मन पस्त हो उठा और उसने उसे जाने दिया, ज़बकि वह स्वयं भूख और नींद से व्याकुल हो रहा था, परन्तु जीवों पर दया करने से उसे सुख की अनुभूति हो रही थी, इसके साथ ही उसका यह भी विचार था कि देखे जीवों में सत्य प्रतिज्ञा के पालन का कहां तक साहस है।

इसके पश्चात् उसने सतर्क होकर पुनः बिल्व-वृक्ष पर ही जीवों की प्रतीक्षा करना आरम्भ कर दिया। वह इधर-उधर निगाह घुमाते हुए बिल्व पत्रों को तोड़कर फिर से नीचे गिराने लगा। इसी तरह उसे भूख-पयास से पीड़ित होकर जागते हुए रात्रि का चौथा प्रहर भी समाप्त होने आ गया। लेकिन उसकी शिकार की इच्छा पूर्ण न हुई। वह निराश होकर अब यहां से जाना ही चाह रहा था कि ठीक तभी एक मोटा-ताजा हिरण भागता हुआ उसकी ओर आता दिखा।

हिरण को देखकर उसके हर्ष का कोई ठिकाना न रहा और उसने उसे मारने के लिए धनुष पर बाण चढ़ा दिया और तत्पश्चात् ज्योंहि निशाना लगाकर हिरण को बेधना चाहा, त्योंहि उसने उच्च स्वर में प्रार्थना करते हुए कहा-"हे व्याध! इस वक्त ऊषाकाल है। शास्त्रकारों ने इस वक्त ईश्वर का स्मरण और शुभ कार्य करने का उपदेश दिया है; क्योंकि इस वक्त किये गये पाप-पुण्य सहस्त्र।

इसके अतिरिक्त मैं पत्नियों के वियोग में भूखा-प्यासा दुःखी मन से घूम रहा हूं। अतः मुझे इस वक्त न मारकर जाने की आज्ञा प्रदान कीजिये। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूं कि शीघ्र ही अपनी पत्नियों से मिलकर, सूर्योदय के उपरान्त आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊंगा।"

व्याध ने हिरण की बात सुनकर हँसते हुए कहा-"हे हिरण! जीव को अपनी

जान प्यारी होती है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं। इसलिए तुम भी मुझसे अपने प्राणों की भिक्षा मांगते हो लेकिन मैं भी इधर न केवल स्वयं भूख से अवश्य पीड़ित है अपितु बिना शिकार के मेरे बच्चे भी भूख से पीड़ित होंगे। अतः अन्य को बचाकर स्वयं मर जाना नीति के सर्वथा विरुद्ध है। यद्यपि दूसरे पूर्व में तीन हिरणियों को छोड़ने की भूल कदापि न करूंगा। इसके अलावा नीतियों का कथन है कि प्रातःकाल आहार का त्याग करने से दिन भर भूखा रहना होता, जबकि मुझे भोजन का मुख देखे बारह प्रहर बीत चुके हैं।

हिरण ने व्याध की यह करूणापूर्ण वाणी सुनकर गिड़गिड़ाते हुए कहा–' 'व्याधराज! जिन हिरणियों को आपने यहां से सकुशल जाने दिया वे तीनों मेरी ही पत्नियां थीं। वे मेरी ही तलाश में घूम रही होंगी। कृपा करके मुझे वे सब बातें बताने का कष्ट करें जो उन्होंने आपके सामने की हैं।"

हिरण की यह प्रार्थना सुनकर व्याध ने उसके आगे उन सभी बातों को बता दिया जो कि हिरणियां कहकर गई थीं। इसके सिवाय वह यह कहना भी न भूला था कि तीनों हिरणियों ने सूर्योदय के उपरान्त यहां लौट आने की प्रतिज्ञा की है। यह सुनकर हिरण ने कहा–"यदि यही बात है तो मुझे शीघ्रमेव प्राणदान देने की कृपा कीजिये; क्योंकि मेरे मर जाने पर उनकी कोई भी कामना सिद्ध न होगी और उनका आपसे प्रतिज्ञा करके जाना व्यर्थ होगा। यह भी हो सकता है कि मेरे वियोग में प्राण त्यागने के बाद आपके पास न आ सकें।

अतः इस प्रकार दोनों लोकों को बिगाड़ने का भय है, इसलिये उनकी तरह मुझे भी शीघ्र जाने की आज्ञा दीजिये। मैं भी आपको वचन देता हूं कि एक प्रहर के भीतर यदि न लौट आऊं तो परमेश्वर मुझे स्वर्ग का मार्ग स्वप्न में भी न दिखाये।"

इस तरह व्याध को हिरण की मर्मभरी वाणी सुनकर उस पर ना केवल दया आ गई अपितु उसने जीवों की सत्य प्रतिज्ञा को भी परखना चाहते हुए हिरण को सकुशल जाने की आज्ञा प्रदान कर दी और खुद वृक्ष के नीचे उतरकर भूमि पर आसन लगाते हुए परमेश्वर का ध्यान करने लगा और उसके जाने पर भी हिरणों को मारने का विचार त्याग दिया।

व्याध को प्रतीक्षा करते हुए अभी एक प्रहर भी न बीता था कि वही हिरण अपनी तीनों हिरणियों सहित बच्चों को भी साथ लेकर आता हुआ दिखाई पड़ा। उसने पास पहुंचकर प्रार्थना करते हुए कहा–"व्याधराज! अपनी प्रतिज्ञा अनुसार हम सब आपकी सेवा में उपस्थित हो गये हैं। अतः हमें शीघ्र ही मारकर अपनी भूख शान्त करके अपने परिवार को भी क्षुधा की पीड़ा से मुक्त कीजिये।"

सत्य प्रतिज्ञा हिरण–हिरणियों को अपने पास आकर इस प्रकार कहते हुए सुनकर

व्याध का चित्त ग्लानि की गति में पड़कर स्वयं को धिक्कारते हुए कहने लगा—"ऐ नीच! कहां तू जो नित्यप्रति जीवों की हत्या करता हुआ अपना व अपने परिवार का उदर-पोषण करना ही सबसे बड़ा धर्म व कर्त्तव्य समझता है—और कहां ये सत्यनिष्ठ धर्मात्मा हिरण व हिरणियां हैं जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञा और धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राणों का भी मोह त्याग दिया है। अतः मुझको मेरे पापमय कर्म को और ऐसी हिंसा वृत्ति करने वाले को बार-बार धिक्कार है। इन धर्मात्मा जीवों को मारना तो एक और इनका अपमान करना ही महापाप होगा।

इस प्रकार मन में सोचने के बाद व्याध ने नमस्कार करते हुए हिरण व उसके परिवार से कहा—"धन्यवाद योग्य महात्माओं! अपनी सत्य प्रतिज्ञा का पालन करके मुझ जैसे पापी के हृदय में भी ज्ञान व दया का अंकुर बो दिया है।

अब आप इच्छानुसार कहीं भी जा सकते हैं। मैं आपके सम्मुख प्रतिज्ञा करता हूं कि आज से किसी भी जीव के साथ हिंसा करनी तो दूर उनका दिल भी ना दुखाऊंगा और सब जीवों पर दयाभाव करते हुए परमेश्वर की शक्ति में मन लगाऊंगा। इस प्रकार सच्ची आत्मा से प्रतिज्ञा करने के बाद व्याध का चित्त सर्वथा निर्मम हो गया—और भगवान शंकर की प्रतिमा के आगे अपने पापों की क्षमा याचना करता हुआ, जोर-जोर से हिचकियां लेने लगा। भगवान भोले शंकर की कृपा से ठीक तभी आकाश से विमान आये और शिव पार्षद व्याध सहित हिरण-हिरणियों को स्वर्ग में चलने के लिए प्रार्थना करने लगे। शिव पार्षदों के आते ही सबका शरीर छूट गया और उन्हें दिव्य स्वरूप की प्राप्ति हो गयी।

इसके उपरान्त वे विमानों में सवार होकर भगवान शंकर का गुणगान करते जा रहे थे और देवता उन पर पुष्पवृष्टि कर रहे थे। गंधर्वगण प्रसन्नता में नाना प्रकार से नगाड़े बजाते हुए नृत्य करने लगे।

आंवला एकादशी

यह उत्तम व्रत फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। व्रत करने वाले को चाहिये कि प्रातःकाल उठकर स्नानदि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करे। इस दिन आंवले का उबटन लगाना चाहिये। उसको दान करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। धूप-दीप-नैवेद्य से विष्णु भगवान को पूजे।

होली

यह पावन पर्व फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह हिन्दुओं का पावन पर्व है। इस रोज नर-नारी एवं

बच्चे, बड़े सभी श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक होली का पूजन करते हैं। पूजन के उपरान्त रात्रि में होलिका दहन होता है। इस पर्व पर व्रत भी रखना चाहिये। होलिका दहन के उपरान्त ही व्रत खोलना चाहिये।

धुलैंडी (धूलिका पर्व)

यह पर्व चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की पड़वा को मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल होलिका की अवशिष्ट भस्मी की वन्दना की जाती है। वैदिक मंत्रों से अभिषिक्त उस भस्मी को सभी लोग अपने मस्तक पर लगाते हुए परस्पर प्रेमपूर्वक मिलते हैं।

पापमोचन एकादशी

यह उत्तम व्रत चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस दिन काम, क्रोध, ईर्ष्या आदि दोषों का पूर्णतः परित्याग करके तन-मन, वस्त्रादि से पूर्णता होते हुए अन्न का सर्वदा परित्याग कर देना चाहिये। कथा वार्ता सुनकर ईश्वर का भजन करते हुए द्वादशी के रोज भूखों को अन्न खिलाकर श्रद्धानुसार उन्हें दान-दक्षिणा देकर स्वयं भी भोजन कर लेना चाहिये। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करें।

□□□





अध्याय-13

अधिमास के व्रत एवं त्योहार

मल मास, अधिमास या पुरुषोत्तम मास का माहात्म्य

अधिमास की अमास्या से दूसरे मास की अमास्या तक अधिमास से पुरुषोत्तम माहात्म्य श्रवण करना चाहिये। इसके श्रवण करने से तथा श्रद्धानुसार दान-पुण्य करने से सांसारिक सुखों के साथ स्वर्गलोक की प्राप्ति हो जाती है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है।

संक्रांतिहीन चन्द्रमास होता है अर्थात् जिस चन्द्रमास सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती वह मल मास अथवा अधिया कहलाता है। मल मस भगवान शंकर की उपासना का विशेष माहात्म्य है। इसमें कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता। भगवान शंकर के अशिव रूप की वन्दना करते हुए भक्त लोग मल मास तक शिवलिंग पर गंगाजल, बेलपत्र, धतूरा एवं पुष्प आदि चढ़ाते हैं।

पद्मिनी एकादशी

यह उत्तम व्रत मल अधि या पुरुषोत्तम मास की कृष्णा एकादशी को किया जाता है। यह उत्तम व्रत सुख-सौभाग्य के देने वाला है। इसके करने मात्र से जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य इस लोक में सुखों को भोगता हुआ अन्त में बैकुण्ठ को चला जाता है।

व्रत रखने वाले को चाहिये कि प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करे। भगवान राधा-कृष्ण एवं शिव-पार्वती का ध्यान करते हुए व्रत धारण करे। धूप-दीप, नैवेद्य तथा पंचामृत से षोडशोपचार विधि से भगवान का पूजन करे। विष्णु भगवान, राधा जी व शिव-पार्वती की आरती करें।

व्रत कथा—जब लंकापति रावण दिग्विजय करने निकला तो वह सहस्रजिन से पराजित हो गया। इस प्रकार वह बहुत दिनों तक उसके कारागार में बंदी रहा। अन्त में अगस्त्य मुनि की अनुशंसा से जेल मुक्त हुआ। नारद जी को इस पराज

से बड़ी खुशी हुई। उन्होंने पुलस्त्य मुनि से ही रावण की हार का कारण पूछा।

मुनि ने बताया कि कार्तवीर्य अर्जुन को पराजित करने की शक्ति विष्णु के सिवाय किसी अन्य में नहीं है। कारण यह है कि इसकी माता पद्मिनी तथा पिता कार्तवीर्य ने पुत्र कामना से गंधभादन पर्वत पर अनेक वर्षों तक कठोर तप किया था और महासती अनुसूइया देवी के कहने पर उन लोगों ने इसी पद्मिनी नामक एकादशी का व्रत किया था। उसके व्रत से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने स्वयं दर्शन दिये थे, साथ ही उन्हें अर्जुन जैसे परमवीर पुत्र तथा अजय होने का वरदान दिया था। यही कारण है कि उससे रावण को भी पराजित होना पड़ा।

परमा हरिवल्लभा एकादशी

यह व्रत पुरुषोत्तम मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इसे हरिवल्लभा एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। व्रत करने वाले को चाहिये कि प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करे। धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान विष्णु व शंकर की पूजा एवं आरती करे तथा कथा का श्रवण करे।

व्रत कथा—बहुत समय पहले की बात है, बभ्रुवाहन नामक एक दानी तथा प्रतापी राजा हुआ। वह प्रतिदिन ब्राह्मणों को सौ गाय दान करता था। उसी के राज्य में उसके नाम से प्रभावित बाल-विधवा स्त्री रहती थी। जो भगवान विष्णु की परम उपासिका थी। पुरुषोत्तम मास में नित्य स्नान कर भगवान विष्णु तथा शंकर जी की पूजा आराधना किया करती थी। हरि वल्लभा (पद्मिनी) एकादशी का व्रत भी इसी बीच निरन्तर करती थी।

दैव योग से राजा बभ्रुवाहन और बाल विधवा ब्राह्मणी की एक ही दिन मृत्यु हुई। वे दोनों एक साथ ही धर्मराज के दरबार में पहुंचे।

धर्मराज ने जितना स्वागत ब्राह्मणी प्रभावती का किया उतना राजा का नहीं किया। राजा को अपने दान-पुण्य पर भरोसा था। उसके प्रतिकूल अपमान तथा ब्राह्मणी का सम्मान देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।

इसी समय चित्रगुप्त ने आकर प्रभावती को तथा राजा को कर्मानुसार विष्णु लोक तथा स्वर्ग की बात बताई। राजा को इस बात से और भी आश्चर्य हुआ, तब उसने धर्मराज से इसका कारण पूछा। धर्मराज ने प्रभावती द्वारा हरिवल्लभा एकादशी के व्रत को पूर्ण करने का कारण बतलाया।

□□□





अध्याय-14

सत्यनारायण व्रत कथा

इस व्रत को किसी भी मास की पूर्णिमा को किया जा सकता है। इस व्रत को करने के लिए आवश्यक सामग्री है—कलश, केले के खम्बे, पंच पल्लव, अक्षत, कपूर, पंचरत्न, धूप, पुष्पों की माला, श्रीफल, ऋतुफल, अंगवस्त्र, कलावा, नैवेद्य, यज्ञोपवीत, आक के पत्ते, सोने की प्रतिमा, वस्त्र, गुलाब के पुष्प, दीप, तुलसी दल, पान, पंचामृत, दूध, शक्कर, घी, शहद, केसर, बन्दनावार, चौकी, पंचरंगा व आटा। एक चौकी पर लाल रंग का स्वच्छ वस्त्र बिछाकर उस पर भगवान सत्यनारायण की प्रतिमा स्थापित करें।

जमीन पर नवग्रह का स्थापन करके कलश स्थापित करें। उस पर नारियल रखें। श्री गणेश पूजन व नवग्रह पूजन की तैयारी करके देशी घी का दीपक जलाकर पूजन करें।

प्रथम अध्याय

एक बार की बात है कि मैमिषारण्य तीर्थ में शौकादि 88 हजार ऋषियों ने श्री सूत जी से पूछा—"हे प्रभो! इस कलियुग में वेध विधा सहित मनुष्यों को प्रभुभक्ति हेतु कोई श्रेष्ठ उपाय कहिये, जिससे मनुष्य की मनोइच्छा पूर्ण हो।" यह सुनकर सूत जी बोले—"हे वैष्णवों में पूज्य! आपने सभी प्राणियों के हित की बात पूछी है। अब मैं उस श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों को सुना रहा हूं। आप ध्यानपूर्वक सुने!

एक समय दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुए देवर्षि नारद मृत्युलोक में पहुंचे। वहां अनेकानेक दुःखों से पीड़ित लोगों को देख बहुत ही दुःखी मन से सोचने लगे कि इस यत्न से मनुष्य अपने पापों से मुक्ति पा सकता है? ऐसा मन में विचार कर नारद जी विष्णुलोक को चल दिए, वहां पहुंचकर नारद जी ने श्वेत वर्ण और चतुर्भुज देवाधिदेव नारायण को देखा। जिसके हाथों में शंख,

चक्र, गदा और पद्म थे तथा वे वनमाला पहने हुए थे। ऐसे परमपिता परमेश्वर को देखकर वे स्तुति करने लगे—'हे भगवान! आप अत्यन्त शक्तिमान सर्वगुणसम्पन्न हैं। मन तथा वाणी भी आपको नहीं पा सकती। आपका आदि अन्त और मध्य नहीं है। निर्गुण स्वरूप सृष्टि के आदिभूत व भक्तों के कष्टों को मिटाने वाले आपको मेरा नमस्कार है।' नारद जी से इस प्रकार की स्तुति सुनकर विष्णु भगवान बोले—'हे मुनि श्रेष्ठ! आपके मन में क्या है? यहां आपका आगमन किस कारण हुआ है? निःसंकोच कहिए।' इस पर देवऋषि नारद ने कहा—'प्रभो! मृत्युलोक के सभी मनुष्य जो कि अनेकानेक योनियों में उत्पन्न हुए हैं, वे सभी नाना प्रकार के दुःखों से पीड़ित हैं, उनको दुःख, दरिद्रता से मुक्ति मिले। कोई ऐसा उपाय बताइये।' नारद जी के पवित्र भावों को जानकर विष्णु भगवान बहुत प्रसन्न हुए। विष्णु भगवान बोले—'नारद जी! आपने अति उत्तम प्रश्न किया है। जिसके करने से मनुष्य मोहमाया के बन्धनों से मुक्त हो जाता है, वह मैं तुमसे कहता हूं। आप ध्यानपूर्वक सुनिये! यह व्रत बहुत पुण्य का देने वाला है। स्वर्ग तथा मृत्युलोक दोनों के लिए दुर्लभ है। आज मैं प्रेमवश होकर तुमसे कहता हूं कि सत्यनारायण का व्रत अच्छी तरह विधि-विधान से करने पर मनुष्य इस लोक में सब प्रकार के सुखों को भोगता हुआ अन्त में मोक्ष को प्राप्त होता है।'

भगवान के ऐसे विचार सुनकर नारद जी बोले—'मैंने जो व्रत तुमसे बताया है, उसके करने से मनुष्य सभी पापों व मोहमाया के बन्धनों से छूट जाता है। यह व्रत धन-धान्य को बढ़ाने वाला तथा सभी दुःखों को हरने वाला है। इसे किसी भी दिन संध्या के समय ब्राह्मणों व बन्धु-बांधवों सहित धर्मपरायण होकर करना चाहिये। भगवान सत्यनारायण के भोग के लिए भक्तिभाव के साथ नैवेद्य, घी, दूध, केले के फल, गुड़, शक्कर, गेहूं का चूर्ण लेवें, चूर्ण के अभाव में चावल का चूर्ण, शक्कर या गुड़ लें—और सब भक्षण योग्य पदार्थ सवाया अर्पण करें। बन्धु-बान्धवों सहित भोजन करायें। रात्रि में नृत्य, गीत आदि का धार्मिक आयोजन कर समय बितायें। इस प्रकार भगवान का पूजन-अर्चन करने पर अवश्य ही भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। इस प्रकार मनुष्यों के उद्धार का पृथ्वी पर यही एक श्रेष्ठतम उपाय समझना चाहिये'।"

दूसरा अध्याय

श्री सूत जी बोले—"ऋषियों! जिसने इस व्रत को सबसे पहले किया, अब मैं उसका वृतान्त कहता हूं। ध्यानपूर्वक सुनिये!

सुन्दर काशीपुर में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख और प्यास से बेचैन होकर नित्य ही पृथ्वी पर घूमा करता था। ब्राह्मणों को प्रेम करने वाले विष्णु भगवान ब्राह्मण को दुःखी देखकर एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उसके पास पहुंचे और आदर सहित पूछने लगे—"हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तू इस प्रकार दुःखी होकर नित्य ही पृथ्वी पर क्यों घूमा करता है? यह सब निःसंकोच मुझसे कहो। मैं तुम्हारी आत्मकथा सुनना चाहता हूं।"

यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा—"हे विप्रदेव! मैं एक अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण हूं और भिक्षा के कारण नित्य ही पृथ्वी पर घूमा करता हूं। महाराज! यदि आप मेरी निर्धनता को दूर करने का उपाय जानते हो तो कृपा कर कहो!" वृद्ध ब्राह्मण ने कहा—"भगवान श्री सत्यनारायण मनोवांछित फल के देने वाले हैं। अतः हे ब्राह्मण! तू इस पूजन को कर, जिसके करने से मनुष्य सभी दुःखों से मुक्ति पा जाता है।"

बूढ़े ब्राह्मण ने जिस व्रत को बताया है मैं उसे निश्चय ही करूंगा। ऐसा मन में निश्चय कर उसे पूरी रात नींद न आ सकी। वह प्रातः ही उठकर श्री सत्यनारायण का निश्चय कर भिक्षा के लिये चल दिया और मन में तय किया कि—आज मुझको जो कुछ भिक्षा में मिलेगा मैं उससे सत्यनारायण का व्रत अवश्य करूंगा। ऐसा निश्चय कर वह एक धनी नगर में गया। वहां उसे अन्य दिनों की अपेक्षा चौगुनी भिक्षा प्राप्त हुई।

ब्राह्मण ने विधि-विधान से व्रत का शुभारम्भ किया जिसके करने से उसे अन्न-धान्य की प्राप्ति हुई। इस प्रकार ब्राह्मण भगवान सत्यनारायण का हर महीने व्रत व पूजन करने लगा। भगवान सत्यनारायण के व्रत को जो भी करेगा, वह सभी पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त करेगा। इस प्रकार नारद जी से नारायण जी का कहा हुआ व्रत मैंने तुम्हें कह सुनाया है, अब तुम्हारी कथा सुनने की अभिलाषा है।" ऋषि बोले—"हे मुनिश्वर! संसार में ब्राह्मण से सुनकर और किस-किस ने व्रत को किया, वह सब सुनने की हमारी प्रबल इच्छा है।"

यह सुनकर सूत जी बोले—"हे मुनियों! जिस-जिस ने इस व्रत को किया है वह मैं तुमसे कहता हूं ध्यान से सुनो!

एक समय वह ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार अपने बन्धु-बान्धवों सहित इस व्रत का पूजन कर रहा था। तभी एक लकड़ी बेचने वाला लकड़हारा भूख व प्यास से व्याकुल ब्राह्मण के पास पहुंचा और प्रणाम करके कहने लगा—'हे विप्रवर! आप यह सब क्या कर रहे हैं? इसके करने से क्या फल मिलता है? कृपा करके मुझसे कहिए।'

इस पर ब्राह्मण ने कहा–'यह सभी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाला भगवान सत्यनारायण का व्रत है। इसकी कृपा से मुझे धन-धान्य की प्राप्ति हुई है।' ऐसी बातें ब्राह्मण के मुख से सुन लकड़हारा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। प्रसाद ग्रहण कर घर को गया। दूसरे दिन लकड़हारे ने संकल्प किया कि आज लकड़ियों को बेचने से जो धन मिलेगा, उससे मैं सत्यनारायण भगवान का व्रत-पूजन करूंगा–ऐसा मन में निश्चय कर लकड़ियों को लेकर एक धनी नगर में पहुंचा। उस दिन उसको और दिनों की अपेक्षा दो गुनी कीमत मिली।

लकड़हारा खुश होकर केले के फल, शक्कर, गुड़, घी तथा गेहूं का चूर्ण आदि लेकर घर गया। उसने विधि-विधान से अपने बन्धु-बान्धवों सहित भगवान श्री सत्यनारायण जी का व्रत व पूजन किया। उस व्रत के प्रभाव से लकड़हारा पुत्र व धन से युक्त हो और सुखों को भोगकर अन्त में विष्णुलोक को गया।"

तीसरा अध्याय

श्री सूत जी बोले–"हे मुनि श्रेष्ठ! अब आगे की कथा कहता हूं सुनो! बहुत पहले एक उल्खामुख नाम का बुद्धिमान राजा था। वह सत्यवादी एवं संयमी था। वह प्रतिदिन पूजा-पाठ कर गरीबों की मदद किया करता था। एक दिन राजा और रानी ने भद्रशीला नदी के किनारे श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। उसी समय वहां एक वैश्य आया, उसने कहा–'राजन! आप यह क्या कर रहे हैं? इसे जानने की मेरी इच्छा है। कृपा करके मुझसे कहो।'

राजा बोले–'हे साधु! अपने बन्धु-बान्धवों सहित भगवान सत्यनारायण का व्रत व पूजन कर रहे हैं।' राजा के वचन सुनकर साधु ने विनम्रतापूर्वक कहा–'हे राजन! इस उत्तम व्रत का विधान मुझसे कहो, मैं आपके कहे अनुसार ही आचरण करूंगा, क्योंकि मेरे भी कोई सन्तान नहीं है।'

राजा से व्रत का सब विधान सुनकर साधु व्यापार से निवृत हो अपने घर आ गया। साधु ने अपनी पत्नी को सन्तान देने वाले व्रत का विधान सुनाया और कहा–'जब मेरे सन्तान होगी, तब मैं इस व्रत को करूंगा।' एक रोज उसकी पत्नी लीलावती अपने पति के साथ आनन्दित हो संसारिक धर्म से प्रवृत्त हुई भगवान सत्यनारायण की कृपा से वह गर्भवती हो गई। दसवें मास में उसने एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया। इस कन्या का नाम कलावती रखा गया। वह शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ने लगी। लीलावती ने अपने पति को व्रत करने को कहा, परन्तु साधु बोला–'मैं यह व्रत इस कन्या के विवाह पर करूंगा।' जैसे ही कलावती विवाह

योग्य हुई तो कंचन नगर के एक बनिये के साथ उसका विवाह हो गया। वह विवाह के समय भी उस व्रत को करना भूल गया। इस पर सत्यनारायण भगवान रुष्ट हो गये और उसे श्राप दे दिया।

व्यापार करने हेतु वह बनिया अपने दामाद सहित समुद्र के किनारे बसे रतनपुर नामक नगर में जा पहुंचा। वह राजा चन्द्रकेतु के नगर में व्यापार करने लगे। एक दिन कुछ चोर भगवान सत्यनारायण की माया से प्रेरित होकर राजा का धन चुराकर उसी स्थान पर छोड़कर भाग गये जहां पर दोनों ससुर-दामाद बैठे थे।

जब राजा का धन दूतों ने वहां रखा देखा तो उन दोनों को ही चोर समझकर राजा के पास पकड़कर ले गये। भगवान सत्यनारायण के श्राप एवं कोप के कारण ही उसकी पत्नी लीलावती भी दारूण दुःख को प्राप्त हुई। उसके घर में रखा सभी धन चोर चुरा ले गये। शारीरिक, मानसिक पीड़ा व भूख से व्याकुल होकर उसकी कन्या कलावती दर-दर भटकने लगी।

अन्न की चिन्ता में एक रोज वह एक ब्राह्मण के घर जा पहुंची। वहां उसने भगवान सत्यनारायण की कथा सुनी तथा प्रसाद ले अपने घर लौटी। घर लौटने पर लीलावती ने अपनी पुत्री से पूछा-'हे पुत्री! तू इतनी देर रात में कहां रही और तेरे मन में क्या विचार है, मुझे सच-सच बतला?'

'माता! मैंने एक ब्राह्मण के घर में सर्वमनोरथ सिद्ध करने वाला भगवान सत्यनारायण का व्रत व पूजन होते हुए देखा है। उनकी कथा सुनने में ही मुझे इतनी देर लग गयी।' कलावती अपनी माता से बोली।

अपनी पुत्री की बात सुनकर लीलावती भगवान के पूजन की तैयारी में लग गई। पूजन करके लीलावती ने यह वर मांगा-'उसके पति और दामाद शीघ्र घर लौट आयें।' भगवान सत्यनारायण इस व्रत से सन्तुष्ट हो गये और राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दोनों बन्दियों को छोड़ने का आदेश दिया। प्रातःकाल ही राजा ने दोनों ससुर-दामाद को कारागार से मुक्त कर दिया। उन्हें स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, बहुत-सा धन देकर विदा किया। दोनों वैश्य खुश होकर अपने घर को चल दिये।"

चौथा अध्याय

सूत जी बोले-"वैश्य ने मंगलाचार करके यात्रा आरम्भ की और अपने नगर को चल दिये। अभी वे कुछ दूर ही गये थे कि भगवान सत्यनारायण ने उनकी परीक्षा लेने हेतु दण्डी स्वामी का वेश धारण करके पूछा-'हे भद्र! तेरी इस नाव

में क्या भरा है?' वैश्य ने हँसते हुए कहा—'हे दण्डी स्वामी! आप क्यों पूछ रहे हैं? क्या धन लेने की इच्छा है? मेरी नौका में बेल-पत्र आदि भरे हैं।' वैश्य के कठोर वचन सुनकर दण्डी स्वामी ने कहा—'तुम्हारा वचन सत्य हो।'

ऐसा कहकर दण्डी स्वामी वहां से चलकर एक समुद्र के किनारे आसन लगाकर बैठ गये। जैसे ही वैश्य ने नाव ऊंची उठी देखी तो घबरा गया। नाव में धन के स्थान पर बेल-पत्र आदि भरे पड़े थे। वैश्य मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

उसकी मूर्च्छा खुलने पर उसके दामाद ने कहा—'पिताजी! आप घबराइये नहीं, यह सब दण्डी भगवान के श्राप से हुआ है। हमें उनकी शरण में चलना चाहिये।' यह सुनकर वह तुरन्त दण्डी स्वामी के पास पहुंचा। वह भगवान दण्डी स्वामी के कदमों में गिरकर क्षमा मांगने लगा।

उसकी करूण पुकार से द्रवित हो भगवान ने कहा—'हे वाणिक पुत्र! तू सदैव मेरी पूजा से विमुख हुआ है, इसी कारण तू दुःखी है।' वाणिक पुत्र ने विनम्रतापूर्वक कहा—'हे प्रभु! आपकी माया को तो सुर-असुर, ऋषि-मुनि भी नहीं जान पाये, फिर मुझ जैसा पाखण्डी, पापी कैसे जान सकता है। आप मेरे अपराधों को क्षमा करें, मैं आपका व्रत व पूजन करूंगा। कृपा करके मेरी नौका में पहले की ही भांति धन भर दें।' उसके करूणापूर्ण वचनों पर भगवान सत्यनारायण द्रवित हो उठे और उसे आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गए। वाणिक पुत्र ने भगवान सत्यनारायण का विधिवत् व्रत एवं पूजन किया और मनवांछित फल पाकर अपने नगर को चल दिया। नगर के पास पहुंचकर वाणिक पुत्र ने अपने आगमन की सूचना दूत द्वारा अपने घर भिजवा दी। पति के आने की बात सुनकर लीलावती ने सत्यदेव का पूजन किया और अपनी पुत्री से कहा—'मैं अपने पति के दर्शन हेतु जा रही हूं, तू भी पूजन करके व प्रभु का प्रसाद ग्रहण करके शीघ्र चली आना।' यह कहकर लीलावती चल पड़ी।

माता के वचनों को सुनकर कलावती हर्षातिरेक में भगवान का प्रसाद छोड़कर अपने पति से मिलने चल दी। प्रसाद का अपमान होने के कारण सत्यदेव ने रुष्ट होकर उसके पति को नौका सहित डुबो दिया। कलावती अपने पति को ना पाकर मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी। अपनी पुत्री की ऐसी दीन दशा देख साधु वैश्य भगवान की स्तुति कर कहने लगा—'हे देव! हमारे अपराध क्षमा करो।' तभी आकाशवाणी हुई—'हे साधु! तेरी कन्या मेरा प्रसाद त्यागकर आई है, इसलिए इसका पति अदृश्य हो गया है। यदि यह घर जाकर प्रसाद खाकर लौटे तो इसे इसका पति अवश्य मिलेगा।'

कलावती आकाशवाणी सुन घर जाकर प्रसाद खाकर लौटी तो उसे अपने पति के दर्शन हुए। इसके पश्चात् वैश्य परिवार ने प्रसन्न चित्त से सत्यदेव का पूजन किया।"

पांचवां अध्याय

श्री सूत जी बोले–"हे ऋषियों! मैं और भी कहना चाहता हूं, ध्यानपूर्वक सुनिये!

एक तुंगध्वज नाम का प्रजापालक राजा था। उसने भी श्री सत्यनारायण का प्रसाद त्यागकर बहुत दुःख पाया था।

एक बार वन में जाकर पशुओं को मारकर बड़ के वृक्ष के नीचे आया। वहां ग्वाल बालों को भगवान सत्यनारायण भगवन का पूजन करते देख घमण्ड से वहां नहीं आया और न ही भगवान् को झुककर प्रणाम किया। जैसे ही ग्वाले उसके आगे पत्ते के दोने में प्रसाद लेकर गए, तब उसने प्रसाद भी ग्रहण ना किया और अपनी सुन्दर नगरी को चल दिया। वहां सबकुछ नष्ट पाकर वह समझ गया कि यह सब सत्यनारायण भगवान के प्रसाद त्यागने से ही हुआ है। वह फिर उन्हीं ग्वालों के पास गया और पूजन कराकर प्रसाद ग्रहण कर अपने नगर को लौट कर आया।

उसे पुनः अपना नगर वैसा ही मिला। वह बहुत प्रसन्न हुआ। जो मनुष्य इस परम दुर्लभ व्रत को करता है, वह परम धाम के साथ-साथ सभी मनोरथ पूर्ण कर लेता है और अन्त में बैकुण्ठ को प्राप्त करता है।

अब मैं उन लोगों के दूसरे जन्म की कथा कहता हूं जिन्होंने पहले इस व्रत को किया है। वृद्ध शदानंद ब्राह्मण ने सुदामा का जन्म लेकर तथा भगवान कृष्ण से मित्रता करके मोक्ष प्राप्त किया। उल्कामुख नाम का राजा महाराज दशरथ हुआ तथा श्री रामचन्द्र जी को पुत्र रूप में पाकर बैकुण्ठ को चला गया। साधु नामक वैश्य ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को आरी से चीरकर मोक्ष प्राप्त किया। महाराज तुंगध्वंज ने स्वयं भूखे रहकर भगवतभक्ति में भुक्त हो, कर्म कर मोक्ष प्राप्त किया।"

(भगवान श्री सत्यनारायण जी की आरती)

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा,
सत्य नारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥
ॐ जय...।

रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे,
नारद करत निरंजन, घण्टाध्वनि बाजे॥
ॐ जय...।

प्रगट भए कलि करण, द्विज को दर्श दियो,
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥
ॐ जय...।

दुर्बल भील कराली इन पर कृपा करी,
चन्द्रचूड़ इक राजा, तिनकी विपत्ति हरी॥
ॐ जय...।

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी,
सो फल भोग्यो, प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं॥
ॐ जय...।

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो,
श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनके काज सरयो॥
ॐ जय...।

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी,
मनवांछित फल दीना, दीनदयाल हरी॥
ॐ जय...।

चढ़त प्रशाद सवायो कदली फल मेवा,
धूप-दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
ॐ जय...।

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावै,
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावै॥
ॐ जय...।

□□□





अध्याय-15

सप्तवार कथाएं

सोमवार व्रत कथा

एक बार शंकर व पार्वती चौसर खेल रहे थे। पार्वती जी ने मन्दिर के पुजारी से पूछा—"हे पुजारी! कहो किसकी जीत होगी?" पुजारी बिना सोचे-समझे बोला—"शिवजी की।" अन्त में पार्वती जी की जीत हुई। पार्वती जी ने पुजारी को झूठ बोलने के कारण कोढ़ी होने का श्राप दे दिया।

भगवान की पूजा हेतु अप्सराएं आयी हुई थीं, उन्होंने पुजारी जी की ऐसी हालत देखकर उनसे उनके रोग का कारण पूछा। पुजारी ने सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। इस पर अप्सराओं को पण्डित पर बहुत दया आई, वे बोलीं—"हम आपको एक उपाय बताती हैं। ध्यानपूर्वक सुनो! सोलह सोमवार व्रत के प्रभाव से आप अवश्य ही सही हो जाओगे। शिवजी को अर्घ्य देकर दूध, दही, चावल, रोली, फल, प्रसाद एवं जनेऊ पहनाओ, फिर दण्डवत् करो और परिक्रमा करो। इतना कार्य करके बने चूरमे के चार भाग करके एक भाग शंकर जी को अर्पण करें, दूसरा भाग सांड को खिलायें, तीसरा भाग भक्तों में बांट दें और चौथा भाग स्वयं खायें। इस प्रकार सोलह सोमवार व्रत कर सत्रहवें सोमवार को पहले से दस गुणा चूरमा बनाकर देवपूजा करने के उपरान्त शिव व सांड को अर्पित कर भक्तों में बांटकर स्वयं खायें। ऐसा करने से तुम्हारे सभी कष्ट दूर हो जायेंगे।" इतना कहकर अप्सराएं चली गईं।

पुजारी ने शान्ति के साथ पवित्र विचारों के साथ सोलह सोमवार व्रत विधिपूर्वक रखे। इस व्रत के प्रभाव से पुजारी जी का कोढ़ दूर हो गया। स्वर्ग के समान सुन्दर शरीर हो गया एवं उसे प्रत्येक तरह का सुख प्राप्त हो गया। एक दिन अत्यन्त निर्धन तथा दुःखी ब्राह्मण पुजारी के पास जाकर कहने लगा—"महाराज! मैं दुःखी हूं। आपकी सेवा में आया हूं। आप मेरी सहायता कीजिये।" जब उस ब्राह्मण ने अपनी व्यथा

सुनाई तो उसने कहा–"मैं भी तेरी ही तरह दुःखी था, परन्तु सोलह सोमवार व्रत से मेरा दुःख दूर हो गया।" पुजारी ने सोलह सोमवार व्रत विधि उस ब्राह्मण को बता दी।

ब्राह्मण ने विधि-विधान से सोलह सोमवार पूर्ण किये। एक दिन वह राजमहल में राजकुमारी के स्वयंवर को देखने लगा। राजा ने घोषणा कर रखी थी कि मेरी हथिनी जिस के गले में वरमाला पहना देगी उसी से मेरी पुत्री का विवाह होगा और वही मेरे आधे राजपाठ का अधिकारी होगा। राजा की हथिनी ने वरमाला ब्राह्मण के गले में डालकर उसे प्रणाम किया। राजा ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार राजकुमारी का विवाह उस ब्राह्मण से कर उसे अपना आधा राजपाठ दे दिया। ब्राह्मण सुखपूर्वक रहने लगा। भगवान का पूजन करने लगा।

एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से पूछा–"हे स्वामी! आपने ऐसा कौन-सा तप किया था, जिससे हथिनी ने आपके गले में वरमाला डाली?" तब ब्राह्मण ने सोलह सोमवार व्रत विधि सहित अपनी पत्नी को बता दिये। राजकुमारी ने भी सोलह सोमवार व्रत विधिपूर्वक सम्पन्न किये। इन व्रतों के प्रभाव से राजकुमारी के सर्वगुण सम्पन्न पुत्र हुआ।

राजकुमार बड़ा हुआ तो माता ने उसे भी सोलह सोमवारों का व्रत रखवाया। राजकुमार ने भी व्रत किये जिनके प्रभाव से विदर्भ देश के राजा ने अपनी कन्या का विवाह राजकुमार से कर दिया और उसने अपना सारा राजपाठ राजकुमार को दे दिया एवं इस तरह वह ब्राह्मण कुमार सम्पूर्ण भारतवर्ष का राजा बन गया। बाकी सब राजा उसके अधीन हो गये। कुछ समय उपरान्त राजकुमार के माता-पिता वृद्धावस्था को प्राप्त हुए तथा राजकुमार को राज्य सौंप कर स्वयं वन में चले गये। राजकुमार शिवजी के पूजन के लिए मन्दिर जाने लगा तो अपनी पत्नी को भी पूजा सामग्री लेकर मन्दिर में आने को कहा, तब राजकुमारी ने दासी के हाथ मन्दिर में पूजा सामग्री भेज दी।

रात्रि में शिव ने राजकुमार को आज्ञा दी कि अपनी पत्नी को अभी महल से निकाल दो। प्रातःकाल राजा ने मन्त्रीदल को बुलाकर उन्हें सम्पूर्ण स्वप्न सुनाया। सारी बात सुनकर मन्त्रियों ने स्वीकृति दे दी। राजकुमार ने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया।

राजकुमारी दुःख भोगती हुई एक जंगल की ओर चल दी। वहां उसे एक वृद्धा सूत की गठरी ले जाती मिली। उसने कहा–"ला माई! तेरी गठरी मैं ले चलूं।" राजकुमारी ने जैसे ही वृद्धा की गठरी उठाई तभी आंधी में उसकी गठरी उड़ गयी।

इसी तरह ठोकरे खाते हुए एक आश्रम में पहुंची। वहां रह रहे साधु को रानी

पर बड़ा तरस आया, उसने उसे सोलह सोमवार का व्रत करने की सलाह दी। रानी ने विधि-विधान से व्रत किये। तब शिवजी ने राजा को स्वप्न में आज्ञा दी-"अपनी रानी को वापिस ले आओ।"

राजा उसकी खोज में चल दिया। साधु आज्ञा से वह रानी को पुनः राजमहल में ले आया तथा दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

(आरती श्री शंकर भगवान की)

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा।
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन, गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन मन मोहे॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

अक्षमाला, वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद सोहे, भाले शशिधारी॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक प्रेतादिक संगे॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

कर में श्रेष्ठ कमंडल, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जग पालन कर्त्ता॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

त्रिगुण स्वामी जी की आरती, जो कोई जन गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे॥
ॐ हर-हर-हर महादेव...।

मंगलवार व्रत कथा

एक बूढ़ी स्त्री श्री मंगलदेव की भक्त थी और उनको ही अपना इष्टदेव मानती थी। वह प्रत्येक मंगलवार को व्रत रहती थी। उस बूढ़ी स्त्री के यहां एक लड़का था जो कि मंगलवार के दिन पैदा हुआ था। उसका नाम मंगलिया था।

मंगलवार के दिन वह स्त्री न तो मिट्टी खोदती थी ना ही घर लीपती थी। एक दिन श्री मंगल जी उस स्त्री की परीक्षा के लिये साधु का रूप धारण करके आये तथा उनके घर के आगे खड़े होकर हरिहर की आवाज लगाई। बुढ़िया ने बाहर आकर पूछा–"महाराज! क्या आज्ञा है?"

श्री मंगलदेव कहने लगे–"मां! मैं बहुत भूखा हूं। मैं भोजन तैयार करूंगा अगर तू थोड़ी सी जमीन लीप दे तो बड़ा पुण्य होगा।" श्री मंगलदेव की बात सुनकर बूढ़ी औरत ने कहा–"महाराज! आज मैं मंगलवार का व्रत रखे हूं इसलिए मैं चौका नहीं लगाऊंगी।"

साधु वेष नें श्री मंगलदेव ने उत्तर दिया–"मां! मैं तो गोबर से लीपे चौके पर ही रसोई करूंगा।" वृद्धा बोली–"महाराज! मैं लीपने के अलावा हर सेवा करने को तैयार हूं।"

श्री मंगलदेव बोले–"मां! जो तू कह रही है उसे सोचा भी है या नहीं?" वृद्धा ने कहा–"महाराज! मैं पहले ही विनती कर चुकी हूं।" श्री मंगलदेव बोले–"माता! तो फिर ऐसा करो अपने पुत्र को बुलाकर उसे औंधा लिटा दो, मैं उसकी पीठ पर भोजन तैयार करूंगा।" श्री मंगल देवता की बात सुनकर वृद्धा ने अपना बेटा बुलाया तथा कहा–"बेटे! देखो यह बाबाजी तुमसे क्या कहते हैं।" इस पर लड़के ने मंगलवार जी के समीप जाकर कहा–"क्या आज्ञा है?"

मंगल देव बोले–"मां तू इसको औंधा लिटा दे।" वृद्धा ने मंगलदेव जी का ध्यान करके लड़के को औंधा लिटा दिया। मंगलदेव जी ने उस पर लकड़िया रखकर आग जलाई तथा भोजन तैयार करने लगे। वृद्धा वहां से चली गई। जब भोजन तैयार हो गया, तब मंगलदेव ने वृद्धा को अपने पास बुलाया और कहा–"मां! तेरा लड़का कहां है, उसे बुला ताकि भोग ले जाये।" मंगलदेव जी की इस बात पर वृद्धा ने चकित होकर पूछा–"बाबा! यह कैसे आश्चर्य की बात है! अभी-अभी तो आपने उसकी पीठ पर भोजन तैयार किया और अब आप उसे प्रसाद देने के लिए बुला रहे हैं! यह कैसे सम्भव हो सकता है, जबकि वह मर चुका है! क्या आप उसे अभी तक जीवित समझते हैं? अब आप कृपा करके मुझे उसकी याद न दिलायें।

महाराज! अब आप भोजन कर अपनी राह पकड़िये।" परन्तु मंगलदेव जी उससे बोले—"मगर तू उसे बुला तो सही।" मंगलदेव के अत्यन्त आग्रह करने पर ज्योंहि—"मंगलिया, मंगलिया, मंगलिया!" कहकर पुकारा तो मंगलिया एक ओर से दौड़ता हुआ आया और मंगल देवता ने उसे प्रसाद दिया। इसके बाद मंगलदेव जी ने उस वृद्धा तथा उसके पुत्र को अपना वास्तविक रूप दिखाया। दर्शन पाकर वे दोनों गद्‌गद् हो गये।

मंगलदेव जी ने कहा—"मां! तेरी मुझमें अटल श्रद्धा है, इसलिये तुम्हें कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचेगा।"

(आरती श्री हनुमान जी की)

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहि रावण की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥
सुरनर मुनिजन आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ अमर पद पावै॥
लंक विध्वंस कियो रघुराई। तुलसीदास स्वामी आरती गाई॥

❑

बुधवार व्रत कथा

एक समय की बात है कि एक व्यक्ति एक बार अपनी ससुराल गया तथा कुछ दिन वहां रुका। कुछ समय उपरान्त उसने जाने के लिये विदा मांगी, किन्तु उसके ससुराल वालों ने कहा–"आज बुधवार है, आज के दिन लड़कियों को विदा नहीं किया जाता, इसलिए तुम कल जाना।"

परन्तु वह व्यक्ति नहीं माना तथा उसने कहा–"मुझे आज ही विदा कर दीजिये।" उसके जिद करने पर उन लोगों ने लड़की एवं दामाद को विदा कर दिया।

रास्ते में एक स्थान पर उस व्यक्ति की स्त्री ने कहा–"मुझे प्यास लगी है। तुम कहीं से पानी ले आओ।" वह व्यक्ति लोटा लेकर रथ से उतर कर पानी लेने चला गया तथा जब वह कुएं से पानी लेकर लौटता है तो देखता है कि उसकी स्त्री के पास उसी की शक्ल-सूरत का एवं उस जैसे कपड़े पहने एक व्यक्ति रथ पर बैठा है। देखकर उसकी आंखों में खून उतर आया तथा क्रोध में आकर दूसरे व्यक्ति से कहा–"तुम कौन हो जो कि मेरी स्त्री के निकट बैठे हो?"

इस पर दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया–"अबे! तू कौन है जा यहां से, यह मेरी पत्नी है।" इस पर पहले व्यक्ति ने कहा–"अरे भाई! यह स्त्री मेरी है। मैं अभी-अभी इसे लेकर अपनी ससुराल से आ रहा हूं।"

इस तरह झगड़ा बढ़ गया। वहां अधिक लोग एकत्रित हो गए। जब लोगों ने स्त्री से पूछा तो वह भी जैसे कोई उत्तर देने में असमर्थ हो गई; क्योंकि वह दोनों की एक-जैसी सूरत को देखकर चकित थी। दूसरे, एक-जैसी वेशभूषा; अपने असली पति को वह अबला पहचान नहीं पा रही थी।

इतने में ही उस जगह पर राजा के सिपाही आ गये और उस व्यक्ति को जो कि लोटे में पानी लेकर आया था, पकड़ने की लिए तैयार हो गये। इस पर वह व्यक्ति अत्यन्त घबड़ाया तथा ईश्वर से विनती करने लगा–

"हे प्रभु! ये क्या अन्याय हो रहा है, जो सच्चा है, वह झूठा तथा जो झूठा है, वह सच्चा प्रमाणित हो रहा है?"

इस पर आकाशवाणी हुई–"यह सब कुछ बुधदेव की माया से हो रहा है। यह व्यक्ति अत्यन्त आग्रह करके अपनी स्त्री को बुध के दिन अपने साथ लिए जा रहा था। इसी कारण इसको यह कलेश प्राप्त हुआ है।"

इसके बाद बुधदेव तो अन्तर्ध्यान हो गये तथा वह व्यक्ति बार-बार बुधदेवजी की स्तुति करने लगा। जिससे बुधदेव ने अपनी माया को हटा लिया एवं दूसरा व्यक्ति रथ से अदृश्य हो गया। तब वह अपनी पत्नी सहित घर आया। जो कोई इस कथा को पढ़ता या सुनता है, उसको गमन करने का कोई पाप नहीं चढ़ता है।

श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला॥
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नन्द के आंगन नन्द लाला।
गगन सम अंग कान्ति काली, लतन में छाड़े बनमाली॥
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र-सी झलक।
निरखि छवि स्यामा प्यारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥
कनक मय मोर नुकुट बिलसै, गगन सो सुमन राशि बरसै।
बजै मुरचंद, मधुर मृदंग, ग्वालिनी संग॥
अतुल रति गोप कुमारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
जहां ते प्रगट भई गंगा, स्मरण ते होत मोह भंगा॥
कलुष कलि हारिणी श्री गंगा।
बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरै हध क्रीच॥
चरण छवि श्री बनवारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
चमकती उज्ज्वल तट रेणु, चहुं दिशि गोपी ग्वाल धेनु॥
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चन्द, कटत भव फ़न्द।
टेर सुनि लेऊ भिखारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥
आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की॥

बृहस्पतिवार व्रत कथा

किसी समय एक नगर में एक बहुत बड़ा व्यापारी निवास करता था। वह जहाजों में माल लदवाकर दूसरे राष्ट्रों को भेजा करता था तथा स्वयं भी जहाजों के साथ दूर-दूर के राष्ट्रों को जाया करता था एवं इस तरह खूब धन कमाकर लाता था। उसकी गृहस्थी अच्छी चल रही थी। वह दान-पुण्य भी खूब करता था।

उसका इस तरह से दान देना उसकी स्त्री को बुरा लगता था। वह किसी को एक दमड़ी भी नहीं देती थी। एक बार जब वह सौदागर जहाज को भरकर किसी दूसरे राष्ट्र को गया हुआ था तो पीछे से बृहस्पति देवता साधु का रूप धारण करके उसके घर उसकी कंजूस पत्नी के समक्ष पहुंचे तथा भिक्षा की याचना की। उस व्यापारी की पत्नी ने बृहस्पति देव से कहा-"महात्मा जी! मैं इस दान-पुण्य से बहुत दुःखी हूं। मेरा पति अपना सम्पूर्ण धन व्यर्थ में ही दान देता है। आप कोई

ऐसा तरीका बताइये जिससे हमारा सम्पूर्ण धन नष्ट हो जाये। इससे ना धन नष्ट होगा और ना ही मुझे दुःख होगा।"

बृहस्पति देव बोले—"देवी! तुम तो बड़ी विचित्र हो, धन और पुत्र तो सभी लोग चाहते हैं, पुत्र और लक्ष्मी की तो पापी भी कामना करता है। यदि तुम्हारे पास अत्यधिक धन है, तो इससे तुम्हें दिल खोलकर पुण्य कार्य करने चाहियें। भूखों को भोजन खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, यात्रियों के लिये धर्मशालाएं बनवाओ, निर्धनों की कंन्याओं का विवाह कराओ और भी कई पुण्य काम ऐसे हैं जिन्हें करने से तुम्हारा लोक, परलोक सार्थक होगा।" परन्तु उस स्त्री ने महात्मा से कहा—"महात्मा जी! मैं इस सम्बन्ध में आपकी कोई बात नहीं सुनना चाहती। मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं है जो कि मैं दूसरों को बांटती फिरूं!"

बृहस्पति देवता बोले—"यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो फिर ऐसा ही होगा। तुम अब ऐसा करना कि सात बृहस्पतिवार को घर लीपकर, पीली मिट्टी से अपने केशों को धोना, घर में पुरुषों की हजामत बनवाना। तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जायेगा।" इतना कहने के बाद बृहस्पति देवता अन्तर्ध्यान हो गये। उस औरत ने साधु के कहे अनुसार सात बृहस्पतिवार वैसा ही किया। केवल कुछ ब्रहस्पतिवार ही बीते थे कि उस स्त्री का समस्त धन नष्ट हो गया।

स्वयं वह परलोक सिधार गयी। उधर उसके पति का माल से भरा हुआ जहाज समुद्र में डूब गया तथा उसने बड़ी कठिनाई से लकड़ी के तख्तों पर बैठकर अपने प्राण बचाये। वह रोता-धोता बड़ी कठिनाई से अपने नगर में वापिस पहुंचा। वहां आकर उसने देखा कि उसका सब कुछ नष्ट हो चुका है, उसकी लड़की बाहर बैठी रो रही है।

उस लड़की ने अपने पिता को सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। अब वह जंगल में जाकर लकड़ियां लाता तथा उन्हें बेचकर अपना व अपनी बेटी का पेट भरता था। मगर धन की कमी के कारण बड़ा दुःखी था; क्योंकि गुजारा मुश्किल से होता था। एक दिन उसकी लड़की ने उससे दही खाने की इच्छा प्रकट की, परन्तु वह इस योग्य ना था जो कि वह अपनी लड़की की इच्छा पूरी करता। वह उसे आश्वासन देकर जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगा।

वह बृहस्पतिवार का दिन था। बृहस्पति देव साधु वेश में आकर उसके विलाप का कारण पूछने लगे। व्यापारी ने कहा आप सब कुछ जानते हैं तथा उसने सम्पूर्ण वृतान्त साधु को कह सुनाया। बृहस्पति देव ने कहा—"तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति देव का अपमान किया था जिस कारण तुम्हारा यह हाल हुआ है लेकिन अब तुम

चिन्तित न हों। ईश्वर तुम्हें पहले से अधिक धनवान करेगा। तुम मेरे कहे अनुसार बृहस्पति देव की कथा व व्रत किया करो। दो पैसे का गुड़-चना मंगाकर जल के लोटे में थोड़ी-सी शक्कर डालकर चरणामृत बनाकर परिवार के सदस्यों को और कहानी सुनने वालों को बांट दो तथा स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करो। ईश्वर तुम्हारे सम्पूर्ण दुःख दूर करेंगे।"

साधु को खुश देखकर वह व्यापारी बोला-"मुझे इतना लाभ भी नहीं होता कि मैं दो पैसे की दही लाकर एकलौती पुत्री को खिला सकूं। उसको मैं प्रत्येक दिन झूठा आश्वासन देता रहता हूं। इसलिए मैं इस समय व्याकुल था।"

"बृहस्पतिवार को तुम्हें चार पैसे अधिक मिलेंगे, तब तुम अपनी पुत्री को दही भी खिलाना और कथा भी कहना। इससे तुम्हारे सब मनोरथ सिद्ध हो जायेंगे।" इतना कहकर बृहस्पति देवता अन्तर्ध्यान हो गए। धीरे-धीरे बृहस्पत का दिन भी नजदीक आ पहुंचा। व्यापारी ने जंगल से लकड़ियां लाकर शहर में बेचीं तो उसे उस दिन चार पैसे अधिक मिले। जिससे दो पैसे की दही लाकर पुत्री को दी तथा दो पैसे के गुड़-चने लाकर कथा कही। उसी दिन से उनके सम्पूर्ण दुःख दूर हो गये, परन्तु अगले बृहस्पतिवार को व्रत करना भूल गया।

अगले दिन उस नगर के राजा ने यज्ञ का आयोजन कराया था। इसी दिन उसने यह घोषण करवाई-"समस्त जनता मेरे यहां भोजन करे, जो कोई इस आज्ञा की अवहेलना करेगा उसे दण्ड मिलेगा।" राजा की आज्ञानुसार सभी लोगों ने वहीं भोजन किया, परन्तु वह व्यापारी व उसकी पुत्री तनिक देर में पहुंचे। राजा ने दोनों को अपने महल के भीतर ले जाकर भोजन कराया। जब वह दोनों भोजन करके वापिस जा रहे थे तो रानी की दृष्टि उस खूंटी पर पड़ी जिस पर उसका हार लटका था। उस खूंटी पर अब हार नहीं था। उसको विश्वास हो गया कि उसका हार उन दोनों ने ही चुराया है। उन्हें कैद में डलवा दिया गया।

कैदखाने में दोनों बाप-बेटी दुःखी हो गये, वहां उन्होंने बृहस्पति देव का स्मरण किया। बृहस्पति देवता साधु रूप में वहीं प्रकट हो गये तथा कहने लगे-

"भक्तराज! तुम पिछले सप्ताह बृहस्पति की कथा करनी भूल गये थे। इसी कारण तुम्हें यह दारूण दुःख प्राप्त हुआ है। अब तुम किसी भी प्रकार की चिन्ता मत करो। बृहस्पत के दिन तुम्हें कैदखाने के दरवाजे पर दो पैसे पड़े दिखाई देंगे। तुम वह पैसे उठाकर चने तथा मुनक्का मंगा लेना। फिर विधिपूर्वक बृहस्पत की कथा कराना। तुम्हारे समस्त दुःख दूर हो जायेंगे।"

बृहस्पत के दिन उसे कैदखाने के दरवाजे पर दो पैसे मिले। वहां से एक

औरत जा रही थी तो उसने उसे पुकारते हुए बृहस्पति देवता की कथा के लिये चना, मुनक्का लाने को कहा, तो उस औरत ने कहा—"मैं किसी बृहस्पति देवता को नहीं जानती। मेरे पास समय नहीं है, मेरे बेटे की शादी है और मैं अपनी बहू के कपड़े सिलवाने जा रही हूं।" यह कहकर वह औरत वहां से चली गयी। थोड़ी देर बाद वहां से एक और महिला निकली, व्यापारी ने उसको पुकारा और चना, मुनक्का लाने को कहा। वह सहर्ष तैयार हो गई, जबकि उसका पुत्र मर गया था और वह उसके लिए कफन खरीदने जा रही थी, परन्तु उसने सर्वप्रथम गुड़-चना-मुनक्का लाकर कथा सुन प्रसाद व चरणामृत ले, अपने पुत्र के लिए कफन खरीदा और फिर घर गयी।

जब वह अपने घर जा रही थी तो राह में उसके पुत्र की लाश को ले जाते उसके पड़ोसी मिले। तब उसने उनसे आग्रह किया—"आखिरी बार मुझे अपने लाल की सूरत तो देख लेने दो।" उसने अपने बच्चे की लाश के मुख में प्रसाद व चरणामृत डाला, उसका मृत बालक जीवित हो गया।

जो दूसरी स्त्री थी जिसने बृहस्पति देवता का अपमान किया था, जैसे ही वह कपड़े लेकर घर पहुंची तब उसका पुत्र घोड़ी चढ़ रहा था। घोड़ी ने पछाड़ मारी कि उसका पुत्र नीचे गिरते ही मर गया। वह स्त्री समझ गयी कि यह सब फल मुझे बृहस्पति का अपमान करने से मिला है। वह स्त्री पुनः जेलखाने के द्वार पर जाकर व्यापारी से क्षमा मांगकर बृहस्पति की कथा सुनाने का आग्रह करने लगी। तब व्यापारी बोला—"माता तुम चिन्ता मत करो। तुम अगले बृहस्पतिवार को आना तथा कथा सुनना तब तक तुम अपने पुत्र के शव को इत्र, फूल, घी आदि सुगन्धित चीजों में रखो।" स्त्री ने ऐसा ही किया।

अगले बृहस्पतिवार को वह फिर जेलखाने में चना-मुनक्का व एक लोटा जल का लेकर गयी तथा उसने श्रद्धा के साथ कथा सुनी। घर आकर उसने प्रसाद व चरणामृत अपने पुत्र के मुख में डाल दिया, वह पुनः जीवित हो गया।

उसी दिन रात्रि में राजा को स्वप्न में बृहस्पति देव ने व्यापारी को छोड़ देने की आज्ञा दी और कहा—"तेरी रानी का हार खूंटी पर ही लटका हुआ है।"

सुबह-सवेरे रानी ने अपना हार उसी खूंटी पर टंगा देखा। तब राजा ने व्यापारी को बुला उससे क्षमा याचना कर, उसे अपना आधा राज-पाट दे दिया तथा व्यापारी की बेटी का उच्चकुल में विवाह कराकर उसे बहुत-सा दहेज दिया।

(आरती श्री बृहस्पतिदेव जी की)

ॐ जय बृहस्पति देवा, स्वामी जय बृहस्पति देवा।
क्षण-क्षण भोग लगाऊं, कदली फल मेवा॥
ॐ जय...।
ॐ तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
जगत पिता जगदीश्वर, करूणानिधि स्वामी॥
ॐ जय...।
ॐ चरणामृत निज निर्मल सब पातक हर्त्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्त्ता॥
ॐ जय...।
ॐ तन मन धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रगट तब होकर, आकर द्वार खड़े॥
ॐ जय...।
ॐ दीन दयाल दयानिधि भक्तन हितकारी।
पाप दोष दुःख हर्त्ता, जग बन्धन हारी॥
ॐ जय...।
ॐ सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारी।
विषय विकार मिटाओ, सन्तन सुखकारी॥
ॐ जय...।
ॐ जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावै।
ज्येष्ठानन्द आनन्द कंद, निश्चित फल पावै॥
ॐ जय...।

❑

शुक्रवार व्रत कथा

एक बुढ़िया के सात पुत्र थे। छः पुत्र कमाने वाले तथा एक पुत्र निकम्मा था। बुढ़िया अपने छः पुत्रों को अच्छा भोजन कराती तथा जूठन अपने सातवें पुत्र को देती थी। उसकी पत्नी के उसे बताने पर उस सातवें पुत्र ने विश्वास नहीं किया तथा खुद देखकर ही विश्वास करने को कहा।

जब उसने अपनी मां को देखा कि वह छः पुत्रों को अच्छा भोजन खिलाकर बचा हुआ उसे दे रही है, तो वह बोला—"मैं खाना नहीं खाऊंगा, मुझे परदेश जाना

है।" मां बोली–"कल का जाता आज चला जा।" वह अपनी पत्नी से जाकर बोला–"मैं परदेश जा रहा हूं, तुम अपने धर्म का पालन करना।" बहू उस समय कण्डे थाप रही थी, उसने अपने पति से उसकी निशानी मांगी। जब उसके पति ने उसे अपनी अंगूठी देते हुए उसकी निशानी मांगी, तब बहू ने गोबर भरा हाथ उसकी पीठ पर थाप दिया।

वह वहां से दूर देश चला गया। वहां एक साहूकार की दुकान थी वहां जाकर कहने लगा–"मुझे नौकरी पर रख लो।" साहूकार ने उसे रख लिया वह सुबह सात बजे से रात्रि के बारह बजे तक कार्य करता था। थोड़े ही दिन में उसने दुकान का सारा कार्य संभाल लिया। सेठ ने काम देखकर उसे आधे मुनाफे का हिस्सेदार बना लिया। 12 वर्षों के बाद वह कारोबार उस लड़के के भरोसे छोड़कर बाहर चला गया।

इधर सास-ससुर बहू को दुःख देने लगे। उसे जंगल लकड़ी लेने भेजते, सारा घर का कार्य कराते, रोटियों से जो भूसी निकलती उसकी रोटी उसको देते। एक दिन वह लकड़ी लेने जंगल जा रही थी, मार्ग में उसे बहुत-सी स्त्रियां संतोषी माता का व्रत करती दिखाई दीं। वह वहां खड़ी हो कथा सुन, पूछने लगी–"आप सब यह किस देवता की पूजा कर रही हो तथा इसके करने से क्या फल मिलता है?"

तब उनमें से एक स्त्री बोली–"यह संतोषी माता का व्रत है। इसके करने से गरीबी का नाश होता है। लक्ष्मी का आगमन होता है, चिन्तायें मिटती हैं, सुख मिलता है, मन की खुशी व शान्ति मिलती है, कुंवारी कन्याओं को अच्छा वर मिलता है, राजद्वार में अधिक दिन से मुकदमा चल रहा हो तो जल्दी ही निपट जाता है, कलह-कलेश मिटते हैं, सुख-शान्ति का घर में वास होता है, धन व जायदाद का लाभ होता है, रोग मिटते हैं, निपुत्र को पुत्र की प्राप्ति होती है, जिसका पति बाहर गया हो तो जल्दी ही घर लौटता है तथा माता संतोषी सभी की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। सवा आने का या इससे भी अधिक या कम सवाया लेकर गुड़-चना लेना। हर शुक्रवार को निराहार रहकर कथा सुनायें, यदि कोई साथ न हो तो घी का दीपक जलाकर उसे कथा सुनायें, क्रम टूटे नहीं, जब तक कार्य सिद्ध न हो तब तक व्रत रखें। कार्य सिद्ध हो जाने पर व्रत का उद्यापन करें। तीन मास में माता इच्छा पूरी कर देती हैं। यदि किसी के ग्रह खोटे हैं तो तीन वर्ष में मां अवश्य कार्य सिद्ध कर देती हैं।

उद्यापन में अढ़ाई सेर का खाजा व इसी परिणाम के खीर और चने का शाग करना, आठ लड़कों को भोजन कराना, जहां तक हो घर-कुटुम्ब के लड़के लेना

न मिलें तो ब्राह्मणों के लड़कों को भोजन कराना, उन्हें भोजन करा यथा शक्ति दक्षिण देना। इस दिन घर में कोई खटाई न खाये।" यह सुनकर बुढ़िया के लड़के की बहू चल दी। मार्ग में लकड़ी के बोझ को बेच दिया और उन पैसों का गुड़-चना ले मां संतोषी का व्रत व पूजन करने के लिए मां के मन्दिर में पहुंचकर मां के चरणों में लोटने लगी। मां से बोली—"हे मां! मैं निपट अज्ञानी हूं। मैं व्रत के नियम नहीं जानती। मैं बहुत दुःखी हूं। हे माता! जग जननी! मेरा दुःख दूर करो। मैं तुम्हारी शरण में हूं।"

माता को उस पर दया आई, एक शुक्रवार बीता, दूसरे को उसके पति का पत्र आया, तीसरे को उसका भेजा पैसा आ पहुंचा। यह देख जेठ-जेठानी मुंह सिकोड़ने लगीं। इतने दिनों में यदि पैसा आया तो क्या, वह सरलता से कहती— "रुपया-पैसा आये तो सबका ही भला है।" ऐसा कहकर रोती हुई मां के मन्दिर में जाकर मां के चरणों में लोटने लगी। और बोली—मां मैंने तुमसे पैसा नहीं अपने स्वामी के दर्शन व सेवा मांगी थी। तब मां ने खुश होकर कहा—"जा तेरा पति आयेगा।" बहू खुशी-खुशी घर का काम करने लगी।

इधर संतोषी मां बुढ़िया के पुत्र को स्वप्न में दिखीं और बोलीं—"हे भोले पुत्र! तेरी घरवाली बहुत दुःखी है, जा-जाकर अपनी पत्नी की सुध ले।" वह बोला—"मां! जाना तो चाहता हूं, परन्तु कैसे जाऊं जाने का कोई मार्ग नजर नहीं आता।" मां बोलीं—"मेरी बात मान सवेरे स्नान कर, संतोषी मां का नाम ले घर का दीपक जला और दण्डवत् प्रणाम कर दुकान पर जा बैठना, तेरा सारा लेन-देन चुक जायेगा।" यह कहकर मां अन्तर्ध्यान हो गईं। उसने ऐसा ही किया तथा ऐसा कर दुकान पर जा बैठा। शाम तक सब लेन-देन चुक गया। धन का ढेर लग गया। प्रसन्न हो घर जाने के वास्ते कपड़ा-गहना खरीदने लगा और घर की तरफ रवाना हुआ। उधर बहू बेचारी जंगल से लकड़ी लाती हुई मन्दिर पर विश्राम करती थी। वह तो उसका रोज रुकने का स्थान था। दूर से धूल उड़ती देखकर मां से बोली—"मां! यह धूल कैसी उड़ रही है?" माता कहती हैं—"तेरा पति आ रहा है बेटी! अब तू इन लकड़ियों के तीन बोझ बना ले, एक नदी किनारे पर रख, दूसरा मेरे मन्दिर पर और तीसरा अपने सिर पर रख। लकड़ी देख उसके मन में मोह पैदा होगा, वह यहां रुक कर भोजन बना-खाकर मां से मिलने जायेगा। तब तू लकड़ी का बोझ आंगन में डालकर जोर से तीन आवाजें लगाना—भूसी की रोटी दो, नारियल के खोपरे में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है?"

"बहुत अच्छा!" कहकर उसने लकड़ियों के तीन बोझ बना लिए। एक नदी

किनारे, दूसरा मन्दिर पर तथा तीसरा सिर पर रखकर चल दी। इतने में वह आ पहुंचा। लकड़ी देख उसकी इच्छा भोजन खाने की हुई। इस प्रकार वह भोजन बना-खाकर अपने घर गया। उसी समय बहू उतावली-सी लकड़ी का बोझ लिए आती है और आंगन में लकड़ी डालकर जोर से आवाज लगाती है-"भूसी की रोटी दो, नारियल के खोपरे में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है?"

सास बाहर आकर अपने द्वारा दिये कष्टों को भुलाने हेतु कहती है-"तेरा ही मालिक तो आया है, आ बैठ कपड़े-गहने पहन, मीठा भात खा।" आवाज सुनकर बुढ़िया का बेटा बाहर आकर उसके हाथ में अंगूठी देख व्याकुल हो पूछता है-मां! यह कौन है? बुढ़िया कहती है-यह तेरी ही स्त्री है। जब से तू गया है तब से यूं ही पूरे गांव में भटकती फिरती है। काम-काज कुछ करती नहीं। समय पर आकर खा जाती है, अब तुझे देखकर भूसी की रोटी मांग रही है। वह लज्जित हो बोला-ठीक है मां! मैंने तुम्हें भी देखा है, इसे भी देखा है। मुझे दूसरे घर की ताली दे दो। मैं उसमें रहूंगा।

बुढ़िया ने कहा-जैसी तेरी मर्जी। इतना कहकर चाबी का गुच्छा पटक दिया। उसे लेकर वह दूसरे मकान में आया। एक दिन में ही वहां राजा के से ठाट-बाट हो गये। वह सुखपूर्वक रहने लगी। जब अगला शुक्रवार आया तो वह अपने पति से बोली-मुझे मां का उद्यापन करना है। वह बोला-शोक से करो। वह उद्यापन की तैयारी करने लगी। जेठानी के लड़कों को भोजन के लिए कहने गयी। जेठानी ने स्वीकार किया, परन्तु पीछे लड़कों को सीखा दिया कि देखो रे! भोजन के समय सब खटाई मांगना। लड़कों ने वहां जाकर पेट भरकर खीर-पूड़ी खाईं, परन्तु याद आते ही खटाई मांगने लगे। बहू बोली-नहीं खटाई किसी को नहीं दी जायेगी। तब बच्चे पैसे मांगने लगे। भोली बहू कुछ नहीं जानती थी उसने बच्चों को पैसे दे दिये। लड़के उसी समय इमली खरीदकर खाने लगे।

यह देखकर बहू पे माता ने कोप किया। उसके पति को राजा के दूत पकड़ ले गए। यह देख जेठानी मनमाने खोटे वचन कहने लगी। बहु पर यह सब सहन नहीं हुआ। वह मां के मन्दिर में जाकर मां से बोली-"मां-हँसाकर क्यों रुलाती हो।" मां बोलीं-"पुत्री! उद्यापन करके तुमने मेरा व्रत भंग किया है। इतनी जल्दी सब बातें भुला दीं।" वह बोली-"मां! मुझे क्षमा कर दो। मैं बच्चों की बातों में आ गयी थी। अब ऐसा ना होगा। मैं दोबारा उद्यापन करूंगी।" मां बोलीं-"अब भूल मत करना।" वह बोली-"अब भूल ना होगी, बताओ अब वे कैसे आयेंगे?" मां बोलीं-"जा पुत्री! घर जा तेरा पति तुझे मार्ग में आता दिखेगा।" उसे राह में

अपना पति आता मिला, वह बोली–"तुम कहां गये थे?" वह बोला–"इतना धन जो कमाया था उसका टैक्स राजा को भरने गया था।" वे दोनों घर चले गये। अगले शुक्रवार फिर उसने उद्यापन किया! जेठानी के बच्चों को बुलाकर लायी। बच्चे खटाई मांगने लगे। बहू ने मना कर दिया तथा ब्राह्मण के लड़कों को बुला लायी। उन्हें भोजन कराकर दक्षिणा स्वरूप एक-एक मीठा फल दिया। इससे मां प्रसन्न हुईं। उसके मां की कृपा से नवें मास में सुन्दर पुत्र पैदा हुआ। अपने पुत्र को लेकर प्रत्येक दिन मां के मन्दिर में जाती। एक दिन मां ने सोचा–यह तो रोज आती है। आज क्यों ना मैं भी इसके घर चलूं। मां ने भयानक रूप बनाया। गुड़ और चने से सना मुंह, सूअर के समान होंठ–उस पर मक्खियां भिनकती हुईं। जैसे ही द्वार पर मां ने कदम रखा सास चिल्लाने लगी–"अरे, देखो कोई चुड़ैल चली आ रही है लड़कों, इसे भगाओ नहीं तो यह सबको खा जायेगी।" लड़के उन्हें भगाने लगे, डर कर दरवाजे, खिड़कियां बन्द करने लगे। जब बहू ने देखा तो बच्चे को दूध से हटाती हुई भागी आती है। उसकी खुशी को देख सास चिल्लाई–"अरी रांड! इसे देखकर कैसी उतावली हो रही है कि बच्चे को पटक दिया।" बहू बोली–"मां जी! ये संतोषी माता हैं, जिनका मैं व्रत करती हूं।" इतना कहकर उसने घर के सारे दरवाजे-खिड़कियां खोल दीं। मां की कृपा से लड़के ही लड़के नजर आने लगे। सब मां के चरणों में गिरकर माफी मांगने लगे। जैसे मां ने उस बहू का भला करा, ऐसा सब का करे।

(संतोषी माता जी की आरती)

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता।
अपने सेवक जन की, सुख सम्पत्ति दाता॥
जय संतोषी माता...।
सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, तन सिंगार लीन्हों॥
जय संतोषी माता...।
गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हंसत करूणामयी, त्रिभुवन जन मोहे॥
जय संतोषी माता...।
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरे प्यारे।
धूप, दीप, मधु मेवा भोग धरे न्यारे॥
जय संतोषी माता...।

गुड़ और चना परम प्रिय, तामे सन्तोष किये।
संतोषी कहलाई भक्तन विभव दिये॥
जय संतोषी माता...।
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत मोही॥
जय संतोषी माता...।
मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक, चरणन सिर नाई॥
जय संतोषी माता...।
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसे हमारे, इच्छित फल दीजै॥
मां संतोषी की आरती जो कोई नर गावै।
मैया प्रेम सहित गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे।
जय संतोषी माता...।

□

शनिवार व्रत कथा

एक बार की बात है कि सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन नौ ग्रहों में लड़ाई हो गयी। वे एक-दूसरे को बड़ा बता रहे थे। देवराज इन्द्र की सभा में जाकर उन्हें निर्णय करने को कहने लगे। इन्द्र देवता ने घबराकर सबको विक्रमादित्य के दरबार में जाने की सलाह दी। सभी ग्रह विक्रमादित्य के दरबार में पहुंचे।

ग्रहों की बात सुनकर विक्रमादित्य विचार करने लगे। उन्होंने युक्ति सोची। सोना, चांदी, कांस्य, पीतल, रांगा, जस्ता, अभ्रक, लोहा आदि नवों धतुओं के नौ आसन बनवाये तथा सोने का सबसे आगे और आखिरी में लोहे का सिंहासन रखा। इसके बाद राजा ग्रहों से बोले-"सभी अपना-अपना सिंहासन ग्रहण करें, जो सबसे आगे है वह सबसे बड़ा तथा बाद वाला सबसे छोटा समझें।" शनि देव ने लोहे का आसन सबसे पीछे देखा तो समझ गये कि-मुझे राजा ने सबसे छोटा बताया है। उन्होंने कहा-"हे राजा! तू नहीं जानता, सूर्य एक राशि पर एक महीने, चन्द्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति तेरह महीने, बुध और शुक्र एक-एक महीने और

राहु और केतु उल्टे चलते हुए केवल अठ्ठारह महीने तक एक राशि पर रहते है, परन्तु मैं एक राशि पर तीस महीने तक रह सकता हूं। जब श्री रामचन्द्र जी पर साढ़ेसाती आयी तो उनको बनवास हो गया तथा रावण पर आयी तो भगवान् श्री रामचन्द्र जी एवं लक्ष्मण जी ने सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी तथा रावण के पूरे कुल का नाश हो गया। अतः राजा! अब तू भी सावधान रहना।" इतना कहकर वह वहां से क्रोधित हो अपने स्थान को रवाना हो गये। बाकी सब भी अपने-अपने स्थानों को चले गये।

शनिदेव व्यापारी का रूप धारण करके अनेक तरह के घोड़ों के साथ विक्रमादित्य की राजधानी में पहुंचे। राजा ने अपने लिए एक घोड़ा पसन्द किया तथा सवारी हेतु चल पड़ा। घोड़े ने राजा को एक घने वन में छोड़ दिया तथा अदृश्य हो गया। राजा भटकता-भटकता शहर में पहुंचा व एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गया। उसने अपना नाम बीका बताया। सेठ की उस दिन अधिक बिक्री हुई। सेठ उसे भगवान पुरुष समझ भोजन कराने अपने घर ले गया। भोजन करते समय राजा की निगाह खूंटी पर पड़ी, खूंटी हार निगल रही थी। उस हार की चोरी का इल्जाम राजा पर लगा। राजा विक्रमादित्य को लेकर सेठ राजा के पास न्याय लेने पहुंचा। सेठ की बात सुनकर राजा ने विक्रमादित्य को चौराहे पर चौरंगा कर देने का आदेश दिया। राजा की आज्ञानुसार विक्रमादित्य को चौरंगा कर दिया गया।

एक तेली उसे अपने घर ले गया और उसे अपने कोल्हू पर बैठा दिया। जब राजा पर बुरी दशा समाप्त हो गई तो राजा एक दिन बरसात में राग मल्हार गाने लगा। वहां की राजकुमारी उस आवाज पर मोहित हो गयी तथा अपनी दासी को पता करने भेजा कि कौन राग मल्हार गा रहा है? दासी ने आकर चौरंगा के विषय में राजकुमारी को बताया। राजकुमारी ने अनसन करना शुरू कर दिया। रानी को पता लगा तो वह अपनी पुत्री के पास आकर उसके दुःख का कारण पूछने लगी। राजकुमारी ने चौरंगा के साथ विवाह की प्रतिज्ञा के विषय में अपनी मां को बता दिया।

राजा-रानी दोनों ने राजकुमारी को बहुत समझाया परन्तु वह नहीं मानी। अन्त में राजा ने तेली को बुलाया और कहा-"तेरे घर में जो चौरंगा है, मैं उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता हूं।" तेली अपने घर आ विवाह की तैयारी करने लगा। चौरंगा और राजकुमारी मनभावनी का विवाह हो गया। विक्रमादित्य और राजकुमारी उस रात महल में सोये, तभी शनि देवता ने विक्रमादित्य से स्वप्न में पूछा-"हे राजन्! कहो तुमने मुझको छोटा बतलाकर कितने दुःख उठाये हैं?"

तब महाराज विक्रमादित्य ने शनि देवता से क्षमा मांगी। शनि देवता ने खुश होकर राजा को दुबारा हाथ-पैर दिये। विक्रमादित्य ने शनि देवता से विनती की-"महाराज! मेरी एक प्रार्थना और स्वीकार करें कि जैसा दुःख आपने मुझे दिया है वैसा किसी को न देना।" शनि देवता ने कहा-"राजन्! हम तुम्हारी विनती स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति मेरी कथा सुनेगा तथा प्रातःकाल चिड़ियां जिमायेगा, उसके समस्त मनोरथ पूर्ण होंगे।" इतना कहकर शनि देवता अन्तर्ध्यान हो गये।

प्रातःकाल जब राजकुमारी की आंख खुली तो राजा के हाथ-पैर देखकर आश्चर्यचकित रह गयी। उसे चकित देखकर राजा ने सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। और यह भी बताया कि-मैं उज्जैन नगरी का राजा विक्रमादित्य हूं। नगर भर में खुशी की लहर दौड़ गयी। जब नगर सेठ ने यह खबर सुनी तो वह विक्रमादित्य के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा-"मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। अतएव आप जो चाहे मुझे दण्ड दें।" राजा विक्रमादित्य बोले-"सेठ! मुझ पर शनि देवता का कोप था, इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं था।"

सेठ ने कहा-"किन्तु, मुझे तभी शान्ति होगी, जब आप लोग मेरे घर चलकर प्रीतिपूर्वक भोजन करेंगे।"

सेठ महाराजा विक्रमादित्य को अपने घर ले गया और अत्यधिक उत्तम व स्वादिष्ट भोजन कराया। जब महाराज भोजन कर रहे थे, तब उन्होंने एक आश्चर्य की बात सबको दिखाई। सबने देखा खूंटी हार उगल रही थी। महाराज विक्रमादित्य बोले-"मुझ पर जब शनि की दशा थी तो खूंटी ने हार निगल लिया था, परन्तु शनि की दशा अब समाप्त हो गई है, तो खूंटी ने हार उगल दिया है।"

भोजन समाप्त होने के उपरान्त सेठ ने अपनी पुत्री का विवाह विक्रमादित्य के साथ कर दिया। महाराज विक्रमादित्य राजकुमारी मनभावनी व सेठ की कन्या श्री कांवरी सहित राजधानी को रवाना हो गए। नगरवासियों ने उनका स्वागत किया।

राजा विक्रमादित्य ने नगर में यह घोषणा करवायी कि शनि देव सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। जो कोई शनि देव की कथा पढ़ता तथा सुनता है, उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं।

(शनिदेव की आरती)

जय जय शनिदेव महाराज जन संकट हरने वाले।
तुम सूर्य पुत्र बलधारी भय मानत दुनिया सारी जी॥
साधत हो दुर्गम काजा॥जन०॥
तुम धर्मराज के भाई, जमराज क्रूरता पायी जी।
धन गर्जन करत आवाजा॥जन०॥
तुम नीलदेह बिकराटी, भैंसा जर करत सवारी जी।
कर लोह गदा रहे साज॥जन०॥
तुम भूपति रंक बनाओ, निर्धन सिर छत्र धराओ जी।
समरथ हो करन काम काज॥जन०॥
राजा कौ राज मिटाऔ, निज भगतै फेरि दिवाओ जी।
जग है गये जै जै कार॥जन०॥
हम सेवक तुम हौ स्वामी, चरनन सिर करत नमानी जी।
पूरी जिन जन की आस॥जन०॥
यह पूजा देव तिहारी, हम दीन भाव ते पारी जी।
अंगीकृत करौ कृपालु॥जन०॥
प्रभु सूधि दृष्टि निहारौ, छमियै अपराध हमारौ जी।
है हाथ तिहारे लाज॥जन०॥
हम बहुत विपत्ति घबराये, सरनागति तुमरी आये जी।
प्रभु सिद्ध करौ सब काज॥जन०॥
यह विनय सुकुन्द सुनावै, नित जै जै कर मनावै जी।
तुम देव नथ सिरताजा॥जन०॥

रविवार व्रत कथा

एक वृद्ध स्त्री का नियम था कि प्रत्येक रविवार को सुबह लीप कर स्नानादि करके ईश्वर को भोग लगाने के पश्चात् भोजन किया करती थी। ऐसा करने से उस पर हमेशा ईश्वर की दयादृष्टि रहती थी। उसका जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत हो रहा था। उसके घर में कोई कमी नहीं थी।

उसकी पड़ोसिन ने सोचा कि—यह मेरी गाय का गोबर ले जाती है इसीलिए सम्पन्न है। यह सोचकर उस पड़ोसिन ने गाय को घर में बांधना शुरू कर दिया।

जिस कारण वह वृद्धा ना तो घर लीप सकी और ना ही भोजन बनाकर भगवान को भोग लगा सकी, इस तरह वह भूखी-प्यासी रहकर भूखी ही रात्रि में सो गई।

भगवान श्री हरि ने उससे स्वप्न में भोजन न बनाने व भोग न लगाने का कारण पूछा तो उसने गोबर न मिलने का वृतान्त कह सुनाया। तब भगवान श्री हरि बोले—"हे माता! तू चिन्ता मत कर। मैं तुझे ऐसी गाय देता हूं जो कि सब मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली है।"

स्वप्न में उस वृद्धा को वरदान देकर भगवान श्री हरि अन्तर्ध्यान हो गये। जब प्रातःकाल वह बूढ़ी स्त्री उठी तो क्या देखती है कि उसके आंगन में एक सुन्दर गाय बंधी हुई है तथा उसके साथ एक बछड़ा भी है। वृद्धा ने उस गाय और बछड़े को प्रमुख द्वार पर बांध दिया।

उसकी पड़ोसिन ने जब वृद्धा के द्वार पर गाय और बछड़ा बंधा देखा तो उसे बड़ी ईर्ष्या हुई, परन्तु वह तभी चकित रह गयी, क्योंकि उस गाय ने सोने का गोबर दिया था। तब वह उस गाय का सोने का गोबर उठाकर ले गयी और उसकी जगह अपनी गाय का गोबर रख गई।

वृद्धा को उसकी करतूत का कुछ पता ना चला। जब श्री हरि भगवान ने देखा कि मेरी भक्त इस प्रकार ठगी जा रही है तो उन्होंने सायंकाल को बड़ी जोर से आंधी चला दी। वृद्धा ने आंधी का जोर देखकर गाय व बछड़े को घर में भीतर ही बांध लिया। प्रातःकाल वृद्धा ने जब सोने का गोबर देखा तो आश्चर्यचकित रह गई। तब से वह गाय को भीतर ही बांधने लगी।

उधर पड़ोसिन को सोने का गोबर मिलना बन्द हो गया। तब उसने ईर्ष्यावश राजा के दरबार में जाकर शिकायत की। उसने कहा—

"महाराज! हमारे पड़ोस में एक वृद्धा रहती है। उसके पास एक ऐसी गाय है जो प्रतिदिन सोने का गोबर करती है। वह महल में रहने योग्य है। सोने से आप राज्य के कई कार्य करवा सकते हैं, परन्तु बुढ़िया को भला इतने सोने की क्या जरूरत।"

उस महिला की बात सुनकर राजा ने अपने सिपाहियों को गाय लाने की आज्ञा दी। सिपाही वृद्धा के घर पहुंचे तथा बलपूर्वक उसकी गाय खोल लाये। राजा ने गाय की सुरक्षा हेतु सिपाहियों का प्रबन्ध कर दिया तथा यह कह दिया कि—मेरी आज्ञा के बिना गोबर को कोई भी न उठावे।

राजा प्रसन्नता के कारण पूरी रात सो भी नहीं पाया। प्रातःकाल जब वह सोने का गोबर देखने की लालसा में उस कमरे में आया जहां गाय बंधी हुई थी, उसने देखा वहां गाय ने पूरा कमरा गन्दा कर रखा था। यह देखकर राजा के क्रोध की सीमा न रही। उसने उस वृद्धा को बुलाने की आज्ञा दी। सिपाही उस वृद्धा को बुला लाये, तब राजा ने पूछा—"हे माई! मैंने तो सुना था कि तुम्हारी गाय सोने का गोबर करती है, परन्तु अब देखता हूं कि सब झूठ है। यह क्या बात है? यह सत्य मुझे बताओ।"

बुढ़िया ने कहा–"महाराज मेरा नियम है कि रविवार के दिन प्रातःकाल उठकर स्नानादि करके गाय के गोबर से चौका लीपकर भोजन तैयार किया करती हूं। फिर ईश्वर को भोग लगाकर स्वयं भोजन करती हूं, क्योंकि ऐसा करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं, तब सब इच्छाएं पूर्ण होती हैं, निपुत्र को पुत्र, धन की इच्छा रखने वाले को धन, रोगी को स्वास्थ्य व मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्रदान करते हैं। एक दिन मेरी पड़ोसिन ने मुझे गाय का गोबर देने से मना कर दिया। जिस कारण मैं घर लीप न सकी, भोजन ना बनाने के कारण भोग भी नहीं लगाया और मैं रात्रि में भूखी–प्यासी ही सो गई। भगवान ने प्रसन्न होकर मुझे दर्शन दिये। मैं प्रातःकाल जब उठी तो मुझे द्वार पर सोने का गोबर देने वाली गाय बंधी मिली। ईर्ष्यावश मेरी पड़ोसिन ने आपको सूचित किया जिस कारण मेरी गाय आपके पास है।" राजा ने सब वृतान्त जानकर उस वृद्धा को गाय वापिस कर दी और उसकी पड़ोसिन को उचित दण्ड दिया तथा नगर में ढ़िंढोरा पिटवा दिया कि सब रविवार का व्रत किया करें।

(भगवान सूर्य जी की आरती)

जय कश्यप नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन।
त्रिभुवन तिमिर निकन्दन, भक्त हृदय चन्दन॥
सप्त अश्वरथ पूरित, एक चक्रधारी।
दुःखहारी, सुखकारी। मानस मल हारी॥
ॐ, जय कश्यप...।

सुर मुनि भूसुर वंदित, विमल विभवशाली।
अघ दल दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली॥
ॐ जय कश्यप...।

सकल सुकर्म प्रसविता सविता शुभ कारी।
विश्व विलोचन मोचन, भव-बंधन-भारी॥
ॐ जय कश्यप...।

कमल समूह विकासक, नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज इरत आते, मनसिज संतापा॥
ॐ जय कश्यप...।

नेत्र व्याधि हर सुखर भू–पीड़ा-हारी।
वृष्टि विमोचन संतत परहित व्रतधारी॥
ॐ जय कश्यप...।

सूर्यदेव करूणाकर, अब करूणा कीजै।
हर अज्ञान सभी अब; तत्व ज्ञान दीजै॥
ॐ जय कश्यप...।





अध्याय-16

सोलह सोमवार व्रत-कथा

पूजन-विधि

'देशकालौ संकीर्त्य अमुक कामना सिद्धाय व्रतं इदं करिष्ये।' इस प्रकार का संकल्प करने के पश्चात् 'महाकाव्य नमः शूलिने नमः सम्भूते नमः' इन मन्त्रों सहित षोडशोपचार पूजा करके सपरिवार देवता का पूजन करें। पूर्व आदि के क्रम से, 'ब्राह्मण पूजयामि' विष्णु पूजयामि, स्कंधं पूजयामि, महाकालं पूजयामि' इस तरह आह्वान आदि उपचार से पूजन करके 'चण्डाय नमः' मन्त्र से ईशान कोण में चण्डी की पूजा करें, तत्पश्चात् प्रार्थना करें। निम्न मंत्र का सस्वर उच्चारण करें—

मन्त्र—

दश भुजाय त्रिनेत्राय पंच वक्त्राय शूलिने।
श्वेत वस्त्राय रूपाय सुश्वेताभरणाय च।
शंकराय महेशाय उमासहिताय वर्तमानः
त्राहिमां कृपया देवशरणः भव महेश्वर।

इस प्रकार प्रार्थना करके **'नन्दकेशवाराय नमः'** इस मन्त्र से आगे नन्दकेश्वर की पूजा करें तदनन्तर फूल लेकर अंग पूजा करें।

विधि—देवाधि देवाय नमः पादौ पूजयामि शंकराय नमः जघे पूजयामि, शिवाय नमः जानुनीं पूजयामि, शूलपाणये नमः कंठं पूजयामि स्थान वैनमः स्तनीं पूजयामि नीलकंठाय नमः कंठं पूजयामि स्थान वैनमः स्तानीं पूजयामि, श्री शिवाय नमः मुख पूजयामि, त्रिनेत्राय नमः नेत्रं पूजयामि, शशि भूषनाय नमः मुकुट पूजयामि, देवाधि देवाय नमः सर्वांग पूजयामि।

उद्यापन

व्रत की पूर्णता के लिए उद्यापन अवश्य करना चाहिए। चित्त-वित्त (धन और जीवन) यह सब चल है, इस बात को समझकर यत्नपूर्वक व्रत का उद्यापन करें

और बैल के सहित सुवर्ण के महादेव पार्वती यथाशक्ति बनाकर, उसमें वित्त शाटयान करें और शिवलिंगतोभद्र बनाकर, जल से भरा हुआ और दो सफेद कपड़ों से ढका हुआ कलश रखें और वेणुमय ताम्र पात्र को कलश पर रखकर उस कलश को उत्तम मंडल में धरें। उसी कलश के ऊपर पार्वती सहित महादेव को स्थापित करके पूर्वोक्त मंत्रों से पूजा कर, यज्ञोपवीत, दुपट्टा, नाना प्रकार की खाने की वस्तुएं तथा धान्य चढ़ावें, पुष्प तथा पत्तों का मंडप सजावें। रूई की शय्या और दर्पण देवता के सामने रक्खें। और गीत और वाद्य के शब्दों से रतजगा करें और अपने गृह के अनुसार अग्नि स्थापना करें। तत्पश्चात् मन्त्रों द्वारा पलाश और छोंकरा की लकड़ी से एक सौ आठ बार चावल, तिल, घी से अलग-अलग हवन करें। तत्पश्चात् पूर्णाहुति कर स्विस्ठकृतादि करके हवन के अन्त में समोहित हो सपत्नीक गुरु की पूजा, वस्त्र, आभूषण, श्रेष्ठ ग्रह-सामग्री और सफेद कपिला सुशीला दूध देने वाली सवत्सारत्न पुच्छा घण्टा आभूषणों से भूषित दक्षिणा सहित गऊ "शिबों ते प्रथिताम" यह कहकर दें और यह मन्त्र बोलें-

धेनुर्वे जोगतां माता नित्य विष्णुपदे स्थिता।
सवत्साचमया दत्ता पीयतां में सदा शिवः।

तत्पश्चात् उत्तम तेरह ब्राह्मणों को भोजन कराकर उसको दक्षिणा सहित वस्त्र अलंकार छत्र दें और ताम्र पात्र, पकवान, फल और नाना प्रकार के भक्ष्य से युक्त तेरह घट ब्राह्मणों को दें। पूजा किये हुए देवता सम्पूर्ण सामग्री सहित देवता को तुम ग्रहण करो, जिससे हमारा व्रत पूर्ण हो और सदा शिव मुझ पर प्रसन्न हों, तीनों जगत के स्वामी को मैं ग्रहण करता हूं। शान्ति और कल्याण हो। यह कहकर ब्राह्मण मूर्ति को ग्रहण करे। हे देव! इस व्रत को मैंने सदा भक्ति से किया है। इसमें कुछ न्यून हो गया हो तो वह परिपूर्ण हो। इस प्रकार देवता और ब्राह्मण की पुनः-पुनः प्रार्थना करके धर्मयुक्त हो, शिष्ट-इष्ट मित्र बांधवों सहित भोजन करें। जो कोई मनुष्य इस विधान से इस व्रत को करता है, वह जिन-जिन कामनाओं को चाहता है, उन्हें पाता है। दाता, सुखी तेजस्वी तीनों लोकों में विख्यात होकर अन्त में उत्तम विमान में बैठकर सोमलोक को जाता है और जब तक सौ मनु भोग करते हैं तब तक सोमलोक में भोग करता है। तत्पश्चात् शिवलोक में जाकर भगवान शंकर के साथ सुख भोगता है और शम्भू रूप से क्रीड़ा करता हुआ फिर जन्म को नहीं पाता है। इस सोमव्रत को सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज ने किया था और बड़े-बड़े धर्मात्माओं, राजाओं ने भी इस व्रत को किया है। कोई इस गुप्त इतिहास को पढ़ता या सुनाता है और भक्तिपूर्वक दान देता है वह सम्पूर्ण पापों से विमुख हो, शिव गणों के साथ उत्तम विमान पर चढ़कर शिवपुरी को जाता है।

माहात्म्य

अश्वपति प्रदेश में भगवान शंकर का एक बहुत बड़ा सोने का मन्दिर था। उस मन्दिर का पुजारी बड़ा धूर्त तथा नशेबाज था। जो लोग मन्दिर में भगवान् के दर्शन के लिए आते थे उनको पहले नशीली चीजें खिला देता था और फिर उनके पैसे आदि सब छीन लेता और इस तरह दिनानुदिन पापों की ओर बढ़ता जा रहा था।

एक दिन रात के समय भगवान् शंकर और पार्वती घूमने निकले। जब पुजारी का ऐसा हाल देखा तो पार्वती जी ने अप्रसन्न होकर उससे कहा–"हे नीच! तूने मेरी पूजा, जप, तप त्याग कर पाप करना शुरू कर दिया है, जा तू मेरे श्राप से कोढ़ी हो जा।"

पार्वती जी के श्राप देने के साथ ही पुजारी कोढ़ी हो गया। फिर तो वह बहुत दुःखी हो रोने–चिल्लाने लगा। भगवान की कृपा से देवांगनाएं भी पुजारी की यह दशा देखने को आईं। और बोलीं–क्यों भाई! तुम्हारा यह हाल क्यों हुआ है? इस पर पुजारी ने रो–रो कर अपना सारा हाल कह सुनाया। इस पर देवांगनाओं ने दया करके कहा–"हम तुझे एक उपाय बताती हैं, तू ध्यानपूर्वक सुन! सोलह सोमवार का व्रत रखने से तेरा कोढ़ ठीक हो जायेगा और तू इससे मुक्ति पावेगा। किसी एक सोमवार से व्रत आरम्भ करो।

पहले स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण करो फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान–पुण्य करो। फिर आधा सेर गेहूं का आटा–घी भून कर चूरमा बनाओ। फिर भगवान शंकर की मिट्टी की मूर्ति बनाओ। जब मूर्ति बन जाए तो शुद्ध जल से स्नान करके दूध, दही, चावल, रोली, फल, प्रसाद और जनेऊ पहनायें, फिर दण्डवत् करें और परिक्रमा करें। जब इतना काम कर लें तो पीछे एक भाग चूरमा भगवान शंकर के चरणों में अर्पित करें और दुःख दूर करने की प्रार्थना करें कि हे प्रभू! आप अब की बार मेरा उद्धार कीजिए। अब मैं कान पकड़कर सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा करता हूं कि आइन्दा कभी पाप नहीं करूंगा।

फिर **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र की एक माला का एक जाप करें। शिवजी की प्रतिमा जल में विसर्जन करें। प्रतिमा विसर्जन के बाद स्नान कर और बाकी बचे हुए चूरमा के दो भागों में से एक भाग बिजार को खिलाना, एक भाग एकान्त में बैठकर खुद खाना।

इसी प्रकार जब सोलह सोमवार व्रत रख चुके हों तो 17वें सोमवार को पहले से दस गुना चूरमा बनावें तब पूजा करने के पश्चात् ब्राह्मण और छोटे–छोटे बच्चों

को बांटकर खुद खाना।

हे पुजारी! ऐसा करने से सब पुरुषों व स्त्रियों का शारीरिक कष्ट दूर होता है। सुख, शान्ति धन और सन्तान की वृद्धि होती है। सब इच्छायें पूरी हो जाती हैं और मुक्ति मिलती है! पर एक बात याद रखने की है। तू सावधान होकर सुन और गांठ बांध ले। जो कोई व्रतधारी इन सत्रह सोमवारों के बीच में किसी से झगड़े, झूठ बोले, पाप दृष्टि रखे, झूठे मुंह सो जाये, किसी को दुःख देवे, दान ग्रहण करे तो वह सुख के बजाय दुःख पावेगा और व्रत का फल अकारथ जायेगा।" देवांगनायें ऐसा उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गईं और पुजारी ने शान्ति के साथ पवित्र विचारों के साथ सोलह सोमवार विधिपूर्वक व्रत रखा।

इस व्रत के प्रभाव से पुजारी का कोढ़ दूर हो गया, सोने के समान सुन्दर शरीर हो गया और हर तरह से सुख प्राप्त हो गया।

एक दिन एक अत्यन्त निर्धन व दुःखी ब्राह्मण पुजारी के पास आकर कहने लगा–"महाराज! मैं बेहद दुःखी हूं आपकी सेवा में आया हूं। आप मेरी सहायता कीजिए।"

जब ब्राह्मण ने अपना बाकी हाल सुनाया तो पुजारी को उस पर अत्यन्त क्रोध आया और उसको बहुत झाड़ा। बहुत लताड़ा। खूब खरी–खोटी सुनाई। जब तरस आया तो उसने कहा–"भाई, पहले मैं तेरी तरह ही अत्यन्त दुःखी था। रात–दिन नशे में धुत रहता था। पाप कर्म में लगा रहता था। लेकिन सोलह सोमवारों का व्रत करने से मेरी दशा बदल गई और विचार भी बदल गये हैं। अतः तुम्हें जिस प्रकार मैं समझाता हूं उस प्रकार विधिपूर्वक व्रत करो। भगवान तुम्हारे सब दुःख दूर कर देंगे।

ब्राह्मण पुजारी का आदेश पाकर घर को वापस लौट गया और वहां जाकर विधिपूर्वक सोमवार के सोलह व्रत पूरे किये।

इसके पश्चात् वह एक दिन किसी काम से नगर को गया तो वहां रूपवती, गुणवती तथा साक्षात लक्ष्मी स्वरूप राजकुमारी का स्वयम्बर रचा हुआ था। राजा ने घोषणा कर रखी थी कि मेरी हथिनी जिस व्यक्ति के गले में माला डाल देगी उसी के साथ मैं राजकुमारी का विवाह करके आधा राजपाट उसे दे दूंगा।

ब्राह्मण भी तमाशा देखने के विचार से राजमहल में जा पहुंचा। अब भगवान की लीला देखिए, राजा की हथिनी ने सूंड में माला लेकर उस ब्राह्मण के गले में डाल दी, फिर उसको प्रणाम किया। राजा ने अपनी प्रतिज्ञानुसार राजकुमारी का विवाह उस ब्राह्मण के साथ कर दिया और आधा राजपाट उसको दे दिया। ब्राह्मण फिर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा और रात–दिन भगवत भजन में लीन

रहने लगा। एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से पूछा—"प्राणनाथ! आपने ऐसा कौन-सा पुण्य किया है जिससे आपको राजपाट और इतना सुख प्राप्त हुआ है?" तब ब्राह्मण ने अपना सारा हाल कह सुनाया। फिर तो राजकुमारी ने भी सोलह सोमवारों का व्रत रखा और ढाई मन चूरमे का प्रसाद गरीबों में बांटा। इन सोलह व्रतों का प्रभाव यह हुआ कि भगवान ने उसको एक अति रूपवान, अति बलवान, भाग्यवान, अच्छे गुणों से युक्त पुत्र प्रदान किया। ब्राह्मण ने ज्योतिषियों को बुलाया और बालक की कुण्डली बनवाई तो उन्होंने बताया कि इस बालक के ग्रह बड़े प्रबल हैं। यह चक्रवर्ती राजा होगा और सब राजे-महाराजे इसके पैरों में अपना शीश झुकायेंगे। यह बात सुनकर ब्राह्मण और राजकुमारी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

जब राजकुमार बड़ा हुआ तो माता ने उसे भी सोलह सोमवारों का व्रत रखवाया। राजकुमारी ने व्रत के बीच प्रतिज्ञा की—"प्रभु! मेरे राज्य में प्रजा सुखपूर्वक रहे, यही मेरी कामना है।"

कुछ समय पश्चात् विदर्भ देश की राजकुमारी के साथ राजकुमार का विवाह हो गया। विदर्भ देश के राजा ने बेटी के दहेज में अपना सारा राजपाट दे दिया और इस तरह वह ब्राह्मण कुमार सारे भारतवर्ष का सबसे बड़ा राजा बन गया। बाकी राजा उसके अधीन हो गए। बड़े-बड़े विद्वान् ब्राह्मण उस ब्राह्मण कुमार के राज्य में चौबीस घंटे कथा-कीर्तन करते रहते थे। गरीब-अमीर सब हर प्रकार से सुखी थे। किसी को किसी प्रकार का कष्ट न था।

जब राजकुमार के माता-पिता वृद्धावस्था को प्राप्त हुए और राजपाट राजकुमार को सौंप कर खुद भगवद् भजन के लिए वनों में चले गए, तब राजकुमार उनके जाने के बाद बहुत दुःखी हुआ और दिन-रात शिवजी की पूजा में रहने लगा। अपनी रानी से भी कहा कि तू मेरे साथ शंकर भगवान की पूजा किया कर।

इस पर रानी ने बेहद नाराज होकर राजकुमार से कहा—आपको भला किस बात की कमी है जो इन फिजूल बातों में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। आप दूसरे देशों को विजय करें, जंगल में जाकर शिकार खेलें। यह पूजा-पाठ भक्ति-वक्ति तो साधु-सन्तों का काम है। मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है। आप इन सबको बन्द कर दें।

राजकुमार ने अपनी पत्नी की बात अनसुनी कर दी और चुपचाप भगवान शंकर के पूजन के लिए वन में चला गया।

रात को स्वप्न में भगवान शंकर ने उसको दर्शन देकर कहा—"बेटा तुम अपनी स्त्री को तुरन्त घर से निकाल दो, नहीं तो दुःख पाओगे। प्रातःकाल राजा ने अपने मन्त्रिमण्डल को बुलाकर सारा वृत्तान्त कह सुनाया। सारी बात सुनकर मंत्री कहने

लगे–महाराज, रानी को शीघ्रातिशीघ्र वनवास दे दीजिए। सर्वसम्मति से राजकुमार ने रानी को वन में भिजवा दिया।

अब रानी जंगलों में मारी–मारी फिरने लगी और दरिन्दे भी उसे तरह–तरह से कष्ट पहुंचाने लगे। गर्मी, सर्दी और बरसात से भी उसको अपार दुःख भोगना पड़ा। कई साल तक वह इस प्रकार दुःख भोगती रही। एक दिन धोबिन को उस पर दया आई, वह उसको अपने साथ अपने घर ले गयी। धोबी ने दोनों को मार–मारकर घर से निकाल दिया। एक साधु ने रानी का जब यह हाल देखा तो उसको उस पर बड़ा तरस आया। उसने भगवान शंकर से प्रार्थना की–"भोलेनाथ! शंकर देव! संसार का कल्याण करने वाले महाराज! इसके अपराध को क्षमा कीजिए। अब यह स्त्री अपने किए पर पछता रही है।"

इसके पश्चात् उस साधु ने रानी को सोलह सोमवार के व्रत रखवाये तो भगवान शंकर ने राजा को स्वप्न में बताया कि तुम अपनी रानी को जंगलों में से मंगवाओ। जंगलों में से रानी को लिवाने के लिए रथ भिजवाया। इसके पश्चात् राजा–रानी दोनों जब तक जीवित रहे सदा सदैव सोलह सोमवारों का व्रत करते रहे।

जो कोई प्राणी प्रेम सहित भगवान शंकर का पूजन करके सोलह सोमवारों का व्रत रखेगा वह इस लोक में सुख पाकर, अन्त में मोक्ष का अधिकारी होगा।

आरती भगवान शंकर की

हर हर हर महादेव।
सत्य, सनातन, सुन्दर शिव! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज अन्तर्यामी॥1॥
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी॥2॥
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्त्ता, भर्त्ता, धर्त्ता तुम ही संहारी॥3॥
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढ़रदानी।
साक्षी, परम, अकर्त्ता, कर्त्ता, अभिमानी॥4॥
मणिमय-भवन, निवासी, अति भोगी, रागी
सदा श्मशान विहारी, योगी बैरागी॥5॥

छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाला, व्याली।
चिताभस्मयतयन, त्रिनयन, अयन महाकाली॥6॥
प्रेत-पिशाच-सुसेवित पीतजट धारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी॥7॥
शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी॥8॥
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय, नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर! कालातीत विभो॥9॥
सत, चित्, आनंद, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व-त्राता॥10॥
हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै।
सब विधि निर्मल मति कर अपना करि लीजै॥11॥

□□□



अध्याय-17

कुछ प्रमुख आरतियां



आरती श्री गणेश जी

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥1॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥2॥
अंधन को आख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥3॥
पान चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥4॥
दीनन की लाज राखो शम्भु सुतवारी।
कामना को पूरी करो जाऊं बलिहारी॥5॥

आरती श्री जगन्नाथ जी

आरती श्री जगन्नाथ मंगलकारी,
चरणविंद आपदा हारी।
निरखत मुखारविंद आपदा हारी,
कंचन धूप ध्यान ज्योति जगमागी।
अग्नि कुण्डल घृत पाव सथरी।आरती०
देवन द्वारे ठाड़े रोहिनी खड़ी,
मारकण्डडे श्वेत गंगा आन करी।
गरुड़ खम्भ सिंह पौय यात्री जुड़ो,
यात्री की भीड़ बहुत बेंत की छड़ी।आरती०
सुर नर मुनि द्वारे ठाड़े वेद उचारे,
धन्य-धन्य सूरश्याम आज की घड़ी।आरती०

आरती श्री गंगा जी

ॐ जय गंगे माता श्री जय गंगे माता,
जो नर तुमको ध्याता मनवांछित फल पाता॥ॐ जय
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥ॐ जय
पुत्र सगर के तारे, सब जग की ज्ञाता,
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुखदाता॥ॐ जय
एक ही बार जो तेरी शरणागति आता,
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता॥ॐ जय
आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता॥ॐ जय

आरती श्री पार्वती जी

जय पार्वती माता जय पार्वती माता,
ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता।टेक०
अरिकुल पद्म विनासनि जय सेवक त्राता,
जग जीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता।जय०
सिंह को वाहन साजे कुण्डल है साथा,
देव वधू जह गावत नृत्य करत ताथा।जय०
सतयुग रूपशील अतिसुन्दर नामसती कहलाता,
हेमांचल घर जन्मी सखियन रंगराता।जय०
शुम्भ निशुम्भ विदारे हेमांचल स्याता,
सहस्त्र भुज तन धरिके चक्र लियो हाथा।जय०
सृष्टि रूप तुम्ही है जननी शिव संग रंगराता,
नन्दी भृंगी बीन लही सारा मदताता।जय०
देवन अरज करत हम चित को लाता,
गावत दे दे ताली मन में रंग राता।जय०
श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता,
सदासुखी नित रहता सुखी सम्पत्ति पाता।जय०

आरती श्री सरस्वती जी

आरती कीजे सरस्वती की, जनन विद्या, बुद्धि भक्ति की। टेक०
जाकी कृपा कुमति मिट जाए। सुमिरन करत सुमति गति आये,
शुक सनकादि जासु गुण गाये। वाणी रूप अनादि शक्ति की॥
आरती कीजे०...

नाम जपत भ्रम छूट दिए के। दिव्य दृष्टि शिशु उधर हिय के,
मिलहिं दर्श पावन सिय पिय के। उड़ई सुरभि युग-युग कीर्ति की॥
आरति कीजे०...

रचित जासु बल वेद पुराणा। जेते ग्रन्थ रचित जगनाना,
तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना। जो आधार कवि यति सति की॥
आरती कीजे०...

सरस्वती की वीणा वाणी कला जननि की।
आरती कीजे सरस्वती की॥

आरती श्री बद्रीनाथ जी

पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम।
निकट गंगा बहत निर्मल श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम।
श्रीवेद ब्रह्म करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
शक्ति गौरी गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम।
जोग ध्यान अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
इन्द्र चन्द्र कुबेर धुनि कर धूप दीप प्रकाशितम।
सिद्ध मुनिजन करत जै जै श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
श्री लक्ष्मी कमला चंवर डोले श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम।
कैलाश में एक देव निरन्जन शैल शिखर महेश्वरम।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम।
श्री बद्रीजी के पंच रत्न पढ़त पाप विनाशनम।
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य प्राप्यते फलदायकम।

आरती श्री शाकुम्भरी माता जी

हरि ॐ श्री शाकुम्भरी अम्बा जी की आरती कीजो
ऐसे अद्‌भुत रूप हृदय धर लीजो
शताक्षी दयालु की आरती कीजो
तुम परिपूर्ण आदि भवानी मां
सब घट तुम आप बखानी मां
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो
तुम्हें हो शाकुम्भरी, तुम ही हो शताक्षी मां
शिव मूर्ति माया, तुम ही हो प्रकाशी मां
श्री शाकुम्भरी.........
नित जो नर-नारी अम्बे आरती गावे मां
इच्छा पूरण कीजो, शाकुम्भरी दर्शन पावे मां
श्री शाकुम्भरी.........
जो नर आरती पढ़े पढ़ावे मां
जो नर आरती सुने सुनावे मां
बसे बैकुण्ठ शाकुम्भर दर्शन पावे,
श्री शाकुम्भरी अम्बा जी की आरती कीजो॥

आरती श्री दुर्गा जी

जय अम्बे, गौरी, मैया जय श्यामा गौरी
तुमको निशि दिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥टेक०
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।मइया...
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको॥जय०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।मइया...
रक्त-पुष्प-गलमाला, कण्ठन पर साजे॥जय०
केहरि वाहन राजत, खड्ग-खप्परधारी।मइया...
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिन के दुःखहारी॥जय०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।मइया...
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।जय०

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।मइया...
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।जय०
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।मइया...
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे॥जय०
तुम ब्राह्मणी, तुम रुद्राणी, तुम कमलारानी।मइया...
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।जय०
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों।मइया...
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥जय०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।मइया...
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥जय०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।मइया...
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥जय०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।मइया...
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥जय०
अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।मइया...
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे॥जय०

आरती श्री भैरव जी

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काली और गौरा देवी कर सेवा॥जय०
तुम्हीं पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुखकारक भीषण वसु धारक॥जय०
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी।
महिमा अमित तुम्हारी जै जै भयहारी॥जय०
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे॥जय०
तेल चटकि दधि मिश्रित मासबलि तेरी।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी॥जय०
पांव घूंघरू बाजत डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हर्षावत॥जय०
बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे।
कहें धरणीधर नर मनवांछित फल पावे॥जय०

श्री रामायण जी की आरती

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥टेक
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बाल्मीक विज्ञान विशारद।आरती...
सुक सनकादि शेष अरु शारद।
बरनी पवनसुत कीरति नीकी।आरती...
गावत वेद पुराण अष्टदश।
छओं शास्त्र सब ग्रन्थन को रस।
मुनिजन धन सन्तन को सबरस।
सारअंश सम्बत सबही की॥आरती...
गावत सन्तन शम्भु भवानी।
अरु घट सम्भव मुनि विग्यानी।
व्यास आदि कवि पुंज बखानी।
कागभुसुण्डि गरुड़ के हिय की॥आरती...
कलिमल हरनि विषय रस फीकी।
सुभग श्रृंगार मुक्ति जुवती की।
दलन रोग भव भूरि अमी की।
तात् मातु सब विधि तुलसी की॥आरती...





अध्याय-18

ईश्वर प्रार्थना

ॐ जै जगदीश हरे, स्वामी जै जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मन का।
सुख संपति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ॐ॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं किसकी॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी।
पर ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पती।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती॥ॐ॥
दीन बन्धु दुख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार खड़ा तेरे॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तों की सेवा॥ॐ॥

□□□





अध्याय-19

विभिन्न आरतियां

श्री गणेश जी की आरती

गणपति की सेवा मंगल मेवा सेवा से सब विघ्न टरें।
तीन लोक तैंतीस कोटि सुर द्वार खड़े सब अरज करें॥
ऋद्धि सिद्धि दक्षिण वाम विराजें औ आनन्द सों चमर ढुरें।
धूप दीप और लिये आरती भक्त खड़े सब अरज करें॥ग०॥1॥
गुड़ के मोदक भोग लगत हैं मूषक वाहन चढ़े फिरें।
सौम्य रूप सेवा गणपति की विघ्नरोग जा दूर परें॥ग०॥2॥
भादौं मास और शुक्ल चतुर्थी दोपारा भर पूर परें।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी ने दुर्गा मन आनन्द भरें॥ग०॥3॥
अद्भुत बाजा बज्या इन्द्र का देववधू जहँ गान करें।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो नाम सुने सब विघ्न टरें॥ग०॥4॥
आन विधाता बैठे आसन इन्द्र अप्सरा नृत्य करें।
ज्ञाता ब्रह्माजी जाको हैं विघ्न विनाशन नाम धरें॥ग०॥5॥
एक दन्त गज बदन विनायक त्रिनयन रूप अनूप धरें।
पग खम्बा सा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करें॥ग०॥6॥
दे श्राप श्री चन्द्रदेव को कलाहीन तत्काल करें।
चौदहलोक में फिरे गणपति तीन भुवन में राज्य करें॥ग०॥7॥
उठ प्रभात जो आरती गावे ताके सिर यश छत फिरें।
गणपति पूजा पहली करनी काम सभी निर्विघ्न सरें॥ग०॥8॥
श्री प्रताप गणपति जी की हाथ जोड़ स्तुति करें।
गणपति की सेवा०॥9॥

लक्ष्मी जी की आरती

आरती सिन्धु सुता की कीजै। ध्यान धरत सुख संपति लीजै॥
जगमग जगमग जोति भई है। दुख दारिद्र विलाप गई है॥
सुर नर मुनि सब ध्यान धरत हैं। जय2 कहि2 चरण परत हैं॥
सुमिरत ही दुश्मन सब छीजै॥ आरती सिन्धु सुता की कीजै॥
नारायण की परम पियारी। त्रिभुवन जोहत आस तुम्हारी॥
जै जै जै लक्ष्मी भवानी। भक्त जननि माता वरदानी॥
दुष्टन तोहि देखि कर मीजै॥ आरती सिंधु सुता की कीजै॥
यह आरती नित उठि जो गावै। मन चाहत फल सो नर पावै॥
बार बार कर जोर मनाई। मातु अरज सुनिये चित लाई॥
सुख संपत्ति गोपाल को दीजै। आरती सिंधु सुता की कीजै॥

श्रीराम-स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपाल भजु मन हरण भव भय दारुणं।
नव-कंज लोचन, कंज-मुख कर कंज, पद कंजारुणं॥
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरज सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदमं।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द दशरथ नन्दनं॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप धर संग्राम-जित-खरदूषणं॥
इति बदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय कञ्ज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनं॥

मनु जाहि राचेउ मिलहि, सो बरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुणा निधान सुजान सीलू सनेह जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवोनिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥

आरती राधेश्याम की

मैं तो आरती उतारूं राधेश्याम की रे। राधेश्याम की रे,
मुक्तिधाम की रे॥ मैं तो आरती०॥
हृदय के कपाट खोल, भक्ति के तल हिंडोल मधुर नाम बोल-बोल।
मैं तो चरन छवि निहारूं राधेश्याम की रे॥ मैं तो आरती०॥
लला के चरण पखार, लली के बसन संभार। नमन करूं बार-बार।
युगल मूर्ति सजाऊं राधेश्याम की रे॥ मैं तो आरती०॥
❑

गंगाजी की आरती

जै अंबे जै गंगे जय जग तारणि दुःख निवारिणि सोहे शिव संगे।
शीतल सलिल सुधासम अति निर्मल अंगे। जै अम्बे जै गंगे॥1॥
भूषण धरणी भव की तरणी पाप करे भंगे।
पुत्र सगर के तारे क्षण के रात संगे। जै अम्बे जै गंगे॥2॥
जो नर ध्यावै श्रुति गुण गावे पतित होय चंगे।
मूक होय वाचाल शिखर चढ़ें पंगे। जै अम्बे जै गंगे॥3॥
माथे मुकुट चन्द्रवत कांती शान्तनु अर्धङ्गे।
चार भुजा भूषन युत वसन श्वेत रङ्गे। जै अम्बे जै गंगे॥4॥
सुर मुनि ज्ञानी योगी ध्यावें पद नंगे।
चोखे निश दिन गावें आरती श्री गंगे। जै अम्बे जै गंगे॥5॥

श्री तुलसी महारानी की आरती

आरती वृन्दा तुलसी की। प्राण की प्यारी प्रभु जी की।
कञ्चन कलश कपूर की बाती। करत प्रकाश हृदय दिन राती॥
देखि लक्ष्मिहुं दौड़ी आती। नित नव होति आरती घी की॥1॥
जोउन्नतिनितचहहिंसुमतिमति। तुलसिहिंभजहिं कहहिं कमलापति।
तुलसीदलबिन जिनहिंलगै अति। मेवहुं और मिठाइहुं फाकी॥2॥
हे भगवती! सती भय भंजनि। तुलसी पाप ताप मन गंजनि
नित नूतन मानस जन रंजनि। हरिको परम प्रिया अति नीकी॥3॥
प्रेम होय जहं तुलसी माहीं। भूलिहूं तहं यमदूत न जाहीं।
सुन्दरदास रहत अध नाहीं। भजतहिं मिटत भवजलनि जी की।
आरती वृन्दा तुलसी की...॥4॥

आरती श्रीकृष्णचन्द्र जी की

आरती युगल किशोर की कीजै। राधा तन-मन-धन न्यौछावर कीजै।
रबिशशिकोटि बदन की शोभा, ताहि निरखिमेरो मनलोभा।आ०
गौरश्याममुख निरखतरीझै, प्रभुको स्वरूपनयन भरि पीजै॥आ०
कञ्चन थार कपूर की बाती, हरि आये निर्मल भइ छाती।आ०
फूलन की सेज फूल की माला, रत्नसिंहासन बैठे नन्दलाला।आ०
मोर मुकुट कर मुरली सोहै, नटवर वेष देख मन मोहै।आ०
ओढयो नील पीत पट सारी, कुंजबिहारी गिरवरधारी।आ०
श्री पुरुषोत्तम गिरवरधारी, आरती करत सकल बृजनारी।आ०
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी, परमानन्द स्वामी अविचल जोड़ी।
॥ आरती युगल किशोर की कीजै॥

:: इति श्री ::

रजत प्रकाशन

प्रस्तुत करते है

हर घर परिवार में संग्रहणीय

नाश्ते, लंच एव डिनर की नयी-नयी शैलियों पर आधारित अनुपम पुस्तक

मॉडर्न कुकरी गाइड

स्वादिष्ट [illegible]कला हमारे देश की प्राचीन शैली और परम्परा है। हमारे देश के विभि[illegible] व्यंजनों की धूम आज भी विदेशें तक में मची हुई है मनुष्य की [illegible] मूलभूत आवश्यकता है स्वादिष्ट व पौष्टिक भोजन। भोजन की नई-नई विधियों की खोज दिन-प्रतिदिन होती रहती है। जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पौष्टिक भी हो।

स्वाद व पौष्टिकता को सजायें यह रंगारंग व्यंजनों की सजी-संवरी पुस्तक आपके धन व समय की बचत के साथ-साथ आपके जीवन में वाहावाही की बहार भी ला देगी।

मूल्य : पचास रुपये मात्र

घर बैठे पुस्तक मंगाने के लिये पुस्तक का मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजें। सम्पूर्ण सूचीपत्र मंगाने के लिये चार रुपये का टिकट लगा व अपना नाम पता लिखा लिफाफा भेजें।

रजत बुक क्लब के सदस्य बनें व विशेष लाभ पायें।
सदस्यता फार्म के लिये 10 रुपये भेजें।

रजत प्रकाशन

केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट, मेरठ-2

मनोकामनादायक एवं फलदायक

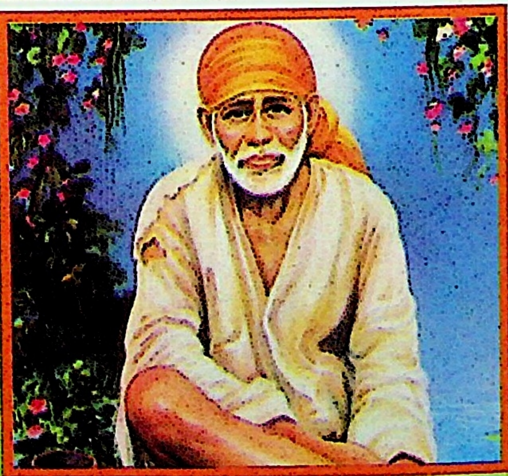
जप, तप और व्रत

धर्म, आस्था पर आधारित होता है । हिन्दू धर्म देवी-देवताओं की आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है । समस्त देवी-देवताओं के महात्म्य एवं रीतियों की जानकारी देने वाली यह पुस्तक एहलोक के साथ परलोक सुधारने का भी मार्ग प्रशस्त करती है ।

धर्म ज्ञान की जानकारियां देने, तीज-त्यौहारों का समग्र ज्ञान प्रस्तुत करने वाली धर्म प्राण पुस्तक । सप्तवार व्रत कथाओं एवं आरतियों का पूर्ण समावेश ।







A.H.W. RAJAT SERIES

रजत प्रकाशन